भारत के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक

वेद प्रकाश शर्मा

डायन

डायन

वेद प्रकाश शर्मा

पत्रचार के लिए लेखक का पता :

एक औरत के पति की मृत्यु हो गई। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हुई तो पति को जिंदा करने के लिए दूसरों के बच्चों की बलि देने लगी। पर उसे मालूम नहीं था कि किसी की आंखें सपनों में उसकी करतूतें देख रही हैं। फिर सपने देखने वाले और उस औरत के बीच जंग शुरु हुई, मगर वे तो सिर्फ बहाना थे, असली जंग तो माता दुर्गा और के बीच थी और जब मां जगदम्बा अपने रौद्र रूप में आईं तो काली शक्तियों के चेहरे सफेद पड़ गए सुपर नेचुरल वर्ल्ड की हौलनाक और खौफनाक घटनाओं पर लिखा गया----

वेद प्रकाश शर्मा का पहला उपन्यास पैंतीस साल से भारत के सबसे ज्यादा बिकने वाले इस लेखक के इस नए उपन्यास को भी हमेशा की तरह- -**तुलसी पेपर बुक्स** ने प्रकाशित किया है

'डायन' लिखने की प्रेरणा मुझे एकता कपूर और विशाल भारद्वाज से मिली

मेरे प्रेरक पाठको

प्रस्तुत है, मेरा एकदम नया उपन्यास—**'डायन'**।

मैं जानता हूं कि आप बुक स्टाल्स पर मेरे इस नए उपन्यास को देखकर एक साथ दो कारणों से हैरान रह जाएंगे। पहला—**'चलते पुर्जे'** में मैंने अपने आगामी नए उपन्यास का नाम **'अपने कत्ल की सुपारी'** डिक्लेयर किया था जबकि आपके हाथों में 'डायन' है।

दूसरा, इस उपन्यास का नाम, यानी—**'डायन'**।

हैरान रह जाने का कारण यह होगा क्योंकि इस किस्म का नाम मैंने पहले कभी नहीं रखा।

हालांकि आपसे बेहतर भला कौन जान सकता है कि मैं हर बार किसी नए विषय पर उपन्यास लिखने की कोशिश करता हूं!

इसके बावजूद मैंने अपने अब तक के 176 उपन्यासों में से एक भी इस टॉपिक पर नहीं लिखा। स्पष्ट शब्दों में कारण यह रहा कि मेरा खुद का विश्वास कभी 'सुपर नेचुरल पॉवर्स' पर नहीं रहा।

लेकिन अब...57 साल की उम्र में मेरे इस भ्रम को झटका लगा है क्योंकि मेरी आंखों के सामने, साक्षात् कुछ ऐसी घटनाएं हुई हैं जिन्होंने मुझे विश्वास दिला दिया है कि जिस दुनिया में हम रहते हैं, उससे अलग भी एक दुनिया है और कभी-कभी उस दुनिया के तार हमारी दुनिया के प्राणियों से जुड़ जाते हैं और जब ऐसा होता है तो बड़ी ही हौलनाक, हैरतअंगेज और डरावनी कहानियां जन्म लेती हैं।

ऐसी ही कहानी का नाम है—डायन।

सवाल उठता है कि मेरे विचारों में अचानक इतना बड़ा चेंज कब, क्यों और कैसे आया?

जवाब है—एकता कपूर और विशाल भारद्वाज की बहुचर्चित फिल्म—'एक थी डायन'।

एकता से पुराना परिचय होने के कारण मैं जब पिछली बार मुंबई गया और उत्सुकतावश शूटिंग स्थल पर पहुंचा तो वहां कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिनके कारण न केवल मेरे विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया बल्कि मुझे अपने नए उपन्यास के लिए ताजगी से भरपूर मसाला भी मिला।

फॉर एग्जॉम्पिल—'एक थी डायन' के डायरेक्टर कन्नन अय्यर हैं और लेखक हैं—मुकुल शर्मा। उन्होंने मुझे शॉर्ट में 'एक थी डायन' की स्टोरी सुनाई। अपने पूर्व विचारों के अनुसार पहली नजर में मुझे वह स्टोरी अविश्वसनीय-सी लगी।

मैंने दोनों पर अपने सवालों की बौछार शुरु कर दी और उन्होंने शुरु किया मेरे हर सवाल का जवाब देने का सिलसिला। मुझे यहां यह लिखने में जरा भी संकोच नहीं है कि उन्होंने मेरी बोलती बंद कर दी थी। उनके पास मेरे हर सवाल का माकूल और तर्कसंगत जवाब था। एक स्थिति ऐसी आई जब मेरे सवाल खत्म हो गए।

मुझे न सिर्फ यह मानना पड़ा कि 'एक थी डायन' की कहानी 'डायनों' के बारे में लोगों को नए सिरे से सोचने पर मजबूर कर देगी बल्कि मुझे भी इसी विषय पर उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित कर दिया। इतना ज्यादा कि **'अपने कत्ल की सुपारी'** से पहले मैंने आपकी अदालत में 'डायन' को प्रस्तुत करने का निर्णय ले लिया।

यहां बहुत स्पष्ट शब्दों में, यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि मेरे इस उपन्यास **'डायन'** की कहानी का फिल्म **'एक थी डायन'** की Qकहानी से दूर-दूर तक कोई संबध नहीं है।

दोनों की कहानी बिल्कुल अलग-अलग है लेकिन यह तो मुझे मानना ही पड़ेगा कि इस कहानी को लिखने की प्रेरणा मुझे एकता कपूर, विशाल भारद्वाज, कन्नन अय्यर और मुकुल से मिली।

मैंने सोशल उपन्यास भी लिखे हैं, पारिवारिक उपन्यास भी लिखे हैं और लव-स्टोरियां भी लिखी हैं मगर 'डायन' की कहानी को पढ़ते वक्त

आप और भी ज्यादा हैरान हो जाएंगे क्योंकि अभी तक आपने मेरी कलम से निकलने वाले थ्रिल और सस्पेंस से भरे नाविल ज्यादा पढ़े हैं। मेरा कोई भी नया उपन्यास पढ़ने के लिए उठाते ही आपका दिमाग इस बात के लिए प्रिपेयर्ड हो जाता है कि अब आप सांसें रोक देने वाले थ्रिल और दिमाग को जकड़कर रख देने वाले सस्पेंस की दुनिया में प्रविष्ट होने वाले हैं।

फिक्र न करें, इस उपन्यास में भी आपके दिल पर कब्जा कर लेने वाला थ्रिल और दिमाग को कलाबाजियां खिलाने वाला सस्पेंस मौजूद है लेकिन बिल्कुल ही नए अंदाज में और...अंदाज तो अलग खुद-ब-खुद ही हो जाएगा क्योंकि सब्जेक्ट ही बिल्कुल नया है।

मुझे यह लिखने में कोई संकोच नहीं है कि **'डायन'** की कहानी लिखने से पहले मेरे मन में हल्का-सा डर था।

यह कि—आप इस विषय पर विश्वास कर पाएंगे या नहीं परंतु उपन्यास लिखने के बाद न केवल वह डर काफूर हो गया है बल्कि उसका स्थान इस विश्वास ने ले लिया है कि—इसे पढ़ते वक्त न केवल आप एक अनोखी और अलौकिक दुनिया में पहुंच जाएंगे बल्कि खुद को बहुत रोमांचित भी महसूस करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी कलम से निकलने वाला हर बार कुछ नया पढ़ने वाली आपकी भूख को इसकी कहानी पूरी संतुष्टि प्रदान करेगी।

'डायन' की कहानी का मुख्य किरदार अंगद है। उसकी शक्ल प्रसिद्ध अभिनेता इमरान हाशमी से मिलती है। इसीलिए उसे फिल्मों में इमरान के डुप्लिकेट का रोल मिल जाता है। वह हर बार एक ही सपना देखता है। यह कि—किसी औरत ने अपने मरे हुए पति को जिंदा करने के लिए किसी बच्चे की बलि दी। हर बार सब कुछ ज्यों का त्यों दिखाई देता है। बस एक ही फर्क है—हर बार बच्चा बदल जाता है। सवाल उठता है कि ये सपना उसे ही क्यों दिखता है? उपन्यास में इस सवाल का बड़ा ही दिलचस्प और प्रमाणिक जवाब है—ऐसा जवाब जो सुपर नेचुरल वर्ल्ड के कई राज खोलता है।

उस वक्त कहानी बहुत ही रोचक और सनसनीखेज मोड़ लेती है जब सपने में वह एक ऐसे बच्चे की बलि देखता है, जिसे वह जानता था और वह बच्चा वास्तव में भी अपने घर से गायब होता है। अर्थात् अंगद का सपना सच्चा था।

तो ये सच्चा सपना अंगद को ही क्यों चमका?

जब अंगद इस रहस्य की तहकीकात करने निकला तो उस दुनिया में पहुंच गया जिसे हम सुपर नेचुरल वर्ल्ड कहते हैं और उस सुपर नेचुरल वर्ल्ड में वह ऐसे-ऐसे भयानक, डरावने, हौलनाक और खौफनाक हादसों से गुजरा कि नौबत पागल होने की आ गई।

और...अगर सही वक्त पर वह महाराज चंडिकामृत के आश्रम में न पहुंच जाता तो सचमुच पागल ही हो जाता।

चंडिकामृत का किरदार हमें बताता है कि—शैतानी शक्तियां भले ही चाहे जितनी शक्तिशाली हों मगर माता दुर्गा के मुकाबले ऐसी हैं जैसे हाथी के सामने चींटी।

जो एक बार मां जगदम्बा की शरण में पहुंच गया उसका कोई काली शक्ति किसी हाल में कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

अगर किसी पर काली शक्तियां हमला करती हैं तो भगवान शंकर का दिया हुआ 'महामृत्युन्जय मंत्र और यंत्र निर्विवाद रूप से उसकी रक्षा करते हैं। पाठकों के कल्याणार्थ 'महामृत्युन्जय मंत्र और यंत्र को भी मैंने अपने उपन्यास में जगह दी है। आप उसे ताबीज बनाकर गले में डालें, किसी हालत में आपकी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती और काली शक्तियां तो आपसे इस तरह दूर भागेंगी जैसे सूरज निकलते ही अंधेरा गायब हो जाता है।

एक बार फिर मैं हृदय की गहराईयों से विशाल भारद्वाज और एकता कपूर को इस बात के लिए धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे ऐसे विषय पर उपन्यास लिखने की प्रेरणा दी जो मेरे लिए बिल्कुलद नया था, जिसे लिखते वक्त मैंने बहुत इंज्वॉय किया और साथ ही मन को यह संतुष्टि भी है कि मनोरंजन के साथ-साथ मैंने पहली बार अपने पाठकों को एक नया ज्ञान दिया है।

अंत में आपके प्यार, विश्वास और आशीर्वाद का आकांक्षी—

आपका

वेद प्रकाश शर्मा

डायन

तीस दिसंबर की रात थी वह।

इतनी ठंडी कि इंसान तो इंसान परिंदे भी अपने घरोंदों में सुकड़े पड़े थे। आकाश पर थाल जैसा गोल चंद्रमा तारों की बारात के बीच सफर कर रहा था।

चारों तरफ चांदनी छिटकी पड़ी थी मगर उस चांदनी को भी धरा तक पहुंचने में एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा था क्योंकि माहौल में घना कोहरा उड़ता फिर रहा था।

उड़ता इसलिए फिर रहा था क्योंकि ठंडी हवा के तेज झक्कड़ चल रहे थे। शाम के वक्त बारिश हुई थी, उसके कारण पारा तीन डिग्री तक गिर गया था।

कब्रिस्तान में प्रेतों की मानिंद खड़े ऊंचे-ऊंचे पेड़ हवा के तेज झक्कड़ों के कारण इतनी बुरी तरह झूल रहे थे कि उनसे लगातार बज रही सीटियों की-सी आवाज किसी भी इंसान की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ा सकती थी।

बड़ा ही भयावह माहौल था मगर उस औरत को वह माहौल, वह सर्दी और झक्कड़ों के रूप में चल रही हवा मानो छू तक नहीं पा रही थी। उस पर किसी भी प्राकृतिक आपदा का कोई असर न था जिसके दोनों हाथों में एक फावड़ा था और उस फावड़े से वह एक कच्ची कब्र को खोदे चली जा रही थी।

जिस्म पर सिर्फ एक सफेद साड़ी और सफेद ब्लाऊज था।

दोनों कलाईयों में चूड़ियां। पैरों में पायल। लंबे, काले और घने बाल इस कदर बिखरे हुए कि चेहरा नजर नहीं आ रहा था।

कब्रिस्तान में निरंतर उसके फावड़े के जमीन से टकराने के कारण 'खट्ट-खट्ट' की आवाज गूंज रही थी। साथ ही गूंज रही थी उसकी कलाईयों में मौजूद चूड़ियों की आवाज।

मगर, जैसा कि पहले ही लिखा जा चुका है—कब्रिस्तान में दूर दूर तक न उसे कोई देखने वाला था, न ही फावड़े और चूड़ियों से पैदा होने वाली आवाज को सुनने वाला।

जबरदस्त मेहनत के बाद उसने चार फुट गहरी कब्र खोद ली।

तब, फावड़ा एक तरफ फेंका। जमीन पर पड़ी एक टार्च उठाई तथा उसकी रोशनी के झाग कब्र के अंदर डाले।

वहां एक इंसानी खोपड़ी और हड्डियां नजर आ रही थीं। उन पर खून के छींटे और मिट्टी लगी हुई थी।

नरमुंड के मुंह में तो कुछ ज्यादा ही खून जमा हुआ था।

उस दृश्य को देखकर कोई भी डर सकता था मगर औरत ने उन्हें देखा तो देखती ही रह गई। आंखों में ऐसे भाव थे जैसे कोई प्रेयसी अपने प्रेमी को देख रही हो।

कुछ देर वह खोपड़ी और हड्डियों को उसी तरह देखती रही फिर, तेजी से अपनी साड़ी जिस्म से अलग की।

अब वह केवल पेटीकोट और ब्लाऊज में थी।

साड़ी मिट्टी पर बिछा दी उसने। खुद कब्र में उतर गई। अब वह कब्र में मौजूद हड्डियों को उठा-उठाकर मिट्टी पर बिछी साड़ी पर डालने लगी। जब संतुष्ट हो गई कि सभी हड्डियां साड़ी पर डाल चुकी है तो कब्र से बाहर आई।

हड्डियों की पोटली बनाई और कंधे पर लादकर कब्रिस्तान के पीछे की तरफ चल दी। फावड़ा उसने वहीं छोड़ दिया था जबकि टार्च पोटली में डाल ली थी।

तेज-तेज कदमों से चलती हुई वह कब्रिस्तान के करीब ही बने एक पुराने किले की तरफ बढ़ी थी।

कोहरे और चांदनी के कारण कभी छुपती, कभी दिखती पुराने किले की टूटी-फूटी इमारत इस वक्त किसी विशाल दैत्य की मानिंद बहुत ही

डरावनी महसूस हो रही थी।

मगर, भला खौफ की क्या मजाल थी जो उसके आसपास भी फटकता! उसके पैरों में मौजूद पायलों से निकलने वाली 'छन-छन' की आवाज को यदि कोई सुन लेता तो हार्ट अटैक से मर जाता।

पोटली को कंधे पर डाले वह किले के अंदर दाखिल हो गई और शीघ्र ही उसके भीतरी, ऐसे हॉल में पहुंची जहां चांदनी के प्रवेश के लिए कोई झरोखा नहीं था।

अंधेरे के बावजूद उसकी चाल में कोई फर्क नहीं आया था। हां, वातावरण में एक छछुंदर की किल्ली जरूर गूंजी थी। ऐसा शायद इसलिए हुआ था क्योंकि छछुंदर औरत के पैर तले कुचला गया था।

पोटली एक तरफ रखकर उसने जैसे ही आतिशदान पर खड़ी मोमबत्ती जलाई, वैसे ही हॉल में उल्लू और चमगादड़ों की आवाजें गूंजने लगीं। साथ ही, वे अपने विशाल पंखों पर सवार होकर इधर उधर उड़ते नजर आने लगे थे।

मोमबत्ती की पीली रोशनी के कारण अब हॉल के फर्श पर इधर उधर दौड़ते छछुंदर और चूहे भी साफ नजर आ रहे थे।

उस सबके अलावा मोमबत्ती की पीली रोशनी में एक ऐसा दृश्य नजर आया जिसे देखने वाले की रूह फना हो सकती थी।

वह एक लड़का था।

हॉल के बीचों-बीच उल्टा लटका लड़का।

लड़के की दोनों टांगें एक-दूसरे से मिली हुई थीं।

टखनों के पास एक मोटी रस्सी बंधी थी।

उस रस्सी का दूसरा सिरा हॉल के करीब तीस फुट ऊपर, गुंबद के साथ अटेच्ड कुंदे में बंधा हुआ था।

लड़के के हाथ और बाल फर्श की तरफ झूल रहे थे।

ऐसा मालूम पड़ता था जैसे वह गोरे रंग और भूरे बालों वाला लड़का मृत अथवा बेहोश अवस्था में हो क्योंकि जिस्म की तो बात ही दूर, पलकों तक में कंपन न था।

करीब बारह वर्षीय लड़का था वह।

जिस्म पर ग्रे कलर का निक्कर, सफेद शर्ट, लाल स्वेटर, लाल टाई और पैरों में सफेद जुर्राब पर काले जूते।

कपड़े स्वतः बता रहे थे कि यह किसी स्कूल की ड्रेस है।

लड़के के सिर के ठीक नीचे फर्श पर रंगोली जैसी चीज बनी हुई थी। वह किसी बड़ी परात जैसी गोल थी। उसके अलग-अलग खानों में सिंदूर, हल्दी, आटा और सूखी कॉफी जैसी चीजें भरी थीं।

कुछ देर तक औरत उस दृश्य को देखती रही। फिर, सबसे पहले अपना ब्लाऊज उतारा। फिर ब्रॉ। पेटीकोट और अंत में पेंटी। अब वह नग्न थी। जन्मजात नग्न।

परंतु लंबे-लंबे बालों के कारण चेहरा अब भी नजर नहीं आ रहा था। हां, माथे पर लगी सुर्ख रंग की गोल चौड़ी बिंदी की झलक जरूर मिली और...उसकी मांग भी सिंदूर से भरी हुई थी।

इस वक्त वह साक्षात् भूतनी लग रही थी। जिस दिशा में आतिशदान पर खड़ी मोमबत्ती जल रही थी, उससे विपरीत वाली दीवार पर औरत की विशाल परछाईं जरूरत से ज्यादा ही डरावनी लग रही थी।

उसने पोटली खोली।

सबसे पहले इंसानी खोपड़ी उठाई।

एक बार फिर कुछ देर तक उसे इस तरह देखती रही जैसे वह उसकी सबसे प्रिय वस्तु हो। फिर रंगोली के नजदीक रखा एक छोटा सा मुकुट उठाया और इस तरह खोपड़ी के मस्तक पर बांध दिया जैसे उसका राजतिलक किया हो।

मुकुट पहनाने के बाद उसने खोपड़ी को इस तरह संभालकर रंगोली के बीचों-बीच रखा जैसे कांच की बनी हो और उसे, उसके टूट जाने का खतरा हो।

फिर वह रंगोली पर सभी हड्डियों को क्रमपूर्वक सलीके से सजाने लगी। धड़ की जगह धड़। कलाई की जगह कलाई। हाथ की जगह हाथ और टांगों की जगह टांगें।

अब रंगोली पर किसी व्यक्ति का पूरा कंकाल लेटा नजर आ रहा था। उस कंकाल के पैरों के नजदीक वह आलथी-पालथी मारकर बैठ गई। कमर बिल्कुल सीधी थी। गर्दन, छाती और सिर तना हुआ। आंखें बंद।

बालों के झरोखे से अब उसके होंठ कुछ बुदबुदाते नजर आ रहे थे। जैसे किसी मंत्र का जाप कर रही हो।

पता नहीं यह उसके मंत्रों के जाप का असर था या कोई और बात थी कि उल्लुओं और चमगादड़ों ने उड़ना बंद कर दिया।

छछुंदर भी अब इधर-उधर नहीं दौड़ रहे थे।

अभी उसकी आंखें बंद ही थीं, मंत्रों का जाप चल ही रहा था कि रंगोली पर सजी हड्डियां हिलने लगीं।

उनसे खड़खड़ाहट की आवाज पैदा होने लगी थी।

हॉल में ऐसी आवाजें गूंजने लगीं जैसे कोई मर्द कराह रहा हो।

बालों के झरोखों से खुलती आंखें नजर आईं।

वह उसी पोज में झुकी। अपना मुंह खोपड़ी के नजदीक ले गई और फुसफुसाते लहजे में बोली—"शुक्रिया मेरे महबूब। मेरे बुलाने पर अपने जिस्म में आने के लिए शुक्रिया।"

"मेरे पास जिस्म कहां है मेरे सपनों की रानी!" आवाज खोपड़ी से निकलती महसूस हो रही थी—"होता...तो तुझे अपनी बांहों में न भर लेता! वो तो तेरे बुलाने में ही इतनी श्रद्धा और शक्ति है कि मुझे अपने इस खंड-खंड जिस्म में आना पड़ता है। तेरे मंत्रों में ताप ही ऐसा है कि मैं कहीं भी होऊं। खिंचा चला आता हूं। तुझे क्या पता कि मैं तेरी मुहब्बत के लिए कितना तरस रहा हूं!"

"पता है मेरे महबूब। मुझे सब पता है। तभी तो इतना कठिन परिश्रम करके, इतनी कठिन तपस्याएं करके वो शक्तियां प्राप्त की हैं जिनके बल पर मैं तुम्हें इस खंडित शरीर में बुला सकती हूं। मगर शायद तुमने कभी अपनी महबूबा की तड़प को महसूस नहीं किया।

किया होता तो कभी-कभी मेरे बुलाए बगैर भी अपनी इन हड्डियों में आ जाया करते।"

"मैं तो कितना चाहता हूं...कितना चाहता हूं मेरी देवी।" मानव खोपड़ी से निकलने वाली आवाज से एक तड़पते हुए प्रेमी का दर्द टपक रहा था—"पर क्या तू नहीं जानती कि तेरी शक्तियों के बगैर मैं चाहकर भी नहीं आ सकता?"

"तुम्हारी कसम अभिजीत। तुम्हारे बगैर मैं अधूरी हूं।" विरह में सुलगती औरत की आवाज भर्रा गई थी। आंखों से आंसू निकलने लगे थे—"मुझे आज भी तुम्हारी बांहों का कसाव याद आता है। मुझे आज भी तुम्हारा मेरे होठों को चूमना याद आता है। मुझे आज भी तुम्हारी वो अदा याद आती है मेरे महबूब जब तुम मेरे अंग-अंग को चूमा करते थे। मैं मदहोश हो जाया करती थी।"

"उफ्फ! उफ्फ! मेरी महबूबा।" खोपड़ी से निकली तड़प चर्म सीमा पर पहुंच गई—"ऐसा है तो तू अपनी शक्तियों से मुझे शरीर क्यों नहीं दे देती! वो बांहें क्यों नहीं दे देती जिनमें मैं तुझे कस सकूं?"

"वही तो कर रही हूं मेरे सरताज, ये सारी सिद्धियां मैंने तुम्हें शरीर देने के लिए ही तो प्राप्त की हैं। तुम्हारे लिए ही तो अघोरी बनी हूं मैं! गौर से अपनी हड्डियों को देखो, इन पर गोश्त चढ़ने लगा है। आज फिर पूर्णिमा की रात है और देखो।" कहने के साथ उसने रंगोली के ऊपर लटके लड़के की तरफ इशारा किया था—"देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूं! एक और बच्चा। एक और बलि। इसका खून तुम्हारी हड्डियों पर चर्बी का इजाफा करेगा।"

खोपड़ी की आंखों के गड्ढे उल्टे लटके लड़के के जिस्म पर स्थिर थे। आवाज निकली—"अच्छा है। सुंदर है। लजीज होगा। मुझे इसका खून

चाहिए। मुझे प्यास लगी है मेरी रानी। बहुत प्यासा हूं मैं। मुझे खून पिला दे।"

"अभी लो मेरे दिलबर...अभी लो। होश में तो ले आऊं इसे!

क्योंकि बेहोश बलि से तुम्हारी प्यास नहीं बुझेगी।" कहने के बाद वह रंगोली के नजदीक रखी कांच की एक छोटी-सी शीशी उठाने के साथ उठकर खड़ी हो गई थी।

उसने जुनूनी अवस्था में शीशी का ढक्कन खोला। एक तरफ फेंका और शीशी को उल्टे लटके लड़के के नथुनों से अड़ा दिया।

लड़के के हलक से कराहें निकलने लगीं और जल्दी ही वह पूरी तरह होश में आ गया। अब उसके मुंह से दर्द में डूबी चीखें निकल रही थीं। आंखें हैरत से फटी हुई थीं और चेहरे के जर्रे-जर्रे पर खौफ के साए मंडरा रहे थे। चीखों के बीच वह अपनी आवाज को बड़ी मुश्किल से शब्द दे सका था—"क-कौन हो तुम? मुझे यहां क्यों लाई हो और इस तरह क्यों लटका रखा है?"

औरत बड़े ही डरावने अंदाज में खिलखिलाई और खोपड़ी के हलक से इतना भयंकर अट्टहास फूटा कि अपनी-अपनी छुपी हुई जगह से निकलकर उल्लू और चमगादड़ कर्कश आवाजों के साथ पुनः छटपटाते हुए से अंदाज में उड़ने लगे।

'चूं-चूं' करते छछुंदर और चूहे इधर-उधर दौड़ने लगे थे।

देखते ही देखते औरत के हलक से भी अट्टहास फूटने लगे।

ऐसा लग रहा था जैसे आदमखोर भेड़िया आकाश की तरफ मुंह उठाकर कहकहे लगा रहा हो।

जो औरत कुछ देर पहले खोपड़ी से बात करते वक्त विरह की आग में सुलगती प्रेयसी लग रही थी वह इस वक्त डायन-सी लगी।

लड़के के रोने और चीखने की आवाजें उन आवाजों के पीछे दब कर रह गई थीं। बड़े ही विभत्स अंदाज में चिंग्घाड़ती हुई औरत झुकी और अगले ही पल रंगोली के एक तरफ रखा फरसा उठाकर फिर सीधी खड़ी हो गई। अपने आपको पोजीशन किया और...एक चिंग्घाड़ के साथ उसका फरसे वाला हाथ बिजली की-सी गति से चला। एक ही झटके में लड़के की गर्दन धड़ से अलग होकर हॉल के एक कोने में जा गिरी थी।

बड़ा ही डरावना और विभत्स दृश्य था वह।

गर्दन कट जाने के बावजूद लड़के के मुंह से चीखें निकल रही थीं। वह ठीक वैसी ही स्थिति थी जैसे छिपकली की पूंछ कट जाने के बावजूद काफी देर तक तड़पती रहती है।

उल्टे लटके लड़के की गर्दन से गर्म खून का सैलाब यूं फूटा था जैसे पानी से भरे पाइप को अचानक काट दिया गया हो और उसकी गर्दन से निकला पूरा का पूरा खून धार बनकर सीधा खोपड़ी के खुले हुए मुंह में गिरने लगा।

उधर, हॉल के कौने में पड़ा लड़के का सिर तड़पता रहा इधर, उल्टा लटका उसका धड़ फड़फड़ाता रहा और खोपड़ी उसके गर्म और गाढ़े खून की धार से सराबोर होती रही।

हॉल में चटकारा लेने की ऐसी आवाज गूंजी जैसे किसी छोटे बच्चे ने शहद चाटने के बाद जीभ बजाई हो।

औरत का फरसे वाला हाथ एक बार फिर चला। इस बार लड़के की छाती फट गई थी और दूर-दूर तक खून के छींटे उछल गए। वे छींटे खुद औरत के नग्न जिस्म पर भी पड़े थे मगर वह मुंह फाड़कर चिल्लाने वाले अंदाज में इस कदर हंसी थी कि कोई इंसान देखे तो उसकी रगों में दौड़ता खून जम जाए मगर औरत के लिए तो मानो वह सब जश्न था। उसने उछलकर अपना बायां हाथ लड़के के सीने के अंदर घुसेड़ा और उसका दिल निकाल लिया।

वह अभी तक धड़क रहा था।

मगर औरत खून से लिसड़े दिल को इस तरह चबा-चबाकर खाने लगी जैसे बच्चा बरगर खा रहा हो।

ताजे खून से सराबोर खोपड़ी ने ऐसी डकार ली जैसे तृप्त हो गई हो और फिर उसके मुंह से ऐसी आवाज निकली जैसे टीन के पत्तर को पत्थर पर घिसा गया हो—"पांच बलि हो गईं। सात चाहिएं। दो बाकी रह गईं।"

औरत ने कहा—"मैं वो भी चढ़ाऊंगी मेरे महबूब।"

"अगर तुम कामयाब हो गईं तो मुझे शरीर मिल जाएगा मेरी महबूबा। कैद से मुक्ति मिल जाएगी मुझे और फिर मैं जहां चाहूंगा, तुम्हारे साथ प्रेम-क्रीड़ा कर सकूंगा।"

"वो दिन आएगा मेरे सरताज।" औरत ने वहशियाना अंदाज में कहा—"मैं कब से तुमसे प्रेम-क्रीड़ा करने के लिए तरस रही हूं।"

"और मैं भी।" खोपड़ी ने कहा।

"बस दो।" कहते वक्त औरत ने हॉल के गुंबद की तरफ देखा था—"दो पूर्णिमाएं और। हर पूर्णिमा को एक बलि। उसके बाद हमारा मिलन होगा। प्रेम-क्रीड़ा होगी। हम आनंद में डूब जाएंगे।"

"चाहो तो अगली पूर्णिमा को ही हमारा मिलन हो सकता है।"

"वो कैसे मेरे महबूब?"

"एक लड़की है, जो पूर्णिमा को ही पैदा हुई थी। इसलिए, यदि पूर्णिमा को उसकी बलि दी जाए तो दो बलियों के बराबर होगी।"

औरत ने आंखें तरेरकर पूछा था—"कौन है वो?"

"रिम्पी।"

"न...नहीं!" बाइस वर्षीय अंगद के मुंह से निकली चीख ने सारे मकान को झकझोर कर रख दिया था और...इस चीख के साथ ही वह बिस्तर पर उठ बैठा था। चेहरा ही नहीं, संपूर्ण जिस्म पसीने से इस कदर लथपथ था कि सारे कपड़े गीले हो गए थे।

चेहरा खौफ का गोला बना हुआ था।

आंखों में वहशत।

सांसें इस कदर तेज चल रही थीं जैसे मीलों दौड़ने के बाद अपने बिस्तर पर पहुंचा हो। बौखलाई हुई-सी अवस्था में वह डरी हुई आंखों से चारों तरफ देखने लगा।

नीले रंग के नाइट बल्ब के प्रकाश में वह उन दीवारों के अलावा किसी को न देख सका जिन पर जगह-जगह उसके अपने फोटो लगे हुए थे लेकिन उन्हें देखकर किसी को भी भ्रम हो सकता था कि वे प्रसिद्ध अभिनेता इमरान हाशमी के फोटो हैं।

उसकी शक्ल हूबहू इमरान हाशमी से मिलती थी। इसलिए उसे फिल्मों में इमरान के डुप्लिकेट का रोल भी मिल जाया करता था। हालांकि वह लगभग हर फोटो में मुस्करा रहा था मगर इस वक्त अपने ही फोटो उसे खुद को घूरते-से लगे।

अभी वह खुद को नियंत्रित करने की कोशिश कर ही रहा था कि एक बार फिर बुरी तरह चौंक पड़ा।

इस बार उसके चौंकने का कारण 'भड़ाक्' की जोरदार आवाज के साथ खुलने वाला कमरे का दरवाजा था।

"क-क्या हुआ? क्या हुआ अंगद?" उससे भी ज्यादा डरा हुआ अधेड़ आयु का मोहित बनर्जी दौड़ता हुआ अंदर दाखिल हुआ। इस वक्त उसके जिस्म पर केवल एक पैजामा और बनियान था।

उसके पीछे अधेड़ आयु की गंगोत्री भी बदहवास हालत में दौड़ती हुई आई थी। वे दोनों अंगद के मां-बाप थे।

वे सीधे अंगद के बैड की तरफ झपटे थे।

"प-पिताजी!" अंगद के मुंह से बस यही शब्द निकल सका।

गंगोत्री ने इस तरह अंगद को अपनी भुजाओं में भरकर सीने में भींच लिया जैसे वह छोटा-सा बच्चा हो।

"मुझे लगता है, तूने फिर वही सपना देखा।" गंगोत्री बोली।

"हां।" अंगद ने खुद को संभालने की कोशिश की—"पानी।"

मोहित बनर्जी ने तेजी से बैड की दराज पर रखा पानी का गिलास उठाकर उसे दे दिया। अंगद ने एक बार गिलास होठों से लगाया तो तभी हटाया जब खाली हो गया।

मोहित बनर्जी ने गिलास उसके हाथ से ले लिया था।

अंगद अपने दिमाग को डरावने सपने की गिरफ्त से निकालने का प्रयत्न करता बोला—"उसने पांचवीं बलि दे दी।"

"ये कैसा सपना है जो तुझे बार-बार चमकता है!" गंगोत्री ने ऐसे अंदाज में कहा जैसे उसका वश चले तो अंगद को नजर आने वाले सपने का खून पी जाए।

"और हैरत की बात है।" मोहित बोला—"उसे देखने के बाद तू इस कदर डर जाता है जैसे पांच-छः साल का छोटा बच्चा हो।"

"पता नहीं वो ऐसा कैसे करती है!" अंगद अभी-भी सपने में ही खोया हुआ था—"अभिजीत की आत्मा को वह उसकी हड्डियों में बुला लेती है और फिर उसे किसी बच्चे के खून से नहलाती है।"

"क्या इस बार तू उसका चेहरा देख सका?" मोहित ने पूछा।

"नहीं।" अंगद ने इंकार में गर्दन हिलाई—"इस बार भी नहीं।

लंबे बाल अंडरटेकर की तरह उसके चेहरे पर पड़े रहते हैं।"

"सपने तो सबको चमकते हैं मगर मैंने तो ऐसे किसी नासपीटे सपने के बारे में कभी नहीं सुना कि वह किसी को बार-बार चमकता हो।" रोष में भरी अंगद की मां कहती चली गई—"यह सपना बार बार मेरे ही बेटे को क्यों चमकता है?"

"समझ में नहीं आ रहा गंगोत्री। मैं खुद कई साइक्लोजिस्टों से मिल चुका हूं।" मोहित बनर्जी ने कहा—"उनसे वही सवाल किया जो तुम्हारे दिमाग में हमेशा घूमता रहता है मगर कोई संतुष्टिजनक जवाब न दे सका। सबका यही कहना है कि हमने तो पहले कभी कोई ऐसा केस नहीं देखा जिसके तहत एक ही आदमी को एक ही सपना बार-बार चमकता हो।"

"आप तेवतिया अंकल से क्यों नहीं मिलते?"

"इस बार उन्हीं से मिलूंगा।"

"देखा जाए तो यह एक ही सपना नहीं है पिताजी।" अंगद बोला था—"इन्हें एक ही सपने की शृंखला कहा जा सकता है। वह हर बार कब्र से अभिजीत की हड्डियां निकालकर टूटे हुए पुराने किले में ले जाती है और उसे एक बच्चे की बलि देती है पर वो बच्चा हर बार बदला हुआ होता है। तीन बच्चों की बलि मैं पहले देख चुका हूं, चौथी आज देखी जबकि उसकी बातों के मुताबिक आज उसने पांचवीं बलि दी है। इसका मतलब ये हुआ कि मैं पहली बलि न देख सका। और...और... ऐसा लगा जैसे वह अपने दिमाग पर जोर डालने की कोशिश कर रहा हो। मोहित बनर्जी ने पूछा—"क्या सोचने लगा बेटे?"

"मुझे लगता है, मैं उस बच्चे को पहचानता हूं।"

"किस बच्चे को?"

"जिसकी बलि आज रात दी गई।"

"अपने दिमाग पर ज्यादा जोर मत डाल बेटे।" किसी अनहोनी की आशंका से डरा मोहित चटर्जी कहता चला गया—"मैं तुझसे पहले भी कह चुका हूं। सपने कभी सच नहीं होते। तू जो यह मान बैठा है कि जैसा तूने देखा, वैसा कहीं न कहीं जरूर हुआ होगा, यह गलत है। सपनों में हमें सिर्फ अपनी कल्पनाएं दीखती हैं। वास्तव में वैसा कहीं नहीं हुआ होता।"

"और मैं तो कहती हूं कि वह कोई हाड़-मांस की बनी औरत नहीं हो सकती जो तुझे कब्र खोदकर हड्डियां निकालती और फिर उन्हें किसी बच्चे की बलि देती नजर आती है। जरूर वो कोई चुड़ैल या डायन होगी या कोई भूतनी।" गंगोत्री ने कहा था।

"पर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने उस बच्चे को कहीं देखा है और ऐसा भी जैसे मुझे याद आने वाला है कि उसे कहां...।" और, इतना कहते ही अंगद इस तरह रुका जैसे दिमाग में चिंगारी चटकी हो। फिर, अचानक चुटकी बजा उठा।

"याद आ गया। याद आ गया बाबा।" अंगद बैड से उछलकर खड़ा हो गया था—"मुझे याद आ गया कि वह बच्चा कौन है।"

"कौन है?" मोहित बनर्जी ने पूछा।

"मुझे उसका असली नाम नहीं मालूम।"

"मतलब?"

"वह 'एक थी डायन' नामक फिल्म में एक छोटा-सा रोल कर रहा है। मैंने सेट पर उसे कई बार देखा है। वो तो बहुत प्यारा लड़का है मगर...।" कुछ कहता-कहता अंगद खुद ही रुक गया।

उसके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए थे।

"क्या हुआ?" मोहित बनर्जी ने पूछा।

"भगवान न करे उसके साथ कुछ बुरा हुआ हो।" अंगद ने शून्य में आंखें स्थिर किए कहा। उसका चेहरा मुर्झाता चला गया था।

सुबह के दस बजते ही अंगद फिल्म सिटी पहुंच गया।

टैक्सी कैंटीन के पास रुकवाई क्योंकि उसे हॉल नंबर पांच में जाना था और हॉल नंबर पांच वहां से करीब ही था। उसे मालूम था कि 'एक थी डायन' की शूटिंग वहीं चल रही है।

हॉल नंबर पांच के करीब भीड़ लगी हुई थी।

वह भीड़ शूटिंग देखने और आर्टिस्टों से मिलने की ख्वाहिशमंद थी। अलग-अलग शहरों से लोग अपने परिवारों के साथ आए हुए थे। हॉल के बंद गेट पर सिक्योरिटी के लोग तैनात थे। वे लोगों को अंदर जाने से रोक रहे थे। जाहिर है कि अगर वे अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद न होते तो भीड़ हॉल के अंदर दाखिल हो जाती और फिर यूनिट के लिए शूटिंग करना मुश्किल हो जाता।

भीड़ के बीच से गुजरता अंगद हॉल के गेट की तरफ बढ़ा।

तभी, एक छोटी बच्ची ने उसे देख लिया और खुश होकर जोर से चीख पड़ी—"अरे, इमरान हाशमी! इमरान हाशमी!!"

उसकी चीख सुनकर न केवल उस बच्ची के पेरेंट्स ने बल्कि वहां मौजूद सारी भीड़ ने अंगद की तरफ देखा और उसके बाद तो भीड़ मानो अंगद पर टूट पड़ी। कोई उसे छूकर देख रहा था, कोई उसके आटोग्राफ मांग रहा था जबकि अंगद बार-बार ये शब्द दोहरा रहा था कि—'मैं इमरान हाशमी नहीं, उसका डुप्लिकेट हूं।'

मगर कोई सुनने को तैयार न था।

वह बच्ची और उसके पेरेंट्स बेचारे भीड़ में बहुत पीछे रह गए थे। अंगद के साथ ऐसा पहली बार नहीं हुआ था बल्कि अक्सर हो जाता था। इससे बचने का उसने एक उपाय भी निकाल रखा था मगर इस वक्त वह उस उपाय को इस्तेमाल किए बगैर ही यहां आ गया था। बड़ी मुश्किल से खुद को भीड़ से छुड़ाया और लोगों को यह समझाने में कामयाब हुआ कि वह इमरान नहीं है।

हकीकत जानने के बाद लोग मायूस हो गए।

अंगद तेजी से गेट की तरफ बढ़ा। उसने पीछे से उभरने वाली कई आवाजें सुनीं—'इमरान हाशमी से हूबहू मिलता है।'

'हां यार, मैं तो समझा वही है।'

तीसरी आवाज—'मुझे तो अब भी वही लग रहा है।'

सिक्योरिटी अफसर अंगद को पहचानता था इसलिए थोड़ा-सा गेट खोलता हुआ बोला—"आइए साब।"

अंगद ने हॉल में कदम रखा।

वहां 'मैजिक शो' का सैट लगा हुआ था।

एक तरफ स्टेज था, स्टेज के सामने पूरे हॉल में बहुत सारे सोफे और कुर्सियां लगी हुई थीं।

उन पर सैंकड़ों लोग बैठे थे।

वे सभी शूटिंग का हिस्सा थे।

हॉल की छत के नजदीक बल्लियों का जाल सा बिछा हुआ था।

उन पर जगह-जगह न केवल लाइटें लगी हुई थीं बल्कि उन्हें कंट्रोल करने वाले अनेक लोग भी चढ़े हुए थे।

रंगबिरंगी उन सभी लाइटों का फोकस इस वक्त स्टेज की ओर था और स्टेज पर इमरान हाशमी नजर आ रहा था। इमरान के सामने उसका मेकअपमैन आईना लिए खड़ा था और इमरान उसमें देखकर अपने बाल संवार रहा था।

स्टेज पर शर्लिना संबेल भी मौजूद थी। उसके हाथ में एक कागज था और वह बड़ी एकाग्रता के साथ अपने डायलाग याद करती स्टेज पर इधर-उधर चहलकदमी कर रही थी।

पीछे की तरफ एक पुरानी लिफ्ट का ढांचा नजर आ रहा था।

उसके ठीक सामने स्टेज के दाईं तरफ एक ऊंचे स्टेंड पर बहुत सारे चाकू रखे थे। फिल्म के डायरेक्टर कन्नन अय्यर ने अभी-अभी ऊंची आवाज में कहा था—"महेन्द्र, डिम लाइटें चाहिएं ताकि मैजिक शो का इफेक्ट आ सके।"

महेंद्र के निर्देशन में लाइटें कन्नन के मुताबिक सेट की जाने लगीं। दर्शक दीर्घा से गुजरता अंगद स्टेज की तरफ बढ़ा और शीघ्र ही स्टेज के नजदीक उस खाली स्थान में पहुंच गया जहां स्टेंड्स पर बहुत सारे कैमरे और लाइट्स लगी हुई थीं। 'एक थी डायन' का कैमरामैन सौरभ गोस्वामी भी वहीं खड़ा था।

फर्श पर तारों का जाल-सा बिछा हुआ था।

कुछ कैमरे स्टेज की तरफ देख रहे थे, कुछ हॉल में बैठे दर्शकों की तरफ। पतले-दुबले कन्नन अय्यर इस वक्त वहां मौजूद सभी लोगों से ज्यादा व्यस्त थे। वे जींस और टी-शर्ट पहने हुए थे। पैरों में पीटी-शू। सिर पर छज्जे वाली कैप। वे कभी सौरभ गोस्वामी को कुछ समझा रहे थे, कभी महेन्द्र को। कभी अपने असिस्टेंट प्रोसित रॉय को कोई निर्देश देते, तो कभी ताहा अनवर को।

अंगद ने चारों तरफ नजर दौड़ाई—न वह लड़का कहीं नजर आया, न ही एकता कपूर और विशाल भारद्वाज जो इस फिल्म के प्रोड्यूसर थे। लड़के के बारे में अब केवल कन्नन ही कुछ बता सकते थे और वे इतने ज्यादा व्यस्त थे कि अंगद ने उनके नजदीक जाना मुनासिब न समझा।

खुद भी फिल्म इंडस्ट्री से जुड़ा होने के कारण वह जानता था कि इस वक्त कन्नन से कोई भी बात की गई तो उनकी एकाग्रता भंग हो जाएगी और एकाग्रता भंग होने का मतलब था—उनके अब तक किए कराए पर पानी फेरना। उस अवस्था में वे भड़क भी सकते थे अतः अंगद खामोशी के साथ एक कैमरे के पीछे अंधेरे में खड़ा होकर वहां चल रही कार्रवाई को देखने लगा—

शॉट की सभी तैयारियां करने के बाद कन्नन ने इमरान से पूछा था—"आर यू रेडी इमरान?"

"रेडी।" कहने के साथ इमरान हाशमी ने अपने दोनों हाथों से ऊंचे स्टेंड पर रखे चाकुओं में से दो चाकू उठा लिए थे। न सिर्फ उठा लिए थे बल्कि उन्हें इस तरह तेजी के साथ घुमाने लगा था कि हवा में चाकुओं का पूरा कवच-सा बना नजर आने लगा।

वह उस सीन की रिहर्सल कर रहा था जो शूट होने वाला था।

कन्नन ने ऊंची आवाज में पूछा—"और तुम शर्लिना?"

"आय एम रेडी।" कहने के साथ वह लिफ्ट के ढांचे के करीब, वहां खड़ी हो गई थी जिसके पीछे लकड़ी का फट्टा लगा था।

वह फट्टा लिफ्ट की जाली के उस पार था।

"इमरान।" कन्नन ने कहा—"पहले भी कह चुका हूं। मुझे इतना लंबा शॉट एक ही कंट्यूनिटी में चाहिए। भले ही चाहे जितने रिटेक करने पड़ें। बीच में तोड़ने पर वो बात नहीं आएगी।"

"डोंट वरी कन्नन भाई।" इमरान बोला—"कोशिश करुंगा कि कोई रिटेक न हो।"

"वैरीगुड...और तुम सुनो!" कन्नन ने सौरभ गोस्वामी की तरफ घूमते हुए कहा—"दो कैमरे स्टेज की तरफ ऑन करके रखना और दो ऑडियंस की तरफ। मुझे दोनों तरफ का रिजल्ट चाहिए। जैसा दूसरे डायरेक्टर्स करते हैं, मैं ऑडियंस के रिएक्शंस अलग से नहीं लूंगा।"

सौरभ ने मुस्तैद अंदाज में गर्दन हिलाई।

"तुम भी तैयार हो न बेटी!" कन्नन ने केवल छः साल की उस लड़की से पूछा जो ऐसे कैमरे से लगभग सटी हुई खड़ी थी जो ठीक उसके फेस की ऊंचाई पर था।

लड़की ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

कन्नन ने फिर पूछा—"तुम्हें अच्छी तरह से याद है न कि कब अपना पूरा फेस कैमरे के ठीक सामने की तरफ लाना है और जोर से 'तैयार हूं' चीखना है?"

"याद है।" लड़की ने कहा।

"और फिर फौरन ही फेस कैमरे के सामने से हटा लेना है!"

"ये भी याद है।"

"और तुम?" कन्नन ने ऑडियंस की तरफ देखकर पूछा।

सबने एक साथ हाथ उठाकर कहा—"तैयार हैं।"

"सबको फेस पर ऐसे एक्सप्रेशन रखने हैं जैसे मैजिक शो को देखकर हैरान हो रहे हों और कब ताली बजानी है, याद है न!"

आवाजें आईं—"याद है। याद है।"

"अब मैं तुमसे पूछ रहा हूं लड़की।" कन्नन ने ऑडियंस के बीच, उस स्थान पर बैठी लड़की से पूछा जहां अंधेरा था—"तुम्हें याद है न कि कब क्या बोलना है?"

"तैयार हूं।" कहने के साथ लड़की अपनी सामने वाली कुर्सी की पुश्त के पीछे छुप गई थी।

"वैरीगुड।" कन्नन खुश हो गए, साथ ही एक बार फिर सौरभ से मुखातिब हुए—"मुझे सिर्फ उसकी आवाज चाहिए। कैमरे में नहीं आनी चाहिए वो।"

"कैमरे का मुंह उधर है ही नहीं।"

"ओके। सब तैयार हैं। तीन बार रिहर्सल हो चुकी है। उम्मीद है कि कोई गलती नहीं करेगा। समझो कि ये फाइनल टेक है।"

सबकी खामोश सहमति मिली।

इमरान ने दोनों चाकू वापस स्टैंड पर, दूसरे चाकुओं के बीच रख दिए थे। शर्लिन लकड़ी के फट्टे से पीठ टिकाकर सीधी खड़ी हो गई थी। इमरान की आंखें उसी पर जमी थीं।

"साइलेंस।" कन्नन की एक असिस्टेंट ताहा अनवर नेजोर सेकहा। हॉल में ऐसा सन्नाटा छा गया कि सुई भी गिरे तो बम के धमाके जैसी आवाज हो। प्रोसित रॉय बोला—"लाइट।"

कन्नन को जो लाइटें चाहिएं थीं, वे ऑन हुईं। बाकी ऑफ हो गई थीं। प्रोसित रॉय ने पुनः कहा—"कैमरा।"

कैमरे ऑन हो गए।

प्रोसित रॉय फिर बोला—"साऊंड।"

साऊंट रिकार्डिस्ट ने अपने यंत्र ऑन कर दिए।

स्टेज पर क्लेप लिए एक लड़का नजर आया। क्लेप पर 'एक थी डायन' 12.6.12, सीन-2 और टेक-1 लिखा हुआ था। लड़के ने क्लेप मेन कैमरे के सामने किया। वो सब बोला जो क्लेप पर लिखा था और जोर से क्लेप देकर पीछे हट गया।

दृश्य शूट होना शुरु हो गया था।

फिल्म में जादूगर बोबो(इमरान हाशमी) की असिस्टेंट का रोल करने वाली लड़की स्टेज पर आई। उसने इमरान की आंखों पर काली पट्टी बांधी और खामोशी के साथ चली गई।

पट्टी बंधने के बाद इमरान ने स्टेंड से दो चाकू उठाए। एक बाएं हाथ से, दूसरा दाएं हाथ से। दोनों से तेजी के साथ करतब करता हुआ बोला—"जमूरे, होश है—होशियार है?"

"होशियार हूं।" लिफ्ट के जाल से सटी शर्लिना ने कहा। इमरान बोला—"आर है कि पार है?"

"प्यार है।"

"जान देने को तैयार है?"

ऑडियंस के बीच अंधेरे में बैठी लड़की ने जोर से -'तैयार हूं' कहा और अगली कुर्सी की पुश्त के पीछे छुप गई। इमरान ने आंखों पर पट्टी बंधी होने के बावजूद आवाज की दिशा में देखा। ऐसे एक्सप्रेशन दिए जैसे कोई नजर न आया हो।

थोड़े आश्चर्य के एक्सप्रेशन भी मिक्स थे। जबकि हॉल में मौजूद ऑडियंस ने कोई एक्सप्रेशन नहीं दिए। सब स्टेज की तरफ देख रहे थे, जैसे लड़की की आवाज इमरान के अलावा किसी ने न सुनी हो।

इमरान ने ऐसे एक्सप्रेशन दिए जैसे थोड़ा डिस्टर्ब हुआ हो मगर फिर हाथ में मौजूद चाकुओं के करतब दिखाने लगा। और फिर तेज आवाज में बोला—"जमूरे, जान देने को तैयार है?"

छः साल की लड़की तेजी के साथ अपना फेस कैमरे के मुंह पर ले गई और जोर से 'तैयार हूं' कहकर साइड में हट गई।

इमरान के चेहरे पर घबराहट के भाव उभरे मगर चाकुओं का करतब चालू रखा। अब इमरान के चेहरे पर पसीने नजर आने लगे थे। वह हांफने लगा था लेकिन ऐसा भी नजर आ रहा था कि वह अपनी एकाग्रता बनाए रखने की कोशिश कर रहा है।

उसने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

फिर अचानक घूमा और शर्लिना की तरफ चाकू फेंका। चाकू शर्लिना की गर्दन से कुछ मिलीमीटर दूर लकड़ी में धंसा।

अब उसने एक के बाद एक चाकू फेंकने शुरु कर दिए। चाकू शर्लिना को कोई भी नुकसान पहुंचाए बगैर उसके जिस्म के दोनों तरफ लकड़ी में घुसते रहे। इधर, ऑडियंस ने अपना रोल प्ले किया यानी जोर-जोर से तालीं बजानी शुरु कर दी।

ऑडियंस भले ही न जान सकी हो लेकिन सेकिंड लास्ट चाकू शर्लिना के कान को जख्मी करने के बाद लकड़ी में धंसा था।

शर्लिना ने जाहिर नहीं किया कि ऐसा हुआ है।

वह बहादुरी के साथ खुद को संभाले रही। असल में वो सब भी फिल्म के सीन का हिस्सा था।

"गुड...वैरीगुड। मार्वलस शॉट इमरान।" खुशी में डूबे कन्नन के इन शब्दों के साथ कैमरे ऑफ हो गए। सभी लाइटें ऑन हो गईं।

वह कहे चला जा रहा था—"मार्वलस शॉट। मेरा दावा है इमरान। आज से पहले फर्स्ट टेक में इतना लंबा और एक्यूरेट शॉट किसी ने नहीं दिया होगा। कांग्रेचुलेशन।"

इस बार ऑडियंस ने जो ताली बजाई वह शूटिंग का हिस्सा नहीं थी बल्कि इमरान की तारीफ में बजी थी।

इसमें शक नहीं कि उसने इतनी तारीफ के लायक शॉट दिया था कि कैमरे के पीछे खड़ा अंगद भी यह भूलकर ताली बजा उठा कि वह यहां किस काम से आया है।

सिर झुका-झुकाकर सबका शुक्रिया अदा करने के बाद इमरान मेकअप रूम की तरफ चला गया।

शर्लिना ने भी वैसा ही किया।

अंगद समझता था कि यह टाइम थोड़ा रिलीफ का है। अगले कुछ ही मिनटों में कन्नन अगले शॉट की तैयारी में व्यस्त हो जाएंगे।

यह सोचकर वह उनकी तरफ बढ़ना ही चाहता था कि लपकते हुए से कन्नन खुद उसके नजदीक आते बोले—"तुम आज क्यों आए हो अंगद? आज तो तुम्हारा कोई काम नहीं है न!"

"ओह! आपने मुझे देख लिया था सर?"

"तभी, जब तुम हॉल में आए थे मगर उस वक्त मैं बिजी था।"

अंगद ने फिल्म में छोटा-सा रोल कर रहे लड़के के बारे में पूछा।

"उसका काम तो खत्म हो चुका है। उसके सभी सीन शूट कर चुका हूं मैं। पर तुम उसे क्यों पूछ रहे हो?"

"ऐसे ही सर, क्या मैं उसका नाम जान सकता हूं?"

"अंकुर।"

"कहां रहता है?"

"वो मुंबई के फेमस इंडस्ट्रियलिस्ट मिस्टर धनपत का बेटा है।

प्रोफेशनल आर्टिस्ट नहीं है। एकता जी एक बार चीफ गेस्ट बनकर उसके स्कूल में गई थीं और उसे कोई प्ले करते देखा था। तुम तो जानते ही हो, एकता जी न केवल टेलेंट को पहचानती हैं बल्कि उनकी बहुत कद्र भी करती हैं। उन्होंने धनपत से बात की। धनपत तैयार नहीं थे लेकिन जब एकता जी ने विश्वास दिलाया कि शूटिंग की वजह से अंकुर की पढ़ाई का कोई नुकसान नहीं होगा तो वे इंकार न कर सके मगर, क्या परफॉरमेंस दी है उस लड़के ने! कई बार तुमने भी तो उसे कैमरे के सामने एक्टिंग करते देखा है! उसकी वजह से कभी कोई रिटेक नहीं हुआ।"

"मुझे उसका एड्रेस चाहिए सर।"

"क्यों?"

"ए-ऐसे ही। कोई काम है।"

"एड्रेस मुकुल शर्मा के पास होगा, उससे ले लो।" कहने के बाद वे अपने चीफ असिस्टेंट प्रोसित रॉय की तरफ बढ़ गए और उसके करीब पहुंचकर अगले सीन के बारे में डिस्कस करने लगे।

अंगद की नजरें सैट पर मुकुल शर्मा को ढूंढने लगी थीं। वह मुकुल शर्मा जो 'एक थी डायन' का राइटर भी था। वह उसे स्टेज के दाईं तरफ एक कुर्सी पर बैठा नजर आया।

अंगद उसकी तरफ बढ़ गया।

"आपको कब पता लगा कि अंकुर किडनेप हो गया है?"

"क-कल शाम।" धनपत थोड़ा हकला गया था—"हालांकि किडनेप तो वह कल दोपहर, स्कूल से वापस लौटते वक्त ही हो गया था। पर किडनेप हुआ है, इस बात का यकीन मुझे शाम तक हुआ।"

"इस पेंचदार बात का मतलब?" कहते वक्त इंस्पेक्टर काले खां ने दाएं हाथ को मुट्ठी की शक्ल दे रखी थी और उस मुट्ठी की तर्जनी और बीच वाली उंगली के बीच एक सुलगी हुई सिगरेट का निचला सिरा था। वह मुट्ठी को अपने मुंह तक ले गया और सिगरेट में इतना जोरदार सुट्टा लगाया कि उसके ऊपरी सिरे पर सुलग रही अग्नि किसी बहुत बड़े जुगनू की मानिंद चमक उठी। उसके बाद मुट्ठी को मुंह से हटाते हुए उसने उसी हाथ के अंगूठे और तर्जनी से इतनी जोरदार चुटकी बजाई थी कि सुट्टे से बनी सारी राख ड्राइंगरूम के संगेमरमरी फर्श पर जा गिरी।

धनपत ने राख पर एक नजर डालने के साथ कहा—"ड्राइवर ने बताया कि जब वह अंकुर को स्कूल से ला रहा था तो रास्ते में शालू मिली। उसे देखकर अंकुर खुश हो गया। शालू ने ड्राइवर से कहा तुम घर जाओ। हम मौज-मस्ती करके आते हैं। क्यों अंकुर? तो अंकुर भी फौरन न केवल तैयार हो गया बल्कि खुश हो गया।"

"और ड्राइवर अंकुर को उसे सौंपकर वापस आ गया?"

"हां।"

"इसका मतलब ड्राइवर शालू को न सिर्फ जानता था बल्कि यह भी मानता था कि अंकुर को उसके पास छोड़ा जा सकता है!"

"तभी तो वह अंकुर को उसके पास छोड़कर वापस आ गया!"

"उसके बाद?"

"शाम तक तो मैं यही सोचता रहा कि शालू उसे लेकर कहीं पिकनिक विकनिक पर निकल गई होगी। लेकिन जब बार-बार की कोशिश के बावजूद उससे मोबाइल पर कांटेक्ट नहीं हो पाया और न ही उन दोनों में से कोई वापस आया तो मेरा माथा ठनका।"

"शालू किस वस्तु का नाम हुआ?"

"मेरी स-सेक्रेटरी है।"

धनपत 'सेक्रेटरी' कहते वक्त कुछ ज्यादा नहीं अटका था मगर उसकी जुबान ने थोड़ी अंगड़ाई जरूर ली थी और...वो अंगड़ाई घाट-घाट का पानी पी चुके इंस्पेक्टर काले खां के चौड़े मस्तक पर किसी शूल की मानिंद जा चुभी।

परिणामस्वरूप—काले खां ने अपनी काली और अनुभवी आंखों से बहुत ही गौर से धनपत को देखा और...जब धनपत उसके यूं देखने पर थोड़ा सकपकाया तो उस सकपकाहट को 'कैच' कर चुके इंस्पेक्टर काले खां की मोटी-मोटी भंवों में से एक, दाईं वाली भौं थोड़ी ऊपर उठ गई।

ज्यादा सिगरेट पीने के कारण काले पड़ चुके होठों पर ऐसी मुस्कान उभरी थी जैसे काफी कुछ समझ में आ गया हो। चुटकी बजाते हुए बड़े ही लच्छेदार लहजे में कहा था उसने—"इन 'सिक्रेट्री' महोदया का आपके बेटे से क्या ताल्लुक हुआ?"

"वो शालू से हिल गया था। शालू भी तो उससे खेलती रहती थी। बच्चों का क्या है! जिसने प्यार दिखाया। उसी के हो लिए।"

"पर सिक्रेट्री तो आफिस में होती है और अंकुर घर में या स्कूलमें रहता होगा। फिर उसने अंकुर को अपना प्यार कब दिखा दिया?"

"कभी-कभी वो यहां भी आ जाया करती थी।"

"यहां! यानी आपके बंगले पर?"

"जी।"

"क्यों?"

"मतलब?"

"सवाल आपको नहीं मुझे करने हैं। क्योंकि मैं पुलिस इंस्पेक्टर हूं और आप वो हैं, दुर्भाग्य से जिसका लख्ते-जिगर किडनेप हो गया है।" चुटकी बजाने के साथ काले खां एक ही सांस में कहता चला गया—"आपका फायदा सवाल करने में नहीं बल्कि मेरे सवालों के जवाब देते चले जाने में है क्योंकि मुझे उन्हीं से भनक लगेगी कि आपके कलेजे के टुकड़े को किसने किडनेप किया है।"

"म-मेरा मतलब ये था कि भला ये क्या सवाल हुआ कि शालू बंगले पर क्यों आया करती थी?"

"सरासर सवाल हुआ जनाब। आप इंटरनेट पर देख सकते हैं। गूगल पर भी यही लिखा मिलेगा कि काले खां के इस सवाल का बड़ा गहरा मतलब है।" एक बार फिर उसने अपनी मुट्ठी में दबी सिगरेट की राख झाड़ने वाले अंदाज में चुटकी बजाई थी। सिगरेट के ऊपरी सिरे पर राख हो या न हो मगर उसे चुटकी बजाने की आदत थी। बड़े प्यार से कहा था उसने—"खैर, इंटरनेट खोलकर देखने में तो शायद आपको टाइम लग जाए इसलिए मैं ही बता देता हूं—मैं ये जानना चाहता हूं कि भले ही कभी-कभी ही सही, 'सिक्रेट्री' यहां यानी आपके बंगले पर क्यों आया करती थी?"

"सिक्रेट्री नहीं सेक्रेटरी।"

"मैं सेक्रेटरी को सिक्रेट्री ही कहता हूं क्योंकि जिसकी वो सेक्रेटरी होती है उसकी बहुत सी सीक्रेट बातों को जान जाती है।"

धनपत थोड़ा बौखला गया—"ऐसा कुछ भी नहीं था।"

"एक्सपीरिएंस तो मेरा यही कहता है।"

"मेरे ख्याल से तुम ऐसे सवाल कुछ ज्यादा ही कर रहे हो मिस्टर काले खां जिनका अंकुर के किडनेप से कोई संबंध नहीं है।"

"गलत! बिल्कुल ही गलत ख्याल है आपका। कम से कम अभी तक मैंने ऐसा एक भी सवाल नहीं किया है। मगर आप हैं कि मुझे घुमाए ही चले जा रहे हैं। कई बार की दरख्वास्त के बावजूदअभी तक आपने मेरे इस सीधे-सादे सवाल का जवाब नहीं दिया कि जिस सिक्रेट्री का ताल्लुक सिर्फ आपके आफिस से होना चाहिए था वह कभी-कभी यहां क्यों आ जाया करती थी?"

"एक बार मैंने ही उसे यहां बुलाया था।" अंदाज से जाहिर था कि उसे ये शब्द कहने पड़े। काले खां का तीखा सवाल—"क्यों?"

"होता है भई, कभी-कभी ऐसा होता है कि मालिक की तबियत खराब होती है या उसका मूड आफिस जाने का नहीं होता मगर आफिस के कुछ जरूरी काम होते हैं जिनके बारे में सेक्रेटरी को ब्रीफ करने के लिए उसे घर भी बुलाना पड़ता है।"

"तो किसी दिन आपकी तबियत नाशाद थी, इसलिए आपने उसे बंगले पर बुला लिया था!"

"हां।"

"और एक ही बार में उसने अंकुर पर इतना प्यार उड़ेल दिया कि वह उस पर हिल गया?"

"ओफ्फो इंस्पेक्टर, एक बार में नहीं हुआ वैसा।" काले खां के सवालों ने धनपत को झल्लाने पर मजबूर कर दिया—"एक बार वह यहां आई और मेरी मिसेज से मिली तो वे आपस में घुलमिल गईं।

उसके बाद अक्सर आने लगी।"

"आपकी मिसेज से मिलने?" उसने फिर चुटकी बजाई।

"हां।"

"आपसे मिलने नहीं?"

"सामने होता था तो मैं भी मिल ही लेता था।"

"क्या मैं इस संबंध में आपकी मिसेज से बात कर सकता हूं?"

"म-मिसेज से!" धनपत चिंहका—"क्यों?"

काले खां ने जरा भी झूठ नहीं बोला। कहा—"मुझे उनसे यह पुष्टि करनी है कि सिक्रेट्री यहां उनसे मिलने आती थी या आपसे?"

"य-ये क्या बात हुई?"

"फिर सवाल?"

"पर ये बात क्या हुई? शालू मुझसे मिलने आती हो या सरिता से। इससे क्या फर्क पड़ता है? मतलब इतना है कि वह यहां आती थी इसलिए अंकुर उससे घुलमिल गया था। यह बात ड्राइवर को भी मालूम थी, तभी तो वह अंकुर को उसके पास छोड़ आया!"

"सरिता आपकी मिसेज का नाम हुआ?"

"हां।"

"बुलाइए उन्हें।"

"क-कमाल की बात कर रहे हो इंस्पेक्टर, वो बेचारी भला क्या बताएगी? उसका तो वैसे ही रोते-रोते बुरा हाल है।"

"वे बताएंगी। अगर उन्हें अपना अंकुर चाहिए तो मेरे सवालों का जवाब देना होगा उन्हें।"

"आप अजीब बात...

"मेरे ख्याल से आप नहीं बुलाएंगे। मुझे ही अपने दरोगा जी को भेजकर बुलाना पड़ेगा।" काले खां ने धनपत की बात काटकर कहा और फिर उसे कुछ भी बोलने का मौका दिए बगैर बगल में खड़े दरोगा की तरफ घूमकर बोला—"राजपाल, इनकी पत्नी को यहां ले आ। उनसे कहना—इंस्पेक्टर साहब को यह शक है कि अंकुर को शालू ने किडनेप किया है। इस संबंध में मैं उनसे कुछ पूछना चाहता हूं। मेरे ख्याल से वे दौड़ी चली आएंगी।"

राजपाल तिड़ी हो लिया।

धनपत काले खां की तरफ देखता रह गया था। चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे बहुत कुछ कहना चाहता हो मगर जो कहना चाहता हो उसके लिए शब्द न मिल रहे हों।

काले खां एक बार फिर सिगरेट वाली मुट्ठी को अपने मुंह तक ले गया और पहले जैसा जोरदार सुट्टा मारने के बाद हाथ मुंह से हटाते हुए चुटकी बजाई। बोला—"एश्ट्रे है?"

"क-क्या?" तंद्रा भंग हो जाने के कारण धनपत चौंका।

"एश्ट्रे! जिसमें सिगरेट का टोटा डाला जाता है।"

"मैं सिगरेट नहीं पीता।"

"मतलब नहीं है! तो क्या मैं इसे फर्श पर डाल सकता हूं?"

धनपत ने इशारे से स्वीकृति दी।

काले खां ने मुट्ठी ऊपर उठाकर एक नजर सिगरेट पर डाली।

एक और सुट्टा लगाया। चुटकी बजाई और उसी को देखता हुआ बोला—"मन तो नहीं कर रहा इसे शहीद करने को क्योंकि अभी आधी बाकी है मगर, लेडीज के सामने सुट्टा लगाना बदतमीजी की श्रेणी में आता है इसलिए।" कहने के बाद उसने आधी सिगरेट फर्श पर डाली और अपने चमकदार लाल जूते की नोंक से कुचल दी। बहुत कुछ कहने की इच्छाएं दिल में लिए धनपत काले खां की तरफ देखता रह गया था। उस काले खां की तरफ जो अपने नाम के अनुरूप उल्टे तवे की तरह काले रंग का था। उस काले खां की तरफ जिसकी उम्र तीस और पैंतीस के पेटे में थी। उस काले खां की तरफ जो करीब छह फुटा था। उस काले खां की तरफ जिसका गठा हुआ जिस्म बता रहा था कि वह नियमित जिम जाता है। उस काले खां की तरफ जिसके चौड़े चेहरे पर नोकीली नाक। गिद्ध जैसी आंखें। मोटी भंवें और मोटे-मोटे होंठ थे और उस काले खां की तरफ जिसके गाल जरूरत से कुछ ज्यादा ही फूले हुए थे।

ऊपर वाला ही जाने कि काले खां की गिद्ध जैसी आंखों से कुछ छुपता भी था या नहीं क्योंकि उसने लगातार अपनी तरफ देख रहे धनपत से पूछा था—"कुछ कहना चाहते हो?"

"तुमने कहा कि तुम्हें शालू पर शक है।"

"गलत कह दिया क्या?"

"किस बेस पर कहा ऐसा?"

"आपको नहीं लगता?"

"लगता तो नहीं कि शालू ऐसा करेगी।"

"क्यों नहीं लगता?" काले खां ने अपने हर शब्द पर जोर दिया था—"जब वही उसे लेकर गायब हुई है तो क्यों नहीं लगता?"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी ने उन दोनों ही को...

"हां। ऐसा भी हो सकता है। आधा भरा हुआ गिलास किसी किसी को आधा खाली भी नजर आता है।"

"मैं इस जुमले का मतलब नहीं समझा।"

"मेरे जुमलों के मतलब जब तक समझ में आते हैं तब तकब गाड़ी काफी आगे निकल चुकी होती है।"

धनपत ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि राजपाल और सरिता ने ड्राइंगरूम में कदम रखा।

गोरे रंग की सरिता करीब सैंतीस वर्षीय एक खूबसूरत औरत थी। उसके व्यक्तित्व से ही धनाढ्यपना छलकता था। अपने नपे तुले जिस्म पर सिफॉन की कीमती साड़ी पहने हुए थी वह मगर इस वक्त उसका चेहरा और सुर्ख आंखें बता रही थीं कि रोते-रोते उसका बुरा हाल है। कमरे में प्रविष्ट होते वक्त भी उसने अपनी साड़ी के पल्लू से कपोल और आंखें पौंछी थीं।

उसे सांत्वना देने की गर्ज से काले खां ने कहा—"सबसे पहले मैं आपको ये बता दूं सरिता जी कि आपके अंकुर को कम से कम जान का कोई खतरा नहीं है क्योंकि मेरे ख्याल से उसे आप लोगों से कुछ पैसे ऐंठने के मकसद से गायब किया गया है।"

उसने बस इतना ही कहा—"भगवान करे ऐसा ही हो।"

"ख्याल तो मेरा भी यही है।" धनपत बोल उठा—"पर फिरौती का कोई फोन तो आए! कल शाम से इंतजार करते-करते ये वक्त हो गया। सारी रात निकल गई और आज के भी अब दस बज गए हैं। वे जो मांगेंगे, मैं दे दूंगा।"

"मुझे मालूम है आप ऐसा ही करेंगे।" काले खां ने उसके सुर से सुर मिलाते हुए कहा—"इसलिए मालूम है क्योंकि आप जैसे धनपति ऐसा ही करते हैं। जबकि मेरे ख्याल से ऐसा बिल्कुल नहीं किया जाना चाहिए।"

सरिता बोल पड़ी—"अंकुर के बगैर हमारे लिए ये धन-दौलत किस काम की?"

"आप जैसे धनाढ्य लोगों की इसी कमजोरी को तो समझते हैं किडनेपर लोग! इसीलिए तो वे पैसे वाले लोगों के बच्चों को किडनेप करते हैं। जबकि आप जैसे लोग अगर इस कमजोरी को एक तरफ रखकर थोड़ी सख्ती से पेश आएं तो मंजर बदल सकता है।"

"तुम्हारा कोई बच्चा है?" धनपत ने पूछा।

"चार।"

"अगर कोई उनमें से किसी को किडनेप कर ले तो?"

"फिरौती तो बिल्कुल नहीं दूंगा मैं। हां, किसी भी तरह किडनेप करने वाले तक पहुंचकर उसे गोली से जरूर उड़ा दूंगा।"

"प-प्लीज...प्लीज इंस्पेक्टर।" सरिता ने गिड़गिड़ाने के साथ हाथ जोड़ दिए थे—"हमारे अंकुर के बारे में ऐसा मत सोचना। अगर उन्होंने उसे कोई नुकसान पहुंचा दिया तो मैं जिंदा न रह सकूंगी।"

काले खां चुप रह गया। वह समझता था कि इस मामले में एक मां से बहस करने का कोई लाभ नहीं है।

सरिता ने पूछा—"आपको मुझसे क्या पूछना था?"

"क्या शालू आपकी सहेली थी?"

सरिता ने उसके सवाल का जवाब देने की जगह बड़े ही कातर अंदाज में धनपत की तरफ देखा था।

"प्लीज सरिता जी।" काले खां ने तुरंत कहा—"उनकी तरफ नहीं, मेरी तरफ देखकर जवाब दीजिए।"

"वो मेरी नहीं, इनकी सहेली थी।" ये शब्द सरिता ने बहुत ही तीखे अंदाज में कहे थे।

"सरिता!" धनपत का अंदाज उसे डांटने वाला था—"तुमने फिर वही राग अलापना शुरु कर दिया?"

"आप बीच में नहीं बोलेंगे मिस्टर धनपत।" काले खां ने बहुत ही कर्कश लहजे में चेतावनी दी थी—"मैं सरिता जी से बात कर रहा हूं और मुझे इन्हीं के जवाब चाहिएं।"

"तुम समझ नहीं रहे। औरतों का तो काम ही शक करना होता है। और फिर, इन बातों का अंकुर की गुमशुदगी से क्या लेना-देना?"

"मुझे लगता है कि उसकी गुमशुदगी का इन्हीं बातों से लेना देना है।" सख्ती से कहने के बाद वह सरिता की तरफ मुखातिब हुआ—"आपने कहा शालू आपकी नहीं मिस्टर धनपत की सहेली थी जबकि इनका कहना ये है कि वह बंगले पर आपसे मिलने आया करती थी। इन्होंने तो अपनी तबियत नाशाद होने के कारण केवल एक बार उसे यहां बुलाया था। उसके बाद आपकी और उसकी दोस्ती हो गई और वो आपसे मिलने आने लगी।"

"झूठ बोल रहे हैं ये।" सरिता का गुबार फूट पड़ा—"मैं तो उसका यहां आना जरा भी पसंद नहीं करती थी। ये ही किसी न किसी बहाने से उसे बुला लिया करते थे। फिर वह भी बगैर इनके बुलाए भी, अपनी मर्जी से भी आने लगी। बहाना अंकुर था। यह कि उसे अंकुर से प्यार हो गया है। वह अंकुर के लिए चॉकलेट और खिलौने लाने लगी। बच्चे का क्या है! जो रिझाता है, उस पर रिझ जाता है। जबकि उसका यह सब करना मुझे जरा भी पसंद नहीं था। मैंने कई बार अंकुर से कहा कि वह उस डायन के खिलौने न लिया करे मगर वो बड़ी मासूमियत से कहता—क्यों मम्मी? आप ऐसा क्यों कहती हैं? शालू आंटी तो मुझे कितना प्यार करती हैं। वो तो बच्चा था। ऊंच-नीच की बातों को नहीं समझ सकता था लेकिन इनकी अक्ल पर कैसे पत्थर पड़ गए थे! खुद इन्हीं से मैंने कितनी बार कहा कि मुझे अंकुर से उस डायन का इतना घुलना-मिलना पसंद नहीं है। हर बार उल्टा इन्होंने मुझे ही डांट दिया। कहते—तुम क्यों बेवजह जेलस फील करती हो? अंकुर की मां तो आखिर तुम ही रहोगी। वो बेचारी यदि अंकुर से प्यार करती है तो कौनसा पहाड़ टूट पड़ा! हमारा अंकुर बच्चा ही इतना प्यारा है कि उस पर किसी को भी प्यार आ जाए। इस बात को लेकर अक्सर मेरे और इनके बीच तकरार हो जाया करती थी।"

"क्या शक था आपको?" काले खां ने पूछा—"वह अंकुर से क्यों घुलमिल रही थी?"

सरिता ने एक बार फिर कातर दृष्टि धनपत की तरफ देखा जबकि ऐसा होते ही काले खां ने कहा—"उनकी तरफ मत देखिए सरिता जी, अगर आप अपने बेटे को सही सलामत अपनी गोद में देखना चाहती हैं तो मेरे सवालों का सच्चा जवाब दीजिए।"

"उसकी नजर इन पर थी।"

धनपत दहाड़ा—"सरिता।"

"आप चुप रहेंगे मिस्टर धनपत।" काले खां गुर्राया और फिर उसे कुछ भी कहने का मौका दिए बगैर सरिता से बोला—"इन पर नजर से क्या मतलब हुआ?"

"वह इन्हें मुझसे छीनना चाहती थी।"

"सरिता तुम...

"अब अगर आपने एक भी लफ्ज कहा तो मैं आपको इस ड्राइंग रूम से बाहर निकलवा दूंगा मिस्टर धनपत।" काले खां का लहजा चेतावनी देने वाला था—"यकीन रखें, इस वक्त मुझे आपको आप ही के ड्राइंगरूम से बाहर निकलवा देने का हक है क्योंकि मैं एक मासूम बच्चे के किडनेपर तक पहुंचने की कोशिश कर रहा हूं और आप उसमें बाधा डाल रहे हैं।"

"मैं? मैं अपने बेटे के किडनेपर तक पहुंचने में बाधा डालूंगा?

तुम होश में तो हो इंस्पेक्टर?"

"ऐसा आप जानबूझकर नहीं, अंजाने में कर रहे हैं। केवल इस खौफ के कारण कर रहे हैं क्योंकि मेरे सामने कुछ ऐसी बातें आ रही हैं जिन्हें आप मेरे सामने नहीं आने देना चाहते मगर, बात को समझने की कोशिश कीजिए मिस्टर धनपत। जो बातें सरिता जी कह रही हैं, वे बहुत छोटी हैं। इस वक्त सबसे बड़ी बात ये है कि आपका बेटा गायब है और हमें उस तक पहुंचना है और वह शायद आपकी पत्नी की शंकाओं के पीछे ही कहीं छुपा है।"

धनपत उबल जरूर रहा था मगर कुछ कहते नहीं बन पड़ा या ये भी कहा जा सकता है कि वह किसी हद तक काले खां से सहमत हो गया था। उस काले खां से जो एक बार फिर सरिता की तरफ पलटकर बोला—"सरिता जी, आपके मन में जो है, खुलकर कहिए क्योंकि यकीन मानिए, मुझे इन्हीं बातों से अंकुर तक पहुंचने में मदद मिलेगी। आपको क्यों लगता था कि वह आपके पति को आपसे छीनना चाहती है?"

"वह इनकी तरफ देखती ही ऐसी नजरों से थी।"

"कैसी नजरों से?"

"उन नजरों को बयान नहीं किया जा सकता। महसूस किया जा सकता है। खासतौर पर एक औरत उन नजरों को खूब महसूस करती है। उन नजरों में बलिहारी होने जैसा भाव होता है।"

"क्या आपने कभी इनकी नजरों में भी ऐसा कुछ देखा?"

"नजरों में तो नहीं देखा लेकिन...

"लेकिन?"

"मुझे लगता था कि ये भी उसे पसंद करते हैं।"

"कैसे और क्यों लगता था?"

"इससे पहले भी इनकी कई सेक्रेटरियां रही हैं। घर पर कभी कोई नहीं आई। उसी ने आना शुरु किया था। मैं इनसे पूछती थी कि ये घर क्यों आती है तो ये कह देते—इसमें क्या हो गया? जब मैंने इनके प्रति उसकी नजरें देखीं तो सख्ती से कहा कि वह घर में नहीं आनी चाहिए बल्कि मैंने तो यह भी कहा कि उसे फौरन नौकरी से निकाल दो परंतु नौकरी से निकालना तो दूर, इन्होंने उसका घर में आना भी बंद नहीं किया और...जैसा कि पहले भी बता चुकी हूं, मुझे उसका अंकुर से घुलना-मिलना पसंद न था। ये ही उसे बढ़ावा दे रहे थे। बहुत हंस-हंसकर बातें करते थे उससे। कहते थे कि तुम बेवजह उससे जल रही हो। इन्हीं बातों से लगता था कि ये उस कलमुंही को पसंद करने लगे हैं।"

"मैं अब भी यही कहूंगा।" धनपत बोला—"मेरे उसके बीच कुछ भी नहीं था। उसे लेकर तुम्हारे मन में बेवजह असुरक्षा की भावना आ गई थी। ऐसा शायद इसलिए था क्योंकि वह तुमसे ज्यादा सुंदर और स्मार्ट थी।"

"देख रहे हैं इंस्पेक्टर साहब! सुन रहे हैं इनकी बात!" सरिता के जबड़े कस गए थे—"ये मेरी और उसकी तुलना करने लगे थे।"

"मैं नहीं समझता मिस्टर धनपत कि कोई और औरत आपकी पत्नी से सुंदर हो सकती है।" काले खां ने सरिता के दिल में सुलग रही आग में घी डाला।

सरिता ने ताना मारा—"शादीशुदा आदमी को हर औरत अपनी पत्नी से ज्यादा सुंदर लगती है।"

"क्या मुझे उसका कोई फोटो मिलेगा?" काले खां ने पूछा।

"किसका? शालू का?"

"उसी की बात चल रही है जनाब!" काले खां ने कहा—"मैं भी देखना चाहता हूं कि वह कितनी हसीन है।" "नहीं। मेरे पास उसका कोई फोटो नहीं है।" "आफिस में होगा!"

"वहां भी नहीं है।"

"क्यों?" काले खां को सचुमच आश्चर्य हुआ—"आफिस में नौकरी के लिए दी गई एप्लीकेशन पर तो उसका फोटो होगा!"

"उसने कोई एप्लीकेशन नहीं दी थी।"

"क्या मतलब? ऐसे कैसे नौकरी पर रख लिया आपने उसे? मैंने ऐसा कहीं नहीं सुना। जब उसने एप्लाई ही नहीं किया तो...

"वो ठीक उस दिन मेरे आफिस में आई थी जिस दिन उससे पहले वाली सेक्रेटरी नौकरी छोड़कर गई। आंखों में आंसू थे उसकी। कहने लगी कि मुझे नौकरी की सख्त जरूरत है। आप जो भी काम देंगे मैं कर लूंगी। मुझे तरस आ गया और वैसे भी मुझे सेक्रेटरी की जरूरत थी। बस। मैंने रख ली।"

"हद्‌द हो गई। मैंने ऐसे किसी को नौकरी मिलते नहीं देखी। कम से कम बाद में तो उससे एप्लीकेशन ले लेते!"

"उसकी जरूरत ही महसूस नहीं की।"

"तब तो लगता है कि वह जरूरत से कुछ ज्यादा ही खूबसूरत थी।" काले खां की आवाज में व्यंग आ घुला था—"वैसे ये कब की बात है? यानी उसकी ये नायाब नौकरी कब लगी?"

"पंद्रह दिन ही तो हुए हैं अभी।"

"केवल पंद्रह दिन!" एक बार फिर काले खां को आश्चर्य हुआ था—"और पंद्रह दिन में इतने गुल खिल गए? वह आपके घर में घुस बैठी!

आपकी बीवी की ईर्ष्या का कारण बन बैठी! आपके बच्चे को पटा लिया! और शायद आपको भी! बल्कि आपको सबसे पहले।

साफ-साफ सुनना चाहते हैं तो सुनिए मिस्टर धनपत, भले ही बात उतनी आगे न बढ़ी हो जितनी आपकी पत्नी को लग रही थी मगर आप उसकी खूबसूरती के जाल में जरूर उलझ गए थे। ऐसा न होता तो उसे बगैर एप्लीकेशन के नौकरी पर नहीं रखते और अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह आपकी जिंदगी में आई ही उस मकसद से थी जो उसने किया।"

"यानी अंकुर को उसी ने गायब किया है?"

"हंडरेड परसेंट।"

"मैं भी कल शाम से बार-बार यही कहे जा रही हूं।" सरिता ने एक बार फिर भड़ास निकाली—"मगर ये कह रहे हैं—ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी ने दोनों ही को गायब कर दिया हो।"

"मेरे जेहन में भी दोनों संभावनाएं थीं मगर आप लोगों की बातें सुनने के बाद दिमाग क्लियर हो गया है। अंकुर को उसी ने गायब किया है बल्कि वह यहां आई ही इसलिए थी।"

"अगर ऐसा है तो मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।" पहली बार धनपत के चेहरे और आंखों में शालू के प्रति नफरत और बदले की भावना नजर आई थी।

"मुझे यकीन है कि अगर वह सामने आ जाए तो आप ऐसा ही करेंगे मगर अब सवाल ये है कि वह सामने आए कैसे? जिस शख्स ने बगैर एप्लीकेशन लिए उसे नौकरी पर रख लिया, मुझे नहीं लगता कि उसने उसका एड्रेस भी पूछा होगा।"

धनपत खाली-खाली आंखों से काले खां को देखता रह गया था जबकि सरिता भड़की-सी बोली—"जवाब क्यों नहीं देते? तुम्हारे पास उसका एड्रेस है या नहीं?"

धनपत की गर्दन इंकार मेंहिली और किसी अपराधी की मानिंद झुक गई। इस वक्त वह न काले खां से नजरें मिला पा रहा था, न सरिता से। उसे अपनी बेवकूफी का एहसास हो रहा था।

"आदमी खूबसूरत औरत से प्रभावित तो होता है लेकिन इतना ज्यादा! यह मैंने पहली बार ही देखा।" काले खां बड़बड़ाया था फिर ठंडी सांस खींचकर बोला—"खैर, मैं ड्राइवर से मिलना चाहता हूं।"

ड्राइवर का नाम अखिल था। नाम पूछने के बाद काले खां ने सवाल किया—"वह तुम्हें कहां मिली थी?"

"सात बंगला के नाके पर।"

"तुमने उसे देखकर गाड़ी रोकी होगी?"

"नहीं। उन्होंने मुझे रुकने का इशारा किया था।"

"वो पैदल थी या किसी वाहन में?"

"गाड़ी में थीं सर।"

"गाड़ी?" काले खां चौंका। धनपत से मुखातिब होते हुए पूछा उसने—"क्या उसकी हैसियत गाड़ी में चलने की थी?"

"गाड़ी उसे कंपनी से मिली हुई थी।" धनपत का लहजा बता रहा था कि वह अपराधबोध से ग्रस्त है।

"ओह! तो ये मेहरबानी भी की हुई थी आपने उस पर।" काले खां ने अपनी पुतलियां गोल-गोल घुमाईं। एक उड़ती-सी नजर उस सरिता पर डाली जिसके चेहरे पर धनपत के प्रति हल्की सी घृणा नजर आ रही थी। फिर, ड्राइवर की तरफ पलटकर पूछा—"क्या वह उसी गाड़ी में थी जो उसे कंपनी से मिली हुई थी?"

"जी हां।"

"उसने तुम्हें किस तरह रोका?"

"वो मेरे पीछे से आई थीं। और फिर साथ-साथ चलते हुए मुझे रुकने का इशारा करने लगीं। मैं उलझन में था कि गाड़ी रोकूं या नहीं कि अंकुर बाबा ने उन्हें देख लिया। वे रुकने के लिए कहने लगे।"

"और तुमने गाड़ी रोक दी?"

"रोकनी पड़ी सर।"

"फिर?"

"मुझसे थोड़ा आगे निकालकर उन्होंने भी अपनी गाड़ी रोक दी और उससे निकलकर मेरी तरफ आने लगीं। इधर, उन्हें देखकर अंकुर बाबा गाड़ी से कूदने को तैयार थे। नजदीक पहुंचते ही उन्होंने बाबा को चॉकलेट दी, जिसे उन्होंने फौरन ले लिया। फिर वे बाबा से बोलीं—'कल तो छुट्टी है न!' बाबा बोले—'संडे की तो हमेशा छुट्टी रहती है।' तब शालू मेमसाब ने कहा—'तो क्यों न कुछ देर जूह बीच की सैर की जी जाए! वहां भेलपूरी खाएंगे। ऊंट की सवारी करेंगे। तुम्हें ऊंट की सवारी पसंद है न!' अंकुर बाबा को तो जैसे

मनमांगी मुराद मिल गई थी। वे फौरन तैयार हो गए और ऐसे तैयार हुए कि मेरे लाख मना करने के बावजूद नहीं माने।"

"तुम मना क्यों कर रहे थे?"

"साब और मेमसाब का आर्डर जो था कि बाबा को स्कूल लाते ले जाते वक्त रास्ते में कहीं नहीं रुकना है। बाबा को घर से सीधे स्कूल और स्कूल से सीधे घर लाना है।" कहने के साथ उसने सरिता और धनपत की तरफ देखा था।

"फिर भी तुमने उसे शालू के साथ जाने दिया?"

"क्या करता सर?" वह गिड़गिड़ा उठा था—"जितनी कोशिश कर सकता था, की। एक तरफ मेमसाब आर्डर देने वाले अंदाज में बात कर रही थीं, दूसरी तरफ अंकुर बाबा जिद पकड़ गए थे। अंत में, जब मुझे लगा कि वे नहीं मानेंगे तो मैंने तो ये भी कहा कि अच्छा चलो, मैं भी जुहू बीच चलता हूं मगर शालू मेमसाब ने डांट दिया।

कहने लगीं—'तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन हूं! एक मिनट में नौकरी से छुट्टी करा सकती हूं मैं तुम्हारी।' मैं डर गया क्योंकि वे सचमुच ऐसा करा सकती थीं। फिर भी मैंने कहा—'अच्छा घर पर फोन ही कर दीजिए।' वो बोलीं—'तुम जाओ, मैं फोन कर दूंगी।' मेरे पास लौट आने के अलावा और कोई चारा नहीं था। मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैंने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की थी।"

"वहां से तुम सीधे घर आ गए?"

"हां जी।"

"यहां कौन मिला?"

"मेमसाब मिली थीं।" उसने सरिता की तरफ देखा—"जब मैंने इन्हें वो सब बताया जो हुआ था तो इन्होंने मुझे बहुत बुरी तरह डांटा। कहने लगीं—जब तुमसे कहकर रखा गया है कि स्कूल से सीधे आना है तो तुमने अंकुर को उस डायन के साथ क्यों जाने दिया।

मैंने वही सब बताया जो अभी-अभी आपको बताया है। इनका गुस्सा कम नहीं हुआ। फौरन आफिस का फोन मिलाया। साब से बात की। जो हुआ था वह बताया मगर साब ने कहा—'इसमें इतना परेशान होने की क्या जरुरत है? शालू के साथ जुहू ही तो गया है!

वैसे भी कल उसकी छुट्टी है। करने दो थोड़ी मौज-मस्ती। यह सब सुनकर मेमसाब ने फोन पटक दिया था।"

"सरिता जी के फोन के बाद आपने कुछ किया?" काले खां ने धनपत से पूछा था।

"मैंने फौरन शालू का मोबाइल मिलाया मगर स्वीच ऑफ जा रहा था। सोचा—मौज-मस्ती में खलल न पड़े इसलिए बंद कर रखा होगा। कुछ देर बाद मिलाने के बारे में सोचकर काम में लग गया और ऐसा मशगूल हुआ कि भूल ही गया। दो घंटे बाद तब होश आया जब पुनः सरिता का फोन आया और इसने बताया कि अंकुर और शालू अभी तक नहीं आए हैं तथा शालू का फोन भी स्वीच ऑफ आ रहा है। तब मुझे भी थोड़ी चिंता हुई और बार-बार शालू का नंबर ट्राई करने लगा। इस तरह, शाम होते-होते मुझे किसी अनहोनी की आशंका होने लगी।"

"इसके बावजूद आपने पुलिस को सुबह खबर की?"

"ये तो अब भी कहां कर रहे थे!" गुस्से और क्षोभ में भरी सरिता ने कहा—"मैं ही अड़ गई तो थाने फोन किया।" धनपत ने कहा—"मैं यह सोचकर फोन नहीं कर रहा था कि कहीं बात न बिगड़ जाए।"

"क्या बात बिगड़ने का खतरा था आपको?"

"मेरा ख्याल था कि किसी ने अंकुर को किडनेप कर लिया है और ऐसा किसी ने फिरौती की खातिर ही किया होगा क्योंकि वैसे तो हमारी किसी से कोई दुश्मनी है नहीं। सोचा था—अगर फिरौती का फोन आएगा तो जो मांगा जाएगा, चुपचाप देकर अपने अंकुर को वापस ले आऊंगा। पुलिस को खबर की और यह खबर किडनेपर को लग गई तो अंकुर की जान को खतरा हो सकता है।"

काले खां कुछ देर चुप रहा। जैसे कुछ सोच रहा हो। फिर एक गहरी सांस लेने के बाद बोला—"वैसे तो तुम लगातार नादानियां ही नहीं बेवकूफियां करते रहे हो मिस्टर धनपत और उन्हीं की वजह से एक रहस्यमय लड़की अंकुर को ले उड़ी मगर फिलहाल मुझे घबराने वाली कोई बात नहीं लगती क्योंकि तुम्हारी तरह मेरा ख्याल भी यही है कि अंकुर को फिरौती के लिए ही किडनेप किया गया है। आपके पास धन ही इतना है। देर-सवेर किडनेपर का फोन जरूर आएगा। उम्मीद करता हूं कि जब ऐसा कोई फोन आए तो आप एक बार फिर कोई बेवकूफी नहीं करेंगे।"

"म-मतलब?"

"चुपचाप फिरौती देकर छुड़ाने की कोशिश नहीं करेंगे उसे, बल्कि मुझे सूचित करेंगे। मैं इतना गधा नहीं हूं कि वैसा कोई स्टेप उठाऊं जिससे एक मासूम की जान को कोई खतरा हो।"

धनपत ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"शालू का नंबर दो ताकि मैं उसे सर्विलांस पर लगवा सकूं।"

शालू का नंबर देने के लिए धनपत ने जेब से मोबाइल निकाला ही था कि एक सिपाही ने अंदर आकर सूचना दी—"कोई अंगद नाम का आदमी आपसे मिलने आया है।"

काले खां ने पूछा—"मुझसे या धनपत से?"

"इनसे।" सिपाही ने धनपत की तरफ इशारा किया। काले खां ने धनपत से पूछा—"क्या आप इस नाम के किसी आदमी को जानते हैं?"

"नहीं।"

कुछ देर ड्राइंगरूम में खामोशी छाई रही। फिर काले खां ने बस इतना कहा—"भेजो।"

जो शख्स ड्राइंगरूम में दाखिल हुआ उसे देखते ही काले खां का माथा ठनक गया था। अनुभवी आंखें गोल हो गई थीं।

आगंतुक की आंखों पर चौड़े फ्रेम का काला चश्मा था। काले सफेद खिचड़ी बालों की थोड़ी घनी मूंछें और वैसी ही दाढ़ी। बाएं गाल पर एक मस्सा था और नाक थोड़ी फैली हुई थी। दरअसल उसका यह हुलिया ही काले खां के माथे की ठनक का कारण था और...बार-बार उसे यह भी लग रहा था कि इस शख्स को कहीं देखा है मगर दिमाग पर काफी जोर डालने के बावजूद याद नहीं आया—कहां।

परंतु जाने क्या सोचकर उसने अपने माथे की ठनक का इजहार नहीं किया बल्कि ध्यान से अंगद को देखा—वह असमंजस में फंसा ड्राइंगरूम में दाखिल हुआ था। चेहरे पर हवाईयां उड़ रही थीं। उन हवाईयों को देखकर काले खां एक बार फिर चौंका।

यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि एक ही झटके में काले खां के जेहन में अनेक सवाल चकराने लगे थे।

उसके आगमन की सूचना के साथ ही कमरे में मौजूद राजपाल, काले खां, सरिता और धनपत के दिमागों में यह संभावना बनी थी कि शायद आगंतुक अंकुर के बारे में कोई खबर लाया हो मगर, हैरत और खौफ की ज्यादती के जो भाव उसके चेहरे पर थे, उन्होंने काले खां को यह बता दिया था कि अंगद इस समय बुरी तरह डरा हुआ और असमंजस में है लेकिन शायद धनपत इस बात को न ताड़ सका। तभी तो उसने दो सवाल एक साथ किए—"कौन हो तुम?

क्या तुम हमारे अंकुर के बारे में कुछ जानते हो?"

वह जवाब न दे सका।

"जवाब क्यों नहीं देते?" धनपत ने उद्विग्न स्वर में पूछा। अंगद ने उसकी बात पर ध्यान न देकर इंस्पेक्टर काले खां की तरफ देखते हुए कहा था—"म-मुझे आपसे कुछ बातें करनी हैं।"

"मुझसे?" काले खां ने काले चश्मे के बावजूद उसकी आंखों में झांकने की कोशिश की—"सिपाही ने तो बताया था कि तुम मिस्टर धनपत से मिलने आए हो?"

"मिलने तो इन्हीं से आया था लेकिन...

"लेकिन?"

"अब सोच रहा हूं कि जो बातें इनसे करने आया था, वो इनसे नहीं, आपसे करनी चाहिएं।"

"ऐसी क्या बातें हैं?"

"क्या आप कुछ देर मुझसे अकेले में बात कर सकते हैं?"

"जो बात करनी है, सबके सामने करो।" सस्पेंस की ज्यादती के कारण धनपत उद्वेलित-सा हो गया था।

"सॉरी! मैं वे बातें आपको नहीं बता सकता। इंस्पेक्टर साहब मुनासिब समझेंगे तो बता देंगे।"

"देखो मिस्टर अंगद।" सरिता बुरी तरह बेचैन नजर आने लगी थी—"हम अपने अंकुर के बारे में कोई भी खबर सुनने के लिए तैयार हैं। जो कहना है, हमारे सामने ही कह दो।"

"मेरा दिल ऐसा करने की गवाही नहीं दे रहा।"

धनपत और सरिता ने उससे खूब कहा, हर तरह से कहा मगर अंगद उनके सामने कुछ भी बताने को तैयार न हुआ और इसी कारण वे सस्पेंस के घोर चक्रवात में फंसते चले गए। बेचैनी बढ़ती चली गई।

इतना तो वे समझ ही चुके थे कि वह अंकुर के बारे में ही कुछ कहना चाहता है। मगर क्या? ऐसा क्या है जिसे वह उनके सामने नहीं कह पा रहा? कहीं उसके पास कोई बुरी खबर तो नहीं है?

यह सोचकर उनका दिल बैठने लगा था।

जब अति हो गई तो काले खां ने धनपत और सरिता से कहा था—"अगर ये चाहता है तो कुछ देर के लिए आप बाहर चले जाएं।

जो भी यह कहेगा, वो मैं आपको बता दूंगा।"

मजबूरन धनपत और सरिता को ड्राइंगरूम से बाहर जाना पड़ा मगर जाते-जाते भी वे सस्पेंस भरी जिज्ञासु नजरों से अंगद को देखते चले गए थे।

उनके जाते ही काले खां के तेवर बदल गए।

बहुत ही तीखी नजरों से अंगद को देखते हुए उसने कड़क लहजे में कहा—"अब तुम बिल्कुल ठीक-ठीक बताओ कि कौन हो?"

"म-मतलब?" अंगद उसके बदले हुए तेवर के कारण चौंका।

"मतलब ये प्यारेलाल कि सबसे पहले अपना ये चश्मा, मूंछ दाढ़ी, मस्सा और नथुनों के अंदर से स्प्रिंग निकालो और मुझे अपनी असली सूरत के दर्शन करने का मौका दो।" कहते हुए जब काले खां ने होलेस्टर से निकालकर अपना रिवाल्वर हाथ में लिया तो न केवल अंगद बल्कि राजपाल भी हक्का-बक्का रह गया था।

अंगद के मुंह से केवल यही एक शब्द निकल सका—"जी?" "जी हां। इंस्पेक्टर काले खां की काली आंखों को धोखा देना इतना आसान नहीं है। मैं तुम्हारे यहां कदम रखते ही ताड़ गया था कि ये सब प्रपंच तुमने अपनी असली सूरत छुपाने के लिए रच रखा है मगर धनपत और सरिता के कारण बुग्गा बना रहा। यह तो मैं तुमसे बाद में पूछूंगा कि ये प्रपंच तुमने क्यों रचा। फिलहाल अपनी असली सूरत दिखाओ क्योंकि मुझे यह भी लग रहा है कि तुम्हारी वास्तविक शक्ल मेरी देखी भाली है।"

राजपाल के चेहरे पर अपने इंस्पेक्टर के लिए प्रशंसा के भाव थे जबकि अंगद ने खामोशी से काले खां के हुक्म का पालन किया।

उसकी असली सूरत सामने आते ही राजपाल खुशी से उछल पड़ा था—"इमरान हाशमी! हमसे मिलने खुद इमरान हाशमी आया है सर, धन्य हो गए हम। भाग्य खुल गए।"

अंगद ने गंभीर लहजे में कहा—"मैं इमरान हाशमी नहीं हूं।"

राजपाल बोला—"क्यों मजाक कर रहे हो साब जी?"

"मैं उनका डुप्लिकेट हूं।" अंगद राजपाल की बात पर ध्यान दिए बगैर कहता चला गया—"इस सूरत के कारण ही उनकी फिल्मों में एक्शन सीन आदि मिल जाते हैं। जिन्हें मैं कर लेता हूं।"

राजपाल ने एक बार फिर कहा—"हद्द हो गई यार, तुम्हारी सूरत तो इमरान हाशमी से नब्बे परसेंट मिलती है।"

"शायद इसीलिए मुझे चेहरा जाना-पहचाना लगा।" काले खां बोला—"उस वक्त मेरे दिमाग में इमरान ही आया होगा।"

अंगद ने केवल इतना ही कहा—"जी।"

"भेष क्यों बदला हुआ था?"

उसने बताया—"सार्वजनिक स्थानों पर अक्सर इमरान हाशमी समझकर लोग मेरे चारों तरफ भीड़ लगा लेते हैं। उसी से बचने के लिए यह सब करना पड़ता है।"

"तेरी स्टोरी तो बड़ी जानदार निकली यार।" कहने के साथ उसने अपना रिवाल्वर वापस होलेस्टर में रख लिया था।

अंगद खामोश रहा।

"बहुत देर बाद मौका मिला है।" इन शब्दों के साथ काले खां ने जेब से पैकिट निकाला। एक सिगरेट काले होंठों पर लटकाकर सुलगाई। कश लिया। उसका पिछला सिरा दाएं हाथ की मुट्ठी में कैद किया। आदतानुसार चुटकी बजाई और बोला—"सबसे पहले ये बताओ मिस्टर अंगद कि तुम कौन-से खेत की मूली हो?"

"दादर की।"

"यहां क्यों आए हो?"

"आया तो था...।" कुछ कहता-कहता वह स्वयं ही रुक गया, फिर बोला—"समझ नहीं आ रहा अपनी बात कहां से शुरु करूं।"

"कहीं से भी शुरु कर दो प्यारे।" काले खां ने कहा—"इस वक्त तुम्हारे सामने ऐसा जानवर खड़ा है जिसकी खोपड़ी में चारों तरफ से कही हुई बात अच्छी तरह घुस जाती है।"

अंगद ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला लेकिन फिर बगैर कुछ कहे ही बंद कर लिया। काले खां बोला—"प्यारेलाल, क्यों सस्पेंस की ज्यादती के कारण हमारा दिमाग फाड़ने पर आमादा हो?"

"म-मैं कोई सस्पेंस नहीं बना रहा।"

"झूठ बोल रहे हो। सस्पेंस तो तुमने कमरे में आते ही बनाना शुरु कर दिया था। यूं घुसे थे यहां जैसे शेर की मांद में घुस रहे हो। पता लगा—धनपत से मिलने आए थे। फिर कहने लगे—जो कहना है धनपत से नहीं मुझसे कहोगे। वे दोनों बेचारे सस्पेंस के चक्रवात में फंसे यहां से निकले हैं और अब तुम हमें अपने सस्पेंस के चक्रव्यूह में फंसाने की कोशिश कर रहे हो।"

"मैं भला किसी को किस सस्पेंस में फंसाऊंगा! यहां आकर मैं तो खुद ही ऐसे सस्पेंस में फंस गया हूं जिसका कोई ओर-छोर नजर नहीं आ रहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि...

"हां-हां। बोलो भई। क्या समझ में नहीं आ रहा?"

"रात मैंने एक सपना देखा।"

"तुम्हारे सपने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरी दिलचस्पी इस बात में है कि अंकुर के बारे में क्या बता सकते हो।"

"म-मैं उसी के बारे में बताने की कोशिश कर रहा हूं।"

"तो इस कोशिश को पूरी करो न यार!"

अंगद ने एक झटके से कह दिया—"सपने में मैंने अंकुर को मरते हुए देखा है।"

"क-क्या?" काले खां जैसा शख्स हकला गया।

"रात के करीब दो बजे की बात है। उस सपने को देखकर मैंबुरी तरह डर गया था। सुबह होते ही फिल्मसिटी पहुंचा।"

"वहां क्यों?"

"वहां 'एक थी डायन' नाम की फिल्म की शूटिंग चल रही है।"

"उस फिल्म से तुम्हारे सपने का क्या ताल्लुक?"

"उसमें अंकुर एक रोल कर रहा है।"

"अंकुर मतलब ये...धनपत का लड़का?"

"जी हां।"

"वो एक्टर भी है?"

"नहीं। प्रोफेशनल एक्टर नहीं है। एकता कपूर ने उस वक्त उसे उसके स्कूल के फंक्शन में एक रोल प्ले करते देख लिया था जब वे वहां चीफ गेस्ट की हैसियत से गई थीं। उसकी एक्टिंग उन्हें पसंद आई। धनपत से मिलकर 'एक थी डायन' में रोल का आफर दिया।

शुरु में धनपत जी तैयार नहीं थे लेकिन जब एकता जी ने यकीन दिलाया कि अंकुर की पढ़ाई का कोई नुकसान नहीं होगा तो वे एकता जी जैसी हस्ती को इंकार न कर सके।"

"आगे?"

"आज मैं 'एक थी डायन' के सेट पर अंकुर से मिलने ही गया था क्योंकि न मुझे उसका ओरिजिनल नाम पता था, न ही एड्रेस। बस एकाध बार शूटिंग पर ही मिले थे और उस वक्त इतनी बातें नहीं होतीं। आज अंकुर की शूटिंग नहीं थी इसलिए वहां नहीं मिला। मैंने कन्नन जी से उसके बारे में पूछा तो...

"कन्नन कौन?"

"एक थी डायन के डायरेक्टर हैं।"

"क्या बताया उन्होंने?"

"उन्होंने अंकुर का नाम और पता बताया।"

"और तुम यहां आ गए?"

"जी।"

"तुम बता रहे थे कि सपने को देखकर तुम बुरी तरह डर गए थे।" कहने के बाद काले खां ने पूछा—"क्यों?"

"क्योंकि मैंने देखा—एक डायन ने अपने मर चुके प्रेमी को जिंदा करने के लिए अंकुर की बलि दे दी।"

"किसने बलि दे दी?"

"डायन ने अपने प्रेमी के कंकाल को अंकुर का खून पिलाया है।"

"क्या बकवास है?" काले खां ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"ये बकवास नहीं इंस्पेक्टर, ठोस हकीकत है।" अंगद ने अपने एक-एक शब्द को जमाते हुए कहा था—"यहां आने से पहले मैंने भी यही सोचा था कि सपने, सपने होते हैं। वे हकीकत नहीं हो सकते मगर यहां आने पर जब पता लगा कि अंकुर कल दोपहर से गायब है तो मुझे लगा कि जो कुछ मैंने सपने में देखा है, वह सच हो गया है। हालांकि मैं अब भी दुआ करता हूं कि वह सब न हुआ हो जो मैंने देखा है फिर भी, यह सोच-सोचकर मेरे होश उड़े हुए हैं कि ऐसा हुआ तो कैसे हुआ? अंकुर के बारे में मैंने ऐसा सपना कैसे देखा?"

"कौन-सी दुनिया के हो भई?"

"ज-जी!"

"इसी दुनिया में रहते हो न!"

"जी हां।"

"लेकिन भूत-प्रेत, जिन्न-जिन्नात, चुड़ैल, डायनें और शैतान इस दुनिया में नहीं रहते।"

"मैं भी यही मानता हूं मगर...

"ये पानी वाला जानवर बीच में कहां से आ गया?"

"मुझे ऐसा सपना क्यों दीखा?"

"दीख गया यार। सपनों पर किसका वश चलता है! किसी को भी, कोई भी सपना दीख सकता है। इस बारे में सोचकर माथा खराब करने की जरूरत नहीं है।"

एकाएक राजपाल ने कहा—"मुझे ऐसा नहीं लगता सर।"

"तुझे क्या लगता है?" काले खां ने उसे घुड़का।

"सोचने वाली बात है सर। इसे उस लड़के से कनेक्टिड सपना ही क्यों चमका जो कल दोपहर से गायब है?"

"क्यों चमका? तू बता दे।"

"इस किस्म के सवालों के जवाब इतनी आसानी से नहीं मिला करते सर।" कहते वक्त राजपाल की आंखें गोल हो गई थीं।

काले खां ने उसे डांटा—"तू चुप कर।"

अंगद बोला—"मैं भी यही कहना चाहता हूं इंस्पेक्टर कि क्या ये सोचने वाली बात नहीं है कि उधर मुझे वो सपना चमकता है और इधर अंकुर किडनेप किया जा चुका है?"

"तुम्हारे कहने का मतलब ये हुआ कि अंकुर को किसी डायन ने किडनेप करके उसकी बलि चढ़ा दी है!"

"यकीन तो नहीं होता ऐसी किसी बात पर मगर...

"फिर पानी वाला जानवर?"

"क्या अंकुर के गायब होने और मेरे सपने को 'कुछ भी नहीं' कहकर उड़ाया जा सकता है?"

"तुम्हारे पास करने के लिए कोई काम की बात हो तो करो यार, अच्छा ही हुआ जो तुमने यह सब धनपत और सरिता के सामने नहीं कहा। उन बेचारों के तो छक्के ही छूट जाते। बल्कि मैं तो कहता हूं—यहीं खड़े-खड़े प्राण निकल जाते दोनों के।"

राजपाल फिर बोला—"एक सलाह दूं सर?"

"तू अपनी सलाह को पुड़िया बनाकर जेब में ठूंस ले।" काले खां ने इतनी बुरी तरह डांटा कि वह सहमकर चुप हो गया।

"और तुम सुनो मिस्टर अंगद।" काले खां ने निर्णायक और तीखे लहजे में कहा था—"ये बकवास मेरे सामने की सो की, धनपत और सरिता के सामने बिल्कुल मत करना। अगर तुम्हारे ऐसा करने से उन्हें कुछ हो गया तो मैं तुम्हें उनकी हत्या के इल्जाम में गिरफ्तार कर लूंगा और मेरे द्वारा गिरफ्तार किया गया मुजरिम फांसी के फंदे से पहले नहीं रुकता।"

"पर सर।" राजपाल पुनः बोला—"वे पूछेंगे जरूर कि बंद कमरे में इसने हमसे क्या कहा। हम क्या जवाब देंगे?"

काले खां के लिहाज से ये सवाल विचारणीय था इसलिए उसने सिगरेट वाली मुट्ठी मुंह से लगाई। सुट्टा लिया और जोर से चुटकी बजाने के बाद बोला—"सोच लिया।"

"क्या सोचा?"

"आओ।" कहने के बाद उसने सिगरेट फर्श पर डालकर जूते से कुचली और तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा। मगर फिर ठिठका और अंगद से मुखातिब होता बोला—"बाहर निकलने से पहले आंखों पर ऐनक चढ़ा लो। चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ चिपका लो।"

जी।"

काले खां बाहर जा चुका था।

काले खां ने बात हवा में भले ही उड़ा दी हो लेकिन खटक उसे भी गई थी। यह बात वाकई सोचने वाली थी कि अंगद को वैसा सपना क्यों चमका?

बात समझ से बाहर थी और जो बात इंसानी दिमाग की समझ से बाहर होती है उसे इंसान मानने से इंकार कर देता है।

भले ही मानने से इंकार कर दे मगर यह भी हकीकत है कि वो बात जेहन के किसी हिस्से में रह-रहकर चुभती रहती है।

इस वक्त वही हालत काले खां की भी थी।

वह बार-बार खुद को यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि वह सब बकवास है परंतु इस सवाल को अपने दिमाग में चुभने से नहीं रोक पा रहा था कि ऐसा हुआ तो क्यों और कैसे हुआ?

और फिर, जल्द ही एक ऐसी घटना हो गई जिसके बारे में अगर यह लिखा जाए तो जरा भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उसने काले खां के दिमाग की चूलें हिलाकर रख दी थीं। न केवल चूलें हिलाकर रख दी थीं बल्कि उसे यह सोचने पर भी मजबूर कर दिया था कि उसे अंगद को चमके सपने को हवा में नहीं उड़ाना चाहिए बल्कि उसकी तह में जाना चाहिए। जरूर उसके पीछे कोई राज है।

उसकी सोच में इतना बड़ा चेंज ला देने वाली वह घटना पुलिस हैडक्वार्टर में, उसकी आंखों के सामने घटी थी। लेकिन उससे पहले शायद यह बता देना जरूरी है कि ड्राइंगरूम से निकलते ही उसे धनपत और सरिता ने घेर लिया था।

धनपत ने सीधा काले खां से पूछा था—क्या बताया इसने?

काले खां ने बुरा-सा मुंह बनाते हुए बहुत ही हल्के अंदाज में कहा था—कुछ नहीं, ये आदमी पागल है। सस्पेंस ऐसा बनाया कि जाने क्या बताने वाला है और बताया ये कि पिछले एक महीने से अंकुर इसकी दुकान से टॉफियां खरीद रहा था। अंकुर के स्कूल के बाहर इसकी छोटी-सी दुकान है। वहां से और बच्चे भी टॉफी आदि लेते हैं। अंकुर ने भी ली होंगी और कई बार मांगने पर भी पैसे नहीं दिए होंगे। ये यहां यह कंपलेंट लेकर आपसे मिलने आया था। अंकुर के किडनेप के बारे में पता लगा तो यह सोचकर घबरा गया कि ऐसे माहौल में वह इतनी छोटी-सी कंपलेंट करेगा तो आप इसके बारे में क्या सोचेंगे। इसलिए आपसे बात करने का विचार छोड़कर मुझसे की। साथ ही यह भी कहा कि हो सके तो मैं ये बात आप लोगों को न बताऊं मगर मैंने साफ कह दिया कि बात तो बतानी ही पड़ेगी।'

उन धनपत और सरिता के चेहरों पर निराशा ने डेरा डाल दिया था जो यह सोचे बैठे थे कि शायद उन्हें अंकुर के बारे में कोई अच्छी सूचना मिलेगी।

सरिता के मुंह से तो निकल भी गया—'मेरा अंकुर ऐसा है तो नहीं कि उधार टॉफी खाए और पैसे न दे।' काले खां के इशारे पर खुद अंगद ने ही कह दिया था—'जाने भी दीजिए बहन जी, स्कूल में बच्चे छोटी-मोटी शरारतें करते रहते हैं। भूल जाइए मेरी कंपलेंट को। अब तो बस एक ही दुआ है, बहुत जल्द आपको अंकुर बाबा के बारे में शुभ-सूचना मिले।'

धनपत और सरिता चुप रह गए थे। उसके बाद, काले खां ने धनपत से शालू का मोबाइल नंबर लिया और कहा—"मैं आपके ड्राइवर यानी अखिल को थोड़ी देर के लिए अपने साथ पुलिस हैडक्वार्टर ले जा रहा हूं।"

"म-मुझे क्यों?" वहीं खड़ा अखिल रोने को तैयार हो गया था।

"कुछ काम है तुमसे।"

"न-नहीं साब।" वह गिड़गिड़ा उठा—"मैंने कुछ नहीं किया है।

जो भी कुछ हुआ उसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। जब अंकुर बाबा भी उनके साथ जाने की जिद करने लगे तो मैं क्या करता?"

"राजपाल।" काले खां ने दूर, एक कौने में खड़े अंगद से बात कर रहे राजपाल को आवाज लगाकर कहा—"इसे जीप में डाल लो।"

भला राजपाल के लिए काले खां के आर्डर से बड़ा क्या आर्डर था! उसने रोते-बिलखते अखिल को जीप में डाल लिया। अखिल ने सरिता और धनपत से भी खुद को बचाने की गुहार लगाई थी।

सरिता ने काले खां से कहा भी—"उस पर हमें कोई शक नहीं है।"

"मुझे भी उसका कोई कसूर नहीं लग रहा लेकिन थोड़ी पूछताछ और करनी है। उसके बाद छोड़ दूंगा।" कहने के बाद वह अपनी बुलेट

मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ गया था।

बुलेट स्टार्ट करते वक्त उसकी नजर अंगद पर पड़ी। इशारे से उसे नजदीक बुलाया और बोला—"फौरन से पहले यहां से तिड़ी हो लो। जो बकवास तुमने मुझसे की थी, उसका जर्रा भी यदि उन दोनों में से किसी के कान में पड़ गया तो उन्हें हार्ट अटैक आ जाएगा और कह चुका हूं—उन्हें कुछ हो गया तो मैं तुम्हें जेल में डाल दूंगा।"

अंगद के मुंह में जैसे जुबान ही न हो।

काले खां किक मारकर यह जा...वह जा।

वह जीप से कुछ पहले ही पुलिस हैडक्वार्टर पहुंच गया था।

वहां, जहां उसके दिमाग की सभी नसों को झकझोर देने वाली हौलनाक घटना घटी। वहां, जहां उसके जेहन में इतने सवाल उभरे जितने पिछले जीवन में कभी नहीं उभरे थे और गजबनाक बात यह थी कि उसका दिमाग उनमें से एक भी सवाल का जवाब नहीं उगल रहा था। सारी नसें जैसे ठस्स होकर रह गई थीं।

रोते-कलपते अखिल को पुलिस हैडक्वार्टर के एक खास विभाग में ले जाया गया। काले खां शालू के नंबर को सर्विलांस पर लगवाने के बाद वहां पहुंचा और बोला—"ज्यादा हंगामा मचाने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें यहां मुजरिम के तौर पर नहीं लाया हूं।"

"और किसलिए लाए हैं?"

"ये हमारे आर्टिस्ट हैं।" काले खां ने एक ऐसे पतले-दुबले शख्स की तरफ इशारा किया जिसकी आंखों पर मोटे लैंसों वाला चश्मा चढ़ा हुआ था—"तुम इन्हें शालू का हुलिया बताओगे। यह बताओगे कि उसके नाक, कान, होंठ, आंख आदि कैसे थे और ये तुम्हारे बताए मुताबिक कंप्यूटर पर उसका चेहरा बनाने की कोशिश करेंगे। जब वह चेहरा बन जाएगा यानी तुम कह दोगे कि हां, ये शक्ल शालू की है तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।"

अखिल को तसल्ली मिली। अब वह समझ गया था कि उस पर किसी तरह का शक नहीं किया जा रहा है। फिर भी, पूछ ही लिया उसने—"इस काम में कितनी देर लगेगी?"

"जितनी देर तुम्हें हुलिया बताने में लगेगी।" यह वाक्य चश्मे वाले आर्टिस्ट ने कहा था।

"ठीक है। मैं बताता हूं। आप पूछिए क्या पूछना है?"

"मेरे कंप्यूटर की तरफ देखते रहना और मुझे बताते रहना कि स्क्रीन पर तुम्हारे द्वारा बताई गई लड़की का चेहरा बन रहा है या नहीं। कहीं भी फर्क नजर आए तो प्वाइंट आऊट करते रहना।"

अखिल ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

जिस मेज पर मॉनिटर रखा था, वह इतनी बड़ी थी कि कम से कम चार आदमी एक ही तरफ बैठकर स्क्रीन की तरफ देख सकते थे और मेज के उस तरफ चार ही कुर्सियां पड़ी थीं।

स्क्रीन के ठीक सामने वाली कुर्सी पर चश्मे वाला आर्टिस्ट बैठा था। उसके दाईं तरफ अखिल, बाईं तरफ काले खां।

सिगरेट सुलगाने के बाद काले खां उसे अपने पेटेंट स्टाइल में पीने लगा था। आर्टिस्ट ने अखिल से कहा—"सबसे पहले यह बताओ कि लड़की का चेहरा गोल था या लंबा?"

अखिल ने बगैर किसी हिचक के जवाब दिया—"गोल।"

आर्टिस्ट ने माऊस से एक टूल उठाया और उससे स्क्रीन पर एक गोला बनाने के साथ पूछा—"ऐसा?"

"नहीं। इतना गोल नहीं था।"

"ओके।" आर्टिस्ट ने गोले में तब्दीली लानी शुरु करते हुए कहा था—"जहां तुम्हें लगे कि चेहरा इतना गोल था, वहां रुकने के लिए कहना। ध्यान से स्क्रीन को देखते रहो।"

अखिल ध्यान से देखने लगा।

आर्टिस्ट बहुत धीरे-धीरे गोले को अंडाकार शेप दे रहा था।

एक खास शेप बनते ही अखिल ने कहा—"बस। बस। मेरे ख्याल से शालू मेमसाब का चेहरा इतना ही गोल था।"

आर्टिस्ट ने हाथ रोकते हुए कहा—"गौर से देख लो।"

"ऐसा ही था साब।"

"अब उसका माथा बताओ, कितना चौड़ा था...इतना?" उसने अंडाकार शेप में ऊपर की तरफ धनुपाकार लाइन खींची थी।

"नहीं। इससे ज्यादा चौड़ा था।"

आर्टिस्ट ने थोड़ा चेंज करने के साथ पूछा—"इतना?"

"इससे थोड़ा कम।"

गोले के उस हिस्से पर काम करता आर्टिस्ट तभी रुका जब अखिल ने कहा कि हां, इतना ही चौड़ा माथा था। अब आर्टिस्ट ने उस सारे दृश्य को मिनिमाइज कर दिया। कुछ देर तक कारस्तानी करता रहा और फिर उसकी कारस्तानी के परिणामस्वरूप स्क्रीन पर बहुत सारी आंखें नजर आने लगीं। बोला—"ये लड़कियों की आंखें हैं। गौर से देखोगे तो तुम्हें पता लगेगा कि इन सबकी बनावट अलग अलग है। गौर से देखने के लिए इसलिए कह रहा हूं क्योंकि बहुत सी आंखों में बहुत कम फर्क है। देखकर बताओ, उस लड़की की आंखें इनमें से किससे मेल खाती हैं।"

बहुत ध्यान से देखने के बावजूद अखिल के लिए फैसला करना बहुत मुश्किल था। उलझ-सा गया वह। मगर आर्टिस्ट का पाला रोज ऐसे ही लोगों से पड़ता था इसलिए उसकी मानसिक अवस्था को समझता हुआ हौसला बढ़ाने वाले स्वर में बोला—"कोई जल्दी नहीं है। चाहे जितनी देर देखो मगर ध्यान से देखकर बताओ कि उसकी आंखें कैसी थीं।"

"श-शायद ऐसी।" अखिल ने एक आंख पर उंगली रख दी।

"शायद...या पक्का?"

"लग तो वैसी ही रही है।"

"ओके।" आर्टिस्ट ने माऊस चलाया और उस आंख को अलग करने के साथ आंखों के बाकी समूह को मिनिमाइज कर दिया।

अब खाली स्क्रीन पर उसने ड्राइवर को सिर्फ वही आंख दिखाई और कहा—"अब बताओ। क्या उसकी आंखें ऐसी ही थीं?"

"पूरी तरह ऐसी नहीं थीं पर इससे मिलती-जुलती थीं।"

"ठीक है। अब मैं तुम्हें उतनी सारी नहीं बल्कि सिर्फ इससे मिलती-जुलती आंखें दिखाऊंगा।" कहने के साथ वह फिर माऊस से खेलने लगा था। कुछ देर बाद स्क्रीन पर केवल आठ आंखें थीं।

उसने पूछा—"अब बताओ, इनमें से कौनसी आंख उसकी आंखों से सबसे ज्यादा मिलती है?"

"ये।" अखिल ने निस्संकोच एक आंख पर उंगली रख दी। ऐसा करते वक्त न केवल उसके लहजे से कान्फिडेंस छलक रहा था बल्कि आंखों में विश्वास भरी चमक भी थी।

"सोच लो, ऐसी ही आंख थी न उसकी?"

"बिल्कुल यही थी साब।"

"ओके।" आर्टिस्ट ने माऊस से आंख उठाई। उस फेस को स्क्रीन पर लाया जिसे मिनिमाइज कर दिया था और आंख को फेस पर फिक्स कर दिया। फिर उसने वैसी ही एक आंख दूसरी तरफ भी लगा दी। बोला—"अब मैं कुछ भवें दिखाऊंगा। तुम्हें ठीक उसी तरह, जिस तरह आंख छांटी है, उस लड़की की भवें छांटनी हैं।"

"ठीक है।" अब अखिल को इस खेल में मजा आने लगा था।

उसने भवें भी छांट दीं।

आर्टिस्ट ने जब भवें अखिल द्वारा छांटे गए फेस पर बनी आंखों के ऊपर लगाईं तो अखिल की आंखों में चमक नजर आने लगी।

"कैसा लग रहा है?" आर्टिस्ट ने पूछा।

"ये तो बिल्कुल वही आंखें हैं साब।"

"गुड।" आर्टिस्ट ने उसकी हौसलाअफजाई की—"मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उसका पूरा फेस बनवा सकते हो। अब मैं कुछ नाकें दिखाऊंगा। उनमें से उस लड़की की नाक छांटनी है।"

"दिखाइए।"

जिस तरह काम हो रहा था और जो भाव अखिल के चेहरे पर नजर आ रहे थे उन्हें देखकर काले खां को लगा कि बहुत जल्द उसके सामने शालू का चेहरा होगा और उस अवस्था में उसे, उसे ढूंढने में ज्यादा दिक्कत पेश नहीं आएगी। उस क्षण वह सोच भी नहीं सकता था कि आने वाले कुछ ही क्षणों बाद न केवल उसकी सभी आशाओं पर तुषारापात हो जाएगा बल्कि एक ऐसी हौलनाक घटना घटेगी जिसके बारे में वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था।

वह घटना तब घटी जब स्क्रीन पर बहुत सारी नाकें नजर आ रही थीं और उन्हें बहुत गौर से देखता अखिल उनमें से शालू की नाक छांटने की कोशिश कर रहा था।

"हिश्श!" अचानक अखिल के मुंह से यह आवाज निकली और बिजली की-सी गति से चले अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। आर्टिस्ट ने चौंककर उसकी तरफ देखा था।

काले खां ने चौंके हुए स्वर में पूछा—"क्या हुआ?"

"मैं नहीं बताऊंगा।" उसने अपना चेहरा काले खां की तरफ उठाते हुए कहा था।

"क्या नहीं बताओगे?"

"कि उनकी नाक कैसी थी।"

"क्यों नहीं बताओगे?"

"वो मना कर रही हैं।"

काले खां हैरान—"कौन मना कर रही है?"

"शालू मेमसाब।"

"क्या? शालू? वो यहां कहां है?"

"यहां।" उसने बड़े ही अजीब अंदाज में दोनों हाथों से अपना सिर पीटा था—"मेरे सिर में।" यह सब कहते वक्त उसका चेहरा थोड़ा बिगड़ने लगा था। बिगड़ते-बिगड़ते इतना विभत्स हो गया कि आर्टिस्ट के चेहरे पर खौफ उभर आया। खुद को बचाने के लिए पीछे की तरफ सरका वह। जबकि काले खां दहाड़ा था—"अचानक ये क्या नाटक शुरु कर दिया तुमने? सीधे हो जाओ वरना मैं तुम्हें सड़ने के लिए जेल में डाल दूंगा।"

अचानक एक बार फिर उसके मुंह से 'हिश्श' की ऐसी आवाज निकली जैसे टायर पंक्चर हुआ हो और साथ ही उसने फिर अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया।

काले खां सिगरेट फेंककर उछलने के-से अंदाज में अपनी जगह से खड़ा हुआ और झपटकर ड्राइवर के नजदीक आया। उसके दोनों कंधे पकड़े और झंझोड़ता हुआ बोला—"क्या हो रहा है?"

"सिर में दर्द।" एक बार फिर उसने अपना चेहरा काले खां की तरफ उठाया—"मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है।"

विभत्स होते चले जा रहे उसके चेहरे को देखकर एक बार को तो काले खां भी डर गया लेकिन गुर्राया—"मेरे सामने ये नाटक नहीं चलेगा। अचानक किसी के सिर में इतना तेज दर्द नहीं होता।"

"मेरे सिर में हो रहा है साब।" दर्द से तड़पने के बीच उसने कहा था—"मुझसे दूर हट जाइए। मेरा सिर फटने वाला है।"

आर्टिस्ट बेचारे की तो बहुत पहले सिट्टी-पिट्टी गुम हो चुकी थी। अपनी कुर्सी छोड़कर अखिल से काफी दूर हट चुका था वह और इस वक्त अपने चेहरे पर खौफ का सागर लिए ऐसी नजरों से अखिल की तरफ देख रहा था जैसे प्रेतात्मा की तरफ देख रहा हो।

लेकिन काले खां मानने वाला नहीं था। उसने दांत भींचकर कहा—"इस तरह नहीं मानेगा तू।" और...कहने के साथ बहुत जोर से एक थप्पड़ उसके गाल पर मारा।

मगर, उसकी अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं आया और फिर, उसने काले खां को बहुत तेज धक्का दिया। इतना तेज धक्का कि काले खां उस बड़े कमरे में मौजूद फर्नीचर से उलझता हुआ काफी दूर जा गिरा। काले खां को आश्चर्य हुआ था क्योंकि जिस्मानी तौर पर अखिल इतना ताकतवर बिल्कुल नहीं लगता था कि वह नियमित जिम जाने वाले काले खां को ऐसा धक्का दे सके कि वह इतनी दूर जा गिरे। हैरत में डूबा काले खां तुरंत ही उठकर खड़ा हो गया था। और...इस बार उसने जो दृश्य देखा, उसे देखकर काले खां की आंखें विस्फारित अंदाज में फैल गईं।

अखिल न केवल इस कदर जोर-जोर से चीखता हुआ कमरे के फर्श पर नाचा-नाचा फिर रहा था जैसे असहनीय पीड़ा से गुजर रहा हो बल्कि अपने हाथों से सिर के बालों को नोंचने की कोशिश कर रहा था। वह कभी किसी कुर्सी-मेज से टकराता, कभी किसी।

उसकी चीखों ने ऐसा बवाल मचाया था कि पुलिस हैडक्वार्टर की कम से कम उस मंजिल पर भगदड़ मच गई।

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

जिसे देखो उस हॉल जैसे कमरे की तरफ दौड़ा चला आ रहा था जिससे चीखें निकलकर मुकम्मल हैडक्वार्टर में गूंज रही थीं।

लेकिन...हर शख्स दरवाजे पर ही ठिठक गया।

दृश्य ही ऐसा था।

सभी आंखों में दहशत और हैरत लिए अखिल को देख रहे थे।

उनमें राजपाल भी था।

अखिल को कोई भी किसी भी किस्म की पीड़ा पहुंचाता नजर नहीं आ रहा था मगर वह पीड़ा से तड़पता फिर रहा था।

अब काले खां की हिम्मत भी उसकी तरफ बढ़ने की नहीं पड़ी।

उसकी हालत ही ऐसी थी। अपने आपे में नजर नहीं आ रहा था वह। और फिर, एक दीवार से टकराया। लोगों के देखते ही देखते वह अपना सिर दीवार पर पटकने लगा।

इस काम को वह इतनी जल्दी-जल्दी कर रहा था कि खुद करता प्रतीत नहीं हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई और उसके सिर को पकड़कर दीवार पर दे-देकर मार रहा हो।

काले खां सहित किसी को कुछ समझने तक का मौका नहीं मिला। दीवार और ड्राइवर के सिर सहित उसका पूरा जिस्म खून से सराबोर हो गया। पर वह रुक नहीं रहा था। बार-बार, पूरी-पूरी ताकत से अपने सिर को दीवार पर पटक रहा था।

"अरे कोई रोको उसे।" काले खां ही लपकता हुआ चीखा।

कई और पुलिसवाले भी अखिल की तरफ लपके थे मगर किसी के भी उस तक पहुंचने से पहले वह फर्श पर जा गिरा और साथ ही बंद हो गई थीं उसके मुंह से निकलने वाली चीखें।

जो जहां था, वहीं का वहीं जाम हो गया था।

सबकी आंखें सिर्फ और सिर्फ अखिल के लहूलुहान जिस्म पर जमी हुई थीं। उन आंखों में दहशत और यह जानने की जिज्ञासा के भाव थे कि यह सब आखिर हुआ क्या है?

दृश्य ऐसा था जैसे टीवी पर चल रही फिल्म को पॉज कर दिया गया हो। अखिल के ही नहीं, किसी के भी जिस्म में कोई हरकत न थी। और...काले खां के दिमाग में बिजली की-सी गति से उभरे इस ख्याल ने उसे हिलाकर रख दिया कि अखिल कहीं मर तो नहीं गया है! वह लपका। अखिल के जिस्म के करीब पहुंचा।

नब्ज चैक की।

दिल में राहत का ख्याल उभरते ही वह चीखा—"ज-जिंदा है।

इसे हास्पिटल पहुंचाओ।"

दरवाजे पर खड़े राजपाल सहित कई पुलिसवाले दौड़ते हुए आए। आनन-फानन में अखिल के जिस्म को उठाया और इस तरह लेकर कमरे से बाहर की तरफ पलके जैसे आग लगे मकान से फायरकर्मी किसी अधजले शख्स को लेकर निकले हों।

काले खां का दिमाग इतनी बुरी तरह सनसना रहा था जितनी बुरी तरह पहले कभी नहीं सनसनाया था।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसकी—कुछ भी।

अखिल को ऐंबुलेंस में पुलिस हास्पिटल ले जाया जा रहा था। उसके पीछे एक पुलिस जीप थी और जीप में थे—काले खां, राजपाल और जीप का ड्राइवर। अपनी बुलेट काले खां ने पुलिस हैडक्वार्टर की पार्किंग में ही छोड़ दी थी। सफर शुरु होने के कुछ ही देर बाद राजपाल ने पूछा—"क्या हुआ था सर?"

अपने पेटेंट स्टाइल में सिगरेट पी रहे काले खां ने ज्यों का त्यों बता दिया। सुनने के बाद राजपाल ने कहा—"क्या आप अब भी नहीं मानेंगे कि ये सब रूहानी चक्कर है?"

"रूहानी चक्कर?"

राजपाल ने एक-एक शब्द को जमाते हुए कहा—"वो कोई रूह, चुड़ैल या डायन है जिसने अखिल की वो हालत की।"

कोई और मौका होता तो काले खां राजपाल को ठीक उसी तरह डपट देता जिस तरह पहले भी दो बार डपट चुका था लेकिन इस वक्त ऐसा नहीं किया। शायद इसलिए क्योंकि जो हुआ था, वह कैसे और क्यों हुआ, इसका उसके पास कोई जवाब न था। कुछ देर अपने सनसनाते दिमाग से बात करता रहा और फिर बस इतना ही कह पाया—"मैं नहीं मानता।"

"क्या नहीं मानते?" राजपाल ने तुरंत पूछा।

"उसी बकवास को जो तू कर रहा है।"

"नहीं मानते तो मेरी बात का जवाब दीजिए।" राजपाल जैसे उसे अपने विचारों से सहमत करने पर आमादा था—"उसके सिर को किसने दीवार पर पटक-पटककर मारा?"

"खुद उसी ने। सबने देखा।"

"सबने तो यह भी देखा कि वह सब इस तरह हो रहा था जैसे वह नहीं, कोई और कर रहा हो!"

"मैंने तो किसी को नहीं देखा। तूने देखा हो तो बता।"

"आप समझ क्यों नहीं रहे सर, वे किसी को नजर नहीं आतीं।"

काले खां ने व्यंग किया—"रूहें, चुड़ैल और डायनें?"

"हां।"

"बकवास।"

"आप ही ने बताया—अखिल ने यह कहा था कि शालू अपना हुलिया नहीं बताने दे रही।"

काले खां कुछ बोला नहीं। सिर्फ सुट्टा लगाकर चुटकी बजाई।

"जवाब तो दीजिए।"

"कहा तो था।"

"जब आपने पूछा शालू कहां है तो उसने क्या जवाब दिया?"

"बताया तो था—कहने लगा, मेरे दिमाग में।"

"ऐसा क्यों कहा उसने?"

"मुझे नहीं पता। तू बता—क्यों कहा?"

"क्योंकि वह वहीं थी।"

"उसके दिमाग में?"

"हां।"

"तेरा मतलब है—डायन किसी के दिमाग में घुस सकती है?"

"मैं आपको यही समझाने की कोशिश कर रहा हूं।"

"मैं नहीं मानता।"

"ये वाक्य आपने दूसरी बार बोला है सर लेकिन किसी के मानने न मानने से हकीकत नहीं बदल जाती। क्या मुझे यह बताएंगे कि आप यह क्यों नहीं मानते?"

"कोई किसी के दिमाग में नहीं घुस सकता।"

"मैंने पूछा क्यों नहीं घुस सकता?"

काले खां के पास कोई जवाब न था। जबकि राजपाल कहता चला गया—"मैं नहीं मानता वाला जो वाक्य आप बार-बार बोल रहे हैं ये वाक्य आदमी अपनी हठ धर्मिता के तहत तब बोलता है जब Qउसके पास कोई तर्क नहीं होता। और यह तो आप भी मानते होंगे कि तर्कविहीन बात का कोई महत्व नहीं होता!"

"तू ये कहना चाहता है कि शालू एक डायन है!"

"बिल्कुल ठीक समझे।"

"और डायन किसी को नजर नहीं आती!"

"करेक्ट।"

"वो तो सबको नजर आई थी।" बात का सिरा हाथ में आते ही काले खां ने व्यंग किया—"धनपत को, सरिता को, अखिल को, अंकुर को और जाने किस-किसको।"

"डायन जब चाहे सुंदर औरत का रूप धारण कर सकती है।"

"कैसे?"

"कैसे क्या मतलब! ये उसकी क्वालिटी होती है। जैसे आपकी क्वालिटी है कि जरा सी असामान्य बात होते ही आप उसे पकड़ लेते हैं। जैसे अंगद की मूंछ-दाढ़ी को पकड़ लिया।"

एक बार फिर काले खां के मुंह से 'मैं नहीं मानता' निकलने

वाला था पर यह सोचकर अपने शब्द मुंह में रोक लिए कि राजपाल फिर जान को आ जाएगा मगर...बात इतनी ही न थी। असल बात यह थी कि उसके पास राजपाल के तीखे सवालों का कोई जवाब न था। काले खां के जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था जब उसके पास अपने किसी मातहत के सवालों का तर्कसंगत जवाब नहीं था। 'मैं नहीं मानता' वाला तीन शब्दों का वाक्य सचमुच हठ धर्मिता का द्योतक था और शायद इस बात की स्वीकृति का भी प्रतीक था कि वास्तव में मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

जब आदमी के पास कोई जवाब नहीं होता और वह जेहनी तौर पर खुद को सामने वाले की बात मानने के लिए भी तैयार नहीं कर पाता तो चुप हो जाता है। वही काले खां के साथ भी हुआ।

मगर, राजपाल तो जैसे उसे चुप भी नहीं होने देना चाहता था।

बोला—"आप चुप क्यों हो गए?"

"अब तू भी चुप हो जा। मैं तेरी बकवास नहीं झेल सकता।"

"इसका मतलब ये हुआ कि मैं ये मान लूं कि आपके पास मेरे सवालों का कोई जवाब नहीं है!"

काले खां के पास क्योंकि वाकई कोई जवाब नहीं था इसलिए झल्लाकर बोला—"नहीं है मेरे बाप। अब तो चुप हो जा। वैसे भी हम अस्पताल पहुंच चुके हैं।"

राजपाल ने पहली बार इस तरफ ध्यान दिया कि जीप पुलिस हास्पिटल के प्रांगण में रुक चुकी थी और उनसे आगे खड़ी ऐंबुलेंस से अखिल के बेहोश शरीर को निकाला जा रहा था।

अखिल को एडमिट किया जा चुका था। डाक्टरों और नर्सों की पूरी एक टीम उसे देख रही थी।

तब, तेवतिया नाम के सीनियर डॉक्टर ने काले खां से यह पूछा कि मरीज को क्या हुआ है। काले खां ने सारी घटना विस्तार पूर्वक बता दी। डॉक्टर के मुंह से निकला—"ओह! आई सी।"

"क्या मैं जान सकता हूं डाक्टर कि वैसा क्यों हुआ?"

"किसी किस्म का दौरा पड़ा लगता है।"

"दौरा?"

"दौरे कई किस्म के होते हैं। सबसे खतरनाक जो दौरा होता है, आम भाषा में उसे मिर्गी का दौरा कहते हैं।" तेवतिया ने बताया था—"जो तुमने बताया उससे तो यही लगता है कि उसे मिर्गी का दौरा ही पड़ा था। इसमें आदमी अपनी सेंस में नहीं रहता। खुद के काबू से बाहर हो जाता है। दौरे के दरम्यान वह किसी को भी कुछ भी नुकसान पहुंचा सकता है—खुद को भी। केस तो ऐसे-ऐसे भी हैं कि दौरे के दम्यान मां ने अपने दूधमुंहे बच्चे को गला दबाकर मार डाला। कई लोग इतने ऊपर से कूद गए कि मौत हो गई।"

तेवतिया की बातों से अचानक ही काले खां को राजपाल की 'बकवास' का जवाब मिल गया था। उसने उत्साहित स्वर में कहा था—"तो आपका आब्जर्वेशन ये है कि उसे मिर्गी का दौरा पड़ा था!"

"जो तुमने बताया, वे लक्षण तो यही कहते हैं।"

"मेरा एक दरोगा है।" उसने खुले शब्दों में पुष्टि करने की मंशा से यह बात कही—"उसका कहना है कि अखिल के अंदर कोई रूह घुस गई थी। उसी ने उसे इस हालत में पहुंचा...

"नानसेंस।" अधूरी बात सुनकर ही तेवतिया ने पूरी बात समझते हुए बुरा-सा मुंह बनाकर कहा—"तुम जैसे पढ़े-लिखे आदमी को ये बातें शोभा नहीं देतीं इंस्पेक्टर।"

"मैंने कहा—मेरे एक दरोगा का ऐसा मानना था।"

"उसे समझाओ।"

"पर एक बात मेरी समझ में भी नहीं आ रही।"

"क्या?"

"यदि उसे सिर्फ दौरा पड़ा था तो उसने यह क्यों कहा कि अपना हुलिया बताने से उसे शालू मना कर रही है और यह कि शालू उसके दिमाग में है।"

"उसके दिमाग में तो वह थी ही!"

"मतलब?"

"जब वह उसका हुलिया बता रहा था तो उस वक्त उसके दिमाग में शालू के अलावा और था ही कौन? वह सिर्फ और सिर्फ उसी के बारे में सोच रहा था इसलिए, दौरे के दरम्यान उसे लगा कि शालू उसके दिमाग पर काबिज हो गई है।"

"और वो...सबको ऐसा लगना जैसे अपने सिर को वह खुद नहीं बल्कि कोई और दीवार पर पटक रहा है?"

डॉक्टर ने काले खां को बहुत गौर से देखा। बोला—"मुझे लगता है कि तुम भी उन बातों पर विश्वास करते हो!"

"ए-ऐसा नहीं है।" काले खां बौखला-सा गया।

"वो सबके दृष्टिभ्रम के अलावा और कुछ नहीं था। जो कुछ कर रहा था, अपनी सुधबुध खोकर वह खुद ही कर रहा था।" कहने के बाद तेवतिया रुका नहीं बल्कि सीधा आपरेशन थ्येटर में चला गया।

अंदाज ऐसा था जैसे वह इस टॉपिक पर बात करने को अपना टाइम वेस्ट करना समझता हो।

भले ही तेवतिया अपनी बात कहकर चला गया मगर जो कुछ काले खां ने अपनी आंखों से देखा था, वह उसे अपना दृष्टिभ्रम मानने को तैयार न था इसलिए, तेवतिया की बातों से भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ वह लेकिन...राजपाल की कई बातों का जवाब मिल गया था। शायद इसीलिए वह गैलरी में दूर खड़े राजपाल की तरफ देखकर हौले से मुस्कराया था। फिर उसने धनपत का मोबाइल नंबर मिलाया। पहली ही रिंग पर कॉल रिसीव की गई और बड़े ही जिज्ञासा भरे अंदाज में कहा गया—"धनपत बोल रहा हूं।"

"मैं काले खां हूं धनपत जी।"

"हां इंस्पेक्टर, बोलो।" आवाज में बेचैनी थी—"क्या अंकुर के बारे में कुछ पता लगा?"

"अभी तो नहीं मगर आप चिंता मत कीजिए। मैं जल्दी ही उसे सही-सलामत बरामद कर लूंगा। वैसे इस वक्त मैंने आपसे अखिल के घर का नंबर लेने के लिए फोन किया है। क्या आपके पास है?"

"क्यों? अखिल के घर के नंबर तुम्हें क्या जरूरत पड़ गई? वो ठीक तो है? तुम लोगों ने उसे मारा-पीटा तो नहीं।"

काले खां ने सपाट लहजे में कहा—"मैं मुजरिम के अलावा किसी को नहीं ठोकता और वो मुजरिम नहीं है।"

"तो फिर उसके घर का नंबर क्यों मांग रहे हो?"

"उसे मिर्गी का दौरा पड़ा है।"

धनपत बुरी तरह चौंका—"मिर्गी का दौरा?"

"डॉक्टर का तो यही कहना है।" अचानक काले खां के दिमाग में बैठा इन्वेस्टिगेटर सक्रिय हो गया—"क्या आपके सामने उसे कभी मिर्गी का दौरा नहीं पड़ा?"

"ओ माई गॉड! मेरे तो शानोगुमान तक में यह बात नहीं है कि वह मिर्गी का मरीज है। होती...तो उसे अपने यहां क्यों रखता! ऐसे आदमी को ड्राइविंग करनी ही नहीं चाहिए और मैं...मैं उससे अपने बेटे की गाड़ी चलवा रहा था!"

"मुझे उसके घर का नंबर दीजिए।"

"अभी देता हूं। मेरे मोबाइल में उसकी पत्नी का मोबाइल नंबर है। लेकिन उसे दौरा पड़ा कैसे?"

डिटेल बताने के लिए काले खां ने मुंह खोला ही था कि बहुत तेजी से दिमाग में कोई ऐसा विचार कौंधा जिसने उसे रोक दिया। बात बदल दी उसने। बोला—"बैठे ही बैठे पता नहीं पट्ठे को क्या हुआ कि अपना सिर दीवार पर पटकने लगा! उस वक्त तो कोई पूछताछ भी नहीं चल रही थी।"

धनपत ने अखिल की पत्नी का नंबर दिया।

काले खां ने मिलाया। पुलिस हास्पिटल आने के लिए कहा।

वह सुनते ही घबरा गई। सैंकड़ों सवाल करने लगी। काले खां ने बस इतना ही कहा—"उसे मिर्गी का दौरा पड़ा है।"

"मिर्गी का दौरा? पहले तो कभी नहीं पड़ा!"

बस! काले खां को इतनी ही इंफारमेशन चाहिए थी। उसने यह कहने के बाद फोन काट दिया कि तुम यहां आ जाओ मगर घबराने की कोई बात नहीं है। वह बिल्कुल ठीक है।

अब उसके दिमाग में यह बात चल रही थी कि अगर तेवतिया की ऑब्जर्वेशन ठीक है तो इसका मतलब ये हुआ कि अखिल को दौरा आज पहली बार ही पड़ा था।

क्या ये संभव था?

तेवतिया के आपरेशन थ्येटर से बाहर आते ही काले खां, अखिल की पत्नी और कई पुलिसवालों ने उसे घेर लिया। अखिल की पत्नी, जो रोती हुई ही वहां पहुंची थी और अब भी रो रही थी, ने सबसे पहले पूछा—"वो कैसे हैं डॉक्टर साहब?"

"बिल्कुल ठीक है। होश में आ गया है। उतनी चोटें नहीं लगी हैं जितनी खून देखकर लगता था। सारे चेकअप हो चुके हैं। सिर के अंदर कोई चोट नहीं है। जो है, बाहर ही है। बेंडेज कर दी गई हैं। बहुत जल्द उसे रूम में शिफ्ट कर दिया जाएगा। चाहो तो शाम को घर ले जा सकती हो।"

"क्या मैं उससे मिल सकती हूं?"

"अभी नहीं, कमरे में शिफ्ट होने पर।"

"और मैं डॉक्टर साहब?" काले खां ने पूछा—"एकाध सवाल का जवाब पाने के लिए मेरा उससे मिलना जरूरी है।"

"बेशक मिल सकते हो। मगर वह तुम्हारे सवालों का जवाब नहीं दे सकेगा।"

"क्यों?"

"आदमी ने दौरे के दरम्यान जो किया होता है, दौरे से बाहर आने के बाद उसे वह याद नहीं रहता।"

"आपकी ओपीनियन अब भी यही है कि उसे दौरा पड़ा था?"

"यकीनन।"

"मगर उसकी पत्नी का कहना है कि पहले उसे कभी ऐसा नहीं हुआ।" काले खां ने अखिल की पत्नी की तरफ इशारा किया था।

"तो?"

थोड़ा बौखला गए काले खां ने कहा—"म-मेरा मतलब है कि क्या ये संभव है कि उसे आज ये दौरा पहली बार पड़ा हो?"

एक बार फिर तेवतिया ने उसे गौर से देखा। बोला—"मुझे तुम अंधविश्वास में फंसते नजर आ रहे हो इंस्पेक्टर।"

"ज-जी?"

"क्यों नहीं हो सकता! दुनिया का हर काम कभी न कभी पहली बार होता है। उस वक्त वह अपने दिमाग को शायद जरूरत से ज्यादा ही कंसन्ट्रेट कर रहा था। उसी वजह से ऐसा हुआ।"

"तो उसके साथ आगे भी ऐसा हो सकता है?"

"एक बार हो चुका है तो संभावनाएं तो हैं। ध्यान रखना पड़ेगा, दिमाग को ज्यादा कंसन्ट्रेट करने से बचे।"

"ओह!"

तेवतिया चलने को हुआ, फिर खुद ही रुक गया और काले खां से मुखातिब होकर बोला—"वैसे आम मरीजों को ऐसे दौरे किशोर अवस्था में पड़ने शुरु हो जाते हैं। इतनी पकी हुई अवस्था में पहला दौरा मैंने भी पहली बार देखा है।"

काले खां का दिमाग घूमकर वहीं का वहीं पहुंच गया।

तेवतिया ने मुस्कराकर कहा था—"वैसे इसका मतलब ये मत समझना कि वह दौरा नहीं वह था जो तुम्हारे दरोगा को लग रहा था। मेरी पहली बात याद रखना—दुनिया का हर काम कभी न कभी पहली बार होता है।"

काले खां पर कुछ कहते न बन पड़ा।

तेवतिया जा चुका था।

बाकी डॉक्टर्स और नर्सों की टीम भी।

काले खां ने आपरेशन थ्येटर का दरवाजा खोला और अंदर चला गया। वहां आपरेशन टेबल पर लेटे अखिल के अलावा केवल दो नर्सें थीं। अखिल के सिर पर ताजी पट्टियां बंधी हुई थीं। काले खां पर नजर पड़ते ही उसके चेहरे पर हल्के से चिंता के भाव उभरे।

उन्हें दूर करने की मंशा से काले खां ने कहा—"डरो मत। मैं यहां तुमसे शालू का हुलिया पूछने नहीं आया हूं।"

"म-मैं बता भी नहीं सकूंगा।" आवाज थोड़ी कमजोर थी।

"क्यों?" वह टेबल की बगल में पड़े स्टूल पर बैठ गया था।

"उसने मना जो किया है!"

"किसने?"

"आपको बताया तो था—शालू मेमसाब ने।"

"डॉक्टर ने तो कहा था तुम्हें कुछ याद नहीं होगा।"

"इतना याद है कि आपका आर्टिस्ट मुझसे शालू मेमसाब का हुलिया पूछ रहा था और मैं बता रहा था। इसलिए बता रहा था क्योंकि यह बात तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि मेरे ऐसा करने से वे नाराज हो जाएंगी।"

"हुआ क्या था?"

"जब मैं नाक छांटने की कोशिश कर रहा था तो अचानक सिर में बहुत तेज दर्द हुआ और तीर की तरह उनकी आवाज मेरे कानों में पड़ी। उन्होंने कहा था—मेरा हुलिया मत बताओ। अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हें बहुत बुरी चोट पहुंचाऊंगी।"

"तुमने साफ सुना, यही कहा गया था?"

"बिल्कुल यही।"

"कैसे पता कि यह बात शालू ने ही कही थी?"

"मैं क्या उनकी आवाज पहचानता नहीं हूं!"

"तुमने यह नहीं सोचा कि शालू जब आसपास थी ही नहीं तो वह तुम्हारे कान में ऐसा कैसे कह सकती है?"

"मुझे लगा था कि वे मेरे सिर के अंदर हैं।"

"कोई किसी के सिर के अंदर कैसे हो सकता है?"

"इतना सब सोचने का होश ही नहीं रहा था। दर्द बढ़ता चला गया। ऐसा लग रहा था जैसे सिर फट जाएगा। बस। उसके बाद क्या हुआ। मैंने क्या किया। लोगों ने मेरे साथ क्या किया। मुझे ये चोटें कैसे आ गईं। कुछ याद नहीं है।"

"ये सब तुमने डॉक्टर को भी बताया होगा?"

"मैंने सिर्फ यह पूछा था कि मैं यहां क्यों हूं और मेरे सिर में चोट कैसे लग गई। मैं तो पुलिस हैडक्वार्टर में... "डॉक्टर ने क्या कहा?"

"मुझे दौरा पड़ा था।"

"क्या तुम्हें लगता है कि वे ठीक कह रहे थे?"

अखिल ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप काले खां की तरफ देखता रहा। काले खां ने ही कहा—"जवाब दो।"

"मुझे लगता है कि मुझे कुछ और हुआ था।"

"तुम्हारे ख्याल से क्या हुआ था?"

"ठीक से कुछ कह नहीं सकता। बस ये लग रहा है कि उसके बाद जो किया मेरे सिर पर सवार शालू मेमसाब ने किया। उन्होंने तो पहले ही कह दिया था कि मैं तुम्हें चोट पहुंचाऊंगी।"

"ये बात तुमने डॉक्टर से कही?"

अखिल ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"क्या बोले?"

"कि वह आवाज मेरा वहम थी। मेरे कान में किसी ने कुछ नहीं कहा और न ही मेरे दिमाग पर कोई सवार था। ऐसे दौरों में अक्सर ऐसे ही वहम होते हैं।"

"तुम्हें यकीन है कि डॉक्टर ने ठीक कहा?"

"नहीं।"

"तुम्हें क्या लगता है?"

"शालू मेमसाब की आवाज मैंने बिल्कुल साफ सुनी थी। और यह भी महसूस किया था कि वे मेरे सिर पर सवार हैं। वहम नहीं था वो मेरा। यदि ये कहूं तब भी गलत नहीं होगा कि उनकी आवाज अभी तक मेरे कानों में गूंज रही है।"

"ये सब कैसे हो सकता है?"

"मेरे पास इस सवाल का जवाब नहीं है। सिर्फ वह बता सकता हूं जो सुना और महसूस किया। एक बार फिर रिक्वेस्ट करुंगा, मुझसे शालू मेमसाब का हुलिया मत पूछना वरना वे फिर मेरे दिमाग पर काबिज हो जाएंगी और इस बार तो मेरी जान ही ले लेंगी।"

काले खां को जब लगा कि अखिल इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकेगा तो उठा और आपरेशन थ्येटर से बाहर आ गया।

एक तरफ डॉक्टर की मिर्गी के दौरे वाली थ्योरी थी दूसरी तरफ राजपाल की डायन वाली थ्योरी। काले खां की समझ में नहीं आ रहा था कि किस पर यकीन करे। अखिल को डॉक्टर की थ्योरी पर यकीन नहीं था। पुरजोर अंदाज में उसका कहना यही था कि शालू ने उसके कान में हुलिया बताने से इंकार किया था और उस वक्त वह उसके सिर पर सवार थी।

काले खां को पूरा यकीन था कि भूत-प्रेत, चुड़ैल या डायन जैसी कोई चीज नहीं होती। ये सिर्फ शब्द हैं जो गंदे किस्म के लोगों ने भोले-भाले और मासूम लोगों को डराने के लिए बना दिए हैं।

काफी सोचने के बाद वह डॉक्टर की थ्योरी से ही सहमत हुआ मगर फिर भी, कुछ बातें नुकीली सुई बनकर जेहन में चुभती रहीं।

जैसे—अखिल को मिर्गी का दौरा इस उम्र में पहली बार पड़ा था।

वैसा तो खैर चलो, डॉक्टर के मुताबिक हो सकता था मगर अखिल को दीवार पर सिर पटकते उसने अपनी आंखों से देखा था और उस वक्त साफ-साफ लग रहा था कि वैसा वह खुद नहीं कर रहा था बल्कि कोई और ताकत उसका सिर पटक रही थी।

कौन-सी ताकत थी वह?

जवाब नदारद!

जीप पुलिस हैडक्वार्टर की तरफ चली जा रही थी। ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बैठा वह अपने पेटेंट स्टाइल में सुट्टे लगा रहा था और चुटकियां बजा रहा था।

विचारों में गुम होने के कारण वह खामोश था। एकाएक विचार तंद्रा भंग हुई। उसे लगा—पिछली सीट पर बैठे राजपाल ने कुछ कहा है। काले खां ने चौंककर पीछे देखते हुए पूछा—"तूने कुछ कहा?"

"खैरियत है कि आवाज आप तक पहुंच गई।"

"क्या कहा?"

"मतलब केवल आवाज पहुंच सकी। शब्द नहीं पहुंचे।"

"बको भी!"

"अब क्या लगता है आपको?"

काले खां ने ऐसे लहजे में कहा जैसे उसे चित्त करने का बीड़ा उठा लिया हो—"तेरे हर सवाल का जवाब मिल गया है मुझे।"

"पेश कर देंगे तो मुझे खुशी होगी।"

"डॉक्टर का कहना है कि अखिल को मिर्गी का दौरा पड़ा था।

उसमें मरीज वैसी ही हरकतें करता है जैसी अखिल ने कीं और वैसा महसूस भी होता है जैसा उसने महसूस किया था। जैसे, उसने अपने कानों में गूंजती शालू की आवाज सुनी। उसे अपने सिर पर सवार महसूस किया। डॉक्टर का कहना है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस वक्त उसका सारा कंसन्ट्रेशन शालू पर ही केंद्रित था।"

"आपने डॉक्टर से अंगद के बारे में भी बात की?"

काले खां चौंका—"अंगद के बारे में?"

"उसे चमके सपने के बारे!"

"तेरा दिमाग खराब है क्या? जिस बारे में डॉक्टर को कुछ पता ही नहीं था उस बारे में क्यों बात करता?"

"तो अपने आप से बात कीजिए।"

"मतलब?"

"पूछिए खुद से कि उसे वह सपना क्यों चमका?"

"तू फिर पुराना राग अलापने...

"सर।" राजपाल ने उसकी बात काटकर कहा था—"जब तक वो अकेली घटना सामने आई थी, तब तक मैं भी थोड़ा कन्फ्यूज था लेकिन अब कन्फर्म हो गया है कि शालू डायन ही है।"

"अब कौन-सी नई बात हो गई?"

"चलिए, फिलहाल आप यह न मानिए कि शालू डायन है मगर जरा दोनों घटनाओं को मिलाइए और थोड़ा सा...बहुत थोड़ा-सा दिमाग भिड़ाइए। एक तरफ अंगद यह सपना देखता है कि डायन ने अंकुर की बलि देकर अपने प्रेमी की हड्डियों को उसका खून पिला दिया है, उस अंकुर का जो गायब है और...गौर फरमाएं, अभी तक वह गायब ही है। दूसरी तरफ, अखिल की हालत। मेरा दावा है और गौर करेंगे तो आप भी पाएंगे कि अपना सिर वह खुद दीवार पर नहीं पटक रहा था। क्या इन दोनों घटनाओं को मिलाने के बाद आपको ऐसा नहीं लगता कि कहीं न कहीं, कुछ न कुछ ऐसा जरूर है जो इंसानी शक्तियों से बाहर है?"

राजपाल ने वही बात कह दी थी जो खुद काले खां के जेहन में भी चुभ रही थी इसलिए चुप रह गया।

"चुप रह जाने का मतलब ये है कि आप मुझसे सहमत हैं!"

"चुप रह जाने का मतलब ये नहीं है।"

"और क्या है?"

काले खां ने झल्लाकर कहा था—"सिर्फ ये कि मैं तुम्हारे साथ बेसिर-पैर की बहस नहीं करना चाहता।"

"सिर्फ दो सवालों का जवाब दे दीजिए, फिर मैं आपसे बहस नहीं करुंगा। पहला—अंगद को सपना क्यों चमका? दूसरा—अखिल के सिर को दीवार पर कौन पटक रहा था।"

"ये कोई नई बात नहीं है। हर केस की इन्वेस्टिगेशन के दरम्यान ऐसे बहुत से सवाल सामने आते हैं जिनका जवाब इन्वेस्टिगेटर के पास उस वक्त नहीं होता। मगर अंत तक पहुंचते-पहुंचते यानी केस के हल होने तक हर सवाल का जवाब मिल जाता है और इस केस पर भी मैं तुझसे तभी बात करुंगा जब ये हल हो जाएगा।"

"हल तो तभी होगा न जब आप सही दिशा में बढ़ेंगे!"

"मतलब?"

"अंगद से मिलने की बात ही आपके दिमाग में नहीं आ रही!"

"मिल तो चुका हूं। दोबारा मिलकर क्या करुंगा?"

"उसे चमके सपने के बारे में अभी हमने आधा-अधूरा सुना है।

पूरा सपना बताने ही कहां दिया आपने उसे! हमें उससे मिलकर, पूरा सपना सुनना चाहिए। शायद कोई ऐसा प्वाइंट निकल आए जिससे ये केस हल की तरफ बढ़े!"

राजपाल की बात 'ठक्क' से काले खां के दिमाग के सेंटर में जाकर लगी थी। यह विचार उसके जेहन में भी उभरा कि एक बार अंगद से मिलकर पूरी बात सुननी तो चाहिए। फिर भी कहा—"मेरे

ख्याल से तो अंगद से मिलने को 'तू' मरा जा रहा है।"

"मैं आपको उसकी पूरी बात सुनाने के लिए मरा जा रहा हूं।"

"पर अब हम उससे मिलेंगे भी कैसे? मैंने तो उसका एड्रेस भी नहीं लिया।"

राजपाल ने तुरंत उत्साहित होकर कहा—"मैंने ले लिया था।"

"तूने?" काले खां ने उसे घूरा—"क्यों?"

"क्योंकि मुझे मालूम था कि देर-सवेर अंगद की पूरी बात सुनने हमें उसके पास जाना होगा। बहरहाल, केस तो हल करना ही है।"

वैसे भी, अंकुर की गुमशुदगी वाले इस केस में फिलहाल काले खां को नहीं सूझ रहा था कि आगे बढ़ने के लिए क्या किया जाए?

शायद इसीलिए उसने राजपाल पर एहसान-सा करने वाले लहजे में कह दिया था—"चल। तू चाहता है तो वहीं चल।"

राजपाल की हालत ऐसी हो गई जैसे किसी बच्चे को उसकी पसंदीदा चॉकलेट मिल गई हो। तुरंत बोला—"अगले नाके से दाईं तरफ ले लेना ड्राइवर भाई, तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

मूंछों में छुपे ड्राइवर के होंठ मुस्करा उठे थे।

दादर ईस्ट की 'जलपरी' नामक बिल्डिंग के फिफ्थ फ्लोर पर पहुंचकर राजपाल ने फ्लैट नंबर पांच सौ दो की कॉलबेल पर अंगूठा रख दिया था। अंदर से बेल बजने की आवाज आई।

ड्राइवर जीप के साथ नीचे ही रह गया था और काले खां ऐसे अंदाज में उसके साथ आया था जैसे केवल राजपाल की इच्छा पूरी करने आया हो। कुछ देर बाद अंदर से कदमों की आवाज आई और दरवाजा खुल गया। दरवाजा खोलने वाला अंगद ही था।

वह उन्हें देखते ही चौंक पड़ा—"आप लोग यहां?"

"इंस्पेक्टर साहब तुमसे मिलने आए हैं।" राजपाल ने कहा।

"इन्होंने तो मेरे सपने को सीरियसली लिया ही नहीं था।"

राजपाल ने काले खां को कुछ भी बोलने का मौका दिए बगैर जल्दी से कहा था—"अब ले लिया है। ये सपने के बारे में विस्तार से सुनने के इच्छुक हैं।"

कुछ देर अंगद खामोशी के साथ उन्हें देखता रहा। फिर एक तरफ को हटता हुआ बोला—"डॉक्टर साहब भी आए हुए हैं।"

"कौनसे डाक्ट...।" काले खां इतना ही कह पाया था कि नजर ड्राइंगरूम के सोफे पर बैठे डॉक्टर तेवतिया पर पड़ी। मुंह से ये शब्द बरबस ही निकल पड़े—"अरे! आप यहां डॉक्टर साहब?"

"अंगद के दादा हमारे फ्रेंड थे।" डॉक्टर तेवतिया सोफे से खड़े होते हुए बोले—"इसके फादर यानी मोहित बनर्जी ने कहा कि मेरे बेटे को बार-बार एक सपना परेशान कर रहा है। पिछली रात भी इसे वही सपना चमका। वे उसके बारे में हमारी ओपीनियन चाहते हैं।

मरहूम दोस्त की खातिर मोहित की रिक्वेस्ट को टाल न सके।"

"बड़ा अच्छा किया आपने। मुझे इतनी जल्दी आपसे दोबारा मिलकर बड़ी खुशी हो रही है।" काले खां ने राजपाल की तरफ इशारा करके कहना जारी रखा—"ये मेरा वो दरोगा है जिसका जिक्र आपसे किया था। इसके ऐसे कई सवाल हैं जिनके मैं जवाब नहीं दे पा रहा हूं। मुझे यकीन है कि आप उनके जवाब दे देंगे।"

"सबसे पहले यह बताइए कि आप यहां क्यों आए हैं?"

"हमें भी अंगद से सपने के बारे में पूछना है।"

"क्यों?" डॉक्टर तेवतिया हंसे—"क्या इसके सपने का संबंध किसी पुलिसिया केस से है?"

एक बार फिर काले खां ने राजपाल को आगे किया—"इसका कुछ ऐसा ही मानना है।"

"दिलचस्प बात है।" डॉक्टर तेवतिया ने राजपाल की तरफ देखते हुए कहा था—"लेकिन समझ से बाहर। किसी के सपने का संबंध किसी पुलिसिया केस से कैसे हो सकता है?"

राजपाल ने उन्हीं से पूछा—"क्या आपने अंगद से इसके सपने के बारे में बातचीत की?"

"टाइम ही कहां मिला भई! आकर ही बैठे थे कि तुमने बेल बजा दी। तुम लोग भी शायद अस्पताल से सीधे यहीं आए हो?"

"तो क्यों न पहले अंगद से ही बात कर ली जाए?"

"यही ठीक रहेगा?" डॉक्टर तेवतिया के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि अंदर वाले कमरे से मोहित बनर्जी और गंगोत्री ड्राइंगरूम में आए। मोहित बनर्जी ने तेवतिया की तरफ बढ़ते हुए बड़े भावुक अंदाज में कहा था—"आपकी बड़ी मेहरबानी अंकल जो आप आ गए। अंगद को बार-बार चमकने वाला सपना हमारे लिए पहेली बन गया है। कई डॉक्टरों से बात की। कोई संतुष्टिजनक जवाब न दे पाया। तब, गंगोत्री ने आपका नाम सुझाया।"

"पूछते हैं इससे कि इसे क्या चमकता है।" कहते हुए तेवतिया ने अंगद की तरफ देखा था।

"अ-आप लोग?" मोहित बनर्जी ने काले खां और राजपाल की तरफ सवालिया नजरों से देखा।

"ये इंस्पेक्टर काले खां हैं पिताजी।" अंगद बोला—"मैंने बताया था न कि मैं इनसे मिला था!"

"ओह हां!" मोहित बोले—"तब से तो दिमाग ही भन्नाया हुआ है। कितनी हैरत की बात है कि जिस लड़के को अंगद ने सपने में देखा, वह कल दोपहर से गायब है!"

"क्या मामला है ये?" तेवतिया ने पूछा।

"मामला भी बताते हैं।" काले खां ने कहा—"पहले अंगद से इसके सपने के बारे में विस्तारपूर्वक पूछ लिया जाए।"

यही तय हुआ और फिर, अंगद ने सपने के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। सबने बड़े ध्यान से सुना था। अंगद के चुप होने पर डॉक्टर तेवतिया ने गंभीर स्वर में कहा—"ज्यादा घबराने की बात नहीं है।

ऐसे पेशेंट जिन्हें एक ही सपना बार-बार चमकता है, मेरे पास पहले भी आए हैं। मेडिकल साइंस में इसका कोई इलाज नहीं है लेकिन ऐसे हर केस को मैंने डॉक्टर कजारिया के पास भेज दिया और उनके इलाज से लगभग सभी पेशेंट ठीक हो गए।"

"डॉक्टर कजारिया?"

"पेशेंट को हिप्नोटाइज करके इलाज करते हैं। उनसे कई बार मेरी बात हुई है। उनका कहना है ज्यादातर ऐसे सपनों का ताल्लुक, जिसे चमकते हैं, उसके पूर्वजन्म या इसी जन्म की किसी ऐसी उम्र की घटना से होता है जो उसे याद नहीं होती। वे पेशेंट को पूर्वजन्म और अतीत में ले जाते हैं और वह घटना दिखाते हैं जिसकी वजह से उसे सपना चमक रहा होता है।"

काले खां ने पूछा—"क्या आप पूर्वजन्म को मानते हैं?"

"अपना मुझे नहीं मालूम लेकिन कजारिया जरूर मानता है। मैं बस इतना जानता हूं कि अपनी इसी थ्योरी से वह मेरे कई जानकार पेशेंट्स का सफल इलाज कर चुका है।"

"लेकिन डॉक्टर साहब।" अंगद बोला—"गौर किया जाए तो मुझे बार-बार एक ही सपना नहीं चमक रहा है बल्कि एक ही सपने की शृंखलाएं चमक रही हैं। उस औरत द्वारा हर बार मैंने अलग बच्चे की बलि देखी है। अंकुर चौथा है। तीन पहले देख चुका हूं।

फिर इसे एक ही सपना कैसे कहा जा सकता है? यहीं, इसमें एक और पेंच है। यह कि—सपने में मैंने हड्डियों और उस औरत को यह कहते सुना कि ये पांचवीं बलि थी जबकि मैंने केवल चार ही देखी हैं। एक मिस है। ऐसा क्यों हुआ?"

"बात तो ठीक है। मेरे ख्याल से इस पहेली को भी कजारिया ही सुलझा सकता है। तुम उसी से मिलो। मैं फोन कर दूंगा।"

"पिछले तीन बच्चों को मैंने सपने में देखा जरूर था मगर उन्हें जानता नहीं था जबकि अंकुर को जानता हूं और मेरी फिक्र का कारण ये है कि वह गायब है।"

"ये कोई खास बात नहीं है। हो सकता है तुमने अंकुर से कोई लगाव महसूस किया हो इसलिए सपने में उसकी सूरत चमक गई!"

"नहीं।" अंगद ने दृढ़तापूर्वक कहा—"मैंने उससे कभी कोई लगाव महसूस नहीं किया। सच पूछें तो मुझे उसका नाम तक मालूम नहीं था। एकाध बार बस 'एक थी डायन' के सेट पर देखा था।"

"इस पहेली को भी कजारिया ही सुलझा सकता है।"

एकाएक राजपाल ने कहा—"मैं कुछ बोलूं डॉक्टर साहब?"

"मुझे मालूम है तुम कुछ तिरछा ही बोलोगे।"

"मेरे ख्याल से ये पूर्व-वूर्वजन्म का कोई चक्कर नहीं है। इसी जन्म का चक्कर है।" डॉक्टर की बात पर जरा भी ध्यान दिए बगैर राजपाल कहता चला गया—"अंगद को चमकने वाली घटनाएं कहीं न कहीं हो रही हैं। यानी वो औरत इस विश्वास के साथ बच्चों की बलि दे रही है कि एक दिन उसका अभिजीत जिंदा हो जाएगा।"

"औरत या डायन?" काले खां बीच में टपका।

"ऐसी औरत को, जो काला जादू जानती हो, अघोरी हो, उसे डायन ही कहा जाता है।"

"पर अब तक तो तुम उसे कोई रूहानी ताकत बता रहे थे?"

"ऐसी औरत रूहानी ताकतों की मालिक होती है। ये ताकतें उसे काले जादू के ज्ञान से मिलती हैं।"

तेवतिया ने पूछा—"इस विश्वास का कारण?"

"जरा अंगद को चमके सपने और अंकुर के गायब होने का मिलान कीजिए। क्या ये पूर्वजन्म की घटना है! नहीं, ये इसी जन्म की घटना है बल्कि कल रात ही घटी है। मुझे कहने में अच्छा नहीं लग रहा लेकिन लग रहा है कि...अंकुर जिंदा नहीं है। अंगद को चमकने वाला सपना सच्चा है। उस घृणित औरत ने अभिजीत को जिंदा करने के लिए उसे मार डाला है।"

"किस बेस पर ऐसा कह सकते हो?"

"क्योंकि मुझे मालूम है कि रूहानी ताकतें होती हैं। इंस्पेक्टर साहब मानें, न मानें लेकिन इन्होंने उसका चमत्कार देखा है। अखिल का सिर दीवार पर वही पटक रही थी।"

"इसका मतलब तुम ये कहना चाहते हो कि वह अदृश्य रहकर ऐसा कर सकती है?" काले खां ने व्यंगपूर्वक पूछा था।

"अदृश्य रहकर भी और किसी के दिमाग पर काबिज होकर भी। ऐसे तांत्रिक जिन्हें अघोरी कहा जाता है, अपनी गंदी और कठोर तपस्या से ऐसी सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं।"

काले खां ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि उसका मोबाइल बज उठा। 'जस्ट ए मिनिट' कहकर उसने कॉल रिसीव की और यदि यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि उस वक्त उसका दिमाग अंतरिक्ष में परवाज करने लगा था जब एक हवलदार ने यह सूचना दी कि धनपत के लड़के की लाश मिली है।

"ओह!" तरूणा के गुलाबी होंठों से 'आह' निकली और उसके बेहद खूबसूरत मुखड़े पर ऐसे भाव उभरे जैसे अपने किसी बहुत ही नजदीकी की मौत की खबर सुनी हो। शब्द मुंह से फिसलते चले गए थे—"तुम वहां गए?"

"हां।" अंगद ने संक्षिप्त जवाब दिया।

"कौन-कौन?"

"मैं, पिताजी, तेवतिया, इंस्पेक्टर काले खां और राजपाल। जाना तो मां भी चाहती थीं लेकिन पिताजी ने मना कर दिया।"

सवाल पूछने वाली तरूणा वही लड़की थी जिसने 'एक थी डायन' की शूटिंग के वक्त जादूगर बोबो (इमरान हाशमी) की आंखों पर काली पट्टी बांधी थी। उसने पूछा—"बॉडी कहां मिली थी?"

"नवी मुंबई से साठ किलोमीटर दूर। एक दरिया किनारे।"

"क्या वह उसी पोजीशन में थी जिसमें तुमने उसे...

"हां। धड़ अलग था, सिर अलग। धड़ का घुटनोंतक का हिस्सा पानी के अंदर था, बाकी बाहर। जब हम पहुंचे, तब उसके चारों तरफ देहातियों की भीड़ लगी हुई थी। सबसे पहले एक देहाती ने ही देखा था उसे। शोर मचाने पर बाकी लोग भी पहुंचे और भीड़ बढ़ती चली गई। गांव के ही किसी पढ़े लिखे लड़के ने स्थानीय थाने को फोन कर दिया। सो, वहां का थानेदार भी अपनी फोर्स के साथ था। फोर्स भीड़ को काबू में करने की कोशिश कर रही थी।"

"और क्या मिला वहां से?"

"वो कार जो शालू को धनपत ने दे रखी थी।"

"देहातियों को पता कैसे लगा कि लाश अंकुर की है?"

"उसकी जेब में मौजूद स्कूल के कार्ड से।"

"और दिल?"

"दिल?"

तरूणा ने कांपते से लहजे में पूछा—"म-मैं ये पूछ रही हूं कि क्या उसके सीने में दिल था?"

"क-कैसे होता!" अंगद की आवाज कांप गई थी—"दिल को तो वो औरत मेरे सामने खा चुकी थी।"

"उफ्फ!" तरूणा के गुलाबी मुखड़े पर घृणा के ऐसे भाव उभरे जैसे किसी राक्षसी को किसी बच्चे का दिल खाते अपनी आंखों से देख रही हो—"तो उसने सचमुच उसका दिल खा लिया था!"

"उस दृश्य को देखकर राजपाल ने भी काले खां से यही कहा था।" अंगद बोला—"देख लीजिए सर, इस मासूम की बॉडी ठीक उसी हालत में है जिसमें अंगद ने बताई थी। क्या अब भी आप नहीं मानेंगे कि वह सपना सच्चा था? और गाड़ी बता रही है कि वह शालू बनकर ही धनपत की जिंदगी में आई थी।"

"काले खां ने क्या कहा?"

"उसके पास जवाब न था। जवाब की तलाश में वह डॉक्टर तेवतिया की तरफ देखने लगा था।"

"वे कुछ बोले?"

"राजपाल की जुबान के अलावा सबको लकवा मार चुका था।

उसने डॉक्टर तेवतिया से कहा—"शायद अब आपको यकीन आ गया होगा कि अंगद के सपने का संबंध इसके किसी पूर्वजन्म से नहीं है बल्कि इसी जन्म से है। इससे भी ज्यादा, अगर यह कहूं कि सपने का संबंध केवल और केवल पिछली रात से है तब भी गलत न होगा

क्योंकि इसकी हत्या गुजरी रात में ही की गई है और अंगद को सपना भी ठीक उसी वक्त चमका था।"

"तब भी डॉक्टर साहब चुप रहे?"

"वे तो चुप ही रहे लेकिन काले खां बुदबुदा उठा था—'ये तो किसी घटना को लाइव देखने जैसी बात हो गई।"

"मैं बार-बार यही समझाने की कोशिश कर रहा हूं सर कि अंगद ने सपने में जो देखा है, वो लाइव देखा है।" राजपाल ने अपने हर शब्द पर जोर देते हुए कहा था—"अगर हम इसे इस हत्या का चश्मदीद गवाह भी कहें तो गलत न होगा।"

तेवतिया बड़बड़ाए—"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"वो लाइव अंगद ने ही क्यों देखा?" काले खां बोला।

"इससे भी आगे, हमें यह पता लगाना है सर कि वो औरत जो भी कुछ करती है, वो अंगद को ही क्यों नजर आता है?" अपने सामने सबको लाजवाब पाकर राजपाल उत्साहित अंदाज में कहता चला गया था—"क्योंकि ये इससे पहले भी उसके द्वारा दी गई तीन बलियों को देख चुका है।"

"सब चुप रह गए।" अंगद ने कहा—"मैं तो चुप था ही क्योंकि मेरी समझ में तो शुरु से ही कुछ नहीं आ रहा था। पिताजी के चेहरे पर खौफ के चिन्ह थे। तुम समझ सकती हो तरू, उन्हें यह डर सता रहा था कि कहीं उनके बेटे का कोई अहित न हो जाए।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद क्या होना था!" अंगद बोला—"वही पुलिस की रूटीन प्रक्रिया। घटनास्थल की फोटोग्राफी। पंचनामा। डैडबॉडी को पोस्टमार्टम के लिए भेजना और पूछताछ।"

"कुछ पता लगा?"

"कोई नहीं बता सका कि बॉडी वहां रात के किस वक्त किसने डाली? काले खां ने गाड़ी की भी खूब छानबीन की, सब व्यर्थ। उसी समय उसके मोबाइल पर पुलिस हैडक्वार्टर से फोन आया। बताया गया कि भरपूर कोशिश के बावजूद सर्विलांस के जरिए शालू के मोबाइल की लोकेशन पता नहीं लग पा रही है।"

"धनपत और सरिता को खबर दी गई होगी?"

"अभी तक नहीं दी गई होगी तो दे दी जाएगी। भला उनसे यह सब कब तक छुपाए रखा जा सकेगा!"

"वे तो बेचारे जीते-जी मर जाएंगे।" तरूणा की आंखें भीग गईं।

"किसी के यूं मरने से किसी का अपना वापस नहीं आता।"

अंगद भी भीगे हुए स्वर में कहता चला गया—"और न ही कोई किसी की किसी किस्म की मदद कर सकता है। घटनास्थल से काले खां और राजपाल अपने रास्ते चले गए। डॉक्टर तेवतिया मुझे और पापा को हमारे फ्लैट के नीचे छोड़कर अपने रास्ते क्योंकि हम उन्हीं की गाड़ी में थे। मगर...

"मगर?" तरूणा थोड़ी उलझी।

"मेरा ख्याल से इस घटना ने धनपत और सरिता से केवल उनका बेटा ही नहीं छीना है बल्कि हमेशा के लिए उनकी जिंदगी नर्क बना दी है। शायद वे एक छत के नीचे न रह सकें।"

"क्यों?"

"सरिता धनपत को कभी माफ नहीं करेगी। वह सारी जिंदगी उसे ताने देती रहेगी कि उसके शालू की तरफ आकर्षण के कारण ही उनका बेटा गया है।"

"अंगू।" एकाएक तरूणा के मुखड़े पर कुछ जानने की लालसा के भाव उभरे—"क्या तुम्हें लगता है कि शालू वही औरत थी जो तुम्हें सपनों

में नजर आती है। अंडरटेकर जैसे बालों के कारण जिसकी तुमने अब तक शक्ल नहीं देखी?"

"क्या कह सकता हूं?" कहने के साथ उसकी आंखें शून्य में स्थिर हो चुकी थीं। वहां, जहां दृष्टि के अंतिम छोर पर सूरज नाम का आग का वह गोला इस वक्त भगवा रंग धारण किए, अपनी संपूर्ण गोलाई के साथ समुद्र की गोद में समाने की तैयारी कर रहा था, जिसकी तरफ दोपहर के वक्त कोई देख तक नहीं सकता था।

समुद्र का पानी और गर्जना पैदा करती उसकी लहरें भी जैसे उसी के रंग में रंग गई थीं। वे भी भगवा नजर आ रही थीं।

इस वक्त वे दोनों बैंडस्टैंड पर एक बहुत बड़े काले पत्थर पर बैठे थे। वे वहां अकेले नहीं थे। अलग-अलग पत्थरों पर बल्कि उनसे भी ज्यादा पत्थरों की बैक में, उन्हीं जैसे मुहब्बत करने वाले अनेक जोड़े मौजूद थे। मगर किसी को किसी दूसरे जोड़े से कुछ लेना देना न था। सभी अपने में मशगूल थे।

कुछ देर तक तरूणा अपनी भरी-भरी पलकें उठाए, काली आंखों से अंगद को देखती रही। उम्मीद करती रही कि शायद वह कुछ और बोलेगा लेकिन जब वह उसकी प्रतीक्षा के अंतिम छोर तक भी न बोला तो बोली—"क्या सोचने लगे अंगू?"

अंगद अब भी कुछ नहीं बोला। बस आग के उस गोले को देखता रहा जिसका निचला थोड़ा सा अंग समुद्र के पानी में गुम हो चुका था। तरूणा ने उसका कंधा हिलाया—"अंगू!"

"आं!" वह चौंका।

"क्या हुआ?"

"क-कुछ नहीं।" वह इस दुनिया में आया।

"कुछ तो हुआ था! कहां खो गए थे?"

"तरू।" अंगद ने जब ऐसा कहा तो तरूणा को अंगद थोड़ा बदला बदला-सा लगा था—"ये सपना मुझे जब भी चमकता था, मैं तभी परेशान हो जाता था। लेकिन एक दो दिन बाद ही, ज्यादा से ज्यादा हफ्ते भर बाद अपनी नार्मल लाइफ जीने लगता था मगर अब...मुझे लग रहा है कि शायद ऐसा न हो पाएगा।"

"क्यों नहीं होगा?"

"क्योंकि इससे पहले मैं इसे महज सपना समझता था। सपना ही समझकर दिमाग से छिटक देता था। शायद यह सोचकर कि सपने तो सबको चमकते हैं और वे सच्चे नहीं होते परंतु अब मैं ऐसा नहीं सोच सकता। मुझे मालूम है कि जो कुछ मैं देखता हूं, वो होता है। मैंने जो एक मासूम की बलि देखी है, वो सचमुच हुई है तरू, ऐसे में मैं कैसे उस सबको दिमाग से छिटक सकूंगा?"

"मैं छिटका दूंगी।" तरूणा ने उसकी आंखों में झांका।

"तुम?"

"हां मैं।" कहने के साथ तरूणा ने अंगद का चेहरा अपने दोनों कोमल हाथों में भर लिया था। उसकी लंबी-लंबी उंगलियों के सिरों पर नेल पॉलिश से सजे लंबे-लंबे नाखून बड़े खूबसूरत लग रहे थे।

अंगद के मुंह से निकला—"तुम कैसे...

मगर, शब्द पूरे न हो सके। उससे पहले ही तरूणा के कोमल गुलाबी होंठ उसके होंठों से आ मिले थे। वह छटपटाता-सा रह गया जबकि तरूणा ने एक लंबा चुम्बन लेने के बाद ही उसके होंठ मुक्त किए और रोमांटिक स्वर में बोली—"ऐसे।"

"प्लीज तरू।" अंगद ने खुद को थोड़ा पीछे हटाया था।

"सपने कितने भी सच्चे हों डार्लिंग, फिर भी सपने ही होते हैं।" कहने के साथ तरूणा उसके और करीब सरक गई—"वे हकीकत से मुकाबला नहीं कर सकते और मैं हकीकत हूं। देखो, जरा अपने आसपास बिखरे जोड़ों को देखो, कितनी हसीन दुनिया में खोए हुए हैं वे। इससे भी ज्यादा हसीन दुनिया देखनी हो तो दो पत्थरों के बीच वहां देखो जहां बगैर झांके किसी की नजर नहीं जा सकती। और एक तुम हो, जाने किस डायन के ख्यालों में गुम हो!"

"इसीलिए तो कह रहा हूं तरू, मैं उसके ख्यालों में गुम नहीं हूं बल्कि वो मेरे दिमाग पर सवार होती जा रही है।"

"तभी तो कहती हूं—शादी कर लो।" तरूणा उसे सपने की दुनिया से निकालने की गर्ज से बोली—"शादी के बाद मैं न तुम्हारे दिमाग पर किसी को सवार होने दूंगी, न ही दिल पर। तुम्हें हर तरफ मैं ही मैं नजर आऊंगी। हकीकत में भी और सपने में भी। तुम्हारे सपने बहुत हसीन हो जाएंगे अंगू।"

"नहीं तरू, मैं शादी नहीं कर सकता।"

"शादी नहीं कर सकते! मतलब?" तरूणा चौंकी थी—"अपने वादे से मुकर रहे हो तुम! तुमने तो कहा था कि जिस दिन 'एक थी डायन' रिलीज होगी, उस दिन मुझसे शादी कर लोगे!"

"कहा तो था लेकिन...

"लेकिन?"

"तब मैं अपनी जिंदगी को इतनी उलझी हुई नहीं समझता था।

और जिंदगी की बात तो छोड़ो। अब तो मुझे यह भी नहीं लगता कि ज्यादा दिन जिंदा रहूंगा।"

"य-ये क्या बकवास कर रहे हो तुम?"

"जो औरत सिर्फ इसलिए अखिल के अस्तित्व पर सवार होकर उसके सिर को दीवारों से टकरा सकती है, क्योंकि वह पुलिस को उसका हुलिया बता रहा था, उस औरत को यदि यह पता लग जाए कि मैं उसके कृत्यों का चश्मदीद गवाह हूं तो क्या नहीं कर डालेगी?"

"तुम पागल तो नहीं हो गए हो अंगू!"

"जिसकी अपनी जिंदगी का कोई भरोसा न हो, वह किसी और की जिंदगी अपने साथ जोड़कर उसे तबाह नहीं कर सकता।"

"और जो खुद अपनी जिंदगी तबाह करने को तैयार हो?" कहने के साथ तरूणा ने अपनी गीली आंखें उसकी आंखों में डाल दी थीं।

"तरूणा...

"तरूणा नहीं तरू बोलो अंगू...तरू। बदलो मत।" अंगद को कुछ भी कहने का मौका दिए बगैर वह जजबाती लहजे में कहती चली गई थी—"अगर वह डायन है तो मैं उससे बड़ी डायन हूं।

किसी हालत में तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूंगी। जियूंगी तो साथ-साथ।

मरूंगी तो साथ-साथ।"

"समझने की कोशिश करो तरू, जब तक मैं अपनी जिंदगी से जुड़ी पहेली को हल नहीं कर लेता तब तक शादी नहीं कर सकता।"

"मैं तैयार हूं।"

"क-क्या?"

"कयामत तक इंतजार करुंगी तुम्हारा।" तरूणा ने दृढ़तापूर्वक कहा था—"मगर तरूणा किसी और की नहीं हो सकती।"

"त-तरू...।" अंगद की आवाज कांप गई थी।

"ये तुम्हारी तरूणा का वादा है तुमसे।" फफकते-से लहजे में कहकर वह उससे लिपट गई थी।

भावुक हुए अंगद ने उसे अपनी बांहों में समेटकर जोर से भींच लिया। डबडबाई आंखों के साथ बोला—"तू बिल्कुल पागल है।"

"हां। ये हुई मेरे अंगद की भाषा।" वह एकसाथ रो भी पड़ी और हंस भी पड़ी थी।

इस बार अंगद के होंठों ने उसके कांपते हुए अ—रों को अपने अंदर समेट लिया था और...ऐसा लग रहा था जैसे अब उन्हें वह उनका सारा रस पीने के बाद ही छोड़ेगा। करीब एक मिनट बाद छोड़े तो तरूणा अपनी नन्हीं मुट्ठियों से उसकी पीठ पर घूंसे बरसाती बोली—"फिर कभी ऐसी बदतमीजी भरी बात की तो मैं तेरा खून पी जाऊंगी। तेरे अलावा इस दुनिया में है कौन मेरा! मां-बाप थे, हीरोइन बनने की 'धसक' में उन्हें बिहार के एक गांव में छोड़ आई हूं। पता नहीं बेचारे अब जिंदा भी हैं या नहीं। मुंबई के लिए घर छोड़ कर पटना तक ही पहुंची थी कि अखबार में पढ़ा, उन्होंने मीडिया से कहा था कि हमारे लिए तरूणा उसी क्षण मर गई जिस क्षण वह घर छोड़कर गई। मुंबई आई। यहां भटकी। जल्दी ही समझ में आ गया कि हीरोइन बनने के लिए खूबसूरती ही सबकुछ नहीं होती।

एक्टिंग भी आनी चाहिए और उसका मुझसे दूर-दूर तक नाता न था। गलत हाथों में पड़ गई। अगर तुमने न बचाया होता तो वे मुझे कोठे पर बैठा चुके थे। ये जिंदगी, ये इज्जत, ये आबरू, सबकुछ तुम्हारा दिया हुआ है अंगू और तुम्हीं पर न्यौछावर है। किसी गैर मर्द के हाथ तुम्हारी तरूणा को छू तक नहीं सकते।"

"बस! बस देवी जी, मुझे देवता मत बनाओ।"

"मुझे देवी बनाओगे तो तुम्हें देवता बनना ही पड़ेगा।"

"बातों में न तुमसे कभी जीता हूं, न जीत सकूंगा।"

"ऐसा मानते हो तो मेरी यह बात भी मानो कि...।" इतना कह कर तरूणा खुद ही रुक गई थी।

अंगद को कहना पड़ा—"बोलो।"

"अपने दिमाग से उस औरत और अंकुर को निकाल दो।"

"मेरे दिमाग में उनसे ज्यादा रिम्पी है।"

"रिम्पी?"

"उस गंदी औरत की अगली शिकार।" तरूणा को बांहों में लिए लिए एक बार फिर उसकी आंखें शून्य में स्थिर हो गई थीं। होंठ जैसे बुदबुदा उठे थे—"पता नहीं वो कौन है? कहां है?"

"अरे! ये क्या नादानी है रिम्पी? नीचे उतर।"

"बिल्कुल नहीं। हरगिज नहीं।" छः मंजिली इमारत के टैरेस पर खड़ी करीब दस वर्षीय बहुत ही सुंदर और मासूम-सी नजर आने वाली लड़की ने नीचे, सड़क पर नजर आने वाली भीड़ के बीच खड़े महकार से हलक फाड़कर कहा था—"जब तक आप मुझे मेरे इस बर्थ-डे पर इमरान हाशमी से मिलाने का प्रॉमिस नहीं करेंगे, तब तक मैं नीचे नहीं आऊंगी और अगर किसी ने जबरदस्ती करने की कोशिश की तो यहां से कूद जाऊंगी।"

"ये क्या पागलपन है रिम्पी...नीचे आ।" बुरी तरह परेशान नजर आ रहे महकार की उम्र पैंतीस के आसपास थी।

"नहीं आऊंगी।" उसने अपने नन्हे पैर पटके जिसके छोटे से जिस्म पर हल्के गुलाबी रंग का फ्रॉक था। जिसके लंबे बालों को गूंथकर गुलाबी ही रंग का रिबन बांधा गया था। जिसके पैरों में गुलाबी ही रंग के जूते और गुलाबी ही रंग के जुर्राब थे।

"अरे पीछे हट बेटी। वहां से गिर गई तो...।" डरी हुई एक बूढ़ी औरत अपने शब्द पूरे नहीं कर सकी थी।

"कैसे हट जाऊं दादी-अम्मा?" लड़की फिर चिल्लाई—"पापा से कब से कह रही हूं कि मुझे इमरान हाशमी से मिलना है मगर ये हैं कि मेरी बात सुन ही नहीं रहे।"

"अरे कह भी दे नासपीटे कि तू उसे उससे मिला देगा।" बूढ़ी औरत ने महकार से कहा था—"वो गिर गई तो...

"कैसे कह दूं अम्मा! इमरान हाशमी से मिलना कोई मजाक बात है? मैं तो मैं, मेरे फरिश्ते भी उसकी परछाईं तक भी नहीं पहुंच सकते।" महकार की हालत ऐसी थी जैसे अभी अपने सिर के सारे बाल नोच डालेगा। फिर ऊपर, टैरेस की तरफ देखता डांटने वाले अंदाज में बोला—"मैं कहता हूं नीचे आ जा रिम्पी।"

"अच्छा तो ठीक है...आती हूं।" कहने के साथ जो उसने एक पैर आगे बढ़ाकर ऐसा एक्शन किया जैसे कूदने वाली हो तो सड़क के पार खड़े सैंकड़ों लोगों के हलकों से चीख निकल गई—"न-नहीं।"

सभी यह सोचकर डर गए थे कि कहीं वह यह नादानी कर ही न बैठे। जबकि महकार जानता था कि वह ऐसा नहीं करेगी।

अपनी जिद्दी बेटी की शरारतों से वह अच्छी तरह वाकिफ था। अपनी जिदें मनवाने के लिए वह अक्सर धमकियां दिया करती थी मगर इतना बड़ा ड्रामा पहली बार ही किया था। फिर भी, मन में कहीं न कहीं तो डर था ही इसलिए एक बार फिर रिम्पी से ये जिद छोड़ देने के लिए कहा। देख तो खैर सभी ऊपर रहे थे। उसी तरफ देखते महकार की बगल में खड़े अधेड़ उम्र के आदमी ने कहा—"इन फिल्मों ने बच्चों को बिगाड़कर रख दिया है। ये आइडिया उसे 'शोले' से मिला होगा। उसमें धर्मेंद्र इसी तरह टंकी पर चढ़कर...

"मैं थ्री तक गिनूंगी।" टैरेस के सिरे पर खड़ी रिम्पी ने अपने दाएं हाथ की तीन उंगलियां दिखाईं—"अगर तब भी आपने मुझे इमरान हाशमी से मिलाने का प्रॉमिस नहीं किया तो कूद जाऊंगी।"

"अरे महकार।" किसी ने कहा—"कर दे न प्रॉमिस!"

"कैसे कर दूं यार, उसके बाद तो ये मेरी जान खा जाएगी।"

रिम्पी ने इस तरह कहा जैसे रेस स्टार्ट होने वाली हो—"वन!"

तभी, सड़क के इस पार खड़ी भीड़ को टैरेस पर रिम्पी के पीछे करीब बीस साल का एक लड़का नजर आया। वह दबे पांव रिम्पी की तरफ बढ़ रहा था और अपने होंठों पर उंगली रखे भीड़ को अपने बारे में चुप रहने का इशारा कर रहा था।

महकार सहित सभी के चेहरों पर घबराहट और सस्पेंस के भाव उभर आए थे। पीछे मौजूद लड़के से बेखबर रिम्पी ने अपने गले से पूरा जोर लगाकर कहा था—"टू।"

"उसे बातों में लगा ले महकार।" अपने आसपास से महकार को फुसफुसाहट सुनाई दी—"नीटू उसे पकड़ लेगा।"

"कौन नीटू?"

"वही, जो उसके पीछे है। मौहल्ले का ही तो लड़का है।"

"मैं थ्री कहने वाली हूं पापा और थ्री कहते ही कूद जाऊंगी।"

यह चेतावनी रिम्पी ने जिस लहजे में दी थी उसने महकार के छक्के छुड़ा दिए थे।

वह फिर बोली—"बोलो, मुझे इमरान से मिलाओगे या नहीं।"

"म-मिलाऊंगा।" महकार के मुंह से निकला—"मिला दूंगा।"

"सच बोल रहे हो!" वह खुश हो गई।

"हां।"

"बिल्कुल सच!"

"बिल्कुल सच।"

"मेरे बर्थ-डे वाले दिन?"

"हां-हां बाबा। अब नीचे आ जा।"

"प्रॉमिस?"

पुनः स्वीकृति देने के लिए महकार ने मुंह खोला ही था कि नीटू ने एक ही झपट्टे में रिम्पी को दबोच लिया और...रिम्पी के साथ ऐसा होना था कि वह उग्र हो गई। गुस्से में आ गई। नीटू की बांहों से छूटने की कोशिश करती चिल्लाई—"चीटिंग! रिम्पी से चीटिंग?"

और फिर, रिम्पी ने अपने दांत नीटू की कलाई पर गड़ा दिए। नीटू के हलक से चीख निकली। उसकी पकड़ कमजोर पड़ी और एक ही झटके में रिम्पी नीटू की गिरफ्त से निकल गई।

निकल तो गई लेकिन झोंक खा गई थी वह।

वह सब टैरेस के सिरे पर हुआ था इसलिए रिम्पी के हलक से लंबी चीख निकली। साथ ही, सड़क के पार खड़े हर शख्स के हलक से चीख निकल गई थी लेकिन सबसे मर्मांतक चीख महकार की थी क्योंकि सबके साथ उसने भी रिम्पी को टैरेस से सड़क की तरफ गिरते देखा था।

उधर टैरेस पर खड़ा नीटू हक्का-बक्का रह गया था।

उस वक्त हवा में घूमती हुई सड़क की तरफ गिर रही रिम्पी की मदद कोई भी नहीं कर सकता था। सबके दिमागों पर यह दहशत सवार हो चुकी थी कि अगले पल वह सड़क पर आ गिरेगी मगर शायद इसीलिए कहावत बनी है कि—'जाको राखे साईंयां, मार सके न कोय'। टैरेस से गिरा रिम्पी का जिस्म सीधा उस ट्रक के अंदर गिरा जो ठीक उसी वक्त वहां से गुजर रहा था।

"रोको-रोको।" चिल्लाती हुई भीड़ ट्रक की तरफ दौड़ी। उन्हीं में महकार भी था जिसे अपनी दुनिया लुटती नजर आ गई थी।

शायद ट्रक ड्राइवर को भी एहसास हो गया था।

उसने ट्रक रोक लिया।

और...ऊपर वाले का चमत्कार!

ट्रक में रुई भरी हुई थी। रिम्पी रुई के बड़े-बड़े गट्ठरों पर गिरी थी। उसे खरोंच भी नहीं आई थी लेकिन दहशत की ज्यादती के कारण बेहोश हो गई थी। महकार तो बेचारा यही चीखता रह गया था कि 'मेरी बेटी को बचा लो...मेरी रिम्पी को बचा लो' जबकि कई अन्य लोग दौड़कर रुई की गांठों पर चढ़ गए थे।

रिम्पी अपने कमरे में, बैड पर थी। महकार के अलावा भी इस वक्त वहां दस-बारह लोग घुसे हुए थे। उनमें कई ऐसे भी थे जो पड़ोसी होने के बावजूद रिम्पी के कमरे में पहली बार ही आए थे और वे सभी चेहरों पर हैरत के भाव लिए उस कमरे को देख रहे थे जिसकी एक भी दीवार का जर्रा तक नजर नहीं आ रहा था।

हर जगह इमरान हाशमी और सिर्फ इमरान हाशमी के ही फोटो और पोस्टर नजर आ रहे थे। शायद इमरान की ऐसी कोई फिल्म नहीं थी जिसका वहां पोस्टर न हो।

अलग-अलग पोजों में हर तरफ बस इमरान ही इमरान।

परंतु इस वक्त किसी को भी उन पर चर्चा करना मुनासिब न लगा क्योंकि महकार रिम्पी के चेहरे पर छींटे मारकर उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा था। तभी, कमरे में किसी की किसी को धमकाने की आवाज गूंजी—"तू ऊपर क्यों गया बे?"

"मेरी कोई गलती नहीं है अंकल।" नीटू ने रोवनिया अंदाज में कहा था—"मैं तो रिम्पी को बचाने गया था लेकिन इसने मेरी कलाई में काट लिया इसलिए...

"नहीं।" महकार ने कहा—"उसे कोई कुछ मत कहो। सचमुच उसकी कोई गलती नहीं है।"

इससे पहले कि कोई कुछ कहता, रिम्पी के मुंह से हल्की-हल्की कराहें निकलने लगी थीं। महकार ने झुकते हुए उसके कोमल गालों को थपथपाकर कहा था—"डरो मत रिम्पी, तुम बिल्कुल ठीक हो।"

पलकें कांपीं। फिर आंखें खुलीं। उन आंखों में नाचती हुई दहशत साफ-साफ नजर आ रही थी। अचानक उसका जिस्म जोर-जोर से कांपने लगा। एक झटका-सा खाकर वह बिस्तर पर उठकर बैठी और महकार से अजीब सवाल किया—"क्या मैं मर गई पापा?"

"क-कैसी बात कर रही है बेटी? तू जिंदा है। तू जिंदा है।" वह फफक-फफककर रो पड़ा था।

"पर मैं तो टैरेस से गिर गई थी न!"

"हां। गिरी थी। पर तू रुई से भरे ट्रक में जाकर गिरी। देख, तुझे खरोंच तक नहीं आई है।"

"इतने ऊपर से गिरकर कोई कैसे बच सकता है! नहीं पापा, आप झूठ बोल रहे हो। मैं मर गई हूं।"

"कैसी बातें कर रही है पगली! तुझसे पहले तेरा पापा नहीं मर जाएगा!" रोते हुए महकार ने रिम्पी को अपनी छाती से लिपटा लिया था और उस क्षण...उसने न सिर्फ यह महसूस किया था कि वह जूड़ी के मरीज की मानिंद कांप रही है बल्कि उसके जिस्म को किसी भट्‌टी जितना गर्म भी पाया था।

"मैं मर गई हूं...मैं मर गई हूं।" कहती हुई रिम्पी ने एक झटका सा खाया और सिर महकार के कंधे पर लुढ़क गया।

महकार बुरी तरह डर गया था। वह रिम्पी के जिस्म को बुरी तरह झंझोड़ता हुआ चीखता चला गया—"रिम्पी! रिम्पी! रिम्पी!"

एक बुजुर्ग ने लपककर रिम्पी की नब्ज टटोली। उसके चेहरे पर राहत के भाव उभरे। बोला—"घबरा मत महकार, कुछ नहीं हुआ है। फिर बेहोश हो गई है ये।"

"पर क्यों चाचा?" महकार ने आंसुओं से तर चेहरा ऊपर उठा कर दीवानगी के आलम में पूछा था—"होश में आते ही फिर क्यों बेहोश हो गई ये? इसे यकीन क्यों नहीं आ रहा कि ये जिंदा है?"

"घबरा मत बेटे।" बुजुर्ग ने कहा—"तू ही घबरा जाएगा तो इसे कौन संभालेगा? बच्ची दहशत में आ गई है। उसी कारण बुखार चढ़ गया है इसे। देख, कितनी तप रही है। खुद होश-वोश में न ला इसे।

डॉक्टर के यहां ले जा। जो ठीक समझेगा वही करेगा।"

सिक्योरिटी के लोगों ने महकार के ऑटो को फिल्मसिटी के पहले बैरियर पर ही रोक लिया था। उनमें से एक नजदीक आया और कड़क लहजे में बोला—"पास है?"

ऑटो वाला महकार को पहले ही बता चुका था कि यहां कैसे एंट्री होनी है। सो, उसने सौ का नोट निकालकर उसे दे दिया।

इस तरह, बैरियर हटा और ऑटो आगे बढ़ गया। दूर तक नजर आ रही सीधी लेकिन लहरदार सड़क पर ऑटो दौड़ाते ऑटो वाले ने हंसते हुए कहा था—"देखा साबजी! कैसी तरकीब बताई!"

महकार को समझ न आया कि क्या कहे इसलिए चुप ही रहा।

जेहन में बस एक ही बात घूम रही थी—कैसे मिल सकूंगा इमरान हाशमी से? क्या वो मुझसे मिलेगा? क्या वो मेरी बात सुनेगा? सुन भी ली तो क्या वह मेरे साथ मेरे घर चलेगा?

इतने बड़े स्टार पर मुझ जैसे छोटे आदमी के लिए इतना टाइम कहां होगा? कभी उसे लगता—जब मैं इमरान को रिम्पी की हालत बताऊंगा तो शायद मेरे साथ चल पड़े लेकिन फिर अगले ही पल लगता—उसके तो करोड़ों फैन हैं। किस-किसके घर जा सकता है?

और वास्तव में—इन लोगों के पास इतना टाइम ही कहां होता है?

फिर भी वह एक उम्मीद लिए जा रहा था।

"एक बात पूछूं साब जी?" ऑटो चालक ने तंद्रा भंग की।

उसके मुंह से बस यही एक शब्द निकला—"हूं।"

"शूटिंग-वूटिंग देखने जा रहे हो?"

"नहीं।"

"तो और फिल्मसिटी किसलिए आए हो?"

"मुझे इमरान हाशमी से मिलना है।"

"इमरान हाशमी से? हां, होगा तो सही आज वह यहां क्योंकि 'एक थी डायन' की शूटिंग चल रही है और उसमें वही हीरो है।"

"ये बात किसी ने मुझे बताई थी, तभी तो आया हूं।"

"फिर भी, उससे मिल नहीं सकोगे साब जी।"

"क्यों?"

"इतने बड़े स्टार से मिलना आसान है क्या?"

"हां। आसान तो नहीं है।" वह इस तरह बड़बड़ाया जैसे खुद ही से बात कर रहा हो। फिर बोला—"तुम बस मुझे वहां ले चलो जहां 'एक थी डायन' की शूटिंग चल रही हो।"

ऑटो हजारों गज में फैली फिल्मसिटी में बिछी सड़कों के जाल पर दौड़ता रहा। उन्हें जहां भी कोई नजर आता, उसी से पूछते कि 'एक थी डायन' की शूटिंग कहां चल रही है।

अंततः वे ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां किसी स्कूल का मेनगेट बना हुआ था। इतना तो महकार जानता ही था कि फिल्मसिटी में कोई स्कूल नहीं है यानी ये गेट किसी फिल्म का सैट है।

वहां बहुत से लोग खड़े थे।

पूछने पर एक आदमी ने बताया कि यहां 'एक थी डायन' की शूटिंग चल रही है। महकार ने उत्सुकतापूर्वक सवाल किया—"क्या इमरान

हाशमी सैट पर है?"

"हां। उसी का सीन फिल्माया जाना है। छोटा-सा सीन है। इमरान के साथ हुमा कुरेशी भी है। स्टोरी के मुताबिक वे जुबैन नाम के उस बच्चे को स्कूल छोड़ने आए हैं जिसे गोद लेने वाले हैं।"

महकार ने ऑटो वहीं रुकवाया। मीटर देखकर पैसे दिए और बोला—"बस भैया, मेरा-तुम्हारा साथ यहीं तक था।"

पेमेंट लेने के बाद ऑटो वाले ने ऑटो घुमाया और बगैर कुछ कहे वापिस चला गया।

महकार भीड़ की तरफ बढ़ गया था। ज्यादा लोग नहीं थे।

आगे पहुंचकर उसने देखा—इमरान हाशमी सड़क पर खड़ी एक कार से टेक लगाए खड़ा सिगरेट पी रहा था।

महकार पर रहा न गया। वह 'इमरान-इमरान' करता उसकी तरफ लपका पर उस तक पहुंच न पाया क्योंकि उससे पहले ही कुछ लोगों ने दबोच लिया। एक ने गुर्राकर पूछा—"कहां जा रहा है?"

"म-मुझे इमरान हाशमी से मिलना है।"

"पागल है क्या? देख नहीं रहा! टेक की तैयारी चल रही है।

शूटिंग देखनी है तो दूसरे लोगों की तरह खामोश खड़ा हो जा वरना फिल्मसिटी से बाहर फेंककर आएंगे।"

महकार सहम गया और खामोशी के साथ शूटिंग देखने वाले अन्य लोगों के बीच जाकर खड़ा हो गया।

छज्जे वाली कैप लगाए एक पतला-दुबला शख्स तेज कदमों से चलता हुआ कार के साथ टेक लगाए खड़े इमरान के पास पहुंचा और बोला—"तुम कार ड्राइव करोगे। हुमा, तुम बगल वाली सीट पर बैठोगी और भावेश, तुम अगली दोनों सीटों के बीच खड़े होगे।"

तीनों ने सहमति से गर्दन हिलाई।

कैप वाले ने, जो वास्तव में कन्नन अय्यर था, पुनः इमरान से कहा—"कार बहुत कम रफ्तार पर चलानी है और स्कूल के गेट के सामने ठीक वहां रोकनी है जहां सड़क पर चॉक से निशान लगा है।"

"ओके।" इमरान ने कहा।

"इस सीन में तुम्हें तड़पती हुई आवाज में सिर्फ 'जुबैन' कहना है। उसके साथ रिएक्शंस देने हैं। मेन डायलाग तुम दोनों के हैं।"

उसने हुमा और भावेश से कहा—"याद हैं न!"

दोनों ने पुनः स्वीकृति में सिर हिलाया।

कन्नन दौड़ता हुआ सौरभ गोस्वामी के पास आया। कैमरा सड़क के पैरेलल, फुटपाथ पर बिछी पटरी पर लगा हुआ था। कन्नन ने उससे कहा—"सौरभ कैमरा तुम्हें कार के साथ-साथ लेकर चलना है। एक सेंटी मीटर भी न आगे निकलना है, न पीछे रह जाना है।"

"ठीक है।"

फिर, कन्नन ने ऊंची आवाज में कहा—"इमरान, क्यों न एक रिहर्सल कर लें?"

"जैसा ठीक समझो।" इमरान ने कहा।

"यही ठीक रहेगा—रेडी?"

इमरान, हुमा और भावेश ने कार का दरवाजा खोला। इमरान ने ड्राइविंग सीट पर बैठकर गाड़ी स्टार्ट कर दी थी। हुमा बगल वाली सीट पर बैठी थी और भावेश दोनों सीटों के बीच पीछे की तरफ खड़ा था। इधर कार ने चलना शुरु किया, उधर उसी के साथ-साथ कैमरे ने पटरी पर। सीन की जरूरत के मुताबिक भावेश नाराज नजर आने लगा था। इमरान और हुमा खामोश थे। कार सड़क पर वहां पहुंच चुकी है जहां चॉक से निशान लगा था। कैमरा भी वहां पहुंचकर लगातार कार के अंदर झांक रहा है। इमरान कार रोक देता है।

हुमा भावेश के बाल सहलाती हुई कहती है—"अब तुम बड़े हो जुबैन(फिल्म में भावेश का यही नाम है)!" थोड़ा गैप देकर फिर कहती है—"क्या तुम नहीं हो?"

भावेश गुस्से में कहता है—"मैं तुमसे नफरत करता हूं।" फिर इमरान की तरफ देखकर कहता है—"तुम दोनों से।"

इतना कहने के बाद वह कार का दरवाजा खोलकर स्कूल के गेट की तरफ भाग जाता है।

इमरान थोड़ी तड़प के साथ उसे पुकारता है—"जुबैन... वह नहीं सुनता। भागता चला जाता है। इमरान की आंखें नम हो जाती हैं। हुमा उसका सिर सहलाती हुई कहती है—"तुम तो उससे भी छोटे हो।"

इमरान मुस्कराने की कोशिश करता है।

"गुड...वैरीगुड।" कन्नन प्रसन्नता भरे स्वर में बोला—"एकदम परफेक्ट। मुझे दुख है कि मैंने टेक नहीं लिया।"

"मैंने तो पहले ही कहा था, सब ठीक होगा।" इमरान हाशमी बोला—"लेकिन तुम्हें तसल्ली नहीं होती।"

"ओके। अब टेक लेते हैं।"

इस बीच ड्राइवर ने कार को बैक करके वहीं पहुंचा दिया था जहां से इमरान स्टार्ट करके उसे चॉक के निशान पर लाया था। सौरभ भी कैमरे को वापस वहीं ले गया। इमरान, हुमा और भावेश भी चहलकदमी सी करते वापस कार के नजदीक पहुंच गए थे। यही समय था जब एक बार फिर महकार 'इमरान-इमरान' चिल्लाता हुआ उसकी तरफ दौड़ा और इस बार भी गार्ड उसे पकड़ने के लिए लपके जरूर थे मगर किसी की भी पकड़ में आने से पूर्व वह दौड़कर इमरान के कदमों से जा लिपटा और गिड़गिड़ाने लगा—"इमरान, बस एक मिनट के लिए मेरे साथ मेरे घर चलो वरना मेरी दस साल की बेटी मर जाएगी।"

इमरान अचानक एक अंजान शख्स द्वारा की गई इस हरकत पर बौखला-सा गया था। अभी वह कुछ समझ भी न पाया था कि चार गार्डों ने मिलकर महकार को न केवल उठा लिया बल्कि उसे लिए तेजी से विपरीत दिशा में दौड़ पड़े। उनकी गिरफ्त में फंसा महकार लगातार इमरान की तरफ देखता गिड़गिड़ाता रहा था—"तुम्हें खुदा का वास्ता इमरान, मेरी बच्ची को बचा लो। आज उसका बर्थडे है। अगर वो तुमसे नहीं मिली तो अपनी जान दे देगी। वो तुम्हारी बहुत बड़ी फैन है। बुखार से तप रही है। वो मर जाएगी इमरान।"

गार्ड अपने काम में मशगूल थे कि जाने इमरान को क्या सूझा, उसने बहुत ही गंभीर लहजे में कहा था—"रुको।"

गार्ड जहां के तहां रुक गए।

महकार के मुंह से भी अब बोल न फूट रहा था।

आहिस्ता-आहिस्ता चलता इमरान उनके करीब आया और महकार की आंखों में आंखें डालकर बोला—"कहां से आए हो?"

"व-विले पार्ले से।" वह बड़ी मुश्किल से कह सका।

"क्या चाहते हो?"

"म-मेरी दस साल की बेटी है। व-वो तुम्हारी फैन नहीं दीवानी है। इतनी ज्यादा कि एक बार तुम्हारे लिए टैरेस से कूदकर जान देने की कोशिश कर चुकी है। उसे बुखार है। तुमसे मिलना चाहती है।"

"साथ क्यों नहीं लाए?"

"उसकी हालत ऐसी नहीं है कि साथ ला सकता।"

कुछ देर इमरान खामोशी से उसकी तरफ देखता रहा। फिर करीब ही खड़े शख्स से कहा—"जमशेद भाई इसे मेकअप रूम में पहुंचा दो।" फिर महकार की तरफ पलटकर बोला—"मैं ये शॉट देकर वहां आता हूं। तब तुम्हारी बात सुनूंगा।"

खुशी की ज्यादती के कारण महकार 'थैंक्यू' तक न कह सका।

रिम्पी के टैरेस से गिरने की घटना बताने के बाद महकार ने इमरान से कहा—"मैं उसे डॉक्टर के पास ले गया। आज तीन दिन हो गए हैं। चार बुखार है उसे। उतरने का नाम नहीं ले रहा। दहशत के कारण इस कदर डरी हुई है कि मुझ सहित किसी को अपने शरीर पर हाथ तक नहीं लगाने दे रही। जब मैंने डॉक्टर से कहा कि डॉक्टर साहब, इसका बुखार उतर क्यों नहीं रहा है तो वो बोला कि जब तक अंदर से ठीक होने की मरीज की खुद की इच्छा नहीं होती तब तक कोई दवा काम नहीं करती। अगर एक क्षण के लिए भी इसकी मुलाकात इमरान हाशमी से हो जाए तो वह मुलाकात इसके लिए रामबाण जैसा काम करेगी। मैं जानता हूं इमरान कि तुम्हारा एक-एक मिनट करोड़ों-करोड़ रुपए का है और मेरे पास तो देने के लिए फूटी कौड़ी तक नहीं है मगर ये सवाल एक नन्हीं-सी जान का है। मेरे लिए मेरी रिम्पी करोड़ों तो क्या, अरबों-खरबों रुपए से भी कीमती है। सिर्फ एक मिनट इंसानियत को दे दो इमरान। मेरी बच्ची बच जाएगी। चलकर देखो तो सही मेरे साथ। तुम्हारे करोड़ों फैन होंगे लेकिन वैसा दीवाना कोई न होगा जैसी मेरी रिम्पी है। उसका कमरा तुम्हारे फोटुओं और पोस्टरों से अटा पड़ा है। हमेशा तुम्हारी फिल्मों की सीडी देखती रहती है। बंद कमरे में इस तरह तुमसे बातें करती है जैसे तुम उसके साथ बैठे हो। अगर तुम उससे नहीं मिले तो रिम्पी पागल हो...

"बस-बस। चलता हूं। अभी चलता हूं तुम्हारे साथ।" इमरान ने द्रवित भाव से कहा—"मेरा यहां का काम खत्म हो गया है।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया इमरान...बहुत-बहुत शुक्रिया।" महकार इस तरह खुश होकर एक बार फिर उसके कदमों में गिर गया था जैसे उसे संजीवनी मिल गई हो। खुशी की ज्यादती के कारण रो पड़ा था वह। रोता-रोता बोला—"म-मुझे पूरा यकीन था इमरान कि तुम इंसानियत के नाते यही फैसला करोगे। ये दुखियारा पिता आज तुम्हें दुआ देता है कि तुम्हारी हर फिल्म सुपर-डुपर हिट होगी। अपने काम से इतनी शौहरत पाओगे जितनी कभी किसी ने न पाई होगी।"

"सबसे पहले मेरे पैर छोड़ो और वहां बैठो।" इमरान ने उस सोफे की तरफ इशारा किया जिस पर महकार उसके पैर पकड़ने से पहले बैठा था—"सजदा इंसान को नहीं, सिर्फ खुद को करना चाहिए।"

वापस सोफे पर बैठते वक्त भी महकार की आंखों से आंसू बहे चले जा रहे थे और जुबान इमरान को दुआएं देते न थक रही थी। जबकि इमरान ने मेकअप रूम में मौजूद तीसरे शख्स से कहा—"हम महकार के घर चल रहे हैं जमशेद भाई।"

जमशेद, जो इमरान का सेक्रेटरी था, बड़ी जबरदस्त दुविधा में फंसा नजर आ रहा था। अटकता-सा बोला—"ल-लेकिन...

"कोई लेकिन नहीं।" इमरान ने हाथ उठाकर कहा।

"म-मैं ये कहना चाहता था इमरान कि एक पैंतीस की फ्लाइट है। तुम्हें कनाडा जाना है। वहां के मेयर से मीटिंग है तुम्हारी।"

"ओह! हां।" इमरान को भी याद आया। चेहरे पर दुविधा के भाव उभर आए। मस्तक पर चिंता की लकीरें।

महकार को लगा—बनी बनाई बात बिगड़ने वाली है। इस बार उसने जमशेद के पैर पकड़ लिए और गिड़गिड़ाने लगा—"समझने की कोशिश करो जमशेद भाई, ये एक मासूम बच्ची की जिंदगी का सवाल है। बस एक मिनट की बात है। कनाडा तो इमरान उसके बाद...

"समझने की कोशिश तुम्हें भी करनी चाहिए महकार भाई।"

जमशेद ने उसे अपने कदमों से उठाते हुए कहा—"इंटरनेशनल फ्लाइट के लिए दो घंटे पहले पहुंचना होता है। हम पहले ही लेट हैं। वहां की अथार्टी से रिक्वेस्ट करनी पड़ेगी। रिम्पी से इमरान वहां से लौटने के बाद मिल लेगा। क्यों इमरान?"

दुविधा में फंसा इमरान चुप रह गया था जबकि हाथ जोड़कर रोते हुए महकार कहता चला गया—"आज उसका बर्थडे है। अगर तुम न पहुंचे तो...तो पता नहीं वह खुद को क्या कर लेगी।"

इमरान का चेहरा साफ बता रहा था कि इस वक्त वह कुछ सोच रहा है और फिर, अचानक ऐसे अंदाज में चुटकी बजा उठा जैसे कोई तरकीब दिमाग में आई हो। बड़े ही उत्साहजनक स्वर में उसने अंजुम से पूछा था—"अंगद कहां है?"

अंगद फिल्मसिटी के जंगल में लगे 'एक थी डायन' के सेट पर पहुंचा ही था कि उसने देखा—चारों तरफ चीखो-पुकार मची हुई थी। यूनिट के मुकम्मल लोग इस तरह सेट से बाहर की तरफ भाग रहे थे जैसे अंदर आग लग गई हो।

हर चेहरे पर दहशत थी, हर आंख में आतंक।

कई तो एक-दूसरे से उलझकर गिर भी गए थे मगर गिरते ही उनमें से किसी ने उठने और फिर दौड़ लगाने में एक सेकिंड की भी देर नहीं की। अंगद हैरान रह गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हुआ क्या है?

बदहवास हालत में भागते कई लोगों से उसने पूछा भी कि बात क्या है मगर किसी ने जवाब नहीं दिया। जवाब तो कोई तब देता जब किसी को रुककर सांस लेने का होश होता।

तभी उसे तरूणा नजर आई।

वह भी दूसरे लोगों की तरह बदहवास हालत में दौड़ती चली आ रही थी। अंगद ने उसे रोका तो वह उसकी गिरफ्त से छूटकर पुनः दौड़ने के लिए संघर्ष करने लगी। जबरदस्त सस्पेंस में फंसे अंगद ने उसे जोर से झंझोड़ा और चीखा—"ये मैं हूं तरू, अंगद।"

ऐसा लगा जैसे तरूणा के जेहन को बिजली का शॉक लगा हो।

हड़बड़ाकर अंगद की तरफ देखा था उसने। उसने, जिसके चेहरे पर मौत की स्याही फैली हुई थी। अगले ही पल वह अंगद से लिपटकर ऐसे अंदाज में फूट-फूटकर रो पड़ी जैसे घनघोर मुसीबत में फंसे बच्चे को किसी अपने का कंधा मिल गया हो।

अंगद ने महसूस किया डर के मारे वह थरथर कांप रही थी।

सस्पेंस था कि अंगद का दिमाग फाड़े दे रहा था। इसलिए उसने तरूणा के दोनों कंधे पकड़कर अपने आलिंगन से अलग किया और लगभग चीखते हुए पूछा—"कुछ बताओगी भी कि आखिर हुआ क्या है? क्यों सब लोग बदहवास हालत में भागे चले जा रहे हैं? क्यों डरी हुई हो तुम इतनी?"

"त-त-त-तेंदुआ!" वह बड़ी मुश्किल से कह सकी।

"तेंदुआ? तेंदुआ क्या?"

"व-वो सेट के अंदर है।"

अंगद चौंका—"सेट के अंदर तेंदुआ है?"

तरूणा ने जल्दी-जल्दी स्वीकृति में गर्दन हिलाई क्योंकि कंठ बुरी तरह सूखा होने के कारण उससे आवाज न निकल सकी थी।

"यहां तेंदुआ कहां से आ गया?"

तरूणा ने 'नहीं मालूम' वाले अंदाज में हाथ नचाए।

"मैं देखता हूं।" कहने के साथ अंगद ने उसे छोड़ा और सेट के गेट की तरफ बढ़ गया मगर तभी, तरूणा ने लपककर उसे पकड़ा। हांफती-सी बोली—"वहां मत जाओ। वो तुम्हें खा जाएगा।"

"ऐसे-कैसे खा जाएगा! मैं कहता हूं तुम लोगों को वहम हुआ है। तेंदुआ भला यहां कहां से आ जाएगा?" कहने के बाद वह खुद को तरूणा से छुड़ाकर गेट की तरफ बढ़ गया।

तरूणा उसके पीछे थी।

तरूणा के बार-बार रोकने पर भी वह नहीं माना और सेट के अंदर दाखिल हो गया। तेंदुए की तलाश में चारों तरफ देखने लगा वह मगर तेंदुआ तो तेंदुआ, उसे खरगोश का बच्चा तक कहीं नजर न आया। अपनी बगल में खड़ी थरथर कांप रही तरूणा की तरफ देखता बोला—"कहां है तेंदुआ?"

"व-वो!" डरी हुई तरूणा ने एक मेज की तरफ इशारा किया। उसके इशारे का पीछा करते ही, पलक भी नहीं झपकी थी कि अंगद के भी

रोंगटे खड़े हो गए। जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई थी।

वहां उसे दो चमकदार आंखें नजर आई थीं।

कानों में पड़ी—मुकम्मल सेट में गूंजती तेंदुए की गुर्राहट।

एक क्षण...सिर्फ एक क्षण के लिए अंगद और तेंदुए की आंखें मिली थीं। अगले क्षण उसने कर्णभेदी दहाड़ के साथ मेज के नीचे से अंगद की तरफ सीधी जम्प लगाई।

मेज उछलकर दूर जा गिरी थी।

चीखती हुई तरूणा पीछे हट गई थी।

जबकि अंगद को अपनी रक्षा के लिए करीब रखी कुर्सी उठाकर तेंदुए पर वार करने के अलावा और नहीं सूझा।

अगर वह ऐसा न करता तो तेंदुआ लगभग उसके जिस्म पर आ गिरा था और अगर ऐसा हो जाता तो भगवान भी अंगद को नहीं बचा सकता था। हवा में घूमती हुई कुर्सी तेंदुए के भारी-भरकम जिस्म से टकराते ही टूट गई थी मगर हलक से गुर्राहट निकालता तेंदुआ भी एक दूसरी मेज पर जा गिरा था।

मेज उसके वेट से टूट गई।

टूटी हुई मेज के साथ वह भी जमीन पर जा गिरा।

अंगद समझ चुका था कि अगर इस वक्त उसने पीठ दिखाई तो तेंदुआ उसे कच्चा चबा जाएगा। खुद को बचाने के लिए कहो या बौखलाहट में, आगे बढ़कर उसने टूटी हुई कुर्सी से ही तेंदुए पर हमला कर दिया। खुद को बचाने के लिए तेंदुए ने पीछे की तरफ जम्प लगाई और अंगद की रेंज से दूर होकर, उसकी तरफ देखते हुए जोर से दहाड़ा। नुकीले दांतों वाला उसका भयंकर जबड़ा देखकरअंगद के तिरपन कांप गए थे मगर इस बात को वह अच्छी तरह समझता था कि इतना पंगा लेने के बाद उसके पीछे हटने का मतलब दर्दनाक मौत के अलावा और कुछ नहीं है इसलिए, टूटी हुई कुर्सी को ताने, मुंह से आवाज निकालता तेंदुए की तरफ बढ़ा।

तेंदुए ने पीछे की तरफ ही एक और जम्प लगाई और दौड़कर टीन की दीवार के बीच जो थोड़ा-सा गैप था, उससे बाहर निकल गया। हुआ भले ही चाहे जो हो लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि खौफ की ज्यादती के कारण खुद अंगद की टांगें कांप रही थीं।

तेंदुआ सेट से जा चुका था मगर अंगद अपनी जगह से एक इंच भी हिल नहीं पा रहा था। टूटी हुई कुर्सी को उसी तरह ताने खड़ा था वह। तरूणा उसका बाजू पकड़कर गेट की तरफ खींचने का प्रयास करती बोली—"आओ अंगू। चलो यहां से।"

तभी कुछ लोगों के दौड़कर नजदीक आने की आवाज आई।

अंगद और तरूणा ने घूमकर उधर देखा—बंदूकें ताने फिल्म सिटी के चार-पांच गार्ड अभी-अभी सेट के अंदर दाखिल हुए थे।

घबराई-सी हालत में पूछा था उन्होंने—"कहां है तेंदुआ?"

"उस रास्ते से बाहर चला गया।" मुश्किल से कहते हुए अंगद ने टीन की दीवार के बीच बने गैप की तरफ इशारा किया।

"ओह!" एक ने अपनी बंदूक झुकाते हुए राहत भरे स्वर में कहा—"थैंक्स गॉड! वो किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सका।" "ये इत्तफाक है कि किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ लेकिन ये कैसा मैनेजमेंट है फिल्मसिटी की अथार्टी का? तेंदुआ कहां से आ गया यहां? किसी को चीर डालता तो कौन जिम्मेदार होता?"

दूसरे गार्ड ने टीन की दीवार के बीच बने गैप की तरफ इशारा करने के साथ कहा—"उधर घना जंगल है। कभी-कभी वहां से जंगली जानवर आ जाते हैं। मगर तेंदुआ पहली बार ही आया।"

"अथार्टी ऐसा कोई इंतजाम क्यों नहीं करती कि वे यहां पहुंच ही न पाएं?"

"ये तो अथार्टी से पूछिए साब, हम लोग तो गार्ड हैं। जैसे ही पता लगा, उसे भगाने चले आए।"

अंगद को भी लगा कि इन लोगों से बहस करने का कोई फायदा नहीं है। तब तक सेट के गेट पर यूनिट के उन्हीं लोगों की भीड़ लग चुकी थी जो बदहवास हालत में भागे थे। शायद बंदूकधारी गार्डों के कारण उनका हौसला बढ़ा था और वे वापस आ गए थे।

फाइट मास्टर ने अंगद की तरफ आते हुए कहा था—"शाबास अंगद, तूने बहुत हिम्मत दिखाई कि उससे टकरा गया।"

अंगद बेचारा क्या जवाब देता!

तरूणा जरूर बढ़ा-चढ़ाकर लोगों से उसकी तारीफ करने लगी।

बार-बार बताने लगी कि अंगद ने किस तरह तेंदुए का मुकाबला किया और किस तरह उसे भाग जाने पर मजबूर कर दिया।

अंगद हीरो बन गया था।

उस वक्त यूनिट के लोग उसे कंधों पर उठाए उसकी जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे जब बौखलाया-सा जमशेद अंदर दाखिल हुआ।

उसकी हालत बता रही थी कि उसने बाहर यह सुन लिया है कि सेट के अंदर तेंदुआ घुस आया था। यूनिट के लोगों ने जब उसे अंगद की बहादुरी के बारे में बताया तो वह भी अंगद की तारीफ किए बगैर न रह सका। कुछ देर बाद जब माहौल ठंडा हुआ तो उसने अंगद से कहा—"इमरान साहब तुम्हें बुला रहे हैं।"

अंगद के मेकअप रूम में कदम रखते ही महकार यूं उछलकर खड़ा हो गया जैसे संसार का आठवां आश्चर्य देख लिया हो।

आंखों में हैरत का सागर उमड़ रहा था।

उन आंखों में जिनसे वह कभी इमरान हाशमी को देख रहा था कभी अंगद को। जुबान से बोल न फूट सका था। जबकि इमरान हाशमी ने कहा—"कहो मिस्टर महकार? कैसी रही?"

महकार बेचारा क्या जवाब देता? वह तो यह तक न समझ पाया था कि इमरान ने पूछा क्या है? इमरान ने पुनः महकार से पूछा था—"मेरी जगह ये चलेगा न?"

"ज-जी! मैं समझा नहीं।"

"अगर तुम्हारे साथ यह जाए तो क्या तुम्हारी बेटी पहचान जाएगी कि उससे मिलने इमरान आया है या कोई और?"

"स-सूरत देखकर तो कोई भी नहीं बता सकता कि आप दोनों में से इमरान कौन है मगर...

"मगर?"

"उसकी बात अलग है। वो आपके बारे में इतना कुछ जानती है कि मैं दावे के साथ नहीं कह सकता कि वह धोखा खा जाएगी।"

"मगर मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह यह नहीं ताड़ सकेगी कि ये इमरान नहीं, कोई और है क्योंकि अंगद की सिर्फ शक्ल ही मुझसे नहीं मिलती बल्कि ये मेरी एक्टिंग भी कर सकता है। मेरी तरह चल-फिर, उठ-बैठ भी सकता है। बातें भी मेरे ही जैसे लहजे में कर सकता है। ये मेरा बॉडी डबल है।"

महकार चुप रह गया।

इमरान ने आगे कहा—"फिलहाल तुम्हें इसी से काम चलाना पड़ेगा महकार और मैं यकीन दिलाता हूं कि मेरे आने के बाद भी तुम्हें मेरी जरूरत नहीं पड़ेगी। अंगद सब संभाल लेगा।"

"मामला क्या है?" अंगद ने कहा—"मुझे भी तो कुछ बताइए!" इमरान हाशमी ने उसे एक ही सांस में सबकुछ बताने के बाद कहा—"मेरा कनाडा जाना इतना जरूरी न होता तो महकार के साथ मैं ही इसके घर जाता क्योंकि ऐसी नन्हीं दीवानी से मिलना हरेक आर्टिस्ट की खुशकिस्मती होती है। मजबूरी में तुम्हें भेज रहा हूं मगर ध्यान रखना अंगद, उसे किसी भी तरह से शक न हो पाए कि तुम इमरान नहीं हो। ऐसा हो गया तो उस लड़की को ऐसा धक्का पहुंचेगा कि फिर शायद वह हममें से किसी के भी संभाले में न आए।

तुम्हें उसे उसकी जिंदगी लौटानी है।"

अंगद ने बस इतना ही कहा—"ठीक है इमरान साहब।"

"जमशेद भाई।" इमरान ने सेक्रेटरी से कहा—"मैं तुम्हारी गाड़ी से एयरपोर्ट चलूंगा। मेरे लौटने तक मेरी गाड़ी ड्राइवर सहित अंगद के पास रहेगी। ड्राइवर को समझा देना कि मेरे अगले आदेश तक उसके लिए अंगद ही इमरान हाशमी है।"

अंगद हकला गया—"य-ये आप क्या कर रहे हैं सर?"

"भूल गए! उस लड़की को किसी भी हालत में शक नहीं होना चाहिए कि तुम इमरान नहीं हो और...महकार के मुताबिक जितनी दीवानी वह मेरी है तो कोई आश्चर्य नहीं कि मेरी गाड़ी का नंबर तक रट रखा हो। फैन ऐसे ही होते हैं।"

अंगद पर जवाब देते न बन पड़ा।

"तो मैं निकलता हूं।" आंखों पर काला चश्मा चढ़ाने के साथ इमरान दरवाजे की तरफ लपका।

अंगद ने महकार से पूछा—"बिटिया का नाम क्या है?"

"रिम्पी।"

महकार के मुंह से निकला ढाई अक्षर का यह लफ्ज अंगद के जेहन से इस तरह जाकर टकराया जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करेंटयुक्त नंगा तार टकराया हो। हलक से चीख-सी निकल गई थी उसके—"र-रिम्पी? क-क्या कहा? र-रिम्पी?"

अंगद के हलक से निकली हुई यह चीख ऐसी थी जिसने गेट तक पहुंच चुके इमरान के कदम जहां के तहां ठिठका दिए। पलटकर चौंके हुए स्वर में पूछा उसने—"क्या हुआ?"

"क-कुछ नहीं।" बौखलाहट में वह बस इतना ही कह सका।

"कुछ तो?" उसने चश्मा उतारने के साथ पूछा—"तुम लड़की का नाम सुनकर इतनी बुरी तरह क्यों चौंके?"

"अ-आप जाइए...मैं संभाल लूंगा।"

इमरान कुछ कहना चाहता था कि जमशेद ने कहा—" हमें देर हो रही है सर, फ्लाइट मिस हो जाएगी।"

इमरान और जमशेद दरवाजा पार कर गए।

अंगद अभी तक भी खुद को आश्चर्य के सागर से निकाल नहीं पाया था। अब वह महकार को ऐसी नजरों से देख रहा था जैसे अजूबे को देख रहा हो। जब काफी देर वह इसी अवस्था में रहा।

मुंह से बोल तक न फूट सका तो महकार ने ही पूछा—"आप मेरी तरफ इस तरह क्यों देख रहे हैं?"

"क्या तुम्हारी बेटी का नाम वाकई रिम्पी है?"

"हां।"

"बचपन से?"

"हां जी। मगर क्यों?"

उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर अंगद ने एक और सवाल किया था—"क्या तुम बता सकते हो कि उसका जन्म कब हुआ?"

"अभी तो बताया था! आज उसका बर्थडे है। आज से ठीक दस साल पहले पैदा हुई थी वह।"

"मेरा मतलब उसकी डेट ऑफ बर्थ से नहीं था। मैं ये जानना चाहता हूं कि क्या वह पूर्णिमा की रात को पैदा हुई थी?"

"हां।"

उसकी ये 'हां' अंगद का रोंया-रोंया खड़ा कर गई थी।

सारी बात सुनने के बाद तरूणा सन्न रह गई। जबकि उसकी हालत से बेखबर अंगद कहता चला गया—"मेरी समझ में नहीं आ रहा तरू कि किस्मत मेरे साथ क्या खेल खेल रही है? इस दुनिया में इतने लोग हैं, उस औरत द्वारा दी गई बलि मुझे ही क्यों दीखती है? और अब, देखने वाली बात है, रिम्पी का किस्सा किस तरह घूमकर मेरे पास पहुंचा है। उस रिम्पी का किस्सा जो उस औरत की अगली शिकार है जिसके बारे में यह जानने को मैं खुद मरा जा रहा था कि वह कौन है और कहां है?"

कहीं खोई-सी तरूणा ने पूछा—"क्या तुम जाओगे?"

"क्यों नहीं जाऊंगा?" अंगद के लहजे में आश्चर्य था।

"मेरे ख्याल से नहीं जाना चाहिए अंगद।"

"क्यों?"

"वहां तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है।"

"मेरी जान को खतरा?"

"जैसा तुमने उस औरत के बारे में बताया, उससे जाहिर है कि वह किसी भी हालत में अपने अगले शिकार को नहीं छोड़ेगी और तुम उसे बचाने की कोशिश करोगे। इस अवस्था में...

"हां।" कहते वक्त अंगद के जबड़े भिंच गए थे—"अगर उसने रिम्पी को बाल बराबर भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश की तो कम से कम अपनी जान जाने तक मैं उसे कामयाब नहीं होने दूंगा। जब मैं रिम्पी का पता जानने के लिए मरा जा रहा था, तब मेरे दिमाग में यही तो था—यह कि अगर मुझे उसका पता लग जाए तो इस बार मैं उस घृणित और खतरनाक औरत को कामयाब नहीं होने दूंगा।

और अब...जबकि कुदरत मुझे ये मौका दे रही है तो पीछे हट जाऊं! नहीं तरू, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

"म-मुझे तुम्हारी फिक्र है अंगू।" तरूणा के खूबसूरत मुखड़े पर चिंताओं का जाल बिछा नजर आया।

"और मुझे अपनी जरा भी फिक्र नहीं है। बल्कि मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे कुदरत मुझे कोई पवित्र काम करने का मौका दे रही है। सोचो तो सही, क्यों मुझे ही वे सपने चमकते हैं? क्यों कुदरत मुझे रिम्पी के पास भेज रही है? क्या इस सबसे ये नहीं लगता कि भगवान मुझसे कोई पवित्र काम कराना चाहता है।"

"रिम्पी के फादर ने तुमसे ये नहीं पूछा कि तुम उसका नाम सुनकर चौंके क्यों? क्यों तुमने ये पूछा कि क्या वह पूर्णिमा को...

"पूछा। काफी पीछे भी पड़ा मगर मैंने टाल दिया।"

तरूणा चुप रह गई।

तभी इमरान हाशमी का ड्राइवर पार्किंग से गाड़ी निकालकर ले आया था। महकार उसकी बगल वाली सीट पर बैठा था। ड्राइवर ने तेजी से बाहर निकलकर अंगद के लिए पिछला गेट खोल दिया था। अंगद ने उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा—"चलता हूं तरू।"

"मैं भी चल रही हूं।" वह दौड़कर उसके करीब पहुंची।

"त-तुम क्या करोगी?"

"जो तुम करोगे।"

कुछ देर अंगद उसकी तरफ देखता रहा। जैसे सोच रहा हो कि क्या करे? फिर गाड़ी में दाखिल होता बोला—"चलो।"

"आप उस गेट से अंदर आएं मैडम।" कहने के साथ ड्राइवर ने इधर का गेट बंद किया। लपककर उधर पहुंचा और एक झटके से गेट खोलकर एक तरफ खड़ा हो गया।

तरूणा गाड़ी के अंदर दाखिल हो गई।

गाड़ी चल पड़ी। खामोशी छाई हुई थी। जैसे सब अपने-अपने विचारों में गुम हों। एकाएक अंगद ने महकार से कहा—"तुम्हारे मौहल्ले वालों को पता नहीं लगना चाहिए कि मैं यानी इमरान तुम्हारे घर आया है। वरना वहां भीड़ लग जाएगी।"

"यह बात कैसे छुपाई जा सकती है? जब गाड़ी वहां रुकेगी और आप बाहर निकलेंगे तो...

"मेरी जेब में हमेशा अपना हुलिया बदलने वाला सामान रहता है। इस वक्त भी है। गाड़ी से उतरने से पहले मैं अपने चेहरे पर दाढ़ी मूंछ, चश्मा और मस्सा आदि लगा लूंगा।"

"पर उनसे कैसे छुपाया जा सकेगा जो रिम्पी के बर्थडे में शामिल होंगे। रिम्पी के कारण उस वक्त तो मेकअप में नहीं रह सकते।"

"उनकी बात अलग है।"

महकार चुप रह गया था।

अंकुर की मौत की सूचना धनपत और सरिता पर दुनिया का सबसे बड़ा वज्र बनकर गिरनी थी, गिरी। लेकिन ये सूचना उन्हें देनी तो थी ही। सो, दी गई और देने वाला खुद काले खां था।

यह खबर काले खां किसी और के द्वारा भी धनपत तक पहुंचा सकता था मगर वह खुद ही बंगले पर पहुंचा था। इसके पीछे एक खास वजह थी। उसे धनपत से कोई काम लेना था।

बंगले में रोवा-राट मच गया।

धनपत और सरिता अब्नार्मल नजर आने लगे थे। काले खां बड़े धैर्य से उनके नार्मल होने का इंतजार करता रहा क्योंकि वह जानता था—नार्मल तो उन्हें होना ही पड़ेगा।

इंसान कब तक एब्नार्मल रह सकता है!

करीब एक घंटे बाद तब, जब धनपत ने काफी हद तक खुद को संभाल लिया तो बोला—"कहां है मेरा बेटा?"

"पोस्टमार्टम हाऊस में।"

"कहां मिला वह?"

काले खां ने बताया।

धनपत के मुंह से निकला—"इतनी दूर?"

"घटनास्थल बता रहा था कि हत्या कहीं और की गई है। बाद में बॉडी वहां ले जाकर डाली गई।" काले खां ने जानबूझकर बॉडी की हालत नहीं बताई थी।

"इतने मासूम बच्चे को कोई कैसे मार सकता है।" कहने के बाद वह एक बार फिर फूट-फूटकर रोने लगा था।

काले खां को ऐसे माहौल फेस करने का अनुभव था इसलिए धनपत को भड़ास निकालने का पूरा मौका दिया और जब हिचकियां थोड़ी मंद पड़ीं तो मतलब की बात पर आता हुआ एक-एक शब्द का चुनाव करते हुए कहा था—"धनपत जी, मेरे ख्याल से आप ऐसा जरूर चाहते होंगे कि अंकुर के हत्यारे को कड़ी से कड़ी सजा मिले!"

"उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाना चाहिए।" गुस्से की ज्यादती के कारण धनपत ने दांत भींचकर कहा था—"मेरे मासूम बच्चे ने उसका क्या बिगाड़ा था?"

"मैं भी कसम खा चुका हूं कि उसे फांसी के फंदे पर पहुंचाने के बाद ही दम लूंगा मगर इस काम में मुझे आपकी मदद चाहिए।"

"मेरी मदद?" रोते-रोते वह चौंका था।

"क्योंकि अंकुर को ले जाने के बाद से न शालू कहीं नजर आई है, न ही किसी तरह यह पता लग सका है कि वह कहां है। इसके कारण मुझे लगता है कि इस सबके पीछे वही है। घटनास्थल से गाड़ी की बरामदगी के कारण ये शक और गहरा जाता है।"

उसने भभकते लहजे में कहा—"अब तो मुझे भी यकीन हो गया है। वह इसी वजह से मेरे बेटे के करीब आई थी मगर...

"मगर?"

"समझ में नहीं आ रहा, उसने ऐसा क्यों किया?"

"मेरे दिमाग में भी यही सवाल है।"

"मतलब?"

"क्योंकि डैड बॉडी मिलने से पहले मैं भी यही सोच रहा था कि अंकुर को फिरौती के लिए ही किडनेप किया गया है और देर-सवेर फिरौती के लिए फोन आएगा लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सीधी बॉडी मिली है। इसका मतलब, उसका उद्देश्य अंकुर को मारना ही था। ऐसा

उद्देश्य तो किसी का तभी हो सकता है जब कोई बदला लेना चाहता हो। किसी को आपसे दुश्मनी हो।"

"बता चुका हूं इंस्पेक्टर, मेरी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है।"

"आपकी नहीं होगी मगर किसी को आपसे हो सकती है।"

"य-ये क्या बात हुई?"

"ऐसा होता है धनपत जी, हमारे मन में किसी के प्रति दुश्मनी नहीं होती लेकिन कोई अपना ही, बल्कि जिसे हम अपना हितैषी समझ रहे होते हैं, वह किसी ऐसी बात को जहरीली गांठ बनाकर अपने दिल में लिए बैठा रहता है जिस बात को हमने कभी महत्व ही न दिया हो। पूरी तरह महत्वहीन समझा हो।"

"शालू के मन में मेरे प्रति ऐसी कोई गांठ कैसे हो सकती है?

वह तो मुझे मिली ही पंद्रह दिन पहले थी और तब से मैंने उस पर एहसान ही एहसान किए थे। भले ही चाहे किसलिए किए हों।"

"मेरे ख्याल से जहरीली गांठ उसके नहीं, उसके दिल में थी या है, जिसने उसे औजार बनाकर भेजा था।"

"किसी ने भेजा था उसे?"

"अभी नहीं पता। केवल अनुमान है मेरा और अनुमान इसलिए है क्योंकि फिलहाल शालू और आपके बीच कोई ऐसी सीधी दुश्मनी नजर नहीं आ रही जिसकी वजह से वह इतना घृणित काम करे।"

"सर मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप ये कौनसी दिशा में सिर खपा रहे हैं।" बहुत देर से चुप खड़ा राजपाल अंततः खुद को चुप न रख सका—"जब अंगद को चमके सपने से सबकुछ...

"तू चुप रह।" काले खां ने उसे बहुत सख्ती से डांटा।

राजपाल सकपकाकर चुप हो गया। मगर धनपत ने कहा था—"दीवान जी क्या कहना चाहते हैं? अंगद का सपना! मतलब?"

"आप उस चक्कर में न पड़ें। इसकी बुद्धि जितनी है, उतनी ही बात करता है।" काले खां ने बात हवा में उड़ाई—"मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आपको किसी से भी हुआ, अपना कोई हल्का-सा पंगा भी याद आता है?"

"हमारा कभी किसी से कोई पंगा हुआ ही नहीं।"

"हुआ तो जरूर होगा क्योंकि कोई बेवजह तो आपके बेटे को मारेगा नहीं। लेकिन खैर, आपको याद नहीं आ रहा तो क्या किया जा सकता है।" वह बोला—"अब इसके अलावा कोई चारा नहीं है कि शालू को तलाश किया जाए। उसके गिरफ्त में आने पर ही सारी गांठें खुलेंगी। पता लगेगा कि उसे किसने भेजा था।"

"जैसे भी हो, उसे तलाश करके मेरे सामने पेश करो।"

"कैसे? न हमारे पास उसका एड्रेस है, न फोटो।"

धनपत कसमसाकर रह गया।

अब जाकर मतलब की बात कही काले खां ने—"मैं इसी संबंध में आपकी मदद की बात कर रहा था। क्या आप कुछ देर के लिए मेरे साथ पुलिस हैडक्वार्टर चल सकते हैं?"

"मैं किसलिए?"

"मैं आपको अपने कंप्यूटर आर्टिस्ट के साथ बैठाकर शालू के हुलिए के आधार पर उसका फोटो बनाना चाहता हूं।"

राजपाल के रोंगटे खड़े हो गए थे। एक बार फिर वह खुद को बोलने से न रोक सका था—"सर, ये आप क्या कर रहे हैं?"

"मैंने कहा न! तू चुप रह।" काले खां फिर गुर्राया और एक बार फिर धनपत से पहले बोला—"एक बार फोटो बन जाए तो उसे ढूंढना

आसान हो जाएगा। हम अखबार में फोटो छाप सकते हैं।

टीवी पर रिलीज कर सकते हैं।"

"हां। ये ठीक रहेगा।" धनपत की आंखें चमक उठीं।

"ये काम जरा भी मुश्किल नहीं है। हम लोग करते रहते हैं।

आप बस शालू का हुलिया बताते रहिएगा। वह फोटो बना लेगा।"

"मैं तैयार हूं।"

"तो चलिए मेरे साथ।"

"चलो।" उत्साह से भरा धनपत दरवाजे की तरफ बढ़ा।

धनपत अपनी गाड़ी में था जो उस जीप के पीछे आ रही थी जिसमें काले खां, राजपाल और ड्राइवर थे।

राजपाल जरा भी सब्र नहीं रख पाया था। जीप के स्टार्ट होकर आगे बढ़ते ही कहा था उसने—"मेरी समझ में नहीं आ रहा सर कि आप ये क्या पागलपन कर रहे हैं?"

"तुझे यह सब पागलपन क्यों लग रहा है?"

"ये पागलपन नहीं तो और क्या है?" उत्तेजना के मारे राजपाल का बुरा हाल था—"आप अखिल के द्वारा एक बार शालू का फोटो बनवाने की कोशिश कर चुके हैं। उसका अंजाम देख चुके हैं। उसके बाद भी अगर आप ऐसा कर रहे हैं तो...इसे पागलपन के अलावा और क्या कहा जा सकता है? अगर उसने धनपत को भी कोई नुकसान पहुंचा दिया तो...

"मैं यही देखना चाहता हूं कि तुम्हारी डायन धनपत के साथ क्या करती है।"

"ये तो जानबूझकर एक आदमी की जान को खतरा पैदा करने वाली बात है सर। अगर उसने धनपत को...

"मेरे ख्याल से वैसा कुछ नहीं होगा।"

"आखिर किस बेस पर है आपका ये ख्याल?"

"और तुम्हारा यह ख्याल किस बेस पर है कि धनपत के साथ भी वैसा ही कुछ होगा जैसा अखिल के साथ हुआ?"

"क्योंकि वह अपना हुलिया नहीं बनने देना चाहती। मेरे ख्याल का बेस पूर्व में घटी घटना है।"

"मुझे इस नतीजे पर पहुंचने दे कि तू ठीक है या मैं?"

"मतलब आप यह सिद्ध हो जाने के बावजूद अपनी बात पर अड़े हुए हैं कि अंगद ने बिल्कुल सच्चा सपना देखा था!"

"सो तो तू देख ही रहा है।"

"हद्‌द हो गई सर, हद्‌द हो गई। मैं पहली बार आपको तर्कों को नेग्लेक्ट करते देख रहा हूं। आपके पास किसी सवाल का जवाब नहीं है लेकिन हठधर्मिता पर अड़े हुए हैं और इस हद तक अड़े हुए कि कुछ देर बाद एक आदमी की जान से खेलने वाले हैं।"

"मुझे शालू का फोटो हर हाल में चाहिए राजपाल, उसके बगैर इस केस में आगे बढ़ने के लिए कोई रास्ता नहीं है और अब मेरा दिमाग मत चाट। मैं बात करने के मूड में नहीं हूं।" कहने के बाद उसने सिगरेट सुलगा ली थी।

पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचकर काले खां ने धनपत को एक कमरे में बैठाया और खुद उस हॉल में पहुंचा जिसमें हुलिए के बेस पर फोटो बनाने वाला आर्टिस्ट बैठता था।

जब उसे उसने यह बताया कि इस बार गायब हुए बच्चे का पिता शालू का हुलिया बताएगा और उसे उसका फोटो बनाना है तो आर्टिस्ट के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी थीं।

जो शख्स काले खां के सामने बोल तक नहीं सकता था उसने कह दिया—"क-क्या बात कर रहे हैं इंस्पेक्टर साहब? अगर फिर वैसा कुछ हो गया तो?"

"कुछ नहीं होगा। तुम्हारा काम अपनी ड्यूटी करना है। नहीं करोगे तो बर्खास्त कर दिए जाओगे।"

"पर ये तो...

"और सुनो।" उसे कुछ भी कहने का मौका दिए बगैर काले खां ने कहा—"अखिल के साथ जो हुआ, उसके सामने उसके बारे में तुम्हें जिक्र तक नहीं करना है। बिल्कुल इस तरह काम करना है जैसे शालू का हुलिया पहली बार बताया जा रहा हो।"

आर्टिस्ट के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उसे सूली पर चढ़ाया जा रहा हो। बहुत कुछ कहने की इच्छा के बावजूद मुंह से एक लफ्ज भी न निकाल सका जबकि काले खां उस कमरे में पहुंचा जिसमें धनपत को बैठा गया था और उसे लेकर आर्टिस्ट के पास आया।

राजपाल साथ था।

राजपाल और आर्टिस्ट की नजरें मिलीं।

दोनों की आंखों में आतंक के भाव थे लेकिन उनमें से कोई भी काले खां के आदेश की अवहेलना नहीं कर सकता था।

धनपत को क्योंकि अखिल के साथ घटी घटना के बारे में कुछ पता न था इसलिए उसके चेहरे पर बिल्कुल सामान्य भाव थे बल्कि वह सोचकर थोड़ा उत्साहित था कि शालू का फोटो बन जाए तो उसे ढूंढने में आसानी होगी।

आर्टिस्ट ने कांपते हाथों और कांपते दिल से काम शुरु किया।

सबसे पहले स्क्रीन पर कुछ फेस नजर आए।

उन फेसों पर आंख, कान, नाक या होंठ आदि कुछ भी नहीं थे।

अपनी आवाज को संतुलित बनाने की कोशिश करते आर्टिस्ट ने कहा था—"गौर से चेहरों की इन शेप्स को देखिए और मुझे बताइए कि उसका फेस इनमें से किस शेप से मिलता था?"

धनपत ने करीब तीन मिनट बाद एक शेप पर उंगली रखते हुए कहा—"ऐसी...ऐसी शेप थी उसके फेस की।"

आर्टिस्ट ने मोटे लैंसों वाला अपना चश्मा दुरुस्त किया और गौर से धनपत की तरफ देखता बोला—"श्योर?"

"श्योर।"

आर्टिस्ट ने वह शेप अलग कर ली। वे ही आंखें स्क्रीन पर लाया जो निखिल को दिखाई थीं। बोला—"अब आपको इन आंखों में से उसकी आंखें तलाश करनी हैं।"

एक बार फिर धनपत स्क्रीन पर नजर आने वाली आंखों को गौर से देखने लगा और...उससे भी ज्यादा गौर से राजपाल और काले खां धनपत के चेहरे को देख रहे थे।

वे उसके चेहरे पर होने वाले हल्के से हल्के परिवर्तन को भी अपनी नजरों से चूकने नहीं देना चाहते थे।

राजपाल का दिल इतनी जोर-जोर से धड़क रहा था कि वह उसकी आवाज इस तरह सुन सकता था जैसे स्टेथस्कोप लगाकर सुन रहा हो। इसमें शक नहीं कि दिल काले खां का भी बहुत जोर जोर से धड़क रहा था मगर उसका ध्यान उन धड़कनोंपर नहीं बल्कि धनपत के फेस पर था।

अगर यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि आर्टिस्ट का मुकम्मल ध्यान अपने काम पर नहीं था। उसे हर पल यह चिंता सता रही थी कि जाने किस पल धनपत की हालत वैसी हो जाए जैसी अखिल की हुई थी और इसमें कोई शक नहीं कि वह कुर्सी पर ऐसा कोण बनाकर बैठा था जिससे मौका लगते ही खुद को धनपत से दूर कर ले। भले ही वह काम करता नजर आ रहा हो मगर बीच बीच में धनपत के चेहरे को रीड कर रहा था।

धनपत ने पहली बार में ही उस आंख पर उंगली रखी जिसे अखिल ने आठ आंखों में से चुना था।

आर्टिस्ट ने वह आंख अलग करके फेस पर सैट की। उसका जोड़ा बनाया और फिर कांपते हाथों से बहुत सारी भंवें धनपत के सामने पेश कर कर दीं।

धनपत ने भंवें भी वही छांटी जो अखिल ने छांटी थीं।

लगभग वही चेहरा बनता जा रहा था जो अखिल बनवा रहा था। अब नंबर नाक का था और अखिल के साथ जो भी हुआ था, नाक छांटते वक्त ही हुआ था इसलिए जिस वक्त धनपत पूरे कंसन्ट्रेशन के साथ स्क्रीन पर मौजूद नाकों को देख रहा था ठीक उसी वक्त उससे भी ज्यादा कंसन्ट्रेशन के साथ काले खां और राजपाल उसके चेहरे को देख रहे थे। उनके दिलों की धड़कन इस कदर बढ़ चुकी थी कि उन्हें वे अपनी पसलियों पर सिर टकराते साफ-साफ महसूस कर रहे थे। आर्टिस्ट अपनी कुर्सी से उठकर भागने के लिए पूरी तरह तैयार था। धनपत अपने चेहरे पर गड़ी उनकी नजरों को इसलिए नहीं देख सका था क्योंकि उसका संपूर्ण ध्यान स्क्रीन पर नजर आ रही नाकों पर था।

और फिर तब, जब उसने एक नाक पर भी उंगली रख दी तो काले खां के होंठों पर सफलता से लबरेज जबरदस्त मुस्कान उभरी थी। उस वक्त उसकी और राजपाल की नजरें मिली थीं और काले खां की आंखों में व्यंगात्मक भाव थे।

जैसे कह रहा हो—"देखा! कुछ नहीं हुआ।"

राजपाल पुनः इतने गौर से धनपत के फेस को देखने लगा जैसे उसे पूरा यकीन हो कि कुछ होगा जरूर। आर्टिस्ट ने कांपते हाथों से नाक भी फेस पर फिक्स की और धनपत के सामने बहुत सारे होंठ पेश करता बोला—"अब ये बताओ कि इनमें से उसके होंठ कैसे थे?"

वह होंठों को ध्यान से देखने लगा।

बाकी तीनों के दिल बहुत जोर-जोर से धड़क रहे थे क्योंकि उसके द्वारा होंठ चुनते ही चेहरा लगभग पूरा हो जाने वाला था।

राजपाल ने खूब गौर से देखा—खूब देखा लेकिन धनपत के चेहरे पर कोई असामान्य चिन्ह नजर नहीं आया। दो मिनट बाद उसने एक होंठ पर उंगली रख दी और बोला—"उसके होंठ ऐसे थे।"

आर्टिस्ट ने वे होंठ होंठों के समूह से अलग किए और कर्सर से उन्हें लिए चेहरे पर फिट करने के लिए बढ़ा ही था कि— फट्ट! बहुत जोर से आवाज हुई।

उस क्षण किसी की समझ में नहीं आया कि वह आवाज क्यों हुई थी मगर पहले ही से किसी दुर्घटना के प्रति आशंकित राजपाल, काले खां और आर्टिस्ट ने उछलकर अपने स्थान छोड़ दिए थे।

आर्टिस्ट तो दौड़कर करीब पांच फुट दूर पहुंच गया था। हक्का-बक्का धनपत भी रह गया था। उसकी आंखें टीवी स्क्रीन पर जमी थीं और यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि अचानक वह टूट कैसे और क्यों गई?

स्क्रीन खील-खील होकर बिखर चुकी थी।

मॉनिटर के अंदर की वायरिंग नजर आ रही थी और ऐसा धुवां वुवां कुछ नहीं उठ रहा था जिससे ये लगता कि उसमें आग लग गई है। काले खां, राजपाल और आर्टिस्ट भी फटी-फटी आंखों से स्क्रीन की तरफ देख रहे थे जो अब कहीं थी ही नहीं।

राजपाल ने ऐसी नजरों से काले खां की तरफ देखा जैसे कह रहा हो—"लो, बना लो शालू का फोटो!"

धनपत बोला—"य-ये क्या हुआ? स्क्रीन कैसे टूट गई?"

किसी पर जवाब होता तो देता!

महकार के ड्राइंगरूम में कदम रखते ही अंगद इतनी बुरी तरह चौंका था जितनी बुरी तरह पिछली लाइफ में शायद ही कभी चौंका हो। उसकी आंखें दीवार पर लगे एक औरत के उस फोटो पर स्थिर होकर रह गई थीं जिस पर चंदन की माला चढ़ी हुई थी।

ऐसी हालत हो गई थी जैसे उसकी आंखें लोहा और वह फोटो चुंबक हो। कदम जहां के तहां स्थिर हो गए। फेस पर ऐसा आश्चर्य गर्दिश कर रहा था जैसे मिस्त्र के पिरामिडों को देख रहा हो। और फिर, आंखों में हल्की-हल्की नमी नजर आने लगी। उसकी यह हालत तरूणा और महकार में से किसी से न छुपी थी। जब हद हो गई तो महकार ने पूछा—"क्या देख रहे हो?"

"कौन है ये?" ये शब्द अंगद के मुंह से इस तरह निकले जैसे नींद में बोल रहा हो।

"मेरी पत्नी, सुकन्या।" महकार ने बताया।

"क-क्या ये अब दुनिया में नहीं है?"

"देख ही रहे हो, माला चढ़ी हुई है।"

"कब मौत हुई?"

"पांच साल पहले। रिम्पी केवल पांच साल की थी जब सुकन्या उसकी सारी जिम्मेदारियां मुझ पर डालकर चली गई।"

"क-कैसे?"

इस सवाल ने महकार के चेहरे पर न केवल हवाईयां उड़ा दी थीं बल्कि उस पर खौफ का जाल भी बिछा दिया था।

आंखों में ऐसे भाव थे जैसे वह किसी मंजर को देखकर दहशत के सागर में डूबता जा रहा हो।

मगर फिर शीघ्र ही खुद को नियंत्रित करने की असफल कोशिश करता बोला—"जाने दो उसे। तुम यहां रिम्पी से मिलने आए हो, उससे मिलो ताकि वह खुशी से उछल सके।"

हालांकि अंगद का दिमाग भावुकता, जिज्ञासा और सस्पेंस के जाल में उलझ गया था मगर, जाने क्या सोचकर इस वक्त उसने सुकन्या के बारे में ज्यादा बातें करना मुनासिब न समझा।

अपना ध्यान फोटो से हटाता बोला—"कहां है रिम्पी?"

"आओ।" कहने के साथ महकार उन्हें अंदर वाले कमरे में लेगया। कमरे में कदम रखते ही अंगद और तरूणा वहां की हालत को देखते रह गए। हर तरफ इमरान हाशमी ही इमरान हाशमी नजर आ रहा था। रिम्पी इमरान हाशमी के फोटो को छाती से लगाए चित्त अवस्था में लेटी हुई थी। उसकी आंखें बंद थीं और चेहरे ही से नजर आ रहा था कि कई दिन से बीमार है।

रिम्पी के चेहरे पर भी अंगद की नजरें उसी तरह चिपककर रह गई थीं जिस तरह सुकन्या के फोटो पर चिपकी थीं और एक बार फिर उसकी आंखों में हल्की-सी नमी उभर आई थी जिसे काले चश्मे के कारण कोई देख न सका था।

रिम्पी की देखभाल के लिए बैड की बगल में पड़ी कुर्सी पर एक जवान लड़की बैठी हुई थी जो उनके प्रवेश करते ही उठकर खड़ी हो गई और...अगर यह कहा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि अंगद उस लड़की को देखता रह गया क्योंकि वह खूबसूरत ही इतनी थी।

सुंदरता को भी छका देने वाला सौंदर्य।

अंडाकार चेहरा था उसका। नितंबों तक लटके खुले हुए काले, घने और लंबे बाल। चौड़ा मस्तक। कमानीदार भवें। नुकीली नाक।

रसभरे से पतले-पतले गुलाबी होंठ। थोड़ी-सी बाहर को निकली हुई ठुड्डी, सीप-सी पलकें और आंखें तो ऐसी थीं जैसे सामने वाले को अपनी तरफ खींच रही हों। बड़ी-बड़ी। बहुत ही चमकदार थीं वे।

आई-ब्रो ने उन्हें कुछ और निखार दिया था।

वह लंबी थी। पांच फुट, सात इंच के करीब। सांचे में ढले हुए जिस्म पर स्काई कलर की जींस और सुर्ख कलर के टॉप में वह गजब ढा रही थी। जींस बेहद चुस्त होने के कारण साफ नजर आ रहा था कि उसकी लंबी टांगें हाथी की सूंड के आकार की हैं और टॉप भी थोड़ा

चुस्त ही था जिसकी वजह से उसके भरे-पूरे उभार किसी भी मर्द को अपनी तरफ खींचने के लिए पर्याप्त थे।

महकार ने बताया—"ये नंदिनी है। नंदिनी दास। पड़ोस में रहती है। तीन ही दिन में रिम्पी इससे बहुत घुलमिल गई है।"

"और आप?" नंदिनी दास ने अपनी खनकती आवाज में अंगद और तरूणा की तरफ देखा था। उसकी चमकदार आंखों में उनका परिचय जानने की जिज्ञासा थी।

"रिम्पी के साथ कुछ देर बाद तुम भी जान जाओगी कि ये कौन हैं।" कहने के बाद महकार ने उससे पूछा—"बुखार कैसा है?"

"दवा दो तो थोड़ी देर के लिए उतर जाता है। दवा का असर खत्म होते ही फिर चढ़ने लगता है। कुछ ही देर पहले नापा था। एक सौ तीन है। कुछ खा नहीं रही है।"

"चिंता मत करो, अब उतर जाएगा।"

"क्यों, संजीवनी बूटी लाए हो क्या?"

महकार ने अंगद की तरफ देखते हुए कहा—"रिम्पी के लिए तुम इन्हें संजीवनी बूटी ही समझो।"

नंदिनी की समझ में कुछ नहीं आया जबकि—

महकार ने बैड पर झुकते हुए बहुत हौले से रिम्पी के भरे-भरे गाल थपथपाते हुए कहा—"रिम्पी...रिम्पी।"

वह कुनमुनाई।

"आंखें खोलो। देखो मैं किसे लाया हूं!"

रिम्पी की पलकें कांपी। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें ऊपर उठाने में उसे जबरदस्त परिश्रम करना पड़ रहा हो।

"देखो कौन आया है तुमसे मिलने?"

रिम्पी ने मिचमिचाती आंखों से अपने सामने का दृश्य देखा।

पापा और नंदिनी के अलावा उसे एक लड़की और एक लड़का नजर आया था। लड़के के चेहरे पर घनी दाढ़ी-मूंछें थीं। गाल पर मस्सा, आंखों पर चश्मा और नाक थोड़ी फैली हुई थी।

वह उसे ध्यान से देखती नजर आ रही थी।

और फिर, अचानक वह इस तरह बिस्तर से उछल पड़ी जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने जान डाल दी हो।

वह चीख पड़ी थी—"इमरान! तुम तो इमरान हाशमी हो!"

चारों हैरान रह गए। खासतौर पर अंगद। क्योंकि इस मेकअप में लोग उसे कम ही पहचानते थे। अगर यह कहा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि अंगद पर कुछ कहते न बन पड़ा था। जबकि वह बैड से उछलकर इस तरह अंगद से आ लिपटी थी कि अगर अंगद उसे तुरंत अपने बाजुओं में न भींच लेता तो नीचे गिर जाती।

गिरने की जरा भी तो परवाह न की थी उसने।

और...अंगद ने उसे भींचा भी कुछ ऐसे जजबाती अंदाज में था जैसे किसी ने बहुत दिन से बिछड़े अपने बच्चे को भींचा हो।

उस दृश्य को देखकर महकार की आंखें भर आई थीं। जबकि नंदिनी अपनी आंखों में बला की हैरानियां लिए अंगद की तरफ देख रही थी। उस अंगद की तरफ जिसकी गोद में मौजूद चहकती हुई रिम्पी ने कहा था—"ये चश्मा, ये मूंछ-दाढ़ी और ये मस्सा क्यों लगा रखा है तुमने और तुम्हारी नाक इतनी फूली हुई क्यों है इमरान?"

"दो कारण थे इसके।" अंगद ने तेजी से खुद को जजबातों के भंवर से निकाला और हंसता हुआ, अपना मेकअप उतारता हुआ बोला—"पहला, कोई मुझे यहां आते पहचान न ले। दूसरा, मैं देखना चाहता था कि तुम मुझे इस मेकअप में पहचान पाती हो या नहीं?"

"मैं तुम्हें किसी भी मेकअप में पहचान सकती हूं। मगर...।"

उसके चेहरे की तरफ गौर से देख रही रिम्पी की आंखें सुकड़ी थीं।

"क्या हुआ?"

"नहीं।" उसने एक झटके से कहा—"तुम इमरान नहीं हो।"

उसके इस वाक्य ने अंगद के ही नहीं, तरूणा और महकार के भी छक्के छुड़ा दिए थे। बड़ी मुश्किल से खुद को सामान्य दर्शाते हुए कहा था अंगद ने—"क्यों? तुम्हें ऐसा शक क्यों हुआ?"

"क्योंकि इमरान के चेहरे पर ये निशान नहीं है।" उसने अंगद के होठों के नीचे चोट के उस छोटे-से निशान की तरफ देखते हुए कहा जो उसे इमरान से अलग करता था मगर, आज से पहले कभी

किसी ने उस फर्क को प्वाइंट आऊट नहीं किया था जबकि रिम्पी कहे चली जा रही थी—"देखो, इतने सारे फोटो हैं यहां इमरान के।

किसी में भी यह निशान नहीं है।"

"मान गया रिम्पी।" वह खिसियानी सी हंसी हंसा था—"मानना पड़ेगा कि तुम्हारी नजर बहुत तेज है।"

"इसका मतलब मैंने ठीक पहचाना, तुम इमरान नहीं हो?"

"नहीं, तुमने ठीक नहीं पहचाना।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरे असल चेहरे पर यह निशान बचपन से है।" अंगद ने बात बनाई—"लेकिन जो चेहरा फिल्मों में पेश करता हूं, उसमें इस निशान को मेकअप से छुपा लिया जाता है। इसीलिए यहां मौजूद किसी भी पोस्टर में मेरे चेहरे पर यह निशान नहीं है।"

रिम्पी की आंखों में अब भी शंका के भाव थे। उसे बहुत गौर से देखती हुई बोली—"सुना तो है कि आर्टिस्ट लोग ऐसा करते हैं लेकिन तुम्हारे बारे में तो मैंने किसी मैग्जीन में ऐसा नहीं पढ़ा?"

"मैग्जीनों में ही छपवा देता तो फिल्मों में ये साफ-सुथरा चेहरा पेश करने का फायदा क्या होता?"

"हां। ये तो ठीक है।" रिम्पी शायद इसलिए चक्कर में आ गई थी क्योंकि अंगद का बाकी सारा चेहरा इमरान से मिलता था—"पर अगर तुम इस चेहरे के साथ भी फिल्मों में आओ तो बुराई नहीं है।

मुझे तो ये निशान भी अच्छा लग रहा है।"

"ठीक है। तुम्हारी सलाह पर गौर करुंगा।"

"तुम्हारी अगली फिल्म 'एक थी डायन' है न! उसमें निशान के साथ ही आना। लोगों को चेंज लगेगा।"

"एक थी डायन' में तो नहीं क्योंकि उसकी ज्यादातर शूटिंग हो चुकी है मगर उससे अगली फिल्म में तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूंगा।"

"मतलब 'घनचक्कर' में?"

"अरे, तुम्हें तो ये भी मालूम है?"

"मुझे तुम्हारे बारे में सब मालूम है।"

"बताओ क्या मालूम है?"

"पूछो क्या पूछना है?"

उसे बातों में लगाने की गर्ज से अंगद ने सवाल किया—"अच्छा मेरी डेट ऑफ बर्थ बताओ?"

"ऊंहू! ये भी कोई सवाल हुआ!" उसने बुरा-सा मुंह बनाने के साथ कहा था—"24 मार्च 1979। मुझे तो ये भी पता है कि तुम्हारा असली नाम इमरान अनवर हाशमी है। फिल्मों के लिए इमरान हाशमी रख लिया जैसे चोट के इस निशान को छुपा लिया। महेश भट्ट और मुकेश भट्ट अंकल तुम्हारे मामा हैं। और कुछ बताऊं!"

"बस। बस। मेरी अम्मा, बहुत हो गया।" अंगद को सचमुच हंसी आ गई थी—"तूने तो मेरा कच्चा चिट्ठा ही खोल डाला।"

"अम्मा किसे कहा तुमने?"

"तुम्हें।"

"खबरदार जो दोबारा कहा। मैं तुम्हारी फ्रेंड हूं। तुम्हारी अम्मा का नाम फरहान हाशमी है।"

"ओके। ओके माई फ्रेंड।" अंगद हंसे चला जा रहा था। पर जाने क्यों, उस हंसी में एक दर्द छुपा हुआ था।

"अब तुम बताओ।" उसने अंगद से सवाल किया—"तुम्हारी पहली फिल्म 'फुटपाथ' जो 2004 में रिलीज हुई थी। उसमें तुम्हारे किरदार का क्या नाम था?"

"क-किरदार का नाम?" अंगद बुरी तरह गड़बड़ा गया। उसे इस बारे में बिल्कुल मालूम न था और शर्त लगाकर कह सकता था कि इस सवाल का जवाब खुद इमरान भी नहीं दे सकता था क्योंकि आर्टिस्ट भला यह कैसे याद रख सकता है कि कोनसी फिल्म में उसके किरदार का क्या नाम था।

"नहीं याद न!" रिम्पी की आंखें चमकी थीं।

अंगद ने हार मानते हुए कहा—"मुझे याद नहीं।"

"रघु श्रीवास्तव।" रिम्पी ने कहा।

अंगद को नहीं मालूम था कि ये जवाब ठीक है या नहीं लेकिन पूरा यकीन था कि ठीक ही होगा क्योंकि वह रिम्पी ने बताया था।

उस रिम्पी ने जो इमरान के बारे में जरा-जरा-सी बात जानती थी।

उसे चहकती देखकर महकार की आंखों में बार-बार आंसू आ रहे थे। वह बार-बार उन्हें छुपाने की कोशिश करता हुआ पोंछ लेता था। लग ही नहीं रहा था कि रिम्पी बीमार है। उसका बुखार जाने कहां उड़नछू हो गया था। एकाएक उसने तरूणा की तरफ देखा। जैसे पहली बार उसकी वहां मौजूदगी महसूस की हो।

सीधा सवाल किया—"ये कौन है?"

"तरूणा।"

"ये तो नाम हुआ। मैंने पूछा—कौन है?"

"मेरी फ्रेंड।"

"सिर्फ फ्रेंड ही न!"

"मतलब?"

"उससे आगे निकले तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

तरूणा ने पूछा—"ऐसा क्यों कह रही हो रिम्पी?"

"इमरान पहले ही शादीशुदा है। इसकी वाइफ का नाम परवीन शाहनी है। बहुत लंबे समय तक अफेयर चला था इनका और अब तो इनका बेटा भी है। अयान। उसका जन्म 4 फरवरी 2010 को हुआ था और शादीशुदा आदमी से लव करना अच्छी बात नहीं है।" "ओके बाबा। ओके। लव नहीं करेंगे हम। फ्रेंड ही रहेंगे।"

तरूणा खिलखिलाकर हंसे बगैर न रह सकी थी।

"एक प्रॉमिस भी करना होगा।"

"बोलो।"

"शाम को मेरी बर्थ-डे पार्टी है। उसमें मेरे स्कूल के बहुत से फ्रेंड होंगे। तुम्हें भी उसमें रहना है।"

"रिम्पी।" महकार बीच में टपका—"पार्टी कैसे होगी! तुम्हें तो बुखार है। जब ये उतर जाएगा तो...

"देखो।" महकार की बात पूरी होने से पहले ही रिम्पी ने अपनी कलाई उसकी तरफ फैलाते हुए कहा—"उतर गया।"

महकार ने उसकी कलाई चेक की। उतनी गर्म तो नहीं थी मगर गर्म थी। बोला—"अभी है।"

"जो है। वो भी उतर जाएगा। थोड़ी देर में थर्मामीटर लगाकर देख लेना।" रिम्पी ने गारंटी से कहा था।

"ऐसा कैसे कह सकती हो तुम?"

"जरा गोद से उतारना इमरान।" रिम्पी ने कहा—"अभी बताती हूं, ऐसा कैसे कह सकती हूं।"

अंगद ने उसे बेड पर उतार दिया। बिस्तर में कुछ टटोलने लगी वह। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या टटोल रही है। सब सस्पेंस-से में फंस गए थे। कुछ देर बाद उसने उन चारों को एक प्याज दिखाई और कहा—"ये रहा मेरा बुखार।"

"क्या मतलब?" चारों बुरी तरह चौंके थे।

"मैंने किसी बुक में पढ़ा था कि अगर प्याज को बगल में दबा लिया जाए तो बुखार चढ़ जाता है। पापा को तुम्हारे पास जाने के लिए मजबूर करने के लिए मैंने वही किया।"

"क-क्या? ये क्या कह रही हो तुम?" हैरत के कारण महकार का बुरा हाल हो गया था।

"वही, जो सच है और ए...ये लो। फेंक दी प्याज। कुछ देर बाद बुखार उतर जाएगा।"

"इतनी शैतान है तू—इतनी शैतान!" महकार उसे मारने दौड़ा था जबकि वह कूदकर एक बार फिर अंगद से लिपट गई थी—"मुझे बचा लो इमरान। पापा से बचा लो मुझे।"

अंगद ने उसे कसकर अपने अंक में भींच लिया था।

अब वहां चार लोगों की खिलखिलाहटें गूंज रही थीं लेकिन जाने क्यों,अंगद की आंखें छलछलाई हुई थीं।

राजपाल को काले खां पर झुंझलाहट आ रही थी—कैसा आदमी है ये? इतने सब के बाद भी उसकी बातों पर यकीन नहीं कर रहा। मानकर ही नहीं दे रहा कि ये सब सुपर नेचुरल पॉवर का खेल है। अब भी अंकुर की हत्या के पीछे धनपत की किसी से दुश्मनी को तलाश रहा है। काले खां इस बात का जवाब न देने के बावजूद उसकी बातें न मान रहा था कि कंप्यूटर की स्क्रीन किसने तोड़ दी।

सुबह से भूखा था इसलिए एक सिपाही से थोड़ी-सी पकौड़ी मंगाई। चाय के साथ वे खाईं और अखबार के जिस टुकड़े में पकौड़ी आई थीं उसे मोड़कर फेंकने ही वाला था कि एक छोटी-सी खबर पर नजर पड़ी। वह इस तरह उस खबर पर झपट पड़ा जैसे कई दिन का भूखा छप्पन भोग की थाली पर झपट पड़ा हो।

खबर ज्यादा बड़ी नहीं थी, वह उसे एक ही सांस में पढ़ गया।

और पढ़ने के बाद अपनी सीट पर बैठा न रह सका।

इस तरह उछलकर खड़ा हो गया जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने उछाला हो और बेतहाशा दौड़ता हुआ काले खां के आफिस में दाखिल हुआ। उसका अंदाज ही ऐसा था कि काले खां बुरी तरह चौंक पड़ा। बोला—"क्या हुआ?"

"इस खबर को पढ़िए सर, इस खबर को पढ़िए।" उत्तेजित अवस्था में वह उसकी मेज के करीब पहुंचा था।

"किस खबर को?"

उसने अखबार का चिकना टुकड़ा मेज पर डाला दिया।

काले खां की नजर छोटे-से हेडिंग पर पड़ी—"इमरान हाशमी की दस वर्षीय फैन रिम्पी ने विले पार्ले में तमाशा किया।"

"क्या है ये?" काले खां ने पूछा।

"आपको कुछ नहीं लगता?"

"मैं ये खबर उसी दिन पढ़ चुका हूं जिस दिन पेपर में निकली थी। एक दस वर्षीय लड़की टैरेस पर चढ़ गई और इमरान से मिलने की जिद करने लगी। इन साली फिल्मों और टीवी ने बच्चों का दिमाग खराब करके रख दिया है। ठीक उसी समय रुई से भरा ट्रक सड़क से न गुजर रहा होता तो लड़की का कल्याण हो चुका था।"

"उस लड़की का नाम रिम्पी है सर।"

"तो?"

"आपको कुछ याद नहीं आ रहा?"

"क्या याद आना चाहिए?"

"अंगद को चमके सपने के मुताबिक उस डायन की अगली शिकार का नाम रिम्पी ही है।"

काले खां के जेहन को झटका-सा लगा। ऐसा कि काफी देर तक कुछ कह न सका। स्थिर-सी नजरों से राजपाल को देखता रहा।

फिर बोला—"मुझे बस ये बता दे कि तेरी खोपड़ी से अंगद को चमके सपने का भूत कब उतरेगा?"

"और मुझे ये बता दें कि आप हकीकत को कब स्वीकारेंगे?"

"क्या कहना चाहता है तू? क्यों इस खबर को पढ़ने के बाद इतना हांफता-झांपता यहां आया है? क्या तू ये सोच रहा है कि ये वही रिम्पी है जिसके बारे में अंगद ने वो कथित सपना देखा।"

"हां।"

"राजपाल, तेरा दिमाग खराब हो गया है। ये इतना कॉमन नाम है कि हिंदुस्तान में इस नाम की जाने कितनी लड़कियां होंगी। मेरे ख्याल से हजारों की तादाद तो मुंबई में ही होगी।"

राजपाल थोड़ा सकपकाया। फिर संभलकर बोला—"ब-बात तो ठीक है मगर हमें चैक तो करना ही चाहिए।"

"क्या चैक करना चाहिए?"

"कि ये रिम्पी वही है या नहीं।"

एक क्षण काले खां चुप रहा। फिर बोला—"अच्छा मान लिया कि वही हुई फिर भी, मैं और तू क्या कर सकते हैं?"

"मतलब?"

"तेरे मुताबिक वह अंगद को सपने में नजर आने वाली डायन की अगली शिकार है। अगर वह डायन की ही शिकार है तो मैं और तू क्या कर सकते हैं? अंगद के सपने में घुसकर तो उसे गिरफ्तार करने से रहे! बोल...तू कर लेगा?"

राजपाल लाजवाब हो गया था। इसलिए, थोड़ा चुप रहने के बाद बोला—"फिर भी सर, कम से कम यह तो पता किया ही जाना चाहिए कि ये वही रिम्पी है या नहीं।"

"कैसे पता करेगा?"

"हमें इस एड्रेस पर जाना चाहिए।"

"चलो पहुंच गए। फिर?"

"मालूम करेंगे कि उसका जन्म पूर्णिमा को हुआ था या नहीं।

अगर हुआ था तो ये लड़की वही है क्योंकि ये बहुत मुश्किल बात है कि दो रिम्पीयों का जन्म पूर्णिमा को हुआ हो।"

इस बार काले खां कुछ बोला नहीं। बस देखता रहा उसकी तरफ। उसकी मानसिक अवस्था बड़े ही विचित्र दौर में थी। एक तरफ उसका दिमाग उन बातों को मानने के लिए तैयार न था जिन बातों पर राजपाल बार-बार विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था दूसरी तरफ—दिमाग उनमें से किसी बात का जवाब नहीं उगल रहा था जो सामने थीं। जैसे—अंकुर की लाश का उसी अवस्था में मिलना जिस अवस्था का विवरण अंगद ने पहले ही अपने कथित सपने के बेस पर दे दिया था। शालू का हुलिया बताते वक्त हुई अखिल की हालत और जब धनपत वही हुलिया बता रहा था तो स्क्रीन का टूटना। और अब...यदि राजपाल की शंका के मुताबिक यह वही रिम्पी है जिसका जन्म पूर्णिमा को हुआ हो तो इसका सामने आना।

क्या था यह सब?

इन्हीं बातों पर गौर करता वह खड़ा होता हुआ बोला—"चल।

तेरी इस रिम्पी को भी देखते हैं।"

राजपाल की तो जैसे मुंहमांगी मुराद पूरी हो गई।

"अंगू, तुम सुकन्या के फोटो को देखकर चौंके क्यों थे?"

अंगद जवाब न दे सका। उसकी आंखें डबडबा उठी थीं। होंठ कांपने लगे थे और सुकन्या ने उसके चेहरे पर बहता भावनाओं का समुद्र देखा था। साफ-साफ ऐसा नजर आ रहा था जैसे वह खुद को रोने से रोकने की कोशिश कर रहा हो।

तरूणा ने पूछा—"क्या हुआ अंगद?"

"वो मेरी दीदी थी।" कहने के साथ वह फूट-फूटकर रो पड़ा।

"द-दीदी?" तरूणा उछल पड़ी—"म-मतलब तुम्हारी बहन?"

"ह-हां।"

"म-मगर अंगद, पहले तो तुमने कभी नहीं बताया कि तुम्हारी कोई बहन भी थी!"

"क-कैसे बताता? मेरी जुबान पर पहरा लगा था।"

"जुबान पर पहरा?"

"ये पहरा मेरे पिताजी ने लगाया था।"

"मैं कुछ समझी नहीं।"

"उस पहरे के कारण भले ही मैं दीदी का नाम कभी जुबान पर न लाया होऊं मगर मैं सच कहता हूं तरू, न मैं कभी उन्हें भूल पाया, न ही दिल से निकाल पाया। वे मेरे रोम-रोम में बसी हैं।"

"पर बात क्या है? कुछ बताओ तो सही।"

"पिता का सख्त आर्डर था। मेरे लिए भी और मां के लिए भी कि हम सुकन्या का नाम भी कभी नहीं लेंगे। अगर हममें से कभी किसी ने ऐसा किया तो पिताजी हमेशा के लिए घर छोड़कर चले जाएंगे। उन्होंने कहा था कि हमें यह सोचना है कि इस नाम की कोई लड़की कभी कहीं थी ही नहीं।"

"ऐसा क्यों?"

"उन्होंने लव मैरिज की थी।"

"क्या लव मैरिज उनकी नजरों में इतना बड़ा जुर्म है?"

"चमनगढ़ में लव मैरिज जुर्म ही था क्योंकि...

"चमनगढ़?"

"हमारा गांव।"

"लेकिन क्यों? वहां लव मैरिज इतना बड़ा जुर्म क्यों था?"

"क्योंकि वहां रहने वाले सभी परिवार एक ही गोत्र के थे। एक ही गोत्र का मतलब—एक ही खानदान। हर लड़के-लड़की को एक दूसरे का भाई-बहन माना जाता था।"

"ऐसा तो मेरे गांव में भी है।"

"तब तुम इस पेंच को आसानी से समझ सकती हो। भाई बहन की शादी नहीं हो सकती।"

"तो क्या सुकन्या ने गांव के किसी लड़के से शादी की थी?"

"मुझे आज ही पता लगा है कि वह महकार था।"

"मैं समझी नहीं।"

"बारह साल पुरानी बात है। हम चमनगढ़ में रहते थे। उस वक्त मेरा नाम सुजान था। अंगद तो यहां, मुंबई आने के बाद पड़ा। सुकन्या दीदी मुझसे आठ साल बड़ी थीं। एक दिन वे अचानक घर से गायब हो गईं। बहुत तलाश किया पर नहीं मिलीं। रात के करीब नौ बजे तकिए से एक लेटर मिला। जिसमें उन्होंने लिखा था कि बापू, मैं एक लड़के से मुहब्बत करती हूं और हम इसलिए हमेशा के लिए गांव छोड़कर जा रहे हैं क्योंकि रीति-रिवाजों के मुताबिक हमें भाई-बहन माना जाता है और भाई-बहन की शादी नहीं हो सकती जबकि हम एक-दूसरे के बगैर नहीं रह सकते। हमें मालूम है कि अगर हम गांव वालों के हाथ लग गए तो हमें मार डाला जाएगा और उन मारने वालों में आप खुद भी शामिल होंगे क्योंकि आप लोगों के लिए बेटी-बेटे से ज्यादा आन की कीमत है। इस लेटर में यह लिखने का कोई फायदा नहीं है कि मैं किसके साथ जा रही हूं। इतना काफी है कि आप उसे मेरे पति के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। जबकि हम जहां भी जाएंगे, शादी कर लेंगे। और मां, मुझे मालूम है कि मेरे इस कदम के कारण आपको बहुत कुछ सुनना पड़ेगा। पिताजी ही पता नहीं क्या-क्या कहेंगे मगर मैं बहुत मजबूर हूं। पता नहीं औरत होने के बाद भी तुम मेरी मजबूरी को समझ सकोगी या नहीं!

और सुजान, मेरे अच्छे भाई, मेरे नन्हे भाई, मेरे प्यारे भाई—तुझे तो ठीक से यह भी पता नहीं चलेगा कि तेरी दीदी ने कितना बड़ा गुनाह कर दिया है। तुझे छोड़कर क्यों चली गई है तेरी दीदी! मैं सच कहती हूं मेरे भैया, इस संसार में मैं सबसे ज्यादा प्यार तुझी से करती हूं। मां-बापू से भी ज्यादा और उससे भी ज्यादा जिसके साथ जा रही हूं मगर तुझे हमेशा के लिए छोड़कर जाना मेरी मजबूरी है। अभी तू इस मजबूरी को नहीं समझेगा। हमारे गांव के रीति-रिवाज ही ऐसे हैं। मैं चाहे जितने सुख में जिऊं या दुख में मगर तुझे कभी नहीं भुला पाऊंगी। और तू भी, मुझे कभी भूलना नहीं मेरे भैया। अपने दिल में जरूर बसाकर रखना मुझे। तेरी दीदी—सुकन्या।"

बताते-बताते एक बार फिर अंगद बुरी तरह रो पड़ा था।

तरूणा ने भीगे स्वर में पूछा—"उसके बाद?"

"दीदी का ये लेटर मैंने उस रात नहीं पढ़ा था। मां ने भी नहीं।

केवल पिताजी ने पढ़ा था और वे बहुत बुरी तरह बुक्का फाड़कर रोएथे। मैंने उन्हें दीवारों में सिर टकरा-टकराकर सिर फोड़ते देखा है। उस रात मुझे ऐसा लगा था जैसे हमारे घर में कयामत आ गई हो। मां ने जब पिताजी से बार-बार पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने कहा था—'कैसी बेटी पैदा की तूने! उसने हमारी नाक कटवा दी। गांव के किसी लड़के के साथ भाग गई है।' मां सन्न रह गई थी।

मेरी समझ में आधी बातें आ रही थीं, आधी नहीं। फिर, रात केकरीब बारह बजे पिताजी ने हमेशा के लिए गांव छोड़ने का फैसला किया। बोले—'मैं गांववालों की नजरों का सामना नहीं कर सकता।

हमें अभी हमेशा के लिए यहां से निकलना होगा।' उनके फैसले को हममें से कोई नहीं काट सकता था। सो, उसी रात गांव छोड़ दिया।

मुंबई आ गए। पलटकर हममें से कभी कोई गांव नहीं गया। पिताजी ने सख्ती के साथ मुझसे और मां से कह दिया था कि भूल से भी कोई सुकन्या का नाम नहीं लेगा। हमें इस फैसले के साथ अपनी बाकी जिंदगी गुजारनी है कि इस नाम की हमारी कोई लड़की थी ही नहीं। हालांकि मानती मां भी यही थीं कि सुकन्या दीदी ने अक्षम्य अपराध किया है पर उनका दिल पिताजी की तरह कठोर नहीं हो सकता था। बहरहाल, वे मां थीं और मेरी समझ में तो यही नहीं आया था कि सुकन्या दीदी ने ऐसा क्या गुनाह कर दिया कि हम उनका नाम भी नहीं ले सकते। धीरे- धीरे, छन-छनकर उनके द्वारा लेटर में लिखी गई बातें मेरी जानकारी में आईं लेकिन साथ ही यह भी समझ में आ गया था कि अगर पिताजी से ये टापिक भी छेड़ा तो वे सचमुच हमेशा के लिए घर छोड़कर चले जाएंगे। इसलिए तुमने मेरे मुंह से कभी दीदी का नाम नहीं सुना जबकि हमेशा से, तभी से मैं सुकन्या दीदी को सबसे ज्यादा मिस करता रहा। वे मेरी हमजोली भी थीं और मां जैसी भी। बहुत ख्याल रखती थीं मेरा। इस बात पर मुझे आश्चर्य भी था और दुख भी कि मेरे रहते उन्होंने ऐसा कदम कैसे उठा दिया जिसके कारण वे हमेशा के लिए मुझसे दूर चली गईं।"

"और किस्मत तुम्हें यहां ले आई!" तरूणा ने कहा।

"यही तो।" अंगद बोला—"यही तो नहीं समझ पा रहा तरू कि किस्मत मुझसे चाहती क्या है? रिम्पी मेरी भांजी है। वह रिम्पी जो मेरे सपने के मुताबिक उस गंदी औरत का अगला शिकार है। ऊपर वाले ने मुझे यहां क्यों भेजा है—मैं समझ नहीं पा रहा हूं।"

"क्या नहीं समझ पा रहे हो अंगद?" अचानक महकार की आवाज ने उन दोनों को चौंका दिया था।

दोनों हड़बड़ा-से गए थे। अंगद ने कहा—"बस ये नहीं समझ पा रहा हूं महकार भाई कि चंद ही लम्हों में मुझे रिम्पी से इतना प्यार क्यों हो

गया? बहुत ही प्यारी बच्ची है वो।"

"क्या तुम्हें यकीन आएगा कि उसका बुखार सचमुच उतर गया है! तभी से अपने स्कूल के फ्रेंड्स को फोन कर रही है कि शाम को उसकी बर्थ-डे पार्टी है और वह सबको ऐसा सरप्राइज देने वाली है जिसे कोई सारी उम्र नहीं भूल पाएगा।"

"बता तो नहीं रही कि वह उन्हें इमरान से मिलाएगी?"

"कम से कम मेरे सामने तो किसी को नहीं बताया। सबसे यही कहा कि सरप्राइज देने वाली है। कई ने जिद भी की कि वह क्या सरप्राइज है लेकिन उसने बताया नहीं। जब मैं केक और बैलून आदि लेने गया था, तब किसी से कह दिया हो तो पता नहीं।"

"उसे खुश देखकर मैं भी बहुत खुश हूं।"

"और मुझसे ज्यादा खुश तो आज कोई हो ही नहीं सकता।"

महकार कहता चला गया—"यकीन मानो, जितनी खुश रिम्पी आज है। उतनी खुश मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा।"

"एक बात बताओगे महकार?"

"पूछो।"

"सुकन्या पांच साल पहले तुम्हें छोड़ गई। साथ ही रिम्पी नामक जिम्मेदारी भी दे गई। इस बीच क्या कभी तुम्हारे दिल में दूसरी शादी का ख्याल नहीं आया?"

"क्यों आता?"

"लोगों की बीवी कल मरती है, आज शादी कर लेते हैं।"

"बीवी से प्यार नहीं करते होंगे।"

सुनकर अंगद को अच्छा लगा। महकार की आंखों में झांकते हुए कहा उसने—"तुम्हें सुकन्या दीदी से इतना प्यार था?"

"दीदी?"

"हां-हां।" अंगद थोड़ा बौखलाने के बाद संभला—"तुम्हारी पत्नी मेरी दीदी ही तो हुई।"

"बात तो ठीक है।" महकार हंसा। फिर थोड़ा गंभीर होता हुआ बोला—"प्यार क्यों नहीं होगा! उसने मेरे लिए अपने सारे परिवार को छोड़ दिया था। हमेशा-हमेशा के लिए मेरी हो गई थी वह।"

"परिवार को छोड़ दिया था!" आंसुओं ने एक बार फिर उसकी आंखों में उमड़ना चाहा था जिन्हें अंगद ने सख्ती से कुचल दिया।

"हमने लव-मैरिज की थी न!"

"लव-मैरिज की तो क्या हुआ?" अंगद ने उसे कुरेदा—"इसमें परिवार को छोड़ने की क्या बात हो गई?"

"हम दोनों के परिवारों को हमारी मैरिज मंजूर न थी।"

"क्यों?"

"वो मुंबई शहर नहीं था अंगद, जहां लड़के-लड़की के बीच प्यार होना आम बात मानी जाती है। गांव था। गांव भी ऐसा जहां प्यार करना अक्षम्य अपराध था। हमारे बुजुर्गों का कहना था कि सारे गांव में एक ही गोत्र के लोग रहते हैं, उस नाते सब लड़के-लड़की एक दूसरे के भाई-बहन हुए और भाई-बहनों की शादी नहीं हो सकती,पर युवा पीढ़ी की समझ में ये बात नहीं आती थी। गांव की पंचायत आन की खातिर ऐसे कई जोड़ों को मौत के घाट उतार चुकी थी।

हमें यह सब मालूम था मगर फिर भी, एक-दूसरे के प्यार में पड़ गए और उस सीमा तक पहुंच गए कि एक-दूसरे के बगैर नहीं रह सकते थे। तब, हमारे सामने गांव से भाग निकलने के अलावा कोई रास्ता न था। वही किया। दोनों ने अपने-अपने घर लेटर छोड़ दिए थे और

मुंबई आकर शादी कर ली।"

अंगद ने बहुत मुश्किल से अपनी आवाज को भर्राने से रोका था—"इसका मतलब तो ये हुआ कि सुकन्या दीदी की खातिर तुमने भी अपना घर-परिवार छोड़ दिया था!"

"हां।"

"तो फिर उन्होंने ही अलग क्या किया?"

"बाद में मुझे अपना परिवार मिल गया था लेकिन सुकन्या को ऐसा सौभाग्य कभी नसीब न हो सका।"

"वो कैसे?"

"हमें अपने परिवारों की याद तो आती ही थी। सुकन्या को खासतौर पर अपने भाई की याद आती थी। वह हर साल अपने भाई का बर्थडे मनाया करती थी और कहती थी कि आज मेरा भाई इतने साल का हो गया। अब वह ऐसा लगता होगा। वैसा लगता होगा।

अब तो उसकी शादी भी हो गई होगी। पता नहीं मेरी भाभी कैसी होगी। पता नहीं वो कमबख्त भी मुझे याद करता होगा या नहीं।

जब वो भावुक होती थी तो ऐसी ही ऊटपटांग बातें किया करती थी। और मैं वादा कर दिया करता था कि सुकन्या, मैं एक दिन तुझे तेरे भाई से जरूर मिला दूंगा मगर वो मुझे अपना वादा पूरा करने का मौका दिए बगैर ही चली गई।" इतना सब कहते-कहते महकार फफकने लगा था। शायद इसी वजह से इस बात पर ध्यान न दे सका कि अंगद की आंखों से भी आंसू बह निकले थे जिन्हें उसने बहुत जल्द अपनी आस्तीन में समा लिया था।

माहौल गमगीन हो गया था इसलिए कुछ देर तक खामोशी छाई रही। फिर अंगद ने ही कहा—"तुम कुछ कह रहे थे।"

"शादी के साढ़े पांच साल बाद। तब, जबकि रिम्पी हो चुकी थी और हमारी गोद में थी। हमने सोचा—अगर अब गांव जाएं तो हो सकता है हमारे परिवार वाले हमें एक्सेप्ट कर लें। अब तो हमारी एक बेटी भी हो गई है। तरूणा कहा करती थी—अब तो मेरा भाई भी बड़ा हो गया होगा। वो मां-बापू को संभाल लेगा। उन्हें समझा देगा।' फिर भी, दिन के वक्त जाना मुनासिब न समझा। एक रात, छुपते-छुपाते गांव पहुंचे। गांव में घुसने के बाद सबसे पहले मेरा ही घर पड़ता है। हमें देखते ही मम्मी खुश हो गईं लेकिन पापा का गुस्से के मारे बुरा हाल हो गया। वे तो उस वक्त भी हमें मारने दौड़े मगर मम्मी ने हालात संभाल लिए। बोलीं—'छोड़ो इन दोनों को। इस बच्ची को देखो, कितनी प्यारी है। ये हमारी पोती है। क्या तुम्हें इस पर प्यार नहीं आ रहा?' पापा भी रिम्पी को देखते रह गए थे। उस वक्त मैंने उनकी आंखों में आंसू देखे थे। बोले—'गांव वालों को क्या जवाब दूंगा मैं?' तब मम्मी ने कहा था—'गांव वालों को कुछ पता ही क्यों लगेगा?' और...ममता ने मेरे पापा को सारे गांव से गद्दारी करने पर मजबूर कर दिया था। वे इस शर्त पर हमें अपनाने के लिए सहमत हो गए थे कि किसी भी अन्य गांव वाले को हमारे वहां आने के बारे में पता नहीं लगना चाहिए।"

"और सुकन्या दीदी के घर वाले?"

"सुकन्या ने जब मेरी मम्मी से कहा कि मेरे मां-बापू और भाई को भी यहीं बुला दीजिए। उनसे मिलने को मन कर रहा है। शायद वे भी आप लोगों की तरह रिम्पी की खातिर हमें माफ कर दें तो मम्मी ने बताया कि वे तो उसी रात गांव छोड़कर चले गए थे। उसके बाद आज तक किसी ने उनकी शक्ल नहीं देखी। उस रात सुकन्या फट्ट फूटकर रोई थी। बार-बार यही कहे जा रही थी कि मैंने अपने मां बापू को बहुत दुख दिए हैं। वे तो शायद मुझे आज भी स्वीकार न करें मगर मुझे पूरा यकीन है—मेरा भाई मुझे जरूर माफ कर देगा। भगवान ऐसा ही कुछ कर दे कि मुझे सुजान से मिला दे।"

अंगद की आंखें एक बार फिर भर आई थीं।

उन्हें देखकर महकार ने कहा—"तुम क्यों रो रहे हो?"

"ऐसे ही।" अंगद ने अपने आंसू पोंछे—"सुकन्या बहन की वेदना को महसूस करके आंखें भर आईं। उसके बाद?"

"हम दो रात वहां रहे। बाहर बिल्कुल न निकले ताकि गांव वालों को कोई भनक न लगे। देवता भी पूजने गए तो रात को।"

"देवता पूजने?"

"गांव के बाहरी छोर पर, खेत में हमारे कुलगुरु विराजमान हैं।

गांव में उन्हें देवता कहा जाता है। परिवार में कोई भी शुभ काम होने पर उनका आशीर्वाद लेना जरूरी होता है और मेरी मां का कहना था कि शादी के बाद हमने देवताओं का आशीर्वाद नहीं लिया है।

इसलिए, वे रात के वक्त मुझे, सुकन्या और रिम्पी को लेकर देवता पूजने गईं। तीसरी रात को हम वहां से लौट आए लेकिन मां ने मुझसे वचन ले लिया था कि हर साल देवताओं का आशीर्वाद लेने कम से कम एक रात के लिए गांव जरूर आया करेंगे। उसके बाद वो क्रम बन गया। हम हर साल देवता पूजने गांव जाया करते थे और आज से पांच साल पहले जब एक रात वहां गए तो...

"तो?" अंगद का दिल धाड़- धाड़ करके बज रहा था।

महकार ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि रिम्पी वहां आ धमकी। चहकती हुई बोली—"ओफ्फो, आप लोग अभी तक यहां बैठे हैं। ऊपर चलकर जरा देखो तो सही कि मैंने अपनी पार्टी की कैसी तैयारियां की हैं।"

अंगद को क्योंकि महकार से आगे का किस्सा सुनने की बेचैनी थी इसलिए बोला—"अभी आते हैं रिम्पी, तुम चलो।"

मगर, वो रिम्पी ही क्या जो किसी की मान लेती! खुद जाना तो दूर, वह उन सबको भी ऊपर, टैरेस पर ले गई, जहां उसने अपनी बर्थडे पार्टी की पूरी तैयारियां कर रखी थीं और फिर उन्हें भी टैरेस को सजाने में लगा लिया।

अंगद अब भी यह सुनने के लिए बेचैन था कि पांच साल पहले जब महकार और सुकन्या देवता पूजने गांव गए तो क्या हुआ?

बिल्डिंग के टैरेस पर आयोजित की गई छोटी-सी पार्टी शबाब पर थी। अंगद द्वारा लाए गए नेट के कपड़े के सफेद फ्रॉक, वैसे ही रिबन, सफेद जुराब और सफेद ही जूतों में रिम्पी अपने फ्रेंड्स के बीच सारे टैरेस पर फुदकती फिर रही थी।

अंगद को लग रहा था जैसे सुकन्या दीदी नन्ही-सी परी बनकर उसकी आंखों के सामने हवा में तैर रही हों।

इधर, इसमें कोई शक नहीं कि रिम्पी के सभी फ्रेंड्स अपने बीच 'इमरान हाशमी' को पाकर बहुत-बहुत एक्साइटिड थे और फ्रेंड्स ही क्यों, वे दोनों टीचर्स भी बेहद रोमांचित थीं जिन्हें रिम्पी ने अपनी बर्थडे पार्टी में बुलाया था और नंदिनी—

वह तो इस वक्त जैसे गजब ही ढहाए हुए थी। सांचे में ढले हुए जिस्म पर सफेद रंग की ऐसी रेशमी साड़ी थी जिस पर जगह-जगह गुलाबी रंग के गुलाब टंके हुए थे। उसी से मैच करता ब्लाऊज और लंबी, सुराहीदार गर्दन में बड़े-बड़े सच्चे मोतियों की सफेद माला।

अपने लंबे, घने और काले बालों को गूंथकर इस वक्त उसने जूड़े की शक्ल दी हुई थी। वह बार-बार अपनी पतली-पतली और नाजुक उंगलियों से बालों की उस लट को कान के नीचे दबाने की कोशिश करती नजर आ रही थी जो रह-रहकर विद्रोह करके उसके कपोलों को चूमने लगती थी।

अंगद ने महसूस किया कि वह उसमें कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी ले रही थी। उसका ख्याल था कि यह दिलचस्पी उसमें नहीं, इमरान हाशमी में ली जा रही है।

मगर वह खुद भी बार-बार खुद को चोर नजरों से उसे देखने से नहीं रोक पा रहा था। उस वक्त वह दूर थी, टैरेस के दूसरे कोने पर जब अंगद उसे देख रहा था और अचानक ही उसने भी अंगद की तरफ देखा। अंगद ने सकपकाकर नजरें चुरा लीं।

उस तरफ देखने लगा जिधर तरूणा और रिम्पी थीं। तरूणा रिम्पी के दोस्तों के साथ खेलने में मस्त थी।

एकाएक उसने अपने बहुत करीब से खनखनाती आवाज सुनी—"क्या मैं यहां बैठ सकती हूं?"

अंगद ने चौंककर नजरें उठाईं।

नंदिनी ही थी।

उसके हाथ में सॉफ्ट ड्रिंक का गिलास था।

संभलकर बोला—"हां, हां—क्यों नहीं? बैठिए।"

वह मेज के उस तरफ, सामने वाली चेयर पर बैठती बोली—"मैं ये सोच रही थी कि आप एक्टिंग कैसे कर लेते हैं?"

"कैसे कर लेते हैं! मतलब?"

"मुझसे तो अगर कोई अभी, बेवजह रोने या हंसने के लिए कहे तो न मैं रो सकती हूं, न हंस सकती हूं। बहरहाल, रोने-हंसने का कोई कारण तो होना चाहिए! मगर आप हैं कि...

अंगद हंसने लगा। बोला—"जब हमें रोने की एक्टिंग करनी होती है तो सोचते हैं कि हमारे साथ या उसके साथ कोई ट्रेजडी हो गई है जिससे हम बहुत प्यार करते हैं। जैसे—मां-बाप आदि में से कोई मर गया है। हमें अपनी हालत वैसी बनानी होती है जैसी वैसा कुछ होने पर होती और जब हंसने का अभिनय करना होता है तो ऐसे किसी जोक को याद कर लेते हैं जिस पर खूब हंसे हों।"

"पर है तो कमाल की बात न!"

"सब गॉड गिफ्ट है मिस नंदिनी।"

"काश! गॉड ने हमें भी कोई गिफ्ट दिया होता। खैर, मैं आपको अपना पूरा परिचय दे देती हूं। नाम तो आप जानते ही हैं। महकार जी की पड़ोसिन हूं। उनके फ्लैट का नंबर छः सौ पांच है और मैं तीन दिन पहले ही छः सौ छः में किराए पर आई हूं। मगर इन तीन ही दिन में रिम्पी ने मुझे इस कदर अपनी बना लिया जैसे उसे वर्षों से जानती होऊं। बड़ी प्यारी बच्ची है। देखो न, अपनी छोटी-सी पार्टी में उसने मुझ सहित बहुत कम पड़ोसियों को बुलाया है। सबसे कह रही थी कि सरप्राइज दूंगी और सचमुच...सबको बहुत ही बड़ा सरप्राइज दिया है उसने। वरना हम जैसे साधारण लोगों को आप जैसे स्टार से मिलने का मौका कहां मिलता है!"

"सरप्राइज तो रिम्पी ने मुझे भी दिया है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि इतनी छोटी लड़की मेरी इतनी जबरदस्त फैन हो सकती है।"

"फैन तो हम भी कुछ कम नहीं हैं आपके।" अचानक ही नंदिनी का लहजा रोमांटिक हो गया था—"पूछिए अपने बारे में आपको हमसे क्या पूछना है?"

"म-मुझे तो कुछ नहीं पूछना।" अंगद थोड़ा बौखला गया।

"मगर मैं बताती हूं।" उसने अंगद पर बलिहारी हो जाने वाले अंदाज में कहा था—"आपने स्नातक की डिग्री मुंबई के सिडेन हेम कॉलिज से ली है। यह तो सभी जानते हैं कि आपको 'सीरियल किसर' कहा जाता है लेकिन इस बात को कम ही लोग जानते होंगे कि 2004 में आपने 'मर्डर' के लिए सर्वश्रेष्ठ नव अभिनेता का स्टारडस्ट पुरस्कार जीता था।"

"हुंह।" अंगद ने ठीक ऐसी प्रतिक्रिया दी जैसी ऐसे मौकों पर इमरान हाशमी दिया करता था—"पुरानी बात हो गई।"

"अच्छा एक बात बताइए।" उसके हावभाव बता रहे थे कि वह उस पर डोरे डाल रही थी—"आप किस कैसे कर लेते हैं?"

"म-मतलब?" अजीब सवाल पर अंगद चकरा गया था।

"मतलब स्क्रीन पर जो किस दिखाया जाता है, वो आप वास्तव में लेते हैं या कैमरे द्वारा की गई ट्रिक फोटोग्राफी होती है?"

अंगद मुस्कराया—"वास्तव में लेते हैं।"

"व-वास्तव में?" उसने हिरनी जैसी आंखें गोल कीं।

अब, अंगद ने उससे मजा लेने की ठान ली थी। सो बोला—"पर्दे पर तो आप एक ही किस देखते हैं मगर उसे दिखाने के लिए शूटिंग के वक्त हमें अनेक किस लेने पड़ते हैं।"

"अनेक किस?"

"किस लेने के अनेक तरीके होते हैं। अलग व्यक्ति अलग तरीके से किस लेता है मगर शूटिंग के वक्त टेक तब तक ओके नहीं होता जब तक डायरेक्टर संतुष्ट न हो यानी जब तक वैसा किस न लिया जाए जैसा उसे पर्दे पर चाहिए। तब तक रिटेक होते रहते हैं। रिटेक का मतलब है—हमें बार-बार किस लेना पड़ता है। कई बार तो सुबह से शाम हो जाती है। हमारे होंठ सूज जाते हैं।"

"माइ गॉड!" वह बच्चों की तरह बोली थी—"इस पर हीरोइनों को ऐतराज नहीं होता?"

"ऐतराज क्यों होगा?"

"ना बाबा ना। मैं तो उसके अलावा किसी को किस नहीं दे सकती जिस पर मेरा दिल न आए। भला ये भी कोई बात हुई कि अलग-अलग लोगों से अपने होंठ चुसवाते रहो!"

जाने कैसे अंगद के मुंह से निकल गया—"मुझे भी नहीं देंगी?"

"अ-आपकी बात और है।" लरजती आवाज में कहने के साथ उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से निकलने वाली चमकदार 'रेज'

अंगद की आंखों में डाली थीं—"आपके किस लेने के स्टाइल की तो मैं हमेशा से फैन रही हूं। किस कदर होठों का रस चूसते हैं आप!

जैसे भंवरा फूलों का रस चूस रहा हो।"

सच लिखा जाए तो वह यह था कि जिस क्षण उसकी आंखों से निकली 'रेज' अंगद की आंखों से टकराई, उस क्षण के बाद उसने क्या कहा, अंगद कुछ भी न सुन सका था। उसे ऐसा लगा था जैसे वह नंदिनी की आंखों के गहरे सागर में डूबता चला जा रहा है। फिर जैसे उसकी चेतना सागर की उसी गहराई में पड़े किसी बहुत बड़े पत्थर से टकराई हो और...उसे बिजली का-सा तेज झटका लगा।

ये झटका नंदिनी को भी लगा था।

उसे भी ऐसा लगा था जैसे नींद में जाते-जाते अचानक झटके से उठी हो और फिर दोनों ही आंखों में आश्चर्य लिए एक-दूसरे को देखते रह गए थे। उस वक्त दोनों यह सोच रहे थे कि उन्हें क्या हुआ था कि करीब आती तरुणा ने कहा—"चलो इमरान, रिम्पी का केक कटवाओ।

सब बच्चे इंतजार कर रहे हैं।"

अंगद को ऐसा लगा जैसे उसे तरूणा की आवाज ने ही किसी और दुनिया से अभी-अभी इस दुनिया में पहुंचाया है।

थोड़ा संभलकर बोला वह—"तरूणा, नंदिनी ने बड़ा ही अजीब सवाल किया। पूछती है—पर्दे पर जो किस दिखाया जाता है वो वाकई लिया जाता है या ट्रिक फोटोग्राफी से दिखा दिया जाता है।"

"तुमने नहीं पूछा—ये लोगों का दिल इतनी जल्दी कैसे जीत लेती हैं?" तरूणा ने तीखे अंदाज में कहा था।

"मतलब?" अंगद चौंका।

"मुझे तो ये जादूगरनी लगती हैं।"

"जादूगरनी?"

"जो इतने कम समय में, जिसके चाहे उसके दिल में उतर जाए, उसे जादूगरनी ही तो कहा जाएगा! तीन ही दिन में इन्होंने रिम्पी को इतनी दीवानी बना लिया कि उसने बिल्डिंग में तीस-तीस साल से रहने वाले पड़ोसियों को नहीं बुलाया लेकिन इन्हें बुलाया है।"

"तारीफ के लिए शुक्रिया।" नंदिनी तरूणा की तरफ देखकर मुस्कराई थी—"वैसे मैं आपको बता दूं कि हर इंसान के अंदर से कुछ 'रेज' निकलती हैं, जिन्हें हम देख तो नहीं पाते मगर महसूस कर सकते हैं। दो इंसान जब करीब आते हैं तो वे रेज आपस में टकराती हैं। कभी-कभी ये रेज उन इंसानों को तुरंत एक-दूसरे के करीब ले आती हैं और कभी-कभी वे इंसान सालों साल साथ रहने के बावजूद करीब नहीं आ पाते। कभी हमें कोई आदमी देखने मात्र से बुरा लगने लगता है, कभी अच्छा। हम उसके बारे में अच्छी या बुरी राय बना लेते हैं जबकि न हम उससे मिले हैं, न बात की है और यह राय अक्सर सत्य होती है। ये उन्हीं रेज का कमाल होता है।"

"आपका भाषण समाप्त हो गया हो तो मैं इमरान को केक के करीब ले जाऊं?" चिढ़े हुए-से स्वर में कहने के साथ तरूणा ने अंगद का हाथ पकड़ा और नंदिनी के जवाब का इंतजार किए बगैर उसे कुर्सी से उठा लिया था।

"केक कट रहा है तो वहां तो सभी को चलना है।" नंदिनी ने आकर्षक मुस्कान के साथ उठते हुए कहा था।

अंगद को उससे दूर ले जाती हुई तरूणा ने उसके बाजू में बहुत जोर से चुटकी काटी। इतनी जोर से कि अंगद के मुंह से हल्की-सी चीख निकल गई थी। उसकी परवाह न करती हुई तरूणा ने दांत भींचकर कहा—"अगर मेरी आंखों के अलावा किसी और की आंखों में गुम होने की कोशिश की तो कच्चा चबा जाऊंगी।"

"म-मैं कब...

"सफाई मत दो।" वह उसे खींच ले गई।

विले पार्ले में पहुंचकर काले खां और राजपाल को रिम्पी के फ्लैट का पता लगाने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी क्योंकि रिम्पी को टैरेस पर चढ़कर हंगामा मचाए ज्यादा दिन नहीं हुए थे और उसकी चर्चा मुकम्मल विले पार्ले में हो गई थी। बिल्डिंग के चौकीदार से पता लगा कि आज रिम्पी का बर्थडे है और टैरेस पर उसकी पार्टी चल रही है।

लिफ्ट की तरफ बढ़ते हुए काले खां ने कहा था–"तेरे अनुमान की तो यहीं हवा निकल गई! आज इस रिम्पी का बर्थडे है और आज पूर्णिमा नहीं है। क्या कहता है?"

"आजकल हिंदुस्तान में जन्मदिन नहीं बल्कि बर्थडे मनाए जाते हैं जनाब। जन्मदिन मनाए जाते तो हिंदी कैलेंडर के मुताबिक मनाए जाते। बर्थडे इंग्लिश कैलेंडर से मनते हैं। इस हिसाब से ढूंढो तो न अमावस्या का कोई अता-पता मिलेगा, न पूर्णिमा का।"

लिफ्ट में दाखिल होते काले खां ने व्यंग किया–"जबकि तेरी डायन हिंदी कैलेंडर के मुताबिक चलती है!"

"पुराने जमाने की है न!" हंसते हुए राजपाल ने उसके व्यंग का उसी रूप में जवाब दिया और टॉप फ्लोर का बटन दबा दिया। जिस वक्त वे टैरेस पर पहुंचे उस वक्त केक काटा जा चुका था।

सभी तालियां बजा रहे थे। बच्चे विशेष रूप से खुश थे। वहां इमरान हाशमी को देखकर दोनों चौंक पड़े। मगर अगले ही पल राजपाल ने कहा था–"वो इमरान नहीं अंगद है।"

"पर सवाल ये है कि वो यहां क्यों है?" काले खां ने बड़बड़ाते से अंदाज में कहा था–"पहुंच कैसे गया? रिम्पी से उसका क्या ताल्लुक या वह भी हमारी तरह अखबार पढ़ने के बाद यह जानने आया है कि कहीं ये उसके सपने वाली रिम्पी तो नहीं है!"

"लगता तो ऐसा ही है सर लेकिन...

"कहां अटक गया राजपाल?"

"सर उधर...उधर देखिए।" अपने चेहरे पर आश्चर्य और खौफ के भाव लिए राजपाल एक खास दिशा में देख रहा था।

"किधर?" कहते हुए काले खां ने उसकी नजरों का पीछा किया तो उसकी निगाह भी उसी चेहरे पर जा टिकी जिस पर राजपाल की टिकी थी। वह चेहरा नंदिनी का था।

"ये वही है...ये वही है सर।" राजपाल बेहद उत्तेजनात्मक अंदाज में बोला था–"वही माथा, वही आंखें, वही भंवें, वही नाक और वही होंठ...ये शालू ही है सर।"

"कंट्रोल में रह राजपाल–कंट्रोल में।" काले खां ने दांत भींचकर कहा था–"पागल हो गया है क्या? तुझे उठते-बैठते, नाचते-गाते चारों तरफ शालू ही शालू नजर आने लगी है।"

"जरा गौर से देखिए तो सही सर, खासतौर से उसकी आंखों को और भंवें...वही कमानीदार।"

"ऐसे नाक, कान, आंख और भंवें आदि बहुत-सी लड़कियों के हो सकते हैं। उसका पूरा चेहरा नहीं बन पाया था।"

"मुझे तो सेम टू सेम लग रही है सर।"

"मुझे मालूम है तू कितना टेलेंटिड है!" काले खां ने पुनः धीमी आवाज में कहा था–"और अब चुप हो जा। देख, तालियां बजाना छोड़कर सब हमारी ही तरफ देख रहे हैं।" यह सच था।

उत्तेजनावशः राजपाल ने अपने प्रारम्भिक शब्द कहे ही इतने जोर से थे कि शब्द भले ही किसी के कान में न पहुंच सके हों मगर उसकी आवाज ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया था।

उधर, अंगद भी काले खां और राजपाल को वहां देखकर चौंका था। कुछ देर के लिए दृश्य फ्रीज हो गया था। फिर, सबसे पहले उसे रिम्पी की आवाज ने तोड़ा–"यहां पुलिस क्यों आई है इमरान?" "अभी मालूम करता हूं।" अंगद के दिमाग ने तुरंत काम किया और बच्चों की भीड़ को चीरता काले खां के करीब पहुंचता हुआ हाथ बढ़ाता बोला–"यहां मुझे इमरान हाशमी कहते हैं आफिसर।" काले खां जैसे खेले-खाए शख्स के दिमाग में तुरंत यह बात आ गई कि रिम्पी के टैरेस से कूदने की धमकी ने उसके पेरेंट्स को विवश किया होगा। इमरान को तो वे बेचारे ला नहीं पाए होंगे सो, अंगद को इमरान बनाकर रिम्पी का दिल बहलाए हुए हैं।

राजपाल की नजरें क्योंकि अभी-भी नंदिनी दास के फेस पर ही चिपकी थीं इसलिए अंगद बोला—"आप किधर देख रहे हैं सर?"

"आं...हां।" राजपाल ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"उस बच्ची की खातिर मैं यहां इमरान हूं।" अंगद ने धीमे स्वर में कहा—"पर आप लोग यहां क्या कर रहे हैं?"

"क्या हमारी तरह तुमने भी रिम्पी के बारे में अखबार में पढ़ा था?" काले खां ने भी धीमे स्वर में पूछा।

"नहीं।"

"फिर यहां कैसे पहुंच गए?"

"लंबी कहानी है। आराम से बताऊंगा।"

"वो कौन है?" काले खां ने भंवों से नंदिनी की तरफ इशारा करते हुए सवाल किया। अंगद ने संक्षिप्त जवाब दिया—"नंदिनी।"

"कौन नंदिनी?"

"रिम्पी के पड़ोस में रहती है।"

"कब से?"

"तीन दिन से।"

"सिर्फ तीन दिन से?" ये वाक्य काले खां और राजपाल के मुंह से एक साथ निकला। उनकी नजरें मिलीं। जैसे दोनों एक दूसरे से कुछ कहना चाहती थीं, मगर उनमें से कोई कुछ बोला नहीं।

"इसमें चौंकने की क्या बात है?" अंगद ने पूछा।

काले खां ने उसके सवाल पर ध्यान दिए बगैर पूछा—"उसके

घर में और कौन-कौन हैं?"

"मैं भी आज ही पहली बार मिला हूं इसलिए उसके खानदान के बारे में नहीं जानता।"

"पर हमें जानना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"लंबी कहानी है। आराम से बताएंगे।" कहने के तुरंत बाद काले खां नंदिनी की तरफ बढ़ गया था। उसके नजदीक पहुंचकर पूरी बेबाकी से बोला—"मुझे आपसे कुछ बातें करनी हैं मोहतरमा।"

"किस बारे में?" उसने मुस्कराते हुए पूछा था।

"आप ही के बारे में?"

"मेरे बारे में! पुलिस कुछ बात करना चाहती है! क्यों?" उसकी कमान जैसी भंवों में थोड़ा-सा खिंचाव नजर आया।

"वो सब बाद में। सबसे पहले यह बताइए कि यहां से पहले यानी तीन दिन से पहले आप कहां रहती थीं?"

"यानी इमरान यह बता चुका है कि मैं इस बिल्डिंग के फ्लैट नंबर छः सौ छः में तीन दिन पहले ही रहने आई हूं!"

"आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।"

"कहीं भी नहीं रहती थी।" उसने अपनी सदाबहार चित्ताकर्षक मुस्कान के साथ कहा था—"हवाओं से पैदा हुई हूं मैं।"

"क्या मतलब?" काले खां की भृकुटी तनी।

"जिस अक्खड़पन से आपने आते ही मुझसे ये सवाल किया है उससे तो यही जवाब निकलता है।" ऐसा कहते वक्त भी मुस्करा रही थी वह—"आपने तो आते ही मुझसे ऐसा बिहेव करना शुरु कर दिया जैसे मैं कोई अपराधी होऊं! क्या एक शरीफ लड़की से बात करने का यही तरीका है! शायद इसीलिए पुलिस बदनाम है।"

काले खां थोड़ा सकपकाया। फिर संभलकर बोला—"चलिए, मान लेता हूं मेरा तरीका थोड़ा जल्दबाजी भरा था। मुझे आपसे कुछ पूछताछ करनी है। आप बताइए—किस तरह की जाए?"

"मुझ ही से क्यों?"

"मतलब?"

"यहां इतने लोग हैं। उनमें से आपने मुझे ही क्यों चुना?"

"क्योंकि आपकी शक्ल किसी से मिलती है।"

"किससे?"

"अभी नहीं बताया जा सकता।"

"वजह?"

"पुलिस जिससे पूछताछ करती है, उसे वजह बताने के लिए बाध्य नहीं होती।" काले खां का लहजा कड़ा था।

उसके इस जवाब पर नंदिनी ने तुरंत कुछ नहीं कहा। कुछ देर उसकी तरफ देखती रही। फिर बोली—"रिम्पी का बर्थडे क्यों खराब किया जाए! नीचे, फ्लैट में बैठकर बात करते हैं।"

"मुझे कोई ऐतराज नहीं है।" काले खां ने कंधे उचकाए।

"आइए।" कहने के साथ वह लिफ्ट के दरवाजे की तरफ बढ़ गई थी। काले खां तुरंत अपने कदमों को हरकत न दे सका। इसमें कोई शक नहीं कि नंदिनी एक कयामतखेज लड़की थी।

जब वह मटकती हुई लिफ्ट की तरफ जा रही थी तो काले खां की आंखें उसके उभरे हुए और थरथरा रहे नितंबों पर स्थिर थीं।

इस बीच राजपाल ने अंगद से पूछा था—"तुमने मालूम किया—क्या ये वही रिम्पी है? क्या इसका जन्म पूर्णिमा को ही हुआ था?"

इस बात की याद आते ही अंगद के सारे जिस्म में बर्फीली लहर दौड़ गई थी। वह जवाब देना चाहता था मगर जुबान कुछ ऐसी ऐंठी कि मुंह से शब्द न फूट सके। सो, हां में गर्दन हिलाकर रह गया।

यह क्लियर होते ही राजपाल के भी सारे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई। बड़ी तेजी से लपककर वह काले खां के नजदीक पहुंचता उत्तेजनात्मक अंदाज में बोला—"स-सर।"

"आं!" काले खां नंदिनी के नितंबों से बाहर आया।

"मैंने पता लगा लिया है सर, वो रिम्पी यही है। पूर्णिमा की रात को ही पैदा हुई थी ये। देख लीजिए, मैंने कहा था न...

"किसने बताया?"

"अंगद ने।"

काले खां उसकी तरफ देखता रह गया। जैसे समझने की कोशिश कर रहा हो कि राजपाल की बातों का क्या मतलब है। फिर लिफ्ट की तरफ बढ़ता बोला—"आ।"

"एक बात और सर।" उसने काले खां का बाजू पकड़ा। काले खां झल्लाया—"क्या है?"

"पूछताछ करते वक्त उसकी आंखों में आंखें न डालना।"

"क्यों?"

"डायनें हिप्नोटिज्म जानती हैं।"

काले खां का दिल पहली बार थर्राया था।

लिफ्ट में पहुंच चुकी नंदिनी ने पलटकर उनकी तरफ देखते हुए कहा था—"कमॉन आफिसर।"

"चल।" कहने के बाद काले खां लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

कुछ देर बाद लिफ्ट छठी मंजिल की तरफ सरक रही थी।

नंदिनी के साथ सफर कर रहे राजपाल के चेहरे पर खौफ के बादल मंडरा रहे थे।

लिफ्ट छोटी थी इसलिए वे लगभग एक दूसरे से टच हुए खड़े थे। राजपाल बार-बार खुद को नंदिनी के भरे-भरे गोल और गोरे बाजू से दूर करता था पर वह फिर टच होने लगता था।

यह सोच-सोचकर उसके होश उड़े जा रहे थे कि कहीं ये डायन जानबूझकर ही तो ऐसा नहीं कर रही है!

जबकि काले खां की आंखें उसके उभरे हुए हाहाकारी उभारों पर स्थिर थीं और नथुनों में घुस रही थी नंदिनी के जिस्म से निकलकर मदहोश कर देने वाली खुश्बू।

काले खां अपने जीवन में हजारों नहीं तो सैंकड़ों लड़कियों से तो मिला ही था मगर वैसी फीलिंग्स कभी नहीं आई थीं जैसी नंदिनी को अपने आसपास महसूस करके आ रही थीं।

जाने क्यों उसे यह एहसास हो रहा था कि वह उसकी तरफ खिंचता जा रहा है। वह उसके पीछे-पीछे सम्मोहन की-सी अवस्था में उसके फ्लैट में पहुंचा था। उसके जिस्म से निकलने वाली खुश्बू उसे बहुत अच्छी लग रही थी जबकि उसने– उन्हें अपने ड्राइंगरूम में पड़े सोफे पर बैठाने के बाद सामने वाले सोफे पर बैठते हुए पूछा था–"क्या लेंगे?"

भले ही अंदर से थोड़ा गड़बड़ाया हुआ था लेकिन काले खां ने हिम्मत करके रूखे स्वर में कहा–"हम यहां कुछ लेने नहीं, यह पूछने आए हैं कि यहां से पहले आप कहां रहती थीं?"

"फिर वही बेताबी!" नंदिनी माहौल को खुशगवार कर देने वाले अंदाज में हंसी थी–"तुम्हें कुछ प्राब्लम है क्या आफिसर?"

हालांकि नंदिनी की हंसी इस कदर खनकदार थी जो किसी भी पुरुष के दिल में घंटियां बजा सकती थी पर राजपाल को ऐसी लगी जैसे कब्रिस्तान में चुड़ैल हंसी हो। वह कुछ बोला नहीं, बस चेहरे पर खौफ लिए नंदिनी की तरफ देखता रहा।

काले खां जब किसी से पूछताछ करता था तो सामने वाले की वैसी बातें नहीं सुनता था जैसी नंदिनी कर रही थी लेकिन उसकी सह रहा था। काले खां ने खुद को खंगाला। लगा–कारण शायद उसका सौंदर्य है। फिर भी लहजे को रूखा ही बनाए रखे बोला–"जवाब दीजिए मोहतरमा। यहां से पहले आप कहां रहती थीं।"

"जहन्नुम में।"

राजपाल को झटका-सा लगा।

"कहां?" काले खां के मुंह से यही एक शब्द निकला।

"जहन्नुम में रहती थी मैं।"

"आप पुलिसवालों से मजाक कर रही हैं?"

"नहीं। मैं मजाक नहीं कर रही।" एकाएक वह सीरियस नजर आने लगी थी–"करीब डेढ़ सौ साल पुरानी वह बिल्डिंग जहन्नुम ही तो थी जिसमें रहने वाले वर्षों से नगर निगम से यह शिकायत कर रहे थे कि उसकी मरम्मत करा दी जाए वरना वह किसी भी दिन गिर जाएगी और जानमाल का भारी नुकसान होगा। मगर नगर निगम ने एक न सुनी और एक दिन वही हुआ।"

"बिल्डिंग गिरी और उसमें रहने वालों की जानमाल का नुकसान हुआ!" काले खां ने उसका आशय समझते हुए कहा।

"आप समझदार हैं। कम भी कहा जाए तो ज्यादा समझ लेते हैं।" जब उसने ऐसा कहा तो काले खां समझ न सका कि ये बात व्यंग में कही गई है या सामान्य लहजे में।

"कितने लोग मर गए उस हादसे में?"

"सब। मेरे अलावा सब।"

"मतलब?"

"मेरा मतलब उस बिल्डिंग में रहने वालों से है। कोई नहीं बचा। अगर उस बिल्डिंग में किसी चिड़िया ने घोंसला भी बना रखा होगा तो वो भी नहीं। सब ऊपर वाले को प्यारे हो गए।"

"फिर आप कैसे बच गईं?"

"मैं काले कव्वे खाकर पैदा हुई हूं।"

"क-क्या?" राजपाल के मुंह से हकलाहट भरा शब्द निकला।

"जिसे बड़ी मुश्किल से मौत आती है, उसके बारे में ऐसा ही कहा जाता है। देख लो, उस बिल्डिंग में रहने वाले सब मर गए मगर मैं नहीं

मरी। अभी तक जिंदा हूं।"

"पर ऐसा हुआ कैसे?"

"क्योंकि उस वक्त मैं उस बिल्डिंग में थी ही नहीं।" उसने अपने शब्दों पर जोर दिया—"मैं नहीं थी। यानी वो नहीं थी जो अपने फ्लैट से बाहर कभी निकलती ही नहीं थी। मुझ कमबख्त को भी उसी रात निकलना था। काले कव्वे खाकर पैदा हुई हूं न!"

"क्या वहां आपकी फैमिली भी थी?"

"भरी-पूरी।" बड़ी-बड़ी आंखों में आंसू नजर आए पर राजपाल को लग रहा था कि इन आंसुओं को उसने जबरदस्ती अपनी आंखों में आमंत्रित किया है।

"कौन-कौन था आपकी फैमिली में?"

"मम्मी-पापा और एक छोटा भाई।"

"सब मर गए?" काले खां ने पूछा।

"ऐसा मत कहिए।" उसके आंसू आंखों से कूदकर कपोलों पर लुढ़कने लगे थे—"ये कहिए, कोई नहीं बचा। ऐसा कोई नहीं बचा आफिसर जिसे मैं अपना कह सकूं।"

"कब की बात है ये?"

"पांच ही दिन तो हुए हैं।"

"कहां की बात है?"

"बिहार के दरभंगा की।"

"हां। याद आ गया। मैंने अखबार में पढ़ा था कि दरभंगा में डेढ़ सौ साल पुरानी एक बिल्डिंग गिरी और उसमें रहने वाले सभी लोगों की मृत्यु हो गई क्योंकि ये हादसा रात के दो बजे हुआ था।"

"अच्छा हुआ आपको याद आ गया, न आता तो पता नहीं और क्या-क्या सवाल पूछते।"

"पर आप रात के दो बजे कहां गई थीं?"

"शमशान।"

"श-शमशान?" काले खां हकला गया जबकि राजपाल की तो घिग्घी ही बंधने को तैयार थी।

"डरिए मत। मैं चुड़ैल या डायन नहीं हूं।"

"म-मैंने कब कहा आप वो हैं लेकिन...रात के दो बजे आप शमशान में क्या करने गई थीं?"

"मेरा काम ही कुछ ऐसा था...बल्कि है।"

"क्या काम है आपका?"

"मैं अघोरियों पर रिसर्च कर रही हूं। उन पर जो काला जादू की विद्या में पारंगत होने की कोशिश करते हैं। सुना है कि अमावस्या की रात को वे लोग शमशान में मुर्दे के ऊपर बैठकर घोर तपस्या करते हैं। ऐसे ही किसी अघोरी की तलाश में गई थी।"

"मिला?"

उसने होंठ सिकोड़कर इंकार में गर्दन हिलाई।

"मिल जाता तो क्या करतीं?"

"अरे! आप इतना भी नहीं समझे! इंटरव्यू लेती उसका। पूछती कि वे लोग ऐसा कैसे करते हैं। क्या उन्हें विश्वास है कि इस तरह वे काला जादू सीख जाएंगे? खैर, कोई बात नहीं। अमावस्या तो हर महीने आती है। दरभंगा का शमशान न सही, मुंबई का सही। कोई तो मिलेगा! ये काम सारे हिंदुस्तान में होता है।"

"आपका और कोई नाते-रिश्तेदार?"

"नहीं है।"

"यहां कैसे आईं?"

"ट्रेन से।"

"मेरा मतलब है मुंबई ही क्यों आईं?"

"जो घर से भागता है या जिसका इस दुनिया में कोई नहीं रहता वो अक्सर मुंबई की तरफ ही लपकता है। शायद इसीलिए मैं भी यहां आ गई। दिमाग में बस यहीं आने का ख्याल आया।"

"यानी यहां भी आपका कोई नाते-रिश्तेदार नहीं है?"

"जब पूरी दुनिया में ही नहीं है तो यहां कैसे हो सकता है?"

"यहां आने वाले ज्यादातर फिल्म लाइन ज्वाइन करने आते हैं।"

"आ ही गई हूं तो मैं भी ट्राई मार लूंगी। शक्ल-सूरत तो माशा अल्लाह, आप देख ही रहे हैं कि खुदा ने पूरी दरियादिली से बख्शी है। उसी लालच में इमरान हाशमी पर लाइन मार रही थी मगर बुरा हो उस तरूणा का जो ऐन वक्त पर दाल भात में मूसलचंद बनकर कूद पड़ी। खैर, मैंने हार मानना नहीं सीखा—प्रयास जारी रखूंगी।

इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में तो हीरोइन बन ही जाऊंगी।"

"नाते-रिश्तेदार न सही।" काले खां कोई सूत्र ढूंढने की कोशिश कर रहा था—"दरभंगा में तो अभी-भी आपके कई परिचित होंगे?"

उसने फिर होंठ सिकोड़कर इंकार में गर्दन हिलाई।

"ऐसा क्यों? जहां आप बचपन से रही थीं वहां...

"बचपन के सखी-सखाओं की छोड़ो। वे थे मगर वक्त के साथ तितर-बितर हो गए। पता नहीं अब कौन कहां है और क्या कर रहा है। पांच साल से तो अपनी रिसर्च में ही लगी हूं और यह काम ऐसा है जो किसी से मिलने जुलने का समय ही नहीं देता। वैसे भी किसी के साथ फालतू में बैठकर गप्पें लड़ाना मेरी आदत कभी नहीं रही।

कमरा बंद करके काम में ही मशगूल रहती थी। सच्चाई तो ये है कि मेरे पास अपने मम्मी-पापा और भाई तक से बात करने का समय भी नहीं होता था। रिसर्च वर्क का मतलब तो आप समझते हैं न! इंसान को सांस तक लेने की फुर्सत नहीं मिलती।"

"अब तक तो आपने अपनी रिसर्च से कनेक्टिड काफी सामग्री इकट्ठी कर ली होगी।"

"ओह!" वह ऐसे तिलमिलाई थी जैसे किसी ने छुरा घोंप दिया हो—"आपने तो मेरी दुखती रग पर हाथ रख दिया आफिसर।"

"मतलब?"

"उस इंसान के बारे में सोचिए जिसकी पांच साल की मेहनत पर पलक झपकते ही पानी फिर गया हो।"

"मैं समझा नहीं।"

"मेरे सारे नोट्स भी उसी बिल्डिंग में दफ्न हो गए।"

काले खां हकबका-सा गया। ये कमबख्त तो हाथ ही नहीं रखने दे रही थी। एक भी प्वाइंट ऐसा नहीं छोड़ रही थी जिसके बेस पर आगे की इन्वेस्टिगेशन की जा सके।

"खैर।" नंदिनी ने आंखें बंद करके ऊपर की तरफ देखते हुए कहा—"सुना है कि जब उसका कोई बंदा कोई महान काम करने की ठानता है तो वो उसकी परीक्षा लेता है। शायद परीक्षा ही ली है उसने मेरी मगर मैं हार नहीं मानूंगी। दोबारा से मेहनत करके नोट्स तैयार करुंगी। अपनी रिसर्च के जरिए ये तो मैं दुनिया को बताने के बाद ही मरुंगी कि काले जादू की विद्या में पारंगत होने के बाद ये अघोरी लोग आखिर उसका इस्तेमाल कैसे करते हैं।"

एकाएक काले खां ने फ्लैट का अवलोकन करने के-से अंदाज में कहा—"इसका किराया करीब पचास हजार रुपए तो होगा ही!"

"फर्नीचर सहित—साठ हजार।"

काले खां ने तुरंत इस तरह कहा जैसे अब नंदिनी उसकी पकड़ में आ गई हो—"हर महीने इतने पैसे आपके पास कहां से आएंगे?"

"उसकी चिंता नहीं है। मेरे पास पापा का एटीएम है और उनके खाते में अभी करीब पचास लाख का बैलेंस है। जब तक वो खत्म होगा, तब तक कोई न कोई और जुगाड़ हो जाएगा। जब इतना बड़ा देश जुगाड़ से चल रहा है तो मेरी तो औकात क्या है!"

"आपके फादर क्या करते थे?"

"हादसे से केवल एक महीने पहले सीडीए से रिटायर हुए थे। जाने कितने फंड-वंड होते हैं! उन सबके मिल-मिलाकर इकट्ठे पैसे मिले थे। जिन्हें उन्होंने बैंक में डाल रखा था। पर अब...।" उसकी आंखों में फिर नमी नजर आई—"अब तो लगता है कि वो सारी रकम उन्हें मेरे लिए ही मिली थी। उन बेचारों की किस्मत में अपनी कमाई का कुछ भी न था। कुदरत भी क्या-क्या करिश्मे दिखाती है!"

"आप यह कहना चाहती हैं कि घर से निकलते वक्त उन्होंने एटीएम आपको दे दिया था!"

"कहना नहीं चाहती बल्कि कह चुकी हूं। शायद मेरी किस्मत अच्छी थी। वरना वो भी बिल्डिंग के मलबे में ही गर्त हो जाता और मैं यहां न पहुंच पाती। दरभंगा में ही कहीं फुटपाथ पर पड़ी होती।"

"आप रात के एक या डेढ़ बजे घर से निकलीं और आपके फादर ने आपको एटीएम दिया, बात कुछ समझ में नहीं आई।"

"जब समझने की कोशिश ही टेढ़े तरीके से कर रहे हैं तो बात आपकी समझ में आ भी कैसे सकती है?"

"मतलब?"

"आपसे किसने कहा कि मैं रात के एक-डेढ़ बजे घर से निकली थी।" उसने काले खां की आंखों में आंखें डालीं। काले खां को राजपाल की हिदायत याद आ गई। सो, आंखों को उसकी आंखों की मिलावट से बचाता हुआ बोला—"दो बजे बिल्डिंग गिरी, आप उस वक्त उसमें नहीं थीं। इसका मतलब यही तो हुआ कि एक या डेढ़ बजे वहां से निकली होंगी।"

"मतलब मत निकालो आफिसर, जब मैं आपके हर सवाल का सीधा-सपाट जवाब देने के लिए उपलब्ध हूं तो मतलब क्यों निकाल रहे हैं? सीधे-सीधे पूछो कि मैं घर से कितने बजे निकली।"

"कितने बजे निकलीं?"

"साढ़े नौ बजे।"

"शमशान में तो आपको बीच रात में पहुंचना था। फिर इतनी जल्दी घर से क्यों निकलीं?"

"घर वालों को ये बताकर थोड़ी निकलना था कि मैं शमशान जा रही हूं। ये बताकर निकलती तो क्या आप समझते हैं कि वे निकलने देते! हरगिज नहीं। कोई मां-बाप अपनी औलाद को, वो भी जवान लड़की को रात के वक्त शमशान के लिए नहीं निकलने दे सकते।"

"पर आपकी बात अलग है। जब उन्हें ये पता था कि आप अघोरियों पर रिसर्च कर रही हैं तो क्यों न निकलने देते।"

"फिर वही। मतलब निकाल लिया आपने। मैंने ये कब कहा कि उन्हें मेरे अघोरियों पर रिसर्च करने के बारे में मालूम था?"

"तो उन्हें क्या मालूम था?"

"यह कि मैं इस विषय पर रिसर्च कर रही हूं कि हमारे मुल्क में रेप की घटनाएं इतनी क्यों बढ़ती जा रही हैं। ऐसे वे क्या कारण हैं जिनकी वजह से इंसान हैवान और शैतान में बदल जाता है। वे बड़े खुश थे कि उनकी बेटी एक ऐसे विषय पर रिसर्च कर रही है जो जब देश के सामने आएगी तो देश का बहुत भला होगा।"

"यानी आपने अपने मां-बाप से झूठ बोल रखा था?"

"मजबूरी थी। मगर मैंने कहीं पढ़ा है कि किसी अच्छे काम के लिए बोला गया झूठ झूठ नहीं होता।"

"अच्छा काम?"

"समाज की भलाई के लिए ही तो मैं इस बात पर रिसर्च कर रही हूं कि काला जादू सीखने के बाद अघोरी लोग उसके इस्तेमाल से क्या-क्या बुरे काम करते हैं। जब समाज को ये सब पता लग जाएगा तो वे उनके दुष्कर्मों की काट ढूंढ लेंगे।"

काले खां ने एक गहरी सांस ली। पूछा—"तो आप कितने बजे घर से निकलीं?"

"साढ़े नौ बजे।"

"कहां गईं?"

"पिक्चर देखने।"

"कौनसी?"

"डर्टी पिक्चर...वाकई बहुत डर्टी थी।"

"आपने अपने मां-बाप को बता दिया था या झूठ बोला था?" "इस बारे में भला झूठ बोलने की क्या जरूरत थी! साफ-साफ बताकर घर से निकली। मां-बाप तो बेचारे यह सोचकर खुश हो गए कि आज बेटी को कम से कम अपने मनोरंजन के बारे में सूझा तो सही वरना चौबीस घंटे कमरे में ही बंद रहती है। खुश होकर ही तो पापा ने मुझे यह कहते हुए अपने हाथ से एटीएम दिया कि इसे ले जा बेटी, दिल खोलकर खर्च करना।"

"उसके बाद?"

"फिल्म साढ़े बारह बजे छूटी। सीधा श्मशान का रुख किया।

बहरहाल, अघोरियों की तपस्या का वही समय होता है।"

"मगर वहां कोई मिला नहीं!"

"बैडलक।"

"फिर रात के दो बजे तक क्या करती रहीं?"

"दो नहीं, तीन बजे तक। मैं वहां से तीन बजे लौटी।"

"मैंने पूछा—क्या करती रहीं?"

"आपको खुद ही समझ लेना चाहिए कि तीन बजे तक किसी

अघोरी को तलाश करने के अलावा और मैंने क्या किया होगा!"

थक-हारकर काले खां ने सीधे-सीधे पूछा—"क्या आप मुझे कोई ऐसा सूत्र दे सकती हैं जिससे पुष्टि हो सके कि आप वही हैं जो खुद को बता रही हैं?"

"बात इतनी टेढ़ी मेढ़ी है कि मेरी समझ में नहीं आई।"

"क्या आपके पास अपना कोई आइडेंटिटी कार्ड है?"

"सब थे—मगर उस बिल्डिंग के मलबे में दफ्न हो गए।"

"फिर मैं कैसे मान लूं कि आप...आप ही हैं।"

"आपके सामने विराजमान हूं।"

"मेरा मतलब ये है कि—आपको कोई ऐसा प्रूफ पेश करना

चाहिए जिससे साबित हो सके कि आपका नाम नंदिनी ही है।"

"भला नाम क्यों गलत बताऊंगी मैं?"

"उस बात को छोड़िए।"

"उस हादसे के बाद मेरे पास तो खुद को खुद साबित करने वाला कोई प्रूफ है नहीं। आपने जितने सवाल किए, मैंने बगैर लाग लपेट के सबका सीधा-सपाट जवाब दिया। सारी कहानी आपके सामने है।" उसने चेतावनी देने जैसे लहजे में कहा था—"अब अगर आपके हाथ ऐसा कोई प्रूफ लगे जो मुझे नंदिनी दास साबित कर सके तो मुझे भी जरूर सप्लाई कर दीजिएगा क्योंकि उससे मेरी लाइफ आसान हो जाएगी। भविष्य में वैसी कोई पेचीदगी खड़ी नहीं होगी जैसी इस वक्त खड़ी हुई है।"

अगर ये लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि काले खां का दिमाग झन्ना उठा था। उसे किसी ऐसे सवाल की तलाश थी जिसके जवाब से यह साबित हो सके कि सामने बैठी लड़की वह नहीं है जो खुद को बता रही है मगर दिमाग ऐसा सवाल नहीं उगल रहा था। उसे लग रहा था कि जितने सवाल पूछ सकता था पूछ चुका है इसलिए एक झटके से उठा और बोला—"मेरा नाम भी काले खां है। साबित करके रहूंगा कि तुम वो नहीं हो जो खुद को बता रही हो।" "अरे...अरे!" हैरानी प्रकट करती हुई वह भी उठी—"अचानक क्या हो गया आपको? आपको यह साबित करके क्या मिल जाएगा कि मैं नंदिनी नहीं हूं? और कम से कम यह तो बता दीजिए कि मैं खुद को वह क्यों बताऊंगी जो नहीं हूं?"

"काले खां के सामने उतने चालाक लोग ज्यादा देर नहीं ठहर पाते जितनी चालाक तुम बन रही हो।"

"म-मैं? मैं क्यों कोई चालाकी करुंगी?" उसने मासूमियत के साथ कहा था—"मैंने कोई जुर्म किया है क्या?"

"बताऊंगा...जल्दी ही ये भी बताऊंगा कि तुमने क्या जुर्म किया है।" कहने के बाद वह तेज कदमों के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ा और हवा के झोंके की तरह बाहर निकल गया।

राजपाल भी उसके पीछे खिंचा चला गया। वह तो जाने कब से इस डायन के सामने से हटने की फिराक में था!

नंदिनी ने ऊंची आवाज में कहा था—"कम से कम ये तो बता जाइए कि मेरी शक्ल किससे मिलती है? अब तो मेरे अंदर भी अपनी हमशक्ल से मिलने की तमन्ना जाग उठी है।"

मगर उन दोनों मे से कोई रुका नहीं था।

"किस तरीके से पहुंचे सर?" जीप के नजदीक पहुंचते पहुंचते राजपाल ने सवाल किया था। जवाब में काले खां ने कहा "बड़ी चालाक लड़की है।"

"लड़की नहीं शायद।"

काले खां ने उसे घूरकर देखा "तू नहीं मानेगा?"

"जब आप ही नहीं मान रहे तो मैं क्यों मानूं?"

"क्या मनवाना चाहता है मुझसे?"

"क्यों चालाक लगी थी आपको?"

"क्या स्टोरी घड़ी है कमबख्त ने! अपना पूरा अतीत ही गायब कर दिया। ऐसा एक भी प्वाइंट रहने का नहीं है जिसके आधार पर यह साबित किया जा सके कि"

"यही तो सर।" राजपाल ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा "यही तो कहना चाहता हूं मैं। अतीत उनका होता है जो पहले से कहीं होते हैं। क्योंकि उसका अतीत है ही नहीं इसलिए ऐसी स्टोरी घड़ी जिससे साबित हो सके कि उसके साथ ऐसी घटना घटी है जिसके कारण उसके पास खुद को नंदिनी साबित करने का कोई प्रूफ नहीं है। पांच दिन पहले दरभंगा में सचमुच एक बिल्डिंग गिरी थी जिसमें रहने वाला कोई नहीं बचा। उसी का फायदा उठाकर उसने स्टोरी घड़ दी क्योंकि मेरा दावा है कि वह उसमें कभी नहीं रहती थी। शालू भी तो एक ऐसी ही वस्तु थी। उसका भी तो कोई अतीत नहीं खोज पाए हम। पंद्रह दिन पहले वह अचानक प्रकट हुई और अंकुर को लेकर गायब हो गई। न उसका कोई पता ठिकाना हाथ लगा है, न फोटो। चित्र बनवाने की कोशिश के जो अंजाम आप देख ही चुके हैं।"

"क्या तू ये कहना चाहता है कि नंदिनी शालू ही है?"

"हंडरेड परसेंट। आप उसकी शक्ल भूल रहे हैं। मैंने तो पहले ही कहा था कि आंख, नाक, होंठ सब उसी से मिलते हैं। और आपने देखा—वो कितनी खूबसूरत है! क्या आपने पहले कभी उतनी खूबसूरत लड़की देखी है! मेरा दावा है कि नहीं देखी होगी। सामान्य लड़कियां उतनी खूबसूरत होती ही नहीं हैं। ये सिफ्त तो सिर्फ डायनों में ही होती है कि वे दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत का रूप धारण कर सकती हैं। तभी तो धनपत शालू पर इतना लट्टू हो गया कि उसका पता ठिकाना जाने बगैर नौकरी दे दी। वह पंद्रह दिन में अपना मकसद पूरा कर ले गई और अब वही यहां नंदिनी के नाम से प्रकट हुई है। अभी केवल तीन दिन हुए हैं। पूर्णिमा ग्यारह दिन दूर है। तब तक वह रिम्पी को भी अपनी उतनी ही दीवानी बना लेगी जितना अंकुर शालू का था और उसे लेकर गायब हो जाएगी।" "यह पता लगाने के लिए क्या करें कि वह शालू है या नहीं?"

"वैरी सिंपल सर...वैरी सिंपल।" राजपाल ने इस तरह कहा जैसे पहले ही से सोचे हुए था "हमें फौरन से पहले फोन करके धनपत

को यहां बुला लेना चाहिए। नंदिनी को उसे दिखाना चाहिए।"

"गुड...वैरीगुड।" ये शब्द कहते वक्त काले खां को यह सोच कर अपनी बुद्धि पर तरस आया कि ये सीधी सी बात उसके दिमाग में क्यों नहीं आई—"तब तक हम यहीं डटे रहते हैं ताकि वह कहीं निकल न जाए और धनपत को बुला लेते हैं।"

"मैं यही कह रहा हूं सर।"

काले खां ने जेब से मोबाइल निकाल लिया था।

बैल बजते ही धनपत ने जेब से मोबाइल निकाला और स्क्रीन पर काले खां का नाम देखकर कॉल रिसीव करता बोला—"इसका मतलब कमिश्नर साहब ने तुमसे बात कर ली है!"

"कमिश्नर साहब ने! मतलब?" काले खां की आवाज उभरी। "मैं अभी-अभी उन्हीं से मिलकर आया हूं इंस्पेक्टर, मैंने उनसे तुम्हारी शिकायत की है। कहा है कि मुझे नहीं लगता कि तुम कभी मेरे बेटे के कातिल को पकड़ पाओगे इसलिए...

"उसे छोड़ो।" काले खां ने उसकी बात काटकर कहा—"और जितनी जल्दी हो सके विले पार्ले पहुंचो।"

"विले पार्ले?" धनपत के मुंह से निकला—"क्यों?"

"मुझे लगता है कि मैं कातिल के बहुत करीब हूं।"

"क-करीब हो तो उसे गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?" धनपत की आवाज में उत्तेजना मिक्स हो गई थी।

"उसके लिए मुझे आपकी जरूरत है।"

"मेरी जरूरत? मैं समझा नहीं। मेरी जरूरत क्यों है?"

"हमारे पास बातों में गंवाने के लिए वक्त नहीं है।" काले खां भन्ना गया था—"वो निकल गई तो हम हाथ मलते रह जाएंगे।"

"कौन? किसके निकल जाने की बात कर रहे हो तुम?"

"शायद शालू।"

"क्या तुमने शालू को पकड़ लिया है?"

"उफ्फ! समझ क्यों नहीं रहे धनपत जी? हम तब तक उस पर हाथ नहीं डाल सकते जब तक कन्फर्म न हो जाए कि वह शालू ही है। हमने शालू को नहीं देखा। आपने देखा है। आप उसकी शिनाख्त कर सकते हैं। जैसे ही आप कहोगे कि वह शालू है हम उसे...

"मैं आ रहा हूं। फौरन आ रहा हूं मैं।" उत्तेजना की ज्यादती के कारण इस बार धनपत काले खां की बात पूरी होने से पहले ही बोलता चला गया—"पूरा पता बताओ, तुम कहां हो?"

"विले पार्ले वेस्ट, चंद्रलेखा बिल्डिंग।"

"फ्लैट नंबर?"

"उसकी चिंता मत करो। हम बिल्डिंग के बाहर ही खड़े हैं।"

धनपत ने एड्रेस अपने जेहन में नोट किया और मोबाइल वापस जेब में डालने के साथ ही गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी। इस वक्त वह पुलिस कमिश्नर से मिलने के बाद अपने बंगले की तरफ लौट रहा था मगर...अगले नाके से रास्ता बदल लिया।

विले पार्ले का रास्ता पकड़े पांच ही मिनट हुए थे कि एक बार फिर मोबाइल बजा। उसे जेब से निकालकर स्क्रीन पर नजर डाली।

अननोन नंबर था। कॉल रिसीव की।

और...ऐसा करते ही जिस्म के सभी रोएं इस तरह खड़े हो गए जैसे जादू के जोर से खड़े हुए हों क्योंकि दूसरी तरफ से किसी औरत के इस तरह कराहने की आवाजें आ रही थीं जैसे वह असहनीय पीड़ा से गुजर रही हो। धनपत उस आवाज को लाखों में पहचान सकता था। शालू की आवाज थी वह।

"श-शालू!" धनपत अपने मुंह से निकलने वाली इस चीख जैसी आवाज को रोक न सका था—"क-क्या तुम शालू हो?"

"ह-हां।" जैसे बड़ी मुश्किल से कहा गया हो।

"कहां है हरामजादी? कहां है तू?" धनपत तुरंत ही आपे से बाहर होकर चीखा था—"तूने क्यों मारा मेरे अंकुर को? क्या बिगाड़ा था मैंने

तेरा? मैं तुझे चीर डालूंगा।"

"म-मैं तो वैसे ही मरने वाली हूं सर, मगर...आह!"

"मगर?"

उसी तरह, कराहते हुए लहजे में कहा गया—"मरने से पहले मैं आपको अंकुर के कातिलों के बारे में कुछ बताना चाहती हूं।"

"अंकुर के कातिलों के बारे में? उसे तो तूने ही मारा है!"

"न-नहीं। मैंने अंकुर को नहीं मारा। मैं तो उसे खरोंच तक नहीं आने दे सकती थी। मैंने उसे बचाने की पुरजोर कोशिश की। इसी लिए उन जालिमों ने मुझे इतना मारा। इतना...कि जाने कैसे अभी तक मेरे प्राण जिस्म में अटके हैं। उन जालिमों में से एक का फोन मेरे हाथ लग गया है। उसी से आपको फोन कर रही हूं।"

"तू झूठ बोल रही है। मेरे अंकुर को तूने ही...

"आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं सर! वो आप ही का नहीं, मेरा भी बेटे जैसा था। मेरी जान अटकी हुई थी उसमें। उसे मैंने नहीं, गिरीराज और उसके साथियों ने मारा है।"

"गिरीराज!"

"आपका कोई पुराना एम्पलाई है। उसने फैक्ट्री में पचास लाख की चोरी कर ली थी। आपने उसे पुलिस के हवाले कर दिया था।"

"ये तो तेरे हमारी कंपनी ज्वाइन करने से बहुत पहले की बात है। करीब एक साल पहले की। फिर तुझे कैसे मालूम?"

"गिरीराज और उसके साथियों की बातें सुनकर पता लगा।"

एक पल के लिए धनपत सोच में पड़ गया। एक साल पुरानी घटना बड़ी तेजी से मस्तिष्क पटल से गुजरी थी। अगले पल मुंह से निकला—"और क्या पता लगा तुझे?"

"गिरीराज ने उसी खुंदक के कारण अपने साथियों की मदद से मुझे और अंकुर को किडनेप किया और अंकुर को मार डाला।"

"तुझे क्यों छोड़ दिया?"

"ताकि मुझे अंकुर की हत्या के इल्जाम में फंसा सके।"

"क्या मतलब?" धनपत का दिमाग घूम गया।

"इंस्पेक्टर काले खां और उसका सहायक राजपाल एक नंबर के रिश्वतखोर हैं। गिरीराज से मिले हुए हैं वे, क्योंकि गिरीराज ने काले खां को मोटी रकम दी है। मुझे गिरीराज और उसके साथियों की बातों से पता लगा कि काले खां ने ही आपके दिमाग में यह बैठाने की कोशिश की होगी कि अंकुर की हत्या मैंने की है।"

धनपत की खोपड़ी चकरघिन्नी बननी शुरु हो गई थी। फिर भी सवाल किया—"वो ऐसा क्यों करेगा?"

"खुद को बचाने के लिए। गिरीराज की स्कीम ये है कि काले खां से मिलकर जब वह मुझे अंकुर की हत्या के इल्जाम में फंसा देगा तो उसकी तरफ कभी किसी का ध्यान नहीं जाएगा और...

"और?"

"स्कीम तो इन लोगों की इससे आगे भी है। बहुत ही भयंकर स्कीम।" इतना कहने के बाद पुनः कराहने की आवाज उभरी।

"कैसी स्कीम?"

"य-ये लोग आपको भी मारने वाले हैं।"

"म-मुझे?" धनपत के रोंगटे खड़े हो गए—"मुझे क्यों?"

"अंकुर को मारकर गिरीराज के खून की प्यास पूरी तरह नहीं बुझी है। उसका कहना है कि उसके अपमान का बदला तब तक पूरा नहीं होगा जब तक धनपत इस दुनिया में सांसें ले रहा है।

इधर, आपने काले खां की शिकायत पुलिस कमिश्नर से की होगी।

कमिश्नर का फोन मेरे सामने ही काले खां के पास आया। उन्होंने उसे बहुत डांटा। उसके कारण काले खां भी आपसे चिढ़ गया है सर, उसने आपको विले पार्ले में इसी बिल्डिंग के नीचे बुलाया होगा जिसके एक फ्लैट में इस वक्त मैं कैद हूं।"

धनपत के सारे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई थी। आवाज के साथ हकलाहट बाहर निकली—"त-तुम्हें यह सब कैसे मालूम?" "उनके बीच मेरे सामने ही तो सारी बातें हुई हैं। वे मुझे बेहोश समझ रहे थे। जैसा कि बता चुकी हूं। काले खां के मोबाइल पर जब कमिश्नर साहब का फोन आया तो वह गिरीराज और उसके साथियों के साथ फ्लैट के इसी कमरे में था जिसमें इन्होंने मुझे बांध कर डाल रखा था। आपकी हत्या का प्लान सैट करने के बाद मेरे ही सामने काले खां ने आपको इस बिल्डिंग के बाहर आने के लिए फोन किया। इन लोगों ने आप दोनों की हत्या के इल्जाम में मुझे फांसी पर चढ़ाने की पूरी तैयारी कर रखी है।"

"अगर तुम बंधी हुई हो तो ये फोन कैसे कर रही हो?"

"आपकी बात से लगता है सर कि आप अभी-भी मुझ पर शक कर रहे हैं। यह सोच रहे हैं कि अंकुर को मैंने ही मारा है और अब झूठ बोल रही हूं।" ये सब ऐसे लहजे में कहा गया जैसे कहने वाली जबरदस्त पीड़ा से गुजर रही हो—"आप सोचिए तो सही सर कि मैं अंकुर को क्यों मारूंगी? यदि मैं झूठ बोल रही होती तो मुझे यह कैसे पता होता कि एक साल पहले किसी गिरीराज ने आपकी फैक्ट्री में चोरी की थी और आपने उसे पुलिस के हवाले किया था? यह कैसे पता होता कि आपने पुलिस कमिश्नर से काले खां की शिकायत की है? और यह कैसे पता होता कि काले खां ने आपको विले पार्ले की इस बिल्डिंग के नीचे बुलाया है?"

धनपत चुप रह गया। कहने के लिए कुछ सूझा नहीं था उसे और सूझा इसलिए नहीं था क्योंकि शालू की बातें जेहन के सेंटर में जाकर समा गई थीं। इसमें शक नहीं कि उन बातों ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया था और...जब वह उस मानसिक अवस्था में था तो दूसरी तरफ से गर्म लोहे पर चोट की गई—"चलिए...कोई बात नहीं सर, भले ही मेरी बातों पर यकीन न करें मगर, प्लीज...प्लीज...प्लीज, मेरी इतनी रिक्वेस्ट जरूर मान लीजिएगा कि वहां मत आइएगा जहां काले खां ने बुलाया है क्योंकि...क्योंकि...

"क्योंकि?"

"विले पार्ले वेस्ट की चंद्रलेखा नामक बिल्डिंग के नीचे आपको खत्म करने की पूरी तैयारी हो चुकी है।"

धनपत का सारा जिस्म पसीने-पसीने हो गया था। थोड़े अंतराल के बाद पूछा था उसने—"तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।

बंधी हुई हो तो फोन कैसे कर रही हो?"

"वे लोग मुझे बेहोश समझकर कमरे से चले गए हैं। कमरा बाहर से बंद कर दिया गया है। किसी तरह मैंने खुद को खोल लिया है। उनमें से एक का मोबाइल यहां रह गया था। उसी से...

"कहां हो तुम?"

"बता तो चुकी हूं।"

"फ्लैट नंबर पूछ रहा हूं।"

"छः सौ छः। पर आप यह क्यों पूछ रहे हैं?" जैसे अचानक किसी शंका से ग्रस्त होकर कहा गया हो—"कहीं आप मेरी मदद करने के बारे में, मुझे बचाने के बारे में तो नहीं सोच रहे! ऐसा है तो ऐसा बिल्कुल मत करना सर, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मरती हूं तो मरने दो। मेरी जान की कोई कीमत नहीं है।"

"नहीं, मैं तुम्हें मरने के लिए नहीं छोड़ सकता।" धनपत के जबड़े भिंच गए थे—"जिसकी जान मेरे अंकुर को बचाने की वजह से खतरे में है, मैं उसे कैसे मरने दे सकता हूं!"

"थैंक्यू सर...थैंक्यू। मेरी बातों पर यकीन करने के लिए थैंक्यू!" दूसरी तरफ से ऐसे अंदाज में कहा गया जैसे कहने वाली को बहुत राहत

मिली हो—"मुझे इससे ज्यादा यदि कुछ चाहिए तो वो आपकी जान है। उसे बचाइए। भूल जाइए कि मैं इन लोगों की कैद में हूं।"

"ऐसा नहीं हो सकता शालू।"

"प्लीज धनपत सर।"

"मैं उनकी नजरों से छुपकर तुम तक पहुंचूंगा।"

"नहीं पहुंच सकते सर, वे लोग बिल्डिंग के गेट पर खड़े होंगे।"

"मैं पीछे की तरफ से एंटर करूंगा।"

"फिर भी, आना तो सामने की तरफ ही पड़ेगा। क्योंकि मेन गेट से एंटर हुए बगैर छठी मंजिल पर नहीं आया जा सकता।"

धनपत सोच में पड़ गया। इस वक्त वह यह नहीं सोच रहा था कि उसे किसी किस्म का धोखा दिया जा रहा है क्योंकि कुछ तर्कपूर्ण बातें ऐसी थीं जिनके बाद उसे यकीन हो गया था कि शालू वाकई कैद में है और सच बोल रही है।

इस वक्त उसके जेहन में बस एक ही बात थी।

यह कि—किसी भी तरह शालू को गिरीराज और उसके गुंडों की कैद से निकालना है। पर कैसे? कैसे? दिमाग इसी उधेड़बुन में लगा था कि दूसरी तरफ से पूछा गया—"चुप क्यों हो गए सर?"

धनपत बस इतना ही कह सका—"सोच रहा हूं।"

"अगर आप मुझे बचाने के बारे में सोच रहे हैं तो प्लीज...

"मैं तुम्हें मरने के लिए नहीं छोड़ सकता।"

"आप चाहकर भी कुछ नहीं कर सकेंगे सर, उल्टी आपकी जान खतरे में पड़ जाएगी। केवल एक ही रास्ता है। यह कि—बिल्डिंग के पीछे सर्विसलेन में पहुंचकर रेनवाटर पाइप के जरिए उस कमरे की खिड़की तक पहुंचा जाए जिस कमरे में मैं कैद हूं मगर नहीं, ये नहीं हो सकता। यह काम असंभव की सीमा तक कठिन है। रेन वाटर पाइप पर बगैर कोई आहट पैदा किए छठी मंजिल की खिड़की तक चढ़ना नामुमकिन काम है।"

धनपत के दांत भिंच गए—"मेरे लिए नामुमकिन नहीं है।"

"सर...

"मैं एनसीसी का फर्स्ट क्लास कैडेट रहा हूं।"

"प्लीज सर, मान जाइए। ये बेवकूफी होगी।"

"मैं आ रहा हूं शालू।" दृढ़तापूर्वक कहने के बाद धनपत ने फोन काट दिया था। अब उसके चेहरे पर जलजले के-से भाव थे। अंतिम निर्णय ले चुका था वह।

चंद्रलेखा बिल्डिंग के बाहर वाली रोड पर ज्यादा ट्रेफिक न था। धनपत ने भी अपनी गाड़ी सामान्य गति के साथ उसके सामने से गुजारी और स्ट्रीट लाइट के पीले प्रकाश के कारण एक ही नजर में बिल्डिंग के बाहर खड़ी न सिर्फ पुलिस जीप देख ली बल्कि उसके बाहर खड़े काले खां और राजपाल को भी देख लिया।

काले खां ने उसी वक्त दाएं हाथ की मुट्ठी में दबी सिगरेट में जोरदार कश लगाया था। चंद्रलेखा के सामने से गुजरने के बाद उसने गाड़ी की गति कम कर ली थी क्योंकि अब उसे उस रास्ते की तलाश थी जहां से चंद्रलेखा की सर्विसलेन में पहुंचा जा सकता हो।

इस काम में ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी।

करीब सौ मीटर चलने के बाद उसे वह सर्विसलेन मिल गई थी जिसमें चंद्रलेखा के ही नहीं बल्कि उसके आसपास की इमारतों के भी रेनवाटर पाइप थे।

धनपत ने वहीं, अंधेरा कौना देखकर गाड़ी पार्क की और आने जाने वाले इक्का-दुक्का राहगीरों की नजरों से बचकर लेन में दाखिल हो गया। वहां इतना अंधेरा था कि किसी के द्वारा देख लिए जाने का खतरा नहीं था।

उसे उस रेनवाटर पाइप तक पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं हुई जो चंद्रलेखा के टैरेस तक चला गया था।

टैरेस पर ऐसी रोशनी नजर आई जैसी किसी अन्य इमारत के टैरेस पर नहीं थी। उसे मालूम नहीं था कि वह रोशनी वहां चल रही रिम्पी की बर्थडे पार्टी के कारण है और उसने उस पर कोई खास ध्यान भी नहीं दिया क्योंकि उसकी नजर टैरेस पर नहीं बल्कि छठी मंजिल की दो खिड़कियों पर थी और अब उसकी उलझन यह थी कि दो में से उस कमरे की खिड़की कौनसी है जिसमें शालू कैद है?

अभी वह इस उलझन से बाहर नहीं आ पाया था कि जेब में पड़ा मोबाइल घनघनाया।

सर्विसलेन में सन्नाटा होने के कारण मोबाइल की घनघनाहट कुछ ज्यादा ही तीव्र लगी थी। उसने इस डर से बहुत फुर्ती के साथ जेब से मोबाइल निकालकर ऑन किया कि कहीं किसी इमारत के अंदर मौजूद कोई शख्स उसकी आवाज न सुन ले।

बहुत ही धीमे स्वर में 'हैलो' कहा।

"प्लीज सर।" शालू की रिक्वेस्ट करती आवाज उभरी—"वह बेवकूफी न कीजिएगा। आपको मेरी कसम।"

धनपत फुसफुसाया—"मैं सर्विसलेन में पहुंच चुका हूं।"

"क-क्या बात कर रहे हैं सर?" शालू की जैसे जान ही निकल गई हो—"न-नहीं। आप ऐसा नहीं कर सकते।"

"चिंता मत करो शालू। मुझे रस्सी और पाइप पर चढ़ने की पूरी प्रेक्टिस है। न भी होती तो मैं तुम्हें यूं मरने के लिए नहीं छोड़ सकता था।" धनपत धीमे मगर दृढ़ता भरे स्वर मेंबोला—"अब मेरी प्राब्लम केवल ये है कि छठी मंजिल पर दो खिड़कियां नजर आ रही हैं और मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि उस कमरे की खिड़की कौनसी है जिसमें तुम कैद हो। क्या तुम कुछ कर सकती हो?"

"मान जाइए सर, आपकी जान को...

"केवल उस पर ध्यान दो शालू जो मैं कह रहा हूं।" धनपत ने

उसकी बात काटी—"क्या तुम किसी तरीके से मुझे बता सकती हो कि दोनों में से तुम्हारे कमरे की खिड़की कौनसी है?"

क्षणिक खामोशी के बाद इस तरह कहा गया जैसे मजबूरी में कहा जा रहा हो—"मेरे पास ये मोबाइल है। खिड़की में हाथ डालकर इसकी टार्च की रोशनी नीचे की तरफ डाल सकती हूं।"

"गुड...वैरीगुड।" धनपत के लहजे में उत्साह भर गया—"बातें बंद करके बस ऐसा ही करो। मुश्किल से पांच मिनट बाद मैं तुम्हारे कमरे की खिड़की पर होऊंगा।"

"मेरी बात सुनिए सर...

"जो कहा है, वो करो।" आदेशात्मक लहजे में कहने के बाद धनपत ने फोन काट दिया था।

अब वह ऊपर, खिड़कियों की तरफ देख रहा था। उस वक्त उसकी आंखें चमक उठीं जब एक खिड़की पर सफेद रंग की लाइट की बहुत ही महीन-सी रेखा नजर आने के बाद बुझ गई।

मोबाइल जेब में रखने के बाद धनपत ने अपने दोनों हाथ रेन वाटर पाइप पर जमा दिए और अपना दायां पैर उठाकर पाइप की बगल में दीवार पर जमाया ही था कि जेहन में विचार कौंधा—मुझे अपना मोबाइल बंद कर देना चाहिए। यदि ये चढ़ते वक्त बज गया और किसी ने आवाज सुन ली तो सारी मेहनत पर पानी फिर सकता है। हो सकता है एक बार फिर शालू ही उससे मना करने के लिए मिला दे! सो, उसने पैर और हाथ वापस खींचे। जेब से मोबाइल निकाला और बंद करने की जगह उसे वाइब्रेटर पर डाल दिया।

शुरू की दो मंजिल वह काफी तेजी के साथ चढ़ा मगर उसके बाद न केवल हांफने लगा बल्कि थक भी गया। अब उसकी समझ में आया कि जिस काम को वह चुटकी बजाने जितना आसान समझ रहा था वह उतना आसान न था। बेशक वह अपने जमाने में एनसीसी का बेस्ट कैडेट था लेकिन वो स्टूडेंट लाइफ की बात थी।

तब के मुकाबले उसकी उम्र में काफी फर्क आ गया था। किसी तरह उसने खुद को दूसरी मंजिल की खिड़की के ऊपर बनी छजली पर स्थापित किया और अनियंत्रित हो चली सांसों को व्यवस्थित करने की कोशिश करने लगा।

नियंत्रित होने के बाद अगली मंजिल की तरफ का सफर जारी किया और फिर तीसरी मंजिल की छजली पर थोड़ा-सा आराम।

इस तरह वह एक-एक मंजिल करके चढ़ता रहा।

तीसरी और चौथी मंजिल के बीच जेब में वाईब्रेशन महसूस किया। वह समझ गया कि किसी ने उसके मोबाइल पर कॉल की है परंतु उस पर ध्यान दिए बगैर चढ़ता रहा।

पांचवीं मंजिल पर पहुंचते-पहुंचते इतनी बुरी तरह थक गया था कि लगने लगा—वह एक मंजिल और नहीं चढ़ पाएगा लेकिन वहां से वापस तो लौट नहीं सकता था अतः कुछ ज्यादा देर सुस्ताने के बाद पुनः सफर जारी किया।

मंजिल पर पहुंचने तक लग रहा था कि हाथ पाइप पर जमाए रखना मुश्किल हो रहा है। पैर दीवार से फिसलने वाले हैं।

कमरे के अंदर अंधेरा था। खिड़की में मुंह डालकर उसने बहुत आहिस्ता से पुकारा था—"शालू।"

"बेवकूफ!" अंदर से शालू की आवाज आई और फिर...उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने जोर से धक्का दिया हो। हवा में तैरते वक्त उसके जेहन में बस एक ही लफ्ज गिजबिजाया था—'धोखा!' उसकी चीख हवा में तैरती चली गई।

हवा के परों पर परवाज करती हुई वह चीख न केवल टैरेस पर चल रही पार्टी में शिरकत कर रहे लोगों के कानों को झनझना गई बल्कि बिल्डिंग के मेनगेट पर डटे काले खां, राजपाल, जीप के ड्राइवर और बिल्डिंग के चौकीदार को भी चौंका गई।

इतना ही नहीं, धनपत के हलक से निकली चीख इतनी जोरदार थी कि न सिर्फ चंद्रलेखा में रहने वाले उछल पड़े थे बल्कि आसपास की बिल्डिंगों में भी हलचल मच गई थी।

टैरेस पर मौजूद बालिग लोगों ने तुरंत झांककर सर्विसलेन में देखा मगर अंधेरे के अलावा कुछ नजर न आया।

पैरापिट वॉल इतनी ऊंची थी कि बच्चे उसके पार नहीं झांक सकते थे मगर रिम्पी सहित वे सब सहमे हुए थे।

इधर हड़बड़ाए हुए राजपाल के मुंह से निकला था—"ये चीख कैसी थी सर, मुझे तो किसी की आखिरी चीख जैसी लगी।"

काले खां उसकी बात का जवाब देने के लिए वहां रुका नहीं था बल्कि लिफ्ट की तरफ भागता चला गया।

लिफ्ट में सवार होकर छठी मंजिल पर पहुंचा।

लिफ्ट के रुकते ही दौड़कर फ्लैट नंबर छः सौ छः पर, परंतु वह बाहर की तरफ से लॉक था।

काले खां बगैर देर किए आंधी-तूफान की तरह सीढ़ियां लांघता टैरेस पर पहुंचा। वहां अफरा-तफरी मची हुई थी। काले खां की आंखों ने बड़ी तेजी से सबको स्कैन किया और नजरें नंदिनी पर जाकर ठहर गईं। अभी वह उसकी तरफ देख ही रहा था कि अंगद ने करीब आते हुए पूछा—"ये कैसी चीख थी इंस्पेक्टर?"

"वही जानने आया हूं।"

"मेरे ख्याल से तो वह चीख सर्विसलेन से आई थी।" उत्तेजित अवस्था में यह बात तरूणा ने कही थी।

काले खां बहुत तेजी से पैरापिट वॉल की तरफ लपका, जो साढ़े चार फुट ऊंची थी। सर्विसलेन में झांका मगर वहां अंधकार और सन्नाटा छाया हुआ था।

तेजी से वापस पलटता हुआ बोला—"किसी के पास टार्च है?"

"मेरे पास है।" नंदिनी बोली—"मगर फ्लैट में।"

काले खां उसे घूरता रह गया। तुरंत कुछ बोल न सका था वह।

थोड़ा संभलकर बोला—"जल्दी लेकर आओ।"

नंदिनी दौड़ती हुई लिफ्ट की तरफ गई मगर लिफ्ट वहां नहीं थी। काले खां फिर चीखा—"सीढ़ियों से जाओ।"

नंदिनी पहले ही उधर का रुख कर चुकी थी।

काले खां ने देखा—बड़े सस्पेंस में डूबे थे तो बच्चे सहमे हुए थे। किसी के मुंह से बोल न फूट रहा था। नंदिनी को गए आधा मिनट ही हुआ था कि लिफ्ट टैरेस पर पहुंची। उसमें से हड़बड़ाए हुए राजपाल के साथ अन्य कई लोग 'क्या हुआ-क्या हुआ' कहते बाहर निकले मगर कौन बताता कि क्या हुआ है?

नंदिनी को टार्च लाने में दो मिनट लग गए।

काले खां ने उसके हाथ से टार्च छीनी। वापस पैरापिट वॉल की तरफ लपका और अगले पल शक्तिशाली टार्च का प्रकाश दायरा सर्विसलेन को खंगाल रहा था।

और फिर...वह एक इंसानी जिस्म पर जाकर स्थिर हो गया।

वहां कोई औंधे मुंह पड़ा था।

उसके सिर के आसपास खून भी नजर आया।

"ये तो कोई आदमी है।" पैरापिड वॉल पर लटके अंगद के मुंह से निकला—"मगर कोई आदमी वहां कैसे पहुंच गया?"

"यहां से तो कोई नहीं गिरा?" काले खां ने तेज स्वर में पूछा।

सबने एकसाथ कहा—"नहीं।"

"पार्टी खत्म करो, बच्चों को अपने-अपने घर भेज दो।" कहने के बाद काले खां तेज कदमों के साथ लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

सर्विसलेन में पहुंचकर काले खां ने सबसे पहले औंधे मुंह पड़े शख्स की नब्ज चैक की। जब यकीन हो गया कि वह मर चुका है तो राजपाल से पुलिस हैडक्वार्टर फोन करने के लिए कहा।

फोन के आधे घंटे बाद पुलिस फोटोग्राफर, टेक्नीशियंस और पोस्टमार्टम वाले लोग पहुंचे। तब तक काले खां बिल्डिंग के लोगों की मदद से सर्विसलेन में रोशनी का इंतजाम करवा चुका था। उनके आने से पहले काले खां ने न खुद घटनास्थल से ज्यादा छेड़छाड़ की, न ही किसी अन्य को करने दी बल्कि किसी अन्य को तो लाश के नजदीक तक भी नहीं जाने दिया था।

सबको सर्विसलेन से बाहर निकाल दिया था।

फोटोग्राफर और फिंगरप्रिंट्स डिपार्टमेंट का प्रारम्भिक काम खत्म होने के बाद काले खां ने लाश सीधी की और...धनपत के चेहरे पर नजर पड़ते ही खुद उसे भी अपनी चीख को दबाने में जबरदस्त मेहनत करनी पड़ी थी।

राजपाल तो चीख ही पड़ा—"ये तो धनपत है सर।"

"देख रहा हूं।" काले खां बस इतना ही कह पाया।

"ये यहां कैसे?"

काले खां पर जवाब कहां?

दिमाग भन्नाया हुआ था। ये बात उसकी समझ में आकर नहीं दे रही थी कि जिस धनपत को उसने मुख्यद्वार पर बुलाया था वह सर्विसलेन में कैसे पहुंच गया?

गहन छानबीन शुरु की।

फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट से सबसे नजदीक वाले रेनवाटर पाइप से निशान लेने के लिए कहा।

उधर वह अपने काम में जुटा इधर काले खां ने लाश की जेब में हाथ डालकर मोबाइल निकाला।

वह वाइब्रेटर पर था।

चैक किया—उसकी दोनों कॉल कॉल्स डिटेल में मौजूद थीं।

एक वह जिसके जरिए उसने धनपत से चंद्रलेखा के बाहर आने के लिए कहा था और दूसरी वह जो तब की गई थी जब काफी देर हो जाने के बावजूद धनपत चंद्रलेखा नहीं पहुंचा था। इस कॉल के जरिए वह धनपत से देरी का कारण जानना चाहता था लेकिन उसने कॉल रिसीव नहीं की थी और वह कॉल धनपत के मोबाइल में मिस कॉल के रूप में ही दर्ज थी। मगर, इन दोनों कॉल्स के बीच दो कॉल्स और थीं जो तीस मिनट के अंतराल पर एक ही मोबाइल से की गई थीं। वे दोनों कॉल्स रिसीव की गई थीं।

जिस वक्त काले खां यह सोच रहा था कि शायद इन्हीं दो कॉलों के कारण धनपत सर्विसलेन में पहुंचा, उस वक्त फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट ने कहा—"मुझे पाइप से हाथों के और पाइप के दोनों तरफ की दीवारों से जूतों के निशान मिल रहे हैं। जूतों के निशान मक्तूल के जूतों के हैं। लगता है इसने पाइप पर चढ़ने की कोशिश की थी।"

"पता लगाओ। ये पाइप पर कहां तक चढ़ा?"

"जितनी ऊंचाई तक मैं निशान ले सकता था, ले चुका हूं। उससे ऊपर के निशान लेने के लिए सीढ़ी चाहिए।"

काले खां ने तुरंत पहला फोन फायरब्रिगेड को किया।

दूसरा पुलिस हैडक्वार्टर को।

संबंध स्थापित होते ही उसने वह नंबर बताया जो धनपत के मोबाइल से मिला था और कहा—"इसे फौरन सर्विलांस पर लगा दो।

ये एमरजेंसी है। मुझे जानकारी चाहिए कि ये नंबर किसका है।

जितनी जल्दी हो सके इसकी वर्तमान लोकेशन बताओ।"

दूसरी तरफ से कहा गया—"लोकेशन तो बताई जा सकती है मगर रात के इस वक्त यह नहीं बताया जा सकता कि नंबर किसका है। यह तो कल दोपहर तक ही बताया जा सकता है।"

काले खां ने यह कहकर संबंध विच्छेद कर दिया कि फिलहाल मेरा काम इस नंबर की वर्तमान लोकेशन से भी चल जाएगा।

फायर ब्रिगेड वाले केवल पंद्रह मिनट में पहुंच गए।

लंबी सीढ़ी लगाई गई।

फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट ने उस पर चढ़कर अपना काम शुरु किया और चढ़ता-चढ़ता छठी मंजिल की खिड़की तक पहुंच गया।

उसके ऊपर भी चढ़ा लेकिन निशान मिलने बंद हो गए थे।

नीचे उतरने के बाद उसने बताया—"मक्तूल छठी मंजिल की उस खिड़की तक गया था।"

काले खां अनुमान लगा चुका था कि वह खिड़की फ्लैट नंबर छः सौ छः की है। इस हकीकत ने उसके सारे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ा दी थी कि खिड़की नंदिनी के फ्लैट की थी। फिर भी धैर्यपूर्वक

एक्सपर्ट से पूछा—"वहां से वापसी के कोई निशान?"

"नहीं हैं।"

"इसका मतलब—ये वहां से नीचे गिरा।"

एक्सपर्ट चुप रहा।

"मेरे साथ आओ।" कहने के बाद काले खां तेजी से सर्विसलेन से बाहर की तरफ बढ़ गया था।

फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट उसके पीछे हो लिया।

वे घूमकर चंद्रलेखा के प्रांगण में पहुंचे। चंद्रलेखा में रहने वाले लगभग सभी बालिग लोग वहां इकट्ठा थे। अंगद और तरूणा भी वहीं थे पर काले खां सीधा नंदिनी के करीब पहुंचा और सपाट लहजे में बोला—"मुझे तुम्हारा फ्लैट चैक करना है।"

"म-मेरा फ्लैट! क्यों?"

"सवाल बाद में। पहले वो कराओ जो मैंने कहा है।" कहने के बाद वह लिफ्ट की तरफ बढ़ गया लेकिन फिर अचानक ही ठहरकर वहां मौजूद लोगों से बोला—"मेरे लौटने तक आप सब लोग यहीं रहेंगे। कोई अपने फ्लैट में नहीं जाएगा।" फिर उसने अंगद और तरूणा की तरफ देखते हुए कहा था—"तुम दोनों भी।"

जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर वह लिफ्ट में जा घुसा। नंदिनी के पीछे राजपाल और फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट भी था।

काले खां के हुक्म पर नंदिनी ने चाबी के इस्तेमाल से अपने फ्लैट का मेनगेट खोला। काले खां सर्विसलेन की तरफ खुलने वाली खिड़की के करीब पहुंचा और अपनी तेज आंखों से उसका मुआयना किया। वह करीब आठ फुट ऊपर थी यानी अच्छी खासी लंबाई का व्यक्ति भी उसके पार नहीं झांक सकता था।

उस पर सिर्फ ग्रिल थी, कांच या पल्ले नहीं। काले खां ने खिड़की के नीचे का मुआयना किया—वहां कॉलीन बिछा हुआ था। एक्सपर्ट से कहा—"मुझे खिड़की की चौखट से किसी के निशान मिलने की उम्मीद है।"

"मैं वहां से निशान कैसे ले सकता हूं?"

काले खां ने कमरे में नजर दौड़ाई।

एक कोने में रखा करीब तीन फुट ऊंचा स्टूल नजर आया।

स्टूल पर क्रिस्टल की बनी बुद्धा की एक बड़ी मूर्ति रखी हुई थी। उसी पर नजरें टिकाए काले खां ने कहा—"उस मूर्ति को उठाकर नीचे रख दो और स्टूल को यहां लाओ।"

गजपाल फुर्ती के साथ स्टूल की तरफ बढ़ा और अभी मूर्ति को हाथ लगाने ही वाला था कि काले खां तेजी से बोला—"ठहरो।"

गजपाल जहां का तहां जाम हो गया।

"पहले तुम मूर्ति और स्टूल से निशान लेने की कोशिश करो।"

काले खां ने एक्सपर्ट से कहा—"देखो, निशान मिलते हैं या नहीं?"

फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट ने आदेश का पालन किया मगर किसी की उंगलियों के निशान नहीं मिले। न सिर्फ मूर्ति या स्टूल से बल्कि खिड़की की चौखट से भी। जिस वक्त वह सारी कार्रवाई चल रही थी उस वक्त नंदिनी के आकर्षक होंठों पर व्यंगात्मक मुस्कान थी और जब कार्रवाई खत्म हुई तो उसने काले खां के चेहरे पर फैली निराशा को देखते हुए पूछा था—"क्या मैं जान सकती हूं इंस्पेक्टर कि तुमने मेरे ही फ्लैट में ये छानबीन क्यों की?"

"रेनवाटर पाइप पर चढ़ता हुआ धनपत आपकी इस खिड़की के उस तरफ तक आया था।"

"कौन धनपत?"

काले खां ने अपनी आंखों को एक्सरे मशीन में तब्दील करके उसे घूरते हुए पूछा—"आप नहीं जानतीं?"

"बिल्कुल नहीं।" नंदिनी ने बहुत ही मासूमियत के साथ कहा था—"मुझे नहीं मालूम आप किसकी बात कर रहे हैं।"

काले खां का जी चाहा कि झपटकर नंदिनी के बाल पकड़ ले और चीखकर कहे कि मैं अच्छी तरह जान गया हूं कि तू धनपत को जानती है क्योंकि तू ही शालू है मगर ऐसा किया नहीं उसने। खुद को काबू में रखे बोला—"चलो, फिलहाल मैं ही बता देता हूं—मैं उस शख्स की बात कर रहा हूं जिसकी लाश सर्विसलेन में मिली है।"

"और आप कह रहे हैं कि रेनवाटर पाइप पर चढ़ता हुआ वह मेरे फ्लैट की खिड़की तक आया?" नंदिनी चौंकी थी—"व्हाई?

उसने ऐसा क्यों किया?"

"यही जानने के लिए इतनी कसरत कर रहा हूं।"

"आपने मूर्ति और स्टूल से निशान तलाशने की कोशिश की।

चौखट से निशान लिए। कहीं आप यह तो नहीं सोच रहे कि उसे इस खिड़की से —क्का दिया गया जिसके कारण वह...

"लगता तो ऐसा ही है।" काले खां ने दांत भींचकर कहा था।

नंदिनी ने बड़ी अजीब बात कही—"हो सकता है।"

"म-मतलब?" काले खां बुरी तरह चौंका।

"पूछताछ करके आपके जाते ही मैं वापस टैरेस पर पार्टी में पहुंच गई थी। इस बात की पुष्टि आप पार्टी में मौजूद लोगों से कर सकते हैं कि जिस वक्त चीख की आवाज गूंजी उस वक्त मैं टैरेस पर ही थी। इस बीच मुमकिन है किसी ने मेरे फ्लैट के अंदर घुसकर वैसा किया हो जैसी आपको शंका है।"

"फ्लैट की चाबी तो आपके पास थी!"

"चाबियों की अहमियत तो आजकल छोटे-मोटे चोरों तक के लिए कुछ नहीं रही इंस्पेक्टर, जिसने किसी का कत्ल करने की ठानी हो उसके लिए तो क्या होगी? मैं तो केवल तीन दिन से इस फ्लैट में रह रही हूं। जाने इसकी डुप्लिकेट किस किसके पास होगी।"

"काफी स्मार्ट हैं आप।" काले खां ने नंदिनी को गौर से देखते हुए कहा था—"और उतना ही स्मार्ट मुझे धनपत का कातिल लग रहा है क्योंकि मूर्ति, स्टूल या चौखट में से किसी पर भी उसने अपने निशान नहीं छोड़े जबकि मेरी पक्की धारणा है कि वह इसी खिड़की से

धक्का दिए जाने के कारण नीचे गिरा और मरा।"

नंदिनी ने बेहिचक कहा—"भले ही मैं चाहे जितनी स्मार्ट होऊं मगर यह बात मेरी समझ में भी नहीं आ रही कि वह शख्स, जिसका नाम आप धनपत बता रहे हैं, इस खिड़की तक क्यों आया?"

"मेरे ख्याल से उसे बुलाया गया था।"

"मतलब?"

काले खां ने उसे घूरा। बोला—"तुम्हें जवाब क्यों दूं?"

"नहीं देना चाहते तो न दें।" नंदिनी ने कंधे उचकाए—"मैंने तो यूं ही जिज्ञासावश पूछ लिया था।"

"आओ।" काले खां ने एक्सपर्ट की तरफ देखते हुए कहा और फ्लैट से बाहर की तरफ बढ़ गया।

एक्सपर्ट और राजपाल पीछे हो लिए।

नंदिनी भी साथ ही थी।

चंद्रलेखा के प्रांगण में अभी-भी भीड़ लगी हुई थी।

एक पुलिस वाले ने काले खां को धनपत की कार के बारे में बताया। यह कि वह एक अंधेरे कोने में खड़ी मिली है। काले खां को उसे खंगालने की जरूरत इसलिए महसूस नहीं हुई क्योंकि उससे उसे किसी किस्म का सुराग मिलने की उम्मीद नहीं थी।

सुराग के लिए उम्मीद की एक ही किरन नजर आ रही थी। वह थी— धनपत के मोबाइल से मिला वह नंबर जिससे उसे दो बार कॉल की गई थी। वह बेचैन-सा हो उठा। उस वक्त वह यह सोच ही रहा था कि हैडक्वार्टर से अभी तक फोन क्यों नहीं आया कि मोबाइल गुनगुनाया। उसने तेजी से स्क्रीन पर नजर डाली। कॉल हैडक्वार्टर से ही थी। काले खां ने तुरंत रिसीव की।

दूसरी तरफ से कहा गया—"विले पार्ले वेस्ट।"

"मतलब?"

"आपके द्वारा दिए गए नंबर की वर्तमान लोकेशन।"

काले खां के सारे जिस्म में उम्मीद की चिंगारियां दौड़ गई थीं।

उसने पूछा—"ये लोकेशन कितनी देर से मिल रही है?"

"काफी देर से यहीं है और...इससे केवल दो बार फोन किया गया है। वो भी एक ही नंबर पर।"

काले खां ने धनपत का नंबर बताने के बाद पूछा—"इस पर?"

"करेक्ट।" दूसरी तरफ से कहा गया।

"ओके। थैंक्यू।" कहने के बाद काले खां ने संबंध विच्छेद किया और उत्साह से भरे शब्दों के साथ प्रांगण में मौजूद भीड़ को संबोधित करता ऊंची आवाज में बोला—"सब —यान से सुनें, मैं एक मोबाइल नंबर बताऊंगा। मुझे मालूम है कि वह आप ही में से किसी का है।

जिसका हो, वह हाथ उठा दे।"

भीड़ में अजीब-सा पैना सन्नाटा छा गया।

काले खां ने ऊंची आवाज में एक-एक डिजिट बतानी शुरु की।

और जब डिजिट पूरी हुई तो नंदिनी ने अपना हाथ ऊपर उठाते हुए कहा—"ये मेरा मोबाइल नंबर है।"

सबने उसकी तरफ देखा और काले खां की आंखें तो जैसे उस पर चिपककर ही रह गई थीं। वह अपने सारे जिस्म में रोमांच की चिंगारियों को गर्दिश करते महसूस कर रहा था।

राजपाल आंखें फाड़े नंदिनी की तरफ देख रहा था।

एकाएक काले खां ने सख्त लहजे में कहा—"राजपाल।"

"यस सर।" राजपाल का जिस्म तन गया।

"ये ले हथकड़ी।" कहने के साथ उसने अपनी बेल्ट से हथकड़ी निकालकर राजपाल की तरफ बढ़ाई—"नंदिनी को पहना दे।"

"य-ये क्या कह रहे हैं सर आप!" राजपाल की घिग्घी बंध गई।

सभी सन्न रह गए थे।

सबसे ज्यादा सन्न नंदिनी नजर आ रही थी। इतनी ज्यादा कि जैसे मुंह से आवाज ही न निकाल पा रही हो।

काले खां राजपाल पर गुर्राया—"सुना नहीं तूने?"

राजपाल हथकड़ी लेने के बहाने काले खां के करीब पहुंचा और उसके कान में बोला—"आप ये ठीक नहीं कर रहे सर, कुछ भी हो सकता है। आपकी मौत भी।"

"शटअप।" काले खां हलक फाड़कर दहाड़ा था—"जो कहा है वो कर वरना मैं तुझे बर्खास्त कर दूंगा।"

अब, राजपाल के सामने हुक्म का पालन करने के अलावा कोई चारा न था। हथकड़ी लिए वह नंदिनी की तरफ बढ़ा जरूर लेकिन चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे साक्षात् यमराज की तरफ बढ़ रहा हो।

टांगें बुरी तरह कांप रही थीं उसकी।

उसे लग रहा था कि अब गिरा कि तब गिरा।

तभी नंदिनी की तरफ से कहा गया—"क्या मैं जान सकती हूं इंस्पेक्टर कि मुझे क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है?"

"थाने पहुंचकर सब पता लग जाएगा।" काले खां ने व्यंगात्मक लहजे में कहा था—"बल्कि मेरा दावा है कि वहां पहुंचने के बाद तुम खुद अपने श्रीमुख से सबकुछ बक दोगी।"

नंदिनी पर कुछ कहते न बन पड़ा जबकि जूड़ी के मरीज की तरह कांपता राजपाल दिल में यह उम्मीद लिए नंदिनी की तरफ बढ़ रहा था कि शायद काले खां अब भी अपना विचार बदल दे मगर उसने कड़क लहजे में कहा था—"तेजी से चल राजपाल।"

राजपाल दो ही कदमों में नंदिनी के करीब जा धमका।

उसके हाथ में हथकड़ी डालते वक्त उसे ऐसा लग रहा था कि नंदिनी अभी ड्राक्यूला की तरह मुंह फाड़कर अपने नुकीले दांत उसकी गर्दन पर गड़ा देगी लेकिन वैसा कुछ हुआ नहीं।

पुलिस जीप नंदिनी को लेकर चली गई तो चंद्रलेखा के बाहर मौजूद लोगों में पहले फुसफुसाहटें और फिर चर्चाएं शुरु हो गईं।

सवाल एक ही था—पुलिस नंदिनी को क्यों ले गई?

जवाब भी लगभग एक ही था—शायद पुलिस की नजरों में वह उस शख्स की कातिल थी जिसकी लाश सर्विसलेन में पाई गई।

ये सवाल सभी के दिमागों में थे कि इंस्पेक्टर नंदिनी के फ्लैट में क्या चैक करने गया था? उसके द्वारा ऊंची आवाज में बोले गए मोबाइल नंबर का क्या मतलब था? जैसे ही नंदिनी ने कहा कि वह नंबर उसका है, वैसे ही इंस्पेक्टर ने उसे गिरफ्तार क्यों कर लिया? हालांकि उक्त सवालों के जवाब किसी के पास न थे मगर सभी का यह मानना था कि अगर पुलिस ने नंदिनी को गिरफ्तार करने की कार्रवाई की है तो कोई न कोई कारण तो होगा ही।

कई लोग यह कहते पाए गए थे कि मुझे पहले ही से यह लड़की कुछ रहस्यमय-सी लग रही थी।

धीरे-धीरे चर्चाएं समाप्ति की तरफ बढ़ीं क्योंकि वे ऐसे लोग थे जो किसी के पंगे में ज्यादा दखल देने के हिमायती नहीं होते।

सभी अपने-अपने फ्लैट्स की तरफ रवाना हो गए थे।

महकार भी।

अंगद और तरूणा उसके साथ ही थे।

लिफ्ट में महकार ने कहा—"रिम्पी को मत बताना कि नंदिनी को पुलिस ले गई है।"

"क्यों?" अंगद ने पूछा।

"शायद उसके दिमाग को धक्का लगे क्योंकि वह नंदिनी से कुछ ज्यादा ही अटेचमेंट महसूस करने लगी थी।"

तरूणा के मुंह से निकला—"मैं इस बात पर चकित हूं कि ऐसा उसने केवल तीन दिन में कर लिया था।"

"हां। ये हैरत की बात है—मगर सच है।"

"मुझे इसमें हैरत की कोई बात नहीं लगती।" छठी मंजिल पर कदम रखते हुए अंगद ने कहा था—"उसने ठीक ही कहा था, कुछ लोग हमें बेवजह अच्छे लगने लगते हैं, कुछ बुरे। ये शायद हमारे जिस्मों में मौजूद वेव्ज का ही कमाल है।"

"जो तुम्हें अपने और उसके शरीर से निकलने वाली वेवज के कारण अच्छी लगने लगी थी, वह कातिल निकली। है न!"

अंगद ने दृढ़तापूर्वक कहा—"नंदिनी कातिल नहीं हो सकती।"

"क्यों?" लहजा बता रहा था कि तरूणा जलभुन रही है।

"क्योंकि जिस वक्त वातावरण में मक्तूल की चीख गूंजी, उस वक्त वह टैरेस पर मेरे ही साथ थी। मुझसे बातें कर रही थी।"

"क्या बातें कर रही थी?" तरूणा ने उसे तीखी नजरों से देखा।

"फिल्मों के संबंध में सामान्य बातें। मुझे लगता है उसके अंदर हीरोइन बनने की ख्वाहिश है।"

"और तुम उस ख्वाहिश को पूरा कर सकते हो!" फिर व्यंग।

"मुझे इमरान समझने के कारण शायद वह ऐसा समझती है।"

"उस दिन बेचारी का सपना टूट जाएगा जिस दिन यह पता लगेगा कि तुम इमरान हाशमी नहीं हो।"

"इस वक्त सवाल यह नहीं है तरू, सवाल ये है कि मरने वाला कौन है और उसे किसने और क्यों मार डाला?"

"होगा कोई, हमें क्या?"

अंगद इसलिए चुप रह गया क्योंकि वे फ्लैट के गेट के करीब पहुंच चुके थे और बंद दरवाजे के पीछे से रिम्पी की ऐसी आवाजें आ रही थीं जैसे वह किसी से बातें कर रही हो।

"अरे!" महकार चौंका—"रिम्पी किससे बातें कर रही है?"

तरूणा ने कहा—"शायद उसके पास कोई है।"

अंगद ने दरवाजा खोला और...ऐसा करते ही उसके होश उड़ गए क्योंकि कमरे में रिम्पी के अलावा कोई नहीं था। सोफे पर घुटने मोड़कर उकडू बैठी वह खुद ही से बातें कर रही थी।

इस वक्त उसका चेहरा बहुत विभत्स और डरावना नजर आ रहा था। बाल इस तरह बिखरे हुए थे जैसे किसी ने उन्हें बुरी तरह झंझोड़ा हो। अभी-अभी, खुद ही से कहा था उसने—"ठीक है, मैं तुम्हारी दोस्त बन जाऊंगी। तब तो तुम अपने नाखूनों से मेरे सिर को नहीं खुरचोगी न!"

तीनों इस तरह दरवाजे के नजदीक खड़े रह गए थे जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने जाम कर दिया हो।

आंखें हैरत से फटी पड़ी थीं।

चेहरों पर खौफ तांडव कर रहा था जबकि खुद ही में मग्न रिम्पी जाने किससे कह रही थी—"अच्छा मैं तुम्हें एक पोयम सुनाती हूं लेकिन मेरी एक शर्त है। बोलो, मानोगी?"

रिम्पी ने इतना गैप दिया जैसे उसका जवाब सुन रही हो जिससे बातें कर रही थी और फिर ऐसा रिएक्शन दिया जैसे जवाब सुन लिया हो। तब बोली—"तुम मेरे सिर को अपनी जीभ से नहीं चाटोगी।"

फिर, ऐसा रिएक्शन जैसे अदृश्य शक्ति ने उसकी शर्त मान ली हो। खुश होकर बोली—"ओके। अब मैं तुम्हें पोयम सुनाती हूं।"

और फिर, उसने सचमुच बाकायदा 'लय' में 'ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार' वाली पोयम गानी शुरु कर दी।

"र-रिम्पी!" जब रहा नहीं गया तो घबराकर महकार बहुत जोर से चीखा था—"ये क्या कर रही हो तुम?"

रिम्पी इस तरह रुकी जैसे संगीत बंद होने पर किसी नृत्यांगना के पैर रुक गए हों और फिर— "शी....शी...शी!" उसने अपने होंटों पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा करने के बाद राजदाराना स्वर में कहा—"जोर से मत बोलो पापा, वो नाराज हो जाएगी।"

"कौन?" खौफ की ज्यादती के कारण अंगद चीखने पर विवश हो गया था—"कौन नाराज हो जाएगी?"

"तुम्हें वो मेरे सिर पर बैठी नजर नहीं आ रही क्या इमरान?"

इस बार जो ये कहने के साथ रिम्पी ने अपनी गोल-गोल आंखें घुमा कर अंगद की तरफ देखा तो अंगद के छक्के छूट गए क्योंकि रिम्पी की शक्ल उसे बहुत डरावनी नजर आई।

"हमें तो तुम्हारे सिर कुछ नजर नहीं आ रहा रिम्पी।" इस बार कांपती आवाज में तरूणा ने कहा था।

रिम्पी ने अजीब अंदाज में ताली बजाई और बड़े ही खौफनाक तरीके से 'ही-ही-ही' करके यूं हंस पड़ी जैसे उन सबकी खिल्ली उड़ा रही हो। बोली—"मुझे तो लगता है तुम सब अंधे हो गए हो। अरे ये तो रही।" उसने हाथ से अपने सिर की तरफ इशारा करने के साथ कहा था—"सिर ही पर तो बैठी है मेरे। मेरी फ्रेंड!"

"तुम्हारी कौनसी फ्रेंड तुम्हारे सिर पर बैठी है?" आतंक की ज्यादती के कारण महकार दहाड़ उठा था।

"अरे वाह!" उसने अपनी आंखों की काली पुतलियां घुमाकर इस तरह ऊपर कर लीं जैसे अपने सिर को देखने की कोशिश कर रही हो। उस अवस्था में वह भूतनी जैसी लग रही थी लेकिन कहती चली गई—"क्या तुम खुद को अदृश्य करने की आर्ट भी जानती हो फ्रेंड, जो इनमें से किसी को नजर नहीं आ रहीं?"

महकार झपटकर रिम्पी के करीब पहुंचा और अपने दोनों हाथों से उसके दोनों कंधे पकड़कर जुनूनी अवस्था में उसे झंझोड़ता हुआ चीखा—"ये तुम्हें क्या हो गया है रिम्पी! क्यों इस तरह की उल्टी सीधी बातें कर रही हो?"

"पापा को रोको इमरान।" रिम्पी ने डरावनी नजर आ रहीं अपनी पुतलियां इमरान की तरफ घुमाईं—"इनसे कहो कि मुझे उससे बातें करने दें। मैंने मीठी-मीठी बातें बनाकर उसे बड़ी मुश्किल से अपनी फ्रेंड बनाया है। अगर वो नाराज हो गई और फिर मेरे सिर को खुरचने लगी तो मैं पागल हो जाऊंगी।"

"तुम किसकी बात कर रही हो रिम्पी?" अंगद चीखा था।

"देखो...देखो। वो नाराज हो गई। वो फिर अपने नुकीले पंजों से मेरे सिर को खुरचने लगी। उई...आह...आह!" रिम्पी इस तरह मचलने लगी जैसे भयंकर पीड़ा से गुजर रही हो।

साथ ही—वह अपने दोनों हाथों की उंगलियों के नाखूनों से अपने सिर को खुरचने लगी थी।

बालों को ऐसे अंदाज में नोच रही थी, जैसे उन्हें जड़ से उखाड़ कर फेंक देना चाहती हो।

कमरे में लगातार उसके असहनीय पीड़ा से गुजरने की आवाजें गूंज रही थीं। वह मचल रही थी। तड़प रही थी। इस कदर कि पहले तो महकार ही उसे संभालने की कोशिश कर रहा था।

बाद में अंगद भी मदद करने लगा मगर वह दोनों की संयुक्त ताकत के बावजूद काबू में नहीं आ रही थी।

अब वह ऐसे एक्शन कर रही थी जैसे अपने बालों में घुसे किसी कीड़े को दूर फेंकने की कोशिश कर रही हो—"हिश्श...हिश्श! चल।

भागती क्यों नहीं? उई...ई...मेरा सिर क्यों चाट रही है...हिश्श!"

अंगद को लगा—शायद सचमुच उसके सिर पर, बालों के बीच कोई कीड़ा हो इसलिए तेजी से कई बार बालों के बीच हाथ घुमाया और जब कुछ न मिला तो बोला—"तुम्हें वहम हुआ है रिम्पी, तुम्हारे सिर पर तो कुछ भी नहीं है।"

"है! है इमरान! देखो...अब वो अपनी जीभ से मेरे सिर को चाट रही है। उई...उई...उई मम्मी। आह! वो गई।"

कमरे में 'पट्ट' की आवाज गूंजी।

जैसे कोई भारी और गद्देदार चीज फर्श पर गिरी हो।

वह आवाज सबको सुनाई दी थी। सबने एकसाथ आवाज की दिशा में फर्श की तरफ देखा और...अगर यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि एकसाथ सबके हलकों से चीखें निकल गई थीं क्योंकि उन्होंने एक छिपकली को देखा था।

सामान्य आकार की छिपकली से काफी बड़ी थी वह।

करकेंटे से भी बड़ी और विशाल।

स्वस्थ और लंबी।

बहुत ही नुकीले पंजे थे उसके। जब उसने गर्दन उठाकर अपनी सुर्ख रंग की सामान्य से बहुत लंबी जीभ बाहर निकालकर लपलपाई तो जिस्मों में झुरझुरी-सी दौड़ गई।

रिम्पी के हलक से राहतभरी आवाज निकली—"वो चली गई।"

और फिर...सबसे डरावनी चीख तरूणा के हलक से निकली थी क्योंकि तेजी से दौड़ती हुई उस विशाल और गंदी छिपकली ने फर्श से सीधी जम्प उसी पर लगाई थी।

वह उसके पेट से जाकर टकराई।

चीखती हुई तरूणा पीछे हटी।

वह अपने हाथों से छिपकली को पेट से छिटकने की कोशिश कर रही थी मगर, वो छिटकती तो तब जब वहां होती।

जिस चमत्कारी तरीके से वह सबको चमकी थी उसी चमत्कारी तरीके से अदृश्य हो गई जबकि तरूणा अब भी पागलों की तरह उसे अपने

पेट से छिटकने की कोशिश करती हुई बार-बार 'हट्ट-हट्ट' कर रही थी। अंगद उसके कंधे झंझोड़ता हुआ बोला—"बस करो तरूणा, वो नहीं है।"

"क-कहां गई? कहां गई?" तरूणा पागलों की तरह बड़बड़ाई।

कौन जवाब देता?

जवाब तो तब देता जब किसी ने उसे कहीं जाते देखा होता!

वह तो अचानक ही तरूणा के पेट से अदृश्य हो गई थी। उसी तरूणा के पेट से जिसे नियंत्रित करने में अंगद को करीब दो मिनट लग गए थे और जब वो नियंत्रित हुई तो आंखें रिम्पी पर स्थिर थीं।

उसके मुंह से एक ही शब्द निकला था—"रिम्पी।"

अंगद ने रिम्पी की तरफ देखा तो उसे सोफे पर सोती पाया।

अब उसका चेहरा ही नहीं बल्कि मुकम्मल अस्तित्व सामान्य और शांत नजर आ रहा था। जितनी मासूम वो बच्ची थी उतनी ही मासूमियत के साथ आंखें बंद किए सो रही थी।

उसकी इच्छा उसे जगाकर यह पूछने की हुई कि उसे क्या हुआ था मगर दिल न चाहा। दिल ने कहा—उसे सुकून से सोते रहने देना चाहिए मगर यह सवाल दिमाग फाड़े दे रहा था कि ये सब आखिर हुआ क्या था? महकार की तरफ देखा तो एक साथ सैंकड़ों सवालों ने अंगद के जेहन को जकड़ लिया क्योंकि महकार की आंखें शून्य में स्थिर थीं। पलकें तक नहीं झपक रही थीं उसकी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी पहुंचे हुए साधु के श्रापवश पत्थर की शिला में तब्दील हो गया हो। खौफ का मारा अंगद झपटकर उसके करीब पहुंचा।

उसे जोर से झंझोड़ता हुआ चिल्लाया—"महकार...महकार!"

"आं!" महकार जैसे गहरी नींद से वापस आया और वापस आते ही दहशत के सायों ने उसके वजूद पर कब्जा करना शुरु कर दिया। आंखों में ऐसी वीरानी नजर आने लगी जैसी मुर्दे की आंखों में होती है। मुंह से निकलते अलफाज खौफ से लबरेज थे—"नहीं बचेगी। अब वो नहीं बचेगी अंगद।"

"कौन नहीं बचेगी?"

"रिम्पी।"

"न...नहीं। नहीं।" अंगद इतनी जोर से चिल्लाया था कि फ्लैट की दीवारें तक झनझनाती महसूस हुईं—"मैं उसे कुछ नहीं होने दूंगा।

दुनिया की कोई ताकत उसका बाल भी बांका नहीं कर सकती।" महकार बड़बड़ाया—"वो इस दुनिया की ताकत नहीं है।" "कौन?" अंगद चीखा—"किसकी बात कर रहे हो?"

"वो छिपकली।"

"छिपकली?"

"जो अब रिम्पी के सिर पर सवार हो चुकी है।"

"ये तुम क्या बक रहे हो महकार...क्या बक रहे हो तुम?"

"वो पहले भी मेरी दुनिया उजाड़ चुकी है। भरपूर कोशिश के बावजूद मैं सुकन्या को न बचा सका और अब रिम्पी को भी नहीं बचा सकूंगा। वो रिम्पी को मारने से पहले नहीं छोड़ेगी।"

"ये कैसी पागलों जैसी बातें कर रहे हो तुम! भला छिपकली किसी को कैसे मार सकती है?"

"वो सिर्फ छिपकली नहीं है।"

"और कौन है?"

"डायन।"

"क्या बकवास कर रहे हो?"

"जो छिपकली का रूप धारण कर सकती है।" वह बड़बड़ाए जा रहा था—"खूबसूरत औरत का रूप धारण कर सकती है।"

"महकार!"

"वो उसी रात से हमारे पीछे पड़ी है जिस रात मैं और सुकन्या अंतिम बार देवता पूजने गांव गए थे। उस रात रिम्पी हमारे साथ न थी क्योंकि वह अपने स्कूल के बच्चों के साथ दो दिन की पिकनिक पर खंडाला गई थी। पूर्णिमा की रात थी वह।"

"क्या हुआ था उस रात?" उत्तेजना की ज्यादती के कारण अंगद का बुरा हाल हो गया—"मुझे बताओ महकार, उस रात क्या हुआ था? क्या है ये डायन और छिपकली का राज? उसने तुम्हें इस कदर आतंकित क्यों कर दिया है?"

महकार की आंखें पुनः शून्य में स्थिर हो गई थीं। होठों से ऐसे अंदाज में आवाज निकलने लगी जैसे बुदबुदा रहा हो—

रात के बारह बजे थे।

मां मुझे और सुकन्या को लेकर देवता पूजने गांव के बाहर आई हुई थी। हमारे देवता हमारे ही खेत में, पीपल के एक बहुत ही घने पेड़ की जड़ में, छोटे से कुठले के रूप में विराजमान थे।

कुठले में मिट्टी के छोटे-छोटे सर्प बने हुए थे।

उनके बीच फन उठाए एक नाग भी था।

उन्हें ही कुल देवता कहा जाता था।

हम तीनों कुठले के करीब बैठे हुए थे।

मौसम बिल्कुल साफ था। आकाश पर तारों के बीच थाल जैसा चंद्रमा मुस्करा रहा था। खेतों में दूर-दूर तक उसकी चांदनी बिखरी पड़ी थी। जैसे किसी ने चांदी पिघलाकर डाल दी हो, पर अगस्त का महीना था वह। ऐसा महीना जिसमें मौसम पलक झपकते ही करवट बदल लिया करता है।

मां के हाथ में मिट्टी का एक ऐसा दीपक था जिसमें रुई की चार बत्तियों ने दीपक के बाहर अपनी गर्दनें निकाल रखी थीं। उनका बाकी हिस्सा दीपक में भरे सरसों के तेल में डूबा था।

मां ने चारों बत्तियां जलाकर दीपक कुठले के अंदर रखने के बाद मिट्टी के कटोरे से निकालकर चोकर का बना एक लड्डू मेरे हाथ पर रखा, दूसरा सुकन्या के हाथ पर।

बोली—"लो बेटा, इन्हें अपने देवताओं को चढ़ा दो।"

दोनों ने वैसा ही किया।

मां ने मिट्टी के कटोरे से पीतल की एक बहुत छोटी-सी कटोरी निकाली। उसमें दूध था। बोली—"दोनों इसमें हाथ लगा लो।"

दोनों ने कटोरी को हाथ लगाया। और फिर, तीनों हाथों ने वह कटोरी कुठले के अंदर नजर आ रहे नाग के फन के करीब रख दी।

मां ने कहा—"अब हाथ जोड़कर और आंखें बंद करके सच्चे मन से देवताओं से प्रार्थना करो कि वे हमारी और हमारे परिवार की सुख, समृद्धि, शांति, सुरक्षा, सम्मान और शोहरत बनाए रखें।"

मैंने और सुकन्या ने हाथ जोड़कर आंखें बंद कर लीं।

मां ने कहा—"इस जाप को मन ही मन ग्यारह बार बोलना है।"

हमारे होंठ बार-बार मां के बताए शब्दों को दोहराने लगे और उसी बीच अचानक जाने कहां से घटाएं घुमड़कर आईं और फिर गाढ़े काले बादलों ने आसमान पर इस कदर डेरा जमा लिया कि कुछ देर पहले चांदी के थाल की मानिंद गगन पर हुकूमत कर रहा चंद्रमा बादलों के पीछे मुखड़ा छुपा बैठा।

चारों तरफ घटा-घोप अंधेरा छा गया।

तेज हवाएं चलने लगीं।

इस कदर कि कुठले के अंदर जल रहा दीपक बुझ गया। वैसा होने पर मां कह उठी—"ये तो ठीक नहीं हुआ महकार।"

"क्या ठीक नहीं हुआ मम्मी?" मैंने पूछा।

"दीपक का बुझना। ये तो अपशगुन हो गया।" मां मुझे डरी हुई-सी नजर आई थी—"देवताओं ने हमारी पूजा स्वीकार नहीं की।"

"तुम भी कैसी बात करती मम्मी!" मैं हंसा—"इसमें अपशगुन या देवताओं द्वारा पूजा स्वीकार, न स्वीकार करने वाली कौनसी बात हो गई! हवा इतनी तेज है कि कौनसा दीपक जला रह सकता है!"

"पर हवा अचानक इतनी तेज क्यों चली?"

"तुम भी मम्मी...मौसम के मिजाज का पता तो आज तक बड़े बड़े वैज्ञानिक नहीं लगा सके।" उस वक्त मां की बात मैंने बहुत हल्के में ली थी लेकिन काश...उस पर ध्यान दिया होता!

तेज हवाओं पर झूमते हुए वे वृक्ष बड़े-बड़े प्रेत जैसे लगने लगे थे जो कुछ देर पहले शांत खड़े थे।

जिस पीपल के नीचे देवता थे और जहां इस वक्त हम तीनों खड़े थे, वह भी बुरी तरह झूमने लगा।

हवा ऐसी आवाजें पैदा कर रही थी जैसे सैंकड़ों शैतान बच्चे मुंह से सीटियां बजा रहे हों और फिर, तेज रोशनी के साथ बादलों के बीच बिजली कड़कड़ाई।

बहुत ही घनघोर गड़गड़ाहट थी वह।

ऐसी कि—मां न होती तो सुकन्या मुझसे आ लिपटती।

"राम ही भली करे, बारिश आने वाली है। मौसम बिगड़ गया है महकार।" मां ने कहा—"ऐसे मौसम में शहर जाना ठीक न होगा।

घर चलो। कल रात को निकल जाना।"

काश!

काश मैंने उनकी वह बात मान ली होती तो हम उस रात उस मुसीबत में न फंसते जिसमें फंसे और अगर हम उस मुसीबत में न फंसे होते तो आज मेरी सुकन्या मेरे पास होती।

उस रात हमारे साथ ऐसी हौलनाक घटना घटी थी जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता पर क्योंकि होनी कभी टला नहीं करती, जो होना होता है, होकर रहता है इसलिए हमने मां की बात नहीं मानी और मैंने कहा—"नहीं मम्मी, हम ऐसा नहीं कर सकते। रिम्पी स्कूल की तरफ से खंडाला गई है। वह कल लौट आएगी। मुझे सुबह दस बजे उसे लेने स्कूल जाना है।"

"मेरा दिल नहीं मान रहा बेटे।"

"हम निकल जाएंगे मम्मी, बाइक है न! बल्कि मुझे तो तुम्हारी चिंता हो रही है। ऐसे मौसम में तुम घर कैसे पहुंचोगी?"

मां से पहले सुकन्या ने कहा—"पहले मम्मी को छोड़ आते हैं !"

"हां। यही ठीक रहेगा।"

"पागल हुआ है क्या?" मां बोली—"मुझे तो बस आधे कोस जाना है। वो रहा गांव और मैं यहां के रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ हूं। पहुंच जाऊंगी। चिंता तो तुम्हारी है।"

"हम भी पहुंच जाएंगे।" मेरा वाक्य खत्म होते-होते बारिश भी शुरु हो गई और बारिश भी ऐसी जैसे अचानक बादल फट पड़े हों।

हवा में उड़ती बहुत ही तेज और मोटी बूंदें थीं।

मां ने कहा—"भगवान भली करे, आज तो ऐसा लग रहा है जैसे कयामत आने वाली हो। रिम्पी की बात न होती तो ऐसे मौसम में मैं तुम्हें किसी हालत में न जाने देती।"

कितनी सच थी मां की बात! हमारे जीवन में कयामत ही आने वाली थी तभी तो कुछ देर बाद हमारे रास्ते अलग हो गए।

बारिश और तेज हवा का सामना करती मां गांव की तरफ जाने वाली पगडंडी पर बढ़ गई थी।

मां के अंधेरे में विलीन होते ही कांपती हुई सुकन्या ने मेरा बाजू थाम लिया। हम दोनों गोबर से बने उस कुठले की तरफ बढ़ गए जिसकी आड़ में बाइक खड़ी थी।

रास्ता बस तभी चमकता था जब बिजली कड़कड़ाती थी। उसी के सहारे हम कुठले तक पहुंच गए।

हम जब भी गांव जाते थे। बाइक केवल वहीं तक ले जाते। उसे गांव के अंदर कभी नहीं ले जाते थे क्योंकि उसकी आवाज गांव वालों को न केवल जगा सकती थी बल्कि चौंका भी सकती थी। बाइक को वहीं छुपाकर और खुद भी छुपते-छुपाते घर जाते थे। आज भी वैसा ही किया था।

बाइक कुठले के पीछे छुपाने के बाद करीब दस बजे घर पहुंच गए थे। खाना खाया। साढ़े ग्यारह बजे तक मम्मी-पापा से बातें कीं। पौने बारह बजे मां के साथ देवताओं के लिए निकले और अब, जब वापसी की तैयारी थी तो मौसम बुरी तरह बिगड़ गया था। दोनों पूरी तरह भीग चुके थे।

मैंने कुठले की आड़ से बाइक निकाली और एक ही किक में

स्टार्ट कर दी। उसकी आवाज खेतों में दूर-दूर तक गूंज गई थी।

हम जानते थे कि वहां उसे सुनने वाला कोई नहीं है।

कांपती हुई सुकन्या पीछे बैठ गई और डर के मारे उसने मेरे पेट और पीठ पर दोनों बाजुओं से घेरा बना लिया था।

दांत किटकिटाती बोली—"पता नहीं मम्मी घर कैसे पहुंचेंगी।"

"अब मम्मी की चिंता छोड़ो जानेमन, मौसम को इंज्वॉय करो।"

मैंने बाइक आगे बढ़ाते हुए रोमांटिक मूड में कहा था—"मेरा मन तो ऐसा कर रहा है कि बाइक-वाइक चलाना छोड़कर यहीं किसी खेत में लोटपोट हो लिया जाए।"

"धत्त! शरीर कहीं के।" कहने के साथ सुकन्या ने अपना चेहरा मेरी पीठ में छुपा लिया था।

"शरीर की ही तो बात कर रहा हूं। कसकर पकड़ लो मुझे।"

"पकड़ तो रखा है!"

"और कसके।"

सुकन्या ने अपने बाजूओं का कसाव बढ़ाते हुए कहा—"और कितना कसूं?"

"इतना कि दोनों के शरीर एक हो जाएं।"

"वो तो बाइक पर नहीं हो सकते।" सुकन्या हंसी थी।

इस तरह हम मौज-मस्ती करते कच्ची चकरोड पर बढ़ते रहे।

बाइक की हैडलाइट मुझे रास्ता दिखा रही थी। वही काम बीच-बीच में चमकने वाली बिजली भी कर देती थी। हवा इतनी तेज थी कि हमारे देखते ही देखते छोटे मोटे कई पेड़ गिर गए थे और बारिश इतनी घनघोर कि चकरोड कीचड़ में बदल गई थी।

कीचड़ इतनी ज्यादा हो गई थी कि कई बार बाइक फिसलते फिसलते बची थी। ऐसे हर मौके पर सुकन्या के मुंह से निकल जाता था—"संभालकर! फिसल न जाएं महकार, धीरे चलाओ न!"

पर मुझ पर तो जैसे मस्ती चढ़ी थी। बाइक को संभालते ही मैं रफ्तार थोड़ी और बढ़ा देता और कहता—"कीचड़ में लथपथ होकर एक होने का मजा ही कुछ और है। मैंने किसी फिल्म में हीरो-हीरोइन को गाना गाते देखा था।"

"बाइक से गिरकर उनके सिर नहीं फूटे होंगे।" सुकन्या ने हंसते हुए कहा था। उस वक्त उसे भी नहीं मालूम था कि उस क्षण उसकी जुबान पर सरस्वती बैठी थी। लोगों के साथ अक्सर ऐसा होता है।

जो बात वो कहते हैं वो पूरी हो जाती है और जब पूरी हो जाती है सब लोग कहते हैं कि उस वक्त तुम्हारी जुबान पर सरस्वती बैठी थी। कुछ अच्छा ही बोल लेते या मांग लेते। मगर, इंसान को कहां पता होता है कि कब उसकी जुबान पर सरस्वती बैठती है, कब नहीं! अगर ऐसी बातें इंसान को पहले पता लग जाएं तो इंसान, इंसान ही कहां रहेगा? भगवान नहीं बन जाएगा! जैसे ही उसे पता लगेगा कि इस क्षण

मेरी जुबान पर सरस्वती बैठी है उसी क्षण संसार के सारे सुख मांग लेगा। लेकिन अगर इस कहावत को सच मान लिया जाए तो मैं ये कहूंगा कि उस क्षण सुकन्या की जुबान पर सरस्वती नहीं बल्कि चुड़ैल बैठी थी। डायन बैठी थी। उसी ने उसके मुंह से वे शब्द निकलवाए थे।

आदमी के साथ जब कुछ होने वाला होता है तो उसका इल्म उसे एक पल...बल्कि एक पल के करोड़वें हिस्से पहले भी नहीं हो पाता। यदि हुआ करता तो उस क्षण मुझे भी हो जाता और यकीनन मैं उतनी मस्ती के मूड में नहीं हो सकता था।

करीब आधे घंटे तक हमारा सफर इसी तरह जारी रहा। तब तक बारिश बंद हो चुकी थी लेकिन हवा उसी गति से चल रही थी।

बादल अब भी घुमड़ रहे थे और बिजली भी कड़क रही थी। दुर्घटना तब घटी जब हमारे देखते ही देखते चकरोड के किनारे पर खड़ा एक अच्छा-खासा पेड़ तेज हवा में झटका खाकर चकरोड पर आ गिरा और वह बाइक के ठीक सामने केवल दस कदम दूर गिरा था। मैंने तेजी से ब्रेक मारा।

सुकन्या जोर से चिल्लाई—"संभालकर महकार।"

तेज ब्रेक लगने के कारण बाइक कीचड़ पर फिसली, सुकन्या वहीं गिर गई मगर मुझे लिए फिसलती हुई बाइक सीधी पेड़ में जा घुसी थी। मेरा सिर बहुत तेजी से एक मोटे तने से टकराया। हलक से चीख निकली। आंखों के सामने रंग-बिरंगे तारे नाच उठे थे और फिर काले अंधेरे की चादर फैलती चली गई।

ये तो सिर्फ उस कयामतखेज रात की शुरुआत थी।

अभी तो हमारे साथ ऐसी-ऐसी घटनाएं होने वाली थीं जिनके बारे में मेरा आज भी कहना है कि—जीवन में कभी किसी के साथ न घटी होंगी और अगर इंसानी दुआओं में दम होता है तो यही दुआ करुंगा कि कभी किसी के साथ न घटें।

उस वक्त मुझे नहीं मालूम था कि मेरे मस्तिष्क पटल से अंधेरे

की चादर कितने वक्त बाद हटी।

बस इतना जानता हूं कि होश में आने पर मैंने खुद को चकरोड पर पड़े पेड़ के अंदर धंसे पाया था।

उस वक्त भी हवा बहुत तेज चल रही थी। आकाश पर बादल भी घुमड़ रहे थे। डरावनी गड़गड़ाहट के साथ बार-बार बिजली भी चमक रही थी मगर बारिश अब भी नहीं पड़ रही थी। मैंने चकरोड पर पड़े पेड़ की डाली और पत्तों के बीच से उठने की कोशिश की तो अपने सारे जिस्म में पीड़ा का जबरदस्त अनुभव किया। सबसे ज्यादा दर्द सिर में हो रहा था। इतना ज्यादा कि हाथ स्वतः सिर पर पहुंच गया और...महसूस किया कि हाथ किसी गाढ़े तरल पदार्थ से सराबोर हो गया है।

मुझे फौरन एहसास हो गया कि ये खून है।

हाथ को आंखों के सामने लाया।

संयोग से उसी वक्त बिजली चमकी और मैंने देखा कि वह वास्तव में खून ही था।

अपना खून देखकर सभी घबरा जाते हैं।

मैं भी घबरा गया।

पुनः उठने की कोशिश की। कामयाब भी हो गया परंतु पेड़ की डालों और पत्तों के बीच से निकालकर खुद को खड़ा करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी थी और यह भी महसूस किया था कि छोटी मोटी चोटें और खरोंचें लगभग सारे जिस्म पर हैं।

कीचड़ से सने कपड़े अनेक जगह से फट गए थे।

बाइक भी पेड़ में ही उलझी पड़ी थी। मगर, सुकन्या कहीं नजर न आई। दिमाग में विचार कौंधा—एक्सीडेंट के कारण शायद वह बेहोश हो गई होगी। चारों तरफ देखा—वह कहीं न थी।

मैं घबरा गया।

आखिर कहां चली गई सुकन्या?

आवाजें देनी शुरु कीं।

जब सामान्य स्वर में आवाजें देने पर किसी भी तरफ से जवाब न आया तो आवाजें तेज होने लगीं।

घबराहट बढ़ने लगी।

मैंने चीख-चीखकर सुकन्या को पुकारना शुरु कर दिया।

जब इस पर भी सुकन्या की तरफ से जवाब न मिला तो मुझ पर बदहवासी छाती चाली गई। उसी बदहवासी में 'सुकन्या-सुकन्या' चीखता सारे जंगल में भटकने लगा।

मुझे नहीं पता उसी अवस्था में कितना टाइम गुजर गया। काश मुझे मालूम होता कि जिस वक्त मैं जंगल में उसे पुकारता फिर रहा था उस वक्त मेरी सुकन्या कैसे-कैसे भयंकर मंजरों से गुजर रही थी!

मगर आज सोचता हूं—पता भी होता तो क्या कर लेता?

वह भयावह घटना ही ऐसी थी कि उसे घटना ही था, मेरी तो बिसात क्या है! संसार की कोई भी ताकत उसे घटने से नहीं रोक सकती थी। मैं घटनास्थल पर होता–तब भी नहीं।

चौंका तब, जब तेज हवा के झोंकों पर तैरती सुकन्या की दर्द नाक चीख मेरे कानों तक पहुंची।

एक बार नहीं, दो बार।

क्षणिक अंतराल से दो बार चीखी थी वह।

उन चीखों ने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए थे।

इस एहसास ने मुझे पागल-सा कर दिया था कि मेरी प्यारी सुकन्या किसी खतरे में है मगर किस किस्म के खतरे में?

इसकी तो मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था।

तेजी से उस दिशा का अनुमान लगाया जिस दिशा से सुकन्या की चीखें आई थीं और फिर दीवानावार 'सुकन्या-सुकन्या' चीखता उसी दिशा में दौड़ पड़ा।

कहीं कुछ नजर न आ रहा था।

चारों तरफ अंधेरा था या थी–भांय-भांय करती तेज हवा।

हवा पर झूमते हुए दैत्याकार वृक्ष।

उस वक्त थोड़े दिशाभ्रम में था मैं।

इच्छा हो रही थी कि एक बार और सुकन्या की चीख सुनाई दे जाए ताकि ठीक से दिशाज्ञान हो सके मगर तीसरी चीख कभी मेरे कानों तक नहीं पहुंची।

फिर भी, मैं उसके पास पहुंच गया।

सुकन्या की हालत देखकर मेरा दिल हाहाकार कर उठा था पर फिर भी, ये सुकून जरूर था कि अंततः मैंने अपनी सुकन्या को पा लिया मगर कितना बड़ा भ्रम था ये मेरा!

मैंने सिर्फ सुकन्या के जिस्म को पाया था, अपनी सुकन्या को नहीं। इस वक्त शायद तुम्हारी समझ में मेरे इन शब्दों का मतलब न आए मगर बहुत जल्द तुम्हें भी मानना पड़ेगा कि जंगल में उस वक्त जो शरीर मेरे सामने बेहोश अवस्था में पड़ा था वह सुकन्या का जरूर था मगर वह सुकन्या नहीं थी।

उसके पैर के अंगूठे से खून बह रहा था।

बुरी तरह जख्मी था वह।

मुझे समझते देर न लगी कि भागते-भागते उसे ठोकर लगी होगी परंतु उस वक्त ये तो मेरे फरिश्ते भी नहीं समझ सकते थे कि वह इतनी तेज भाग क्यों रही थी?

वहां से कहीं और वह पहुंची ही कैसे जहां हमारा एक्सीडेंट हुआ था? जब मैं वहां बेहोश पड़ा था तो खुद तो जाएगी क्यों?

जरूर कोई ले गया होगा।

कौन?

मेरे दिमाग में घुमड़ रहे किसी भी सवाल का जवाब उसके होश में आने से पहले नहीं मिल सकता था।

मेरी उस वक्त की सबसे बड़ी समस्या यही थी कि सुकन्या को होश में कैसे लाऊं?

साधारण आदमी के पास किसी को होश में लाने का एक ही तरीका होता है। यह कि—बेहोश व्यक्ति के चेहरे पर पानी के छींटे मारे जाएं मगर घनघोर बारिश के बावजूद उस वक्त मेरे पास पानी नहीं था। मैंने याचना भरी नजरों से ऊपर की तरफ देखा। जिससे याचना करनी चाहता था वह भी उमड़-घुमड़ कर रहे काले बादलों के पीछे जा छुपा था। मैंने बादलों से ही याचना की—"तुम्हीं बरस जाओ इंद्रदेव, कुछ देर पहले तो तुम इतने बरसे थे कि लग रहा था, जैसे पूरी धरती को ही बहा ले जाओगे मगर इस वक्त बस इतने बरस जाओ कि मेरी सुकन्या होश में आ जाए।" और...इंद्रदेव ने मेरी सुन ली।

एक बार फिर बारिश शुरु हो चुकी थी। भले ही वह पहले जैसी घनघोर न थी मगर सुकन्या को होश में लाने के लिए काफी थी। ताजे पानी की बूंदें उसके जिस्म पर पड़ीं तो मैंने भी उम्मीदों से सराबोर होकर उसे झंझोड़ते हुए कहा—"सुकन्या...सुकन्या।" वह कुलमुलाई। आंखें खोलीं।

उस क्षण बिजली चमकी थी। एक बार नहीं, दो बार। और उस वक्त मुझे पहला लेकिन बहुत ही हल्का झटका लगा था।

दरअसल मैंने सुकन्या की आंखों से वह चमक गायब पाई थी जिसका मैं दीवाना था। उस वक्त मुझे उसकी आंखें अजीब-सी और पथराई हुई सी लगी थीं। जैसे उनमें वह चमक ही न हो जो जिंदा व्यक्ति की आंखों में होती है।

मगर मैंने उस बात पर ध्यान नहीं दिया। बल्कि यह सोचकर इस ख्याल को दिमाग से छिटक दिया कि बिजली की चमक में उसकी आंखों की चमक नजर नहीं आई होगी।

मेरी कल्पनाओं के मुताबिक उसे होश में आते ही मुझसे लिपट जाना चाहिए था मगर वह मुझे इस तरह देख रही थी जैसे अजनबी को देख रही हो। इसलिए मुझे उसके कंधे पकड़कर पुनः झंझोड़ना पड़ा और कहना पड़ा—"ये मैं हूं सुकन्या, महकार।"

बार-बार चमक रही बिजली की रोशनी में मैंने काफी देर बाद उसके चेहरे पर ऐसे भाव देखे जैसे उसने मुझे पहचान लिया हो मगर साथ ही—ऐसे भाव भी देखे थे जैसे वह कोई भयंकर मंजर देख रही हो। कोई ऐसा हौलनाक दृश्य जैसा उससे पहले कभी किसी ने न देखा हो। मैं साफ-साफ उसके चेहरे पर दहशत का दरिया बहता देख रहा था और सूनी आंखों में देख रहा था—खौफ के सायों को लहराते। मुझे लगा—वह किसी डरावनी घटना से गुजरी है इसलिए पुनः उसे झंझोड़ता हुआ बोला—"डरो मत सुकन्या, मैं हूं न!"

"व...वो...वो।" उसने कुछ कहना चाहा।

"हां-हां।" मैं बोला—"बोलो।"

"ऊई!" मुंह से यह आवाज निकालने के साथ वह इस तरह उछली जैसे किसी ने गुदगुदी की हो।

मैंने पूछा—"क्या हुआ?"

मुझे आज भी अच्छी तरह याद है कि उसने मुझे कुछ बताने के लिए मुंह खोला था लेकिन उसी मुंह से 'आह-आह' और 'ऊई-ऊई' की आवाजें निकलने लगीं। साथ ही—ऐसी चीखें भी जैसे वह किसी असहनीय पीड़ा से गुजर रही हो। उसके दोनों हाथ अपने सिर पर पहुंच गए थे। जिस्म यूं मचल रहा था जैसे उसे कोई बुरी तरह मार रहा हो जबकि मैं उसे कब्जाने की कोशिश करता बार-बार यह कह रहा था कि—"बताओ तो सुकन्या, क्या हुआ? तुम ऐसे क्यों कर रही हो? क्या तुम्हारे सिर में दर्द है?"

"अच्छा...अच्छा।" वह बोली—"ठीक है। नहीं बताऊंगी। कुछ नहीं बताऊंगी पर तुम अपने नुकीले पंजों से मेरे सिर को खुरचना बंद कर दो। अपनी जीभ से मुझे मत चाटो...प्लीज।" मैं आंखें फाड़े उसे देखता रह गया था। बिल्कुल नहीं समझ पाया था कि वह किससे बातें कर रही थी और यही सवाल मैंने उससे किया भी—"तुम किससे बातें कर रही हो सुकन्या?"

वह चुप रही।

अब वह दर्द से नहीं तड़प रही थी। न ही यूं फुदक रही थी जैसे उसे कोई गुदगुदी कर रहा हो। हाथ भी सिर पर नहीं थे। बस शांत लेटी खाली-खाली आंखों से मुझे देखे जा रही थी।

मैंने फिर कहा—"तुमने बताया नहीं सुकन्या, अभी-अभी वो अजीब-सी बातें तुम किससे कर रही थीं?"

उसने इस तरह पुतलियां उठाईं जैसे अपने सिर को देख रही हो, उस वक्त वह मुझे बहुत डरावनी लगी थी। उसी पोज में यूं बोली जैसे किसी से पूछ रही हो—"ये तो बता दूं?"

फिर उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे किसी की परमीशन मिल गई हो। मेरी तरफ देखती बोली—"छिपकली से।"

मारे हैरत के मेरे मुंह से चीख निकल गई—"छिपकली?"

उसने 'हां' में गर्दन हिलाई।

"कैसी छिपकली?" मेरे मुंह से निकला।

उसने कहा—"छिपकली नहीं जानते?"

"ज-जानता तो हूं।" मेरे मुंह से हकलाहट निकली—"लेकिन छिपकली से कोई कैसे बात कर सकता है?"

"वो मुझसे कर सकती है इसलिए मैं भी उससे कर सकती हूं।"

"तुम पागल हो गई हो क्या? कहां है छिपकली?"

"ये रही।" उसने अपने सिर की तरफ इशारा किया।

मैंने घबराकर उसका सिर टटोला। कहीं कुछ न था। वही कह भी दिया—"यहां तो कुछ नहीं है।"

"वो न तुम्हारे हाथ आएगी, न दिखेगी।"

"सुकन्या।" मैं डर गया था—"कैसी बहकी-बहकी बातें कर

रही हो! हो क्या गया है तुम्हें?"

"इसके अलावा कुछ नहीं कि मेरे सिर पर छिपकली सवार हो गई है।" उसने सामान्य स्वर में कहा था।

मुझ पर कुछ कहते न बन पड़ा।

बस देखता रह गया उसे। सोचा—शायद वह किसी ऐसी घटना से गुजरी है जिसने उसका दिमाग हिला दिया है।

जैसे—अगर किसी व्यक्ति के सामने उसके सबसे प्रियजन की मृत्यु हो जाए तो कमजोर दिलो-दिमाग के व्यक्तियों पर सदमा बैठ जाता है। वे अजीब-अजीब और वैसी ही बहकी-बहकी बातें करने लगते हैं जैसी इस वक्त सुकन्या कर रही है। ऐसा सोचकर मैंने यह फैसला लिया कि कम से कम इस वक्त उससे ऐसी कोई बात नहीं करुंगा जिसके कारण उसे उस घटना में जाना पड़े जो उसके साथ घटी है मगर...कितना गलत और छोटा सोच रहा था मैं!

उसके साथ किसी के प्रियजन की मृत्यु जैसी छोटी घटना नहीं घटी थी। मेरी सुकन्या इतनी मजबूत थी कि वैसी किसी घटना को तो मुझसे ज्यादा बेहतर तरीके से सह सकती थी।

यह तो मुझे बाद में पता लगा कि उसके साथ तो वाकयात ही इतने भयानक पेश आए थे, उसने तो अपनी आंखों से मंजर ही ऐसे ऐसे देखे थे जिन्हें देखने के बाद दुनिया के सबसे बड़े कलेजेबाज का दिमाग भी हिल जाता लेकिन...उस सबके बाद भी मेरी सुकन्या का दिमाग नहीं हिला था। खुद पर पूरी तरह काबू रखा था उसने और शैतानी बला से खुद को बचाने के लिए भागी थी। ठोकर खाकर न गिरती तो शायद मुझे उस अवस्था में न मिलती जिसमें मिली थी।

लेकिन उस वक्त मैं इसके अलावा और सोच भी क्या सकता था कि फिलहाल हमें वहां से चलना चाहिए। सुकन्या के साथ क्या हुआ है, इस बारे में बाद में पूछ लूंगा।

सो कहा—"अच्छा छोड़ो। यहां से चलें?"

उसने फिर पुतलियां घुमाकर अपने सिर की तरफ देखा और प्रश्न किया—"क्या मैं अपने पति के साथ जाऊं?"

सुकन्या के चेहरे पर निराशा के चिन्ह उभर आए।

शायद सिर पर सवार कथित छिपकली ने इंकार कर दिया था।

बोली—"मैं यहां से नहीं जा सकती महकार।"

"क्यों?"

"उसकी परमीशन नहीं है।"

"अब क्या तुम हर काम उसी की परमीशन से करोगी?"

"मजबूरी है महकार, अगर मैं उसका कहा नहीं मानूंगी तो वो अपने नुकीले पंजों से मेरे सिर को इस कदर खुरच देगी कि अंत में मेरे सिर के अंदर घुस जाएगी और मैं मर जाऊंगी।"

"और मैं जो तुम्हें यहां से चलने की आज्ञा दे रहा हूं! मैं महकार हूं सुकन्या। तुम्हारा पति। वो, जिसकी आज्ञा तुमने कभी नहीं टाली। आज्ञा तो छोड़ो, तुम मुझसे इतना प्यार करती हो कि मेरी छोटी से छोटी इच्छा को पूरी करने के लिए जान तक दे सकती हो।"

"वो तो ठीक है।" उसने बड़ा अजीब सवाल किया—"पर क्या तुम चाहते हो महकार कि मैं सचमुच मर जाऊं?"

मुझ पर कुछ कहते न बन पड़ा।

उसी समय सुकन्या के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे उसके दिमाग में कोई ख्याल आया हो। उसने तेजी से अपनी पुतलियां सिर की तरफ घुमाईं और बोली—"तुमसे ज्यादा मुहब्बत के मर्म को कौन समझ सकता है। तुम तो अपने अभिजीत से इतनी मुहब्बत करती हो। इतनी ज्यादा कि उसे वापस पाने के लिए उतना सब कर रही हो जितना कोई किसी के लिए नहीं कर सकता। भले ही उतना न सही, उससे थोड़ा कम सही लेकिन मैं भी अपने महकार से बहुत प्यार करती हूं इसलिए मुझे इसके साथ जाने की परमीशन दे दो।" कुछ देर बाद सुकन्या के चेहरे पर खुशी नजर आई। पुतलियां सिर की तरफ ही घुमाए उसने कृतज्ञ भाव से कहा था—"थैंक्यू। थैंक्यू वेरीमच। क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकती हूं?"

"न-नहीं...नहीं।" हाथ सिर की तरफ ले जाती हुई वह दर्द से तड़पी—"अच्छा बाबा, नहीं पूछ रही। कभी नाम नहीं पूछूंगी।"

फिर, वह शांत हो गई।

जैसे होने वाली पीड़ा रुक गई हो।

उस क्षण, सुकन्या की हरकतों को देखकर मेरे दिल में यह डर समा गया था कि कहीं उसने कोई ऐसी घटना तो नहीं देख ली है जिसने उसे पागल कर दिया हो!

मगर मेरा यह अंदाजा भी गलत था।

सुकन्या न सिर्फ पागल नहीं हुई थी बल्कि उसका दिमाग पूरी

तरह दुरुस्त तरीके से काम कर रहा था।

उसकी उन अजीब हरकतों का तो कारण ही कुछ और था।

अपने सिर पर सवार कथित छिपकली की परमीशन मिलते ही वह इस तरह उठकर बैठ गई थी जैसे गिरने आदि से बाल बराबर चोट न लगी हो और अगले ही पल वह मुझसे लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ी थी। मैं कब से उससे ऐसी आशा कर रहा था!

मेरी आंखें भर आईं।

कसकर अपनी भुजाओं में लपेट लिया उसे और उसने बुरी तरह बिलखते हुए अपनी नन्हीं मुट्ठियों से मेरी पीठ पर घूंसे बरसाते हुए कहा—"मेरे मना करते-करते भी क्यों तेज चलाई थी बाइक? न इतनी तेज चलाते, न एक्सीडेंट होता, न तुम बेहोश होते, न मैं पानी की खातिर वहां से हटती और न ही...

बस। इतना कहकर वह रुक गई थी।

मैंने उसे अपनी भुजाओं के घेरे से अलग किया। उसके दोनों कंधे पकड़े और अपने सामने करके, गौर से उसका चेहरा देखता हुआ

बोला—"रुक क्यों गईं? बताओ न!"

"नहीं। परमीशन नहीं है।"

मैं समझ चुका था कि अगर मैंने यह पूछा कि—किसकी? तो वह फिर 'छिपकली' कहेगी इसलिए पूछा ही नहीं। हां, उसने जरूर एक बार फिर पुतलियां सिर की तरफ घुमाकर पूछा—"देख ही रही हो कि मेरा पति कितना बेचैन हो रहा है! वहां तक तो बता सकती हूं जहां तक तुम्हारा जिक्र न आए?"

शायद परमीशन मिल गई थी क्योंकि सुकन्या ने एक बार फिर कृतज्ञ भाव से कहा था—"थैंक्यू दीदी...थैंक्यू।"

दीदी?

यह शब्द मेरे जेहन में हथौड़े की तरह जाकर लगा।

वह छिपकली को दीदी कह रही थी?

और उसके बाद, उसने मुझे प्रश्न करने का मौका नहीं दिया।

खुद ही शुरु हो गई—

में बाइक के फिसलने से पहले ही कीचड़ में जा गिरी थी।

"महकार-महकार।" चीखती हुई उठी और भागने के प्रयास में कीचड़ में गिरती-पड़ती पेड़ के अंदर घुस चुके तुम्हारे करीब पहुंची।

मैं बार-बार तुम्हारा नाम लेती हुई दोनों हाथों से तुम्हारे गालों को थपथपा रही थी मगर तुम खामोश थे।

एक बार बिजली कड़कड़ाई तो तुम्हारे सिर से बहता हुआ खून देखा। मैं और घबरा गई। रोने लगी। नब्ज टटोली। उसे चलता पाकर राहत महसूस की और फिर, मदद के लिए अपने चारों तरफ देखा—वहां भला कौन मददगार हो सकता था!

हर तरफ सन्नाटा।

अंधकार और हवा के झक्कड़।

मुझ पर तुम्हें झंझोड़-झंझोड़कर होश में लाने की कोशिश करने के अलावा जैसे कोई चारा न था।

करीब पंद्रह मिनट बाद तुम्हारे मुंह से कराह निकली।

मेरी उम्मीदें जागीं।

फिर गाल थपथपाते हुए तुम्हें पुकारा।

तुम्हारे मुंह से आवाज निकली—"प-पानी...पानी।"

मैंने हकबकाकर चारों तरफ देखा—बारिश के कारण हर तरफ पानी ही पानी था मगर ऐसी एक बूंद भी नहीं जिसे तुम्हारे मुंह में डाला जा सके। सारा पानी कीचड़ हुआ पड़ा था।

मुझे अपने और तुम्हारे कपड़ों का ख्याल भी आया।

यह कि—उन्हीं में से निचोड़कर पानी तुम्हारे मुंह में डाल दूं परंतु वे भी कीचड़ में लिसड़े पड़े थे।

तुम्हारे होंठों ने दो-चार बार और 'पानी-पानी' कहा और फिर गर्दन एक तरफ को लुढ़क गई। इस एहसास ने मेरे होश उड़ा दिए थे कि तुम फिर बेहोश हो चुके थे।

मैं रो पड़ी। बड़ी उम्मीद से आकाश की तरफ देखा और दुआ की कि थोड़ा-सा पानी और बरसा दे। बिजली चमक रही थी।

बादल भी घुमड़ रहे थे। मगर कौन जाने वे कब बरसेंगे! बरसेंगे भी या बगैर बरसे ही किसी और तरफ को निकल जाएंगे!

मुझे लगा कि इस वक्त थोड़ा-सा पानी तुम्हारे लिए अमृत का काम करेगा। दिमाग में विचार कौंधा—कहीं छोटा-सा गड्ढा होगा

तो उसमें भरा कम गंदा पानी मिल सकता है।

मैं उठी और चारों तरफ गड्ढे की तलाश में भटकने लगी।

दीवानावार भटकती-भटकती जान ही न सकी कि कब उस जगह से दूर निकल आई जहां तुम थे।

रास्ते में कई जगह से पानी समेटने की कोशिश की थी मगर हर बार चुल्लू में कीचड़ ही आई थी।

फिर दिमाग में ख्याल आया कि वापस लौटना चाहिए। इतनी देर में तो हो सकता है तुम्हें वैसे ही होश आ गया हो। अगर ऐसा हो गया होगा तो तुम मुझे अपने आसपास न पाकर घबरा जाओगे।

मैं वापस लौटने के लिए मुड़ी ही थी कि कानों में कोई आवाज पड़ी। मैंने ध्यान से सुना—"खट्ट...खट्ट...खट्ट!"

शायद कोई कुछ खोद रहा था।

यहां! जंगल में! इस बीराने में!

अंधकार के बीच भला कोई क्या खोद रहा होगा?

'खट्ट-खट्ट' की आवाज अब मुझे बहुत स्पष्ट आने लगी थी। इतनी स्पष्ट कि यह आभास भी हो गया कि वह किस दिशा से आ रही है। मेरे जेहन में बड़ी तेजी से यह विचार आया कि वह जो भी कोई होगा–मेरी मदद कर सकता है। हो सकता है उसके पास पानी भी हो। सो, मैं आवाज की दिशा में चल पड़ी।

जल्दी ही महसूस किया कि मैं किसी कब्रिस्तान में पहुंच गई हूं और फिर ऐसा दृश्य देखा जिसने मेरी शिराओं में बहते खून को जमाकर रख दिया था। पैरों को जैसे धरतीदेवी ने अपने हाथ बाहर निकालकर जहां का तहां जकड़ लिया था।

इतना ही नहीं–मेरी जुबान तक को लकवा मार गया था।

चेहरे पर खौफ तांडव कर रहा था और आंखें पथरा गई थीं।

जिस्म सूखे पत्ते की मानिंद कांप उठा था और अगर यह भी कह दिया जाए महकार तो अतिश्योक्ति न होगी कि मैंने खुद को चकरा कर गिर जाने से बहुत मुश्किल से रोका था।

पथराई हुई आंखें ऊपर से नीचे तक सफेद लिबास में ढकी एक ऐसी औरत को देख रही थीं जिसके हाथ में फावड़ा था। फावड़े से वह एक कच्ची कब्र की मिट्टी को खोद रही थी। कब्रिस्तान में 'खट्ट-खट्ट' की आवाज के साथ उसकी कलाइयों में मौजूद चूड़ियों की आवाज भी गूंज रही थी। मगर चेहरा नजर नहीं आ रहा था उसका क्योंकि आगे की तरफ पड़े लंबे बाल उसे ढके हुए थे।

"रुको मत महकार...रुको मत।" जबरदस्त उत्तेजना में डूबा अंगद कहता चला गया—"मुझे बताओ, क्या सुकन्या दीदी उस औरत का चेहरा देख सकीं? उसके बाद उन्होंने क्या देखा?"

"वो जो भी था, बहुत हौलनाक था।" शून्य में आंखें टिकाए कहते हुए महकार के चेहरे के जर्रे-जर्रे पर खौफ नाच रहा था—"मैंने तो केवल सुना है मगर सुकन्या ने अपनी आंखों से देखा था। जब सुनकर ही मेरा खून जम गया था तो देखकर सुकन्या का क्या हाल हुआ होगा! कैसे देख पाई होगी वह, वह सब! नहीं देख पाई थी। तभी तो उसकी वह हालत हुई! तूफानी रात में कब्र खोदने वाली वह औरत, औरत नहीं कोई बुरी बला थी और वह बला मेरी सुकन्या के पीछे लग गई। मैं कुछ भी न कर सका अंगद। जिसे मैं इस संसार में सबसे ज्यादा प्यार करता था उसके लिए कुछ भी न कर सका। आखिर भगवान ने इंसान को इतना कमजोर क्यों बनाया है!"

"बताओ तो सही महकार, सुकन्या दीदी ने आगे क्या देखा?

मुझे लगता है, वह धुंध छंटने वाली है जो वर्षों से मेरे जेहन पर छाई है। मेरे दिमाग को कचोटने वाले सैंकड़ों सवालों के जवाब मिलने वाले हैं। जल्दी से आगे का किस्सा बताओ।"

"सुकन्या बस उतना ही बता पाई थी जितना मैंने तुम्हें बताया।

उससे आगे बताने के लिए उसने जैसे ही मुंह खोला, उससे पुनः पीड़ाजनक आवाजें निकलने लगीं। उसके दोनों हाथ खुद-ब-खुद अपने सिर पर पहुंच गए थे और वह फिर उसी अज्ञात शक्ति के सामने गिड़गिड़ा उठी थी—"अच्छा नहीं बता रही दीदी। कुछ भी नहीं बताऊंगी। एक शब्द भी नहीं। मेरे सिर को खुरचना बंद कर दो।"

और शायद कथित छिपकली ने उसकी बात मान ली थी क्योंकि उसके बाद सुकन्या पहले की तरह शांत हो गई थी और मुझसे वापस चलने के लिए कहने लगी थी।

मैंने भी इस जिक्र को आगे बढ़ाने की जगह वापस चलना ही मुनासिब समझा।

उसे लिए चकरोड पर पड़े उस पेड़ के करीब पहुंचा जहां से हमारी तबाही की दास्तान शुरु हुई थी।

थोड़ी मशक्कत जरूर करनी पड़ी मगर अंततः डालों और पत्तों के बीच उलझी बाइक निकालने में कामयाब हो गया।

उसकी हैडलाइट टूट गई थी लेकिन अंततः स्टार्ट हो गई और उसी पर मुंबई पहुंचे।

"उसके बाद?" अंगद ने पूछा।

जैसा कि उस रात जंगल में सोचा था कि वक्त के साथ सुकन्या की मानसिक अवस्था ठीक हो जाएगी, वैसा हुआ नहीं। बल्कि उसका बिल्कुल उल्टा होता चला गया।

छिपकली वाली बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती चली गई।

अब वह कोई भी काम करने से पहले पुतलियां उठाकर सिर की तरफ देखती। वहां से इजाजत मिलती तो करती, न मिलती तो बिल्कुल न करती।

बेचारी रिम्पी भी उसकी इस अवस्था से परेशान रहने लगी थी। वह बड़ी मासूमियत के साथ मुझसे पूछा करती थी कि मम्मी को क्या हो गया है।

मैं क्या जवाब देता! यह कहकर टाल दिया करता था कि वह जल्दी ही ठीक हो जाएगी।

यह दिलासा मैं रिम्पी को ही नहीं, खुद को भी दिया करता था।

मगर जल्दी ही एहसास हो गया कि यह सिर्फ दिलासा ही था।

सुकन्या पागलों जैसी हरकतें करने लगी थी।

अकेले कमरे में बैठी वह अक्सर 'छिपकली' से बातें करती पाई जाती थी। शुरु में मैं प्यार से पेश आता रहा, उसे समझाने की कोशिश करता रहा कि वह यह सब क्या कर रही है। ये समझाने की कोशिश भी की कि रिम्पी पर उसकी हरकतों का बहुत बुरा असर पड़ रहा

है। उसने उससे बातें करना छोड़ दिया है बल्कि उससे डरने लगी है मगर जब उस पर किसी भी बात का कोई पॉजिटिव असर न हुआ तो मैं झुंझलाने लगा।

कई बार आगे की कहानी जाननी चाही।

उसने कोशिश भी की मगर फिर दर्द से तड़पने लगती। यह शिकायत करने लगती थी कि छिपकली उसका सिर कुरेद रही है और उसकी तरफ से कुछ भी बताने की परमीशन नहीं है। बीच-बीच में कई बार उसके मुंह से ऐसी बातें निकलती थीं जिन्हें सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे, दिलो-दिमाग पर खौफ छा जाता था लेकिन जब उन बातों का मतलब पूछता था तो वह कुछ नहीं बताती थी।

परेशान होकर मैंने उसे डॉक्टरों को दिखाना शुरु किया। एक नहीं, बीसों डॉक्टरों से इलाज कराया। मैं उन्हें वहां तक की स्टोरी सुनाता था जितनी सुकन्या ने मुझे सुनाई थी। लगभग सभी डॉक्टरों का यह कहना था कि—ज्यादा घबराने की बात नहीं है। कब्रिस्तान में कब्र खोद रही औरत को देखने के बाद उसने शायद ऐसा कुछ देखा है जिसने उसके दिमाग पर गहरा असर किया है। जिसे वह बता भी नहीं पा रही है और उसे यह वहम हो गया है कि सिर पर कोई छिपकली सवार है जो उसे वह सब बताने से मना करती है।

जब डॉक्टर उससे उस घटना के बारे में जानने के लिए सवाल करते जिसके बारे में जानने के लिए मैं मरा जा रहा था और वह जवाब देने की कोशिश करती तो फिर छिपकली द्वारा अपने सिर को खुरचने की शिकायत करने लगती और कहने लगती कि उसकी परमीशन नहीं है। ऐसे हर मौके पर डॉक्टर उसे नींद का इंजेक्शन देकर सुला देते और मुझसे कहते कि—तुम्हारी पत्नी को आराम और सहानुभूति की जरुरत है। इसे डांटा मत करो। प्यार से पेश आया करो। केवल किसी घटना का सदमा है जो इसके दिमाग पर बैठ गया है जो वक्त के साथ खत्म हो जाएगा और एक दिन खुद ही उस घटना के बारे में बताएगी जो इसके साथ घटी है।

"क्या उन्होंने कभी बताया?" बेचैन अंगद ने सवाल किया।

महकार ने इंकार में गर्दन हिलाई।

"तो फिर तुम्हें वह स्टोरी कैसे पता लगी?"

इस सवाल के जवाब में शून्य में स्थिर महकार की आंखों में आंसू नजर आने लगे। साफ नजर आ रहा था कि वह खुद को रोने से रोक रहा है मगर भरपूर कोशिश के बावजूद अपने इस प्रयास में कामयाब न हो सका। बुरी तरह फफक पड़ा था वह और फिर बच्चों की तरह फूट फूटकर रो पड़ा।

अंगद ने दिलासा दिया तो वह कहता चला गया—उस सबको जानने की कीमत में मुझे सुकन्या को गंवाना पड़ा। यदि पता होता कि उस सबको जानने की कीमत मुझे सुकन्या की जान गंवाकर चुकानी पड़गी तो कभी इतनी जिद न करता। जिंदगी जैसी चल रही थी वैसे ही चलने देता मगर...जब आदमी का बुरा वक्त आता है तो वह खुद ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार लेता है। मैंने भी वही किया। अपने पैरों में खुद कुल्हाड़ी मार ली।"

अंगद के मुंह से निकला—"क्या मतलब?"

जब अति हो गई। किसी भी डॉक्टर से कोई आराम न हो रहा था। सारे साइक्लोजिस्ट फेल हो गए थे और मुझे यह लगने लगा कि मेरी ही तरह उनकी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा है। सारी दवाएं केवल मुझे बहकाने के लिए चलाई जा रही हैं तो एक रात मैंने उससे बड़े प्यार से कहा था—"सुकन्या, मुझे वहम था कि तुम इस दुनिया में मुझे सबसे ज्यादा प्यार करती हो।"

"इसमें वहम की क्या बात है!" उसने कहा था—"यह सच है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं।"

"मैं सबसे ज्यादा प्यार की बात कर रहा हूं।"

"अब तो यह भी कहा जा सकता है।"

"मतलब?"

"जब तुम मेरी जिंदगी में आए, उससे पहले मैं सबसे ज्यादा प्यार अपने भैया से करती थी। सुजान से। मगर मुहब्बत के दरिया में ऐसी बही कि तुम्हारी खातिर सबको छोड़ आई। सुजान को भी।

महकार, तुमसे प्यार किया है, इसलिए झूठ नहीं बोलूंगी। यह सोच कर मैंने सुजान को भुलाने की बहुत कोशिश की कि अब वह मेरी

जिंदगी में कभी नहीं आ सकेगा लेकिन कामयाब न हो सकी। छः साल गुजर जाने के बावजूद मेरा छोटा-सा भैया आज भी मेरे रोम-रोम में बसा है लेकिन यह एक ठोस हकीकत है कि आज वह मेरी दुनिया का हिस्सा नहीं है इसलिए यही कहा जाएगा कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार तुम्हीं से करती हूं।"

"यह झूठ है।"

"प्लीज, मुझ पर ऐसा आरोप मत लगाओ महकार।"

"ये आरोप नहीं, हकीकत है।" उस रात मैंने उससे फाइनल बात करने की ठान ली थी—"मैं सुजान की बात नहीं कर रहा हूं।"

"और किसकी कर रहे हो?"

"इसकी।" मैंने उसके सिर की तरफ इशारा किया।

उसके मुंह से सिर्फ इतना ही निकला—"ओह!"

जबकि मैं कहता चला गया—"इसे तुम मुझसे भी ज्यादा प्यार करने लगी हो क्योंकि इसके हमारी जिंदगी में आने से पहले तुम मेरी हर बात मानती थीं। सिर्फ और सिर्फ वह करती थीं जो मैं कहता या चाहता था लेकिन अब वो करती हो जो ये चाहती है।"

उसने बड़ी मासूमियत के साथ कहा था—"ऐसा मैं इससे प्यार की खातिर थोड़ी करती हूं!"

"और किसलिए करती हो?"

"बताया तो है कई बार! अगर मैं वो नहीं करुंगी जो ये चाहती है तो ये मुझे मार डालेगी और...

"और?"

"मैं मरने से अपनी खातिर नहीं डरती महकार।" कहते-कहते उसका लहजा भावुक हो गया था, उस वक्त मैंने उसकी आंखों में आंसू देखे थे—"तुम्हारी और रिम्पी की खातिर डरती हूं। सोचती हूं कि अगर मैं न रही तो तुम दोनों का क्या होगा? तुम दोनों को तो ठीक से यह भी पता नहीं रहता कि कपड़े कौनसे पहनने हैं।"

उसकी आंखों में आंसू देखकर मैं भी भावुक हुआ जा रहा था लेकिन बड़ी सख्ती से खुद को जजबाती होने से रोका क्योंकि उस रात मैंने पूरी कठोरता से अंतिम बार सिर्फ और सिर्फ मुद्दे पर बात करने की ठान ली थी इसलिए बोला—"ये सिर्फ तुम्हारा बहाना है।"

"कैसा बहाना?"

"मुझे मीठे शब्दों के खिलौनों से बहकाने का बहाना—जबकि हकीकत ये है कि तुम सिर्फ और सिर्फ इस कथित छिपकली की बात मानने लगी हो। तुम्हारी नजरों में मेरी कोई अहमियत नहीं रही है।"

"ऐसा मत कहो महकार।" साफ नजर आया कि उसे दुख पहुंचा था परंतु मैंने उसे नजरअंदाज करते हुए कहा—"क्यों न कहूं?

जो हकीकत है, क्या तुम मुझे वह कहने से भी रोकोगी?"

"ऐसी बात नहीं है।"

"नहीं है तो बताओ आगे का किस्सा—कुछ नहीं होगा।"

"वो मुझे मार डालेगी महकार।"

"मार डालेगी तो मार डाले।" दांत भींचकर मैंने वो बात कही जो मेरे जैसा प्यार करने वाला पति किसी हालत में नहीं कह सकता मगर कही, जिद में आकर कही। इसलिए कही क्योंकि मन में यह विश्वास था कि उसे वहम है, वैसा कुछ नहीं होगा जिससे वह डर रही है। मगर...। महकार का लहजा भीगने लगा था—"भविष्य ने मुझे बताया कि वहम में वह नहीं, मैं था। सच वही था जो वह कह रही थी। मैं ये कभी नहीं भूल सकता कि मैंने ही उसे मरने के लिए कहा था और न ही मैं सारी जिंदगी खुद को इसके लिए माफ कर सकता हूं कि—अपनी सुकन्या का हत्यारा मैं खुद हूं। अपने हाथों से नहीं तो अपनी जुबान से जान ली है मैंने उसकी। अपनी जिद में फंसकर मारा

है उसे पर ये सब तो भविष्य में पता लगा और भविष्य किसी को पता नहीं होता अंगद। पता चल जाए तो इंसान वैसी गलतियां ही कभी न करे जैसी उस रात मैंने की। आदमी वर्तमान में जीता है और मैं भी वर्तमान में ही जी रहा था। ऐसे वर्तमान में जिसमें मुझ पर सच्चाई जानने का जुनून सवार था और मैंने उसी जुनून में कहा था—"मुझे अब भी वहम है कि तुम मेरी कसम नहीं तोड़ सकतीं।"

वह बुरी तरह डर गई थी और डरकर मेरे होठों पर अपना हाथ रख दिया था उसने। गिड़गिड़ाई थी—"कसम मत देना महकार।"

"तुम्हें मेरी कसम है सुकन्या।" मैंने उसका हाथ अपने होठों से हटाते हुए कहा था—"मुझे उस रात की पूरी घटना बताओ, अगर तुम वैसा नहीं करोगी तो मेरा मरा मुंह देखोगी।"

सुकन्या पर ऐसी प्रतिक्रिया हुई थी जैसे उस पर बिजली गिर गई हो। इसके बावजूद वह कुछ बोली नहीं थी। बस देखती रही थी मेरी तरफ। मैं कभी उन नजरों को नहीं भूल सकता। मरते दम तक सुकन्या की उन नजरों को नहीं भूल सकता मैं, क्योंकि उनमें ऐसा भाव था जैसे मुझे अंतिम बार देख रही हो। पर ये आज की बात है।

उस वक्त ऐसा नहीं लगा था मुझे। उस वक्त तो सुकन्या को चुप देखकर इस सोच के कारण गुस्सा और ज्यादा चढ़ गया था कि मेरी कसम के बावजूद वह चुप थी। बोला—"क्या अब भी उस रात का पूरा किस्सा नही बताओगी?"

वह चुप ही रही।

मेरा गुस्सा और भड़क गया—"मतलब तुम्हारी नजर में मेरी कसम की भी कोई अहमियत नहीं रही?"

वह तब भी कुछ न बोली।

"मैं जानता था...मैं जानता था सुकन्या कि अब तुम्हें मेरा मरा मुंह देखने से भी परहेज नहीं है।" बुरी तरह भड़का हुआ मैं कहता चला गया—"पर कहीं न कहीं वहम था कि और भले ही चाहे जो हो जाए मगर तुम मेरी कसम नहीं तोड़ सकतीं मगर आज तुमने वो वहम भी तोड़ दिया। शुक्रिया...शुक्रिया सुकन्या।" कहने के बाद मैं गुस्से में कमरे से निकल गया था। मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे रोक लेगी और अब उस रात का पूरा किस्सा सुनाएगी। इसी उम्मीद में मैं दूसरे कमरे में सारी रात जागा पड़ा रहा कि वह अब आएगी...अब आएगी लेकिन वह नहीं आई।"

"उस रात भी उन्होंने तुम्हें कुछ नहीं बताया?"

"नहीं।"

"तो फिर पता कब लगा?" अंगद बुरी तरह बेचैन हो गया।

"अगले दिन?"

अगली सुबह कई बार मेरा और सुकन्या का आमना-सामना हुआ मगर न वह कुछ बोली, न मैं।

आज महसूस करता हूं कि उस वक्त भी उसकी आंखों में ऐसे भाव थे जैसे वह मुझे आखिरी बार देख रही हो मगर उस वक्त ऐसा महसूस न कर सका था।

करता भी कैसे?

उस वक्त तो मेरी आंखों पर गुस्से की पट्टी बंधी हुई थी। वह पट्टी जो सुकन्या की निरंतर खामोशी के कारण और गाढ़ी होती चली गई थी। वह गुस्सा इस कारण था क्योंकि मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरी कसम के बाद भी वह कुछ नहीं बताएगी।

उसी गुस्से में आफिस चला गया।

दोपहर का वक्त।

मोबाइल पर अननोन नंबर से फोन आया। हड़बड़ाई हुई अवस्था में पूछा गया था—"मिस्टर महकार बोल रहे हैं क्या?"

मैंने पूछा—"आप कौन?"

"मैं डॉक्टर कजारिया बोल रहा हूं मिस्टर महकार, आपकी पत्नी मेरे क्लीनिक पर है।"

"सुकन्या आपके क्लीनिक पर?" मैं सचमुच बुरी तरह चौंक पड़ा था—"वह वहां कैसे पहुंच गई?"

"अपने बारे में कुछ जानने आई थीं।"

"अपने बारे में जानने? मैं कुछ समझा नहीं।"

"आप फौरन यहां आ जाइए।"

"क्या बात है?" मैं घबरा गया था—"सुकन्या ठीक तो है?"

"नहीं।" कहा गया—"वे ठीक नहीं हैं?"

"क्यों? क्या हुआ है उसे?"

"फोन पर बताया जाना मुमकिन नहीं है। बगैर समय गंवाए, जितनी जल्दी हो सके यहां आ जाएं।"

"कहां आ जाऊं। मेरा मतलब—आपका क्लीनिक कहां है?"

उसने पता बताया और मैं आंधी-तूफान की तरह वहां पहुंच गया। करीब पचास की उम्र का डॉक्टर कजारिया मुझे क्लीनिक के बाहरी कमरे में ही बैठा मिला। उसके चेहरे पर मातम और उलझन के भाव थे। जैसा कि स्वाभाविक था, मैंने उसके सामने पड़ते ही पूछा—"कहां है सुकन्या?"

उसने मेरे सवाल का जवाब देने की जगह उल्टा सवाल किया था—"क्या आप जानते हैं कि मैं किस चीज का डॉक्टर हूं?"

"हां। आपके क्लीनिक के बाहर लगे बोर्ड पर पढ़ा, आप मरीज को हिप्नोटाइज करके उसके अतीत में जाकर ऐसी बीमारियों का पता लगाते हैं जिनका पता आम तरीकों से नहीं लग रहा होता है।

यहां तक कि आप मरीज को उसके पूर्वजन्मों में भी ले जाते हैं क्योंकि कई बीमारियों का संबध मरीज के पूर्वजन्म से होता है। पर सुकन्या को तो ऐसी कोई बीमारी नहीं थी!"

"उन्होंने कहा था कि मुझे ऐसी बीमारी है।"

मैं बौखला गया—"कम से कम मेरी जानकारी में तो नहीं थी।"

"उन्हें हिप्नोटाइज करने के बाद मुझे भी यही पता लगा।"

"क्या पता लगा?"

"कि वे आपकी जानकारी के बगैर यहां आई थीं।"

"पर वो आई क्यों थी और अब कहां है?"

उसने मेरे दूसरे सवाल पर ध्यान दिए बगैर पहले का जवाब दिया—"मेरे सामने बैठते ही उन्होंने सबसे पहले यह पूछा कि आपके द्वारा हिप्नोटाइज होने के बाद जब इंसान अपने अतीत या पूर्वजन्म में जाता है तो उस वक्त अगर उसके शरीर पर कोई चोट पहुंचाए तो क्या उसे दर्द का एहसास होता है?"

मैंने कहा—'नहीं।'

और...सच भी यही है।

यह सवाल मरीज अक्सर करते हैं इसलिए मुझे अजीब भी नहीं लगा बल्कि उन्हें थोड़ी डिटेल बताई—'हिप्नोटाइज्ड व्यक्ति की तुलना हम डेडबॉडी से कर सकते हैं। जिस तरह मरने के बाद प्राणी के जिस्म पर भले ही चाहे जो किया जाता रहे, उसे कुछ पता नहीं लगता उसी तरह हिप्नोटाइज्ड व्यक्ति के शरीर के साथ भी चाहे जो किया जाता रहे, उसे कुछ पता नहीं लगता।'

मेरे शब्द सुनकर उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे थे जैसे बहुत राहत मिली हो। किसी टेंशन से मुक्त हुई हो वह।

बोली—"मुझे हिप्नोटाइज्ड होना है।"

"क्यों?" मैंने पूछा—"आपको क्या बीमारी है?"

"कोई ऐसी बीमारी है जिसे मैं भी नहीं समझ पा रही हूं।" वह बोली—"सोचती हूं, मुझे हिप्नोटाइज करके शायद आपकी समझ में कुछ आ जाए!"

मैंने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा था—"मेरी प्रक्रिया ऐसी है कि आपकी समझ में भी सबकुछ आ जाएगा।"

"मतलब?" उसने पूछा।

"हिप्नोटाइज होने के बाद आपको वह दीखने लगेगा जिसकी वजह से आप खुद को बीमार महसूस कर रही हैं और जो आपको दीख रहा होगा उसे अपने मुंह से बयान करने लगेंगी। उस वक्त मैं टेप ऑन करके रखता हूं। मरीज द्वारा कहा गया एक-एक लफ्ज उसमें टेप हो जाता है और सामान्य अवस्था में आने के बाद वह खुद उसे सुन सकता है। इस तरह, बीमारी का कारण न केवल मेरी समझ में आ जाता है बल्कि मरीज भी समझ सकता है।"

मेरी बात सुनकर सुकन्या के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे थे जैसे उसकी बहुत बड़ी समस्या हल हो गई हो। वह उत्साह से भरकर बोली थी—"आप जो भी फीस बताएं मैं देने को तैयार हूं, मुझे अपनी बीमारी के बारे में जानना है।"

भला मुझे क्या दिक्कत हो सकती थी! मेरा तो काम ही ये है।

सो, फीस जमा कराने के बाद अंदर वाले कमरे में ले गया।

उसे हिप्नोटाइज किया और...

"और?" महकार ने पूछा।

"उसने जो कहा और जो हुआ, उसे देख-सुनने के बाद मेरे होश फाख्ता हो गए। इतनी देर बाद, बड़ी मुश्किल से खुद को नियंत्रित कर पाया हूं। प्रेक्टिस करते मुझे बीस साल हो गए मिस्टर महकार मगर आपकी पत्नी जैसा केस मैंने पहले कभी नहीं देखा। अभी-भी जब सोच रहा हूं कि अगर उसने वह सब देखा है जो बयान किया तो मारे खौफ के मेरा बुरा हाल हुआ जा रहा है। पता नहीं उस सबको देखने के बाद वो अपने होशो-हवास में कैसे रह सकी होगी और जिस अवस्था में वह उसके बाद से है, वह तो और भी भयानक है।"

"आप क्या कह रहे हैं, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

“इस टेप को सुनिए, सबकुछ समझ में आ जाएगा।” कहने के साथ कजारिया ने मेज पर रखा एक टेपरिकार्डर ऑन कर दिया।

टेप की चकरी घूमने लगी—

कमरे में सुकन्या की आवाज गूंजने लगी—'महकार, मेरे देवता, तुम हैरान होगे कि मैं डॉक्टर कजारिया के पास क्यों आई? सबसे पहले यही स्पष्ट कर दूं—इसके पीछे तुम्हारी कसम है। वो कसम जिसे मैं किसी हालत में नहीं तोड़ सकती। मैंने तुमसे कितना कहा कि उस रात के बारे में छिपकली की तरफ से कुछ भी बताने की परमीशन नहीं है लेकिन तुमने मेरी एक न सुनी। यही समझते रहे कि मुझे कोई बीमारी लग गई है और जो मैं कह रही हूं वह मेरा वहम है मगर नहीं मेरे देवता, ऐसा नहीं है।

सचमुच मेरे सिर पर एक छिपकली सवार है।

मैं जैसे ही उस रात के बारे में बताने की कोशिश करती हूं वह अपने नुकीले नाखूनों से मेरे सिर को खुरचना शुरु कर देती है।

उसने साफ चेतावनी दे रखी है कि अगर मैंने उसकी आज्ञा की अवहेलना की तो वह मेरे सिर को खुरचकर अंदर घुस जाएगी और उस अवस्था में मेरी मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता।

जैसा कि पहले ही बता चुकी हूं—अपनी मृत्यु से मैं अपनी खातिर नहीं डरती बल्कि तुम्हारी और रिम्पी की खातिर डरती थी।

मुझे इस खौफ ने डरा रखा था कि मेरे बाद तुम दोनों का क्या होगा मगर कल रात तुमने मुझे इस खौफ से बाहर निकाल दिया।

तुमने कह दिया कि नहीं बताऊंगी तो तुम्हारा मरा मुंह देखूंगी।

नहीं मेरे सरताज, मैं भला तुम्हारा मरा मुंह कैसे देख सकती हूं!

इससे तो अच्छा है कि तुम ही मेरा मरा मुंह देख लो।

रिम्पी का ख्याल रखना महकार क्योंकि तुम्हारी कसम में बंधने के बाद जो कुछ मैंने करने की ठान ली है, जानती हूं कि उसके बाद जिंदा नहीं बचूंगी। छिपकली मुझे मार डालेगी।

एक बात और—कल रात के बाद मुझे इस बात की परवाह नहीं रही है कि वह मुझे मार डाले पर इस बात की परवाह थी कि जान देने के बाद भी शायद मैं उस रात के बारे में तुम्हें पूरा न बता सकूं क्योंकि छिपकली मेरे शुरु होते ही मेरे सिर को इस कदर खुरचती है कि जबरदस्त पीड़ा होती है।

इतनी ज्यादा कि जो मुझसे सहन नहीं होती।

अगर मुझे यह डर न होता कि उस पीड़ा के कारण तुम्हें उस रात के बारे में पूरा नहीं बता सकूंगी तो रात, जब तुमने कसम दी थी, तभी बता देती। मगर मुझे यह डर था बल्कि ये कहना ज्यादा उचित होगा कि मैं जानती थी कि अगर मैंने अभी तुम्हें बताना शुरु कर दिया तो छिपकली मेरा सिर खुरचना शुरु कर देगी और उससे मुझे इतनी पीड़ा होगी कि अपनी बात पूरी नहीं कर सकूंगी यानी उस रात को लेकर तुम्हारे दिमाग में जो सवाल हैं, वे हमेशा के लिए सवाल ही बनकर रह जाएंगे।

कसम के बावजूद तुम्हें मेरी चुप्पी पर बहुत गुस्सा आ रहा था।

अब शायद समझ गए होगे कि मैं क्यों चुप थी। क्यों गुस्से में कहे गए तुम्हारे सभी कठोर शब्दों को सुनती रही।

जब कजारिया ने कहा कि हिप्नोटिज्म के दरम्यान भले ही शरीर के साथ चाहे जो किया जाता रहे, हिप्नोटाइज हुए शख्स को कुछ पता नहीं लगता तो यह सोचकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा कि उस अवस्था में छिपकली मेरे सिर को चाहे जितना खुरचे, भले ही वह मेरे सिर में घुस ही क्यों न जाए, मुझे दर्द का कोई एहसास नहीं होगा और मैं अपनी बात पूरी कर सकूंगी।

सो, इस टेबल पर हूं और हिप्नोटाइज्ड हूं। अतः उस रात का किस्सा बयान करना शुरु करती हूं। तुम्हारी खातिर महकार, सिर्फ तुम्हारी कसम की खातिर—

बारिश के कारण मिट्टी की ऊपरी सतह गीली थी इसलिए औरत को शुरु में भले ही कम मेहनत करनी पड़ी हो मगर जैसे-जैसे कब्र गहरी होती गई वैसे-वैसे और ज्यादा मेहनत करनी पड़ी पर मेरे देखते ही देखते उसने चार फुट गहरी कब्र खोद डाली।

उसके बाद फावड़ा एक तरफ फेंका। जमीन पर रखी एक टार्च उठाई तथा उसकी रोशनी कब्र के अंदर डाली।

वहां एक इंसानी खोपड़ी और हड्डियां नजर आ रही थीं।

उन पर मिट्टी लगी हुई थी।

उस दृश्य को देखकर जहां मैं थरथर कांपने लगी थी वहीं वह औरत उन्हें इस तरह देख रही थी जैसे कोई प्रेयसी अपने प्रेमी को देख रही हो। कुछ देर वह खोपड़ी और हड्डियों को उसी तरह देखती रही फिर, तेजी से अपनी साड़ी जिस्म से अलग की।

अब वह केवल पेटीकोट और ब्लाऊज में थी।

साड़ी गीली मिट्टी पर बिछा दी उसने। खुद कब्र में उतर गई।

अब वह कब्र में मौजूद हड्डियों को उठा-उठाकर मिट्टी पर बिछी साड़ी पर डालने लगी। जब संतुष्ट हो गई कि सभी हड्डियां साड़ी पर डाल चुकी है तो कब्र से बाहर आई।

हड्डियों की पोटली बनाई और कंधे पर लादकर कब्रिस्तान के पीछे की तरफ चल दी। फावड़ा उसने वहीं छोड़ दिया था जबकि टार्च पोटली में डाल ली थी।

तेज-तेज कदमों से चलती हुई वह कब्रिस्तान के करीब ही बने एक पुराने किले की तरफ बढ़ी थी और...जाने वो कौन-सी ताकत थी जिसमें बंधी मैं उसके पीछे चली जा रही थी। हालांकि डर के मारे बुरा हाल था मगर शायद मैं ये देखना चाहती थी कि खौफनाक और निडर औरत उन हड्डियों का क्या करने वाली है।

आकाश पर घुमड़ रहे काले बादलों और अंधकार के कारण पुराने किले की टूटी-फूटी इमारत इस वक्त किसी विशाल दैत्य की मानिंद बहुत ही डरावनी महसूस हो रही थी। बीच-बीच में जब बिजली कड़कड़ाती तो उसकी टूटी-फूटी दीवारों पर हवा के वेग में झूल रहे झाड़-झंखाड़ और भी ज्यादा भयानक लगने लगते थे।

पर, भला खौफ की क्या मजाल थी जो उस औरत के आसपास फटकता! उसके पैरों में मौजूद पायलों से निकलने वाली 'छन-छन' की आवाज मुझे ऐसी लग रही थी जैसे मेरे कानों में हथौड़े बजाए जा रहे हों।

पोटली को कंधे पर डाले वह किले के अंदर दाखिल हो गई और शीघ्र ही उसके अंदरूनी, ऐसे हॉल में पहुंची जहां बाहर से भी ज्यादा अंधेरा था लेकिन मैं दबे पांव बराबर उसके पीछे थी।

पोटली एक तरफ रखकर उसने जैसे ही आतिशदान पर खड़ी मोमबत्ती जलाई, वैसे ही हॉल में उल्लू और चमगादड़ों की आवाजें गूंजने लगीं। साथ ही, वे अपने विशाल पंखों पर सवार होकर इधर उधर उड़ते नजर आने लगे थे।

खौफ की ज्यादती के कारण बुरी तरह कांप रही मैंने बहुत तेजी से खुद को एक थम्ब के पीछे छुपा लिया था। एक चमगादड़ मेरे पैर के बेहद करीब से दौड़ता हुआ निकला था। उस वक्त मेरे हलक से चीख निकलने वाली थी जिसे मैंने बड़ी मुश्किल से दबाया क्योंकि जान चुकी थी--

अगर औरत को वहां मेरी मौजूदगी की भनक भी लग गई तो शायद वह मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देगी।

मोमबत्ती की पीली रोशनी के कारण अब हॉल के फर्श पर इधर उधर दौड़ते छछुंदर और चूहे भी साफ नजर आ रहे थे। उस सबके अलावा मोमबत्ती की पीली रोशनी में मुझे एक ऐसा दृश्य नजर आया जिसे देखकर रूह फना हो गई।

वह एक लड़की थी।

हॉल के बीचों-बीच उल्टी लटकी लड़की।

लड़की की दोनों टांगें एक-दूसरे से मिली हुई थीं।

टखनों के पास एक मोटी रस्सी बंधी थी।

उस रस्सी का दूसरा सिरा हॉल के करीब तीस फुट ऊपर, गुंबद के साथ अटेच्ड कुंदे में बंधा हुआ था।

लड़की के हाथ और बाल फर्श की तरफ झूल रहे थे।

ऐसा मालूम पड़ता था जैसे वह काले रंग और वैसे ही बालों वाली लड़की मृत अथवा बेहोश अवस्था में हो क्योंकि जिस्म की तो बात ही दूर, पलकों तक में कंपन न था।

करीब पांच वर्षीय लड़की थी वह।

जिस्म पर लाल रंग का फ्रॉक। सफेद रंग का अंडरवियर और पैरों में सफेद जुर्राब, सफेद ही जूते।

उसके बालों में लाल रंग का रिबन बंधा हुआ था।

लड़की के सिर के ठीक नीचे फर्श पर रंगोली जैसी चीज बनी हुई थी। वह किसी बड़ी परात जैसी गोल थी। उसके अलग-अलग खानों में सिंदूर, हल्दी, आटा और सूखी कॉफी जैसी चीजें भरी थीं।

कुछ देर तक औरत उस दृश्य को देखती रही।

फिर, मेरे देखते ही देखते उसने सबसे पहले अपना ब्लाऊज उतारा। फिर ब्रॉ। पेटीकोट और अंत में पेंटी।

अब वह नग्न थी। जन्मजात नग्न।

मैं और ज्यादा डर गई।

लंबे-लंबे बालों के कारण औरत का चेहरा अब भी नजर नहीं आ रहा था। हां, मुझे उसके माथे पर लगी सुर्ख रंग की गोल चौड़ी बिंदी की झलक जरूर मिल गई थी और...उसकी मांग भी सिंदूर से भरी हुई थी। मैंने सोचा—तो क्या वह शादीशुदा है?

उस वक्त मुझे वह साक्षात् भूतनी लग रही थी।

जिस दिशा में आतिशदान पर खड़ी मोमबत्ती जल रही थी, उससे विपरीत वाली दीवार पर औरत की विशाल परछाईं जरूरत से ज्यादा ही डरावनी लग रही थी।

मैंने देखा—उसने पोटली खोली।

सबसे पहले इंसानी खोपड़ी उठाई।

एक बार फिर कुछ देर तक उसे इस तरह देखती रही जैसे वह उसकी सबसे प्रिय वस्तु हो। फिर रंगोली के नजदीक रखा एक छोटा सा मुकुट उठाया और इस तरह खोपड़ी के मस्तक पर बांध दिया जैसे उसका राजतिलक किया हो।

मुकुट पहनाने के बाद उसने खोपड़ी को इस तरह संभालकर रंगोली के बीचों-बीच रखा जैसे कांच की बनी हो और उसे, उसके टूट जाने का खतरा हो।

फिर वह रंगोली पर सभी हड्डियों को क्रमपूर्वक सलीके से सजाने लगी। धड़ की जगह धड़। कलाई की जगह कलाई। हाथ की जगह हाथ और टांगों की जगह टांगें।

अब रंगोली पर किसी व्यक्ति का पूरा कंकाल लेटा नजर आ रहा था। उस कंकाल के पैरों के नजदीक वह आलथी-पालथी मारकर बैठ गई। कमर बिल्कुल सीधी थी। गर्दन, छाती और सिर तना हुआ।

आंखें बंद।

इस वक्त क्योंकि मैं उसके ठीक सामने वाले थम्ब के पीछे थी इसलिए मुझे बालों के झरोखे से उसके होंठ कुछ बुदबुदाते से नजर आ रहे थे। जैसे किसी मंत्र का जाप कर रही हो।

मैं न जान सकी कि यह उसके मंत्रों के जाप का असर था या कुछ और कि उल्लुओं और चमगादड़ों ने उड़ना बंद कर दिया।

छछुंदर भी अब इधर-उधर नहीं दौड़ रहे थे।

अभी उसकी आंखें बंद ही थीं, मंत्रों का जाप चल ही रहा था कि मैंने देखा—रंगोली पर सजी हड्डियां हिलने लगी थीं।

उनसे खड़खड़ाहट की आवाज पैदा होने लगी थी।

हॉल में ऐसी आवाजें गूंजने लगीं जैसे कोई मर्द कराह रहा हो।

मुझे बालों के झरोखों से औरत की खुलती आंखें नजर आईं।

वह सब इतना खौफनाक था कि मुझे लकवा-सा मार गया।

आंखें पथरा गईं।

जुबान मानो मुंह में थी ही नहीं।

बालों के झरोखे से नजर आने वाली आंखों में बड़ी ही अजीब सी ज्योति नजर आई।

ऐसी ज्योति जैसी किसी वैज्ञानिक की आंखों में तब नजर आती है जब वर्षों की मेहनत के बाद वह अपने आविष्कार को साक्षात् सामने देखता है। बहुत देर तक वह हड्डियों से निकलने वाली कराहों और उनकी खड़खड़ाहट को सुनती रही और कंकाल को कांपते देखती रही।

फिर, उसी पोज में झुकी।

अपना मुंह खोपड़ी के नजदीक ले गई और फुसफसाते लहजे में बोली—"क्या तुम अभिजीत ही हो?"

"हां।" मैंने जब इस आवाज को खोपड़ी से निकलते महसूस किया तो रोंगटे खड़े हो गए।

आंखों से देखने के बाद भी मैं इस बात पर यकीन नहीं कर पा रही थी कि खोपड़ी बोल भी सकती है लेकिन जो था—सामने था। "मुझे मालूम था मेरे महबूब। मुझे मालूम था कि तुम्हें आना ही पड़ेगा।" खोपड़ी पर झुकी हुई उस खतरनाक औरत ने दीवानगी के आलम में कहा था—"इतने वर्षों तक मैंने तपस्या ही इतनी घनघोर की है। काले जादू की सारी विद्याएं सीख ली हैं मैंने और ये अंतिम विद्या थी। किसी की भी आत्मा को मनचाहे स्थान पर बुला लेना। पर मैंने तुम्हें तुम्हारी हड्डियों में ही बुलाना मुनासिब समझा क्योंकि मैंने हड्डियों पर गोश्त चढ़ाने का हुनर भी सीख लिया है।"

"काश मेरे पास जिस्म होता मेरे सपनों की रानी!" आवाज खोपड़ी से निकलती महसूस हो रही थी—"होता...तो तुझे अपनी बांहों में भर लेता!"

"अब तक कहां थे तुम?"

"न स्वर्ग में जगह मिली, न नर्क में। हर जगह से यह कहकर दुत्कार दिया गया कि इसके जेहन में मरने के बाद भी मुहब्बत भरी हुई है। अंतरिक्ष की कैद में था कि बेचैनी-सी महसूस की। ऐसा लगा जैसे तू मुझे बुला रही है। शायद तेरे बुलाने में ही इतनी श्रद्धा और शक्ति थी कि मुझे अपने इस खंड-खंड जिस्म में आना पड़ा। शायद तेरे मंत्रों में ताप ही ऐसा है कि मैं अंतरिक्ष से खिंचा चला आया।

तुझे क्या पता कि मैं तेरी मुहब्बत के लिए कितना तरस रहा हूं!"

"पता है मेरे महबूब। मुझे सब पता है। तभी तो इतना कठिन परिश्रम करके, इतनी कठिन तपस्याएं करके वो शक्तियां प्राप्त की हैं जिनके बल पर मैं तुम्हें इस खंडित शरीर में बुला सकती हूं। मगर शायद तुमने कभी अपनी महबूबा की तड़प को महसूस नहीं किया।

किया होता तो कभी मेरे बुलाए बगैर भी आ जाते।"

"मैं तो कितना चाहता था...कितना चाहता था मेरी देवी।"

मानव खोपड़ी से निकलने वाली आवाज से एक तड़पते हुए प्रेमी का दर्द टपक रहा था—"पर क्या तू नहीं जानती कि मैं चाहकर भी नहीं आ सकता था! इतनी शक्ति ही नहीं थी मुझमें।"

"तुम्हारी कसम अभिजीत। तुम्हारे बगैर मैं अधूरी हूं।" विरह

में सुलगती औरत की आवाज भर्रा गई थी। आंखों से आंसू निकलने लगे थे—"मुझे आज भी तुम्हारी बांहों का कसाव याद आता है। मुझे आज भी तुम्हारा मेरे होठों को चूमना याद आता है। मुझे आज भी तुम्हारी वो अदा याद आती है मेरे महबूब जब तुम मेरे अंग-अंग को चूमा करते थे। मैं मदहोश हो जाया करती थी।"

"उफ्फ! उफ्फ! मेरी महबूबा।" खोपड़ी से निकली तड़प चर्म सीमा पर पहुंच गई—"ऐसा है तो तू अपनी शक्तियों से मुझे शरीर क्यों नहीं दे देती! वो बाहें क्यों नहीं दे देती जिनमें मैं तुझे कस सकूं?"

"वही तो कर रही हूं मेरे सरताज, ये सारी सिद्धियां मैंने तुम्हें शरीर देने के लिए ही तो प्राप्त की हैं। तुम्हारे लिए ही तो अघोरी बनी हूं मैं! गौर से अपनी हड्डियों को देखो और फिर ये देखो कि आज पूर्णिमा की रात है।" कहने के साथ उसने रंगोली के ऊपर लटकी लड़की की तरफ इशारा किया था—"देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूं! एक लड़की। एक ऐसी लड़की जिसने कभी कोई पाप नहीं किया। इसका खून तुम्हारी हड्डियों पर चर्बी चढ़ाएगा। हड्डियों पर चर्बी चढ़ाने के बाद मैं तुम्हारी आत्मा को उसमें प्रत्यारोपित कर दूंगी और तुम उठकर खड़े हो जाओगे।"

मुझे ऐसा लगा जैसे खोपड़ी की आंखों के गड्ढे उल्टी लटकी लड़की के जिस्म पर स्थिर हो गए हों, एक बार फिर खोपड़ी से आवाज निकलती महसूस की। खुशी में झूमती हुई-सी आवाज थी वह—"क्या इसका खून पीते ही मेरी हड्डियों पर चर्बी चढ़ जाएगी?

क्या मुझे आज ही मेरा जिस्म मिल जाएगा?"

"नहीं मेरे देवता...आज नहीं।" औरत की आवाज में मायूसी थी—"ये इतना आसान नहीं है। आज तो पहली बलि है। ऐसी ऐसी सात बलियां देनी होंगी मुझे। हर बलि पर तुम्हारी इन हड्डियों में चर्बी का इजाफा होता चला जाएगा। पांचवीं बलि पर तुम सशरीर उठकर खड़े हो जाओगे और...।" औरत के लहजे में गजब की दृढ़ता आ गई—"मैं इस महाअनुष्ठान को पूरा करके रहूंगी। तीनों लोकों में ऐसी कोई ताकत नहीं है जो मुझे रोक सके।"

खोपड़ी से फिर आवाज निकली—"तो फिर देर क्यों कर रही है मेरी रानी! मुझे बलि दे। खून दे। मुझे इसका खून चाहिए। मुझे प्यास लगी है मेरी देवी। बहुत प्यासा हूं मैं। मुझे खून पिला दे।" "अभी लो मेरे दिलबर...अभी लो। होश में तो ले आऊं इसे! क्योंकि बेहोश बलि से तुम्हारी प्यास नहीं बुझेगी।" कहने के बाद वह रंगोली के नजदीक रखी कांच की एक छोटी-सी शीशी उठाने के साथ उठकर खड़ी हो गई थी।

मैं सांस रोके सबकुछ देख रही थी।

उसने जुनूनी अवस्था में शीशी का ढक्कन खोला। एक तरफ फेंका और शीशी को उल्टी लटकी लड़की के नथुनों से अड़ा दिया।

लड़की के हलक से कराहें निकलने लगीं और जल्दी ही वह पूरी तरह होश में आ गई। अब उसके मुंह से दर्द में डूबी चीखें निकल रही थीं। आंखें हैरत से फटी हुई थीं और चेहरे के जर्रे-जर्रे पर खौफ के साए मंडरा रहे थे। चीखों के बीच वह अपनी आवाज को बड़ी मुश्किल से शब्द दे सकी थी—"त-तुम कौन हो आंटी? मुझे यहां क्यों लाई हो? प्लीज...मुझे छोड़ दो। मैंने कुछ नहीं किया है।"

औरत बड़े ही डरावने अंदाज में खिलखिलाई और खोपड़ी के हलक से इतना भयंकर अट्टहास फूटा कि अपनी-अपनी छुपी हुई जगह से निकलकर उल्लू और चमगादड़ कर्कश आवाजों के साथ पुनः छटपटाते हुए से अंदाज में उड़ने लगे।

'चूं-चूं' करते छछुंदर और चूहे इधर-उधर दौड़ने लगे थे।

मेरी घिग्घी बंध गई।

देखते ही देखते औरत के हलक से भी अट्टहास फूटने लगे।

ऐसा लग रहा था जैसे आदमखोर भेड़िया आकाश की तरफ मुंह उठाकर कहकहे लगा रहा हो।

जो औरत कुछ देर पहले खोपड़ी से बात करते वक्त विरह की आग में सुलगती प्रेयसी लग रही थी वह इस वक्त डायन-सी लगी।

लड़की के रोने और चीखने की आवाजें उन आवाजों के पीछे दब कर रह गई थीं। बड़े ही विभत्स अंदाज में चिंघाड़ती हुई औरत झुकी और अगले ही पल रंगोली के एक तरफ रखा फरसा उठाकर फिर सीधी खड़ी हो गई। मेरे दिल की –ड़कनें मानो बंद हो गईं। चांडाल

औरत ने अपने आपको पोजीशन किया और...एक चिंग्घाड़ के साथ उसका फरसे वाला हाथ बिजली की-सी गति से चला।

एक ही झटके में लड़की की गर्दन धड़ से अलग होकर हॉल के एक कौने में जा गिरी थी। ठीक उसी वक्त अगर मैंने अपने हाथ से अपना मुंह न भींच लिया होता तो मेरे मुंह से निकली चीख चांडाल औरत के कानों तक पहुंच जाती।

बड़ा ही डरावना और विभत्स दृश्य था वह।

गर्दन कट जाने के बावजूद लड़की के मुंह से चीखें निकल रही थीं। वह ठीक वैसी ही स्थिति थी जैसे छिपकली की पूंछ कट जाने के बावजूद काफी देर तक तड़पती रहती है।

उल्टी लटकी लड़की की गर्दन से गर्म खून का सैलाब यूं फूटा था जैसे बांध टूटने पर सैलाब आ गया हो।

उसकी गर्दन से निकला पूरा का पूरा खून धार बनकर सीधा खोपड़ी के खुले हुए मुंह में गिरने लगा था।

उधर, हॉल के कौने में पड़ा लड़की का सिर तड़पता रहा इधर, उल्टा लटका उसका धड़ फड़फड़ाता रहा और खोपड़ी उसके गर्म और गाढ़े खून की धार से सराबोर होती रही।

हॉल में चटकारा लेने की ऐसी आवाज गूंजी जैसे किसी छोटे

बच्चे ने शहद चाटने के बाद जीभ बजाई हो।

ताजे खून से सराबोर खोपड़ी ने ऐसी डकार ली जैसे तृप्त हो गई हो। फिर उसके मुंह से ऐसी आवाज निकली जैसे टीन के पत्तर को पत्थर पर घिसा गया हो—"पहली बलि हो गई। छः और चाहिएं।"

औरत ने कहा—"मैं चढ़ाऊंगी मेरे महबूब। खुशी से चढ़ाऊंगी।

झूम-झूमकर चढ़ाऊंगी। तुमसे मुहब्बत जो करती हूं और मुहब्बत करने वाले अपने दिलबर से मिलने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

कुछ भी। जो कुछ भी करने से डरें, वे मुहब्बत नहीं कर सकते।"

"अगर तुम कामयाब हो गईं तो मैं समझ चुका हूं कि मुझे शरीर मिल जाएगा मेरी महबूबा। अंतरिक्ष की कैद से मुक्ति मिल जाएगी मुझे और फिर मैं जहां चाहूंगा, तुम्हारे साथ प्रेम-क्रीड़ा कर सकूंगा।"

"वो दिन आएगा मेरे सरताज।" औरत ने वहशियाना अंदाज में कहा—"मैं कब से तुमसे प्रेम-क्रीड़ा करने के लिए तरस रही हूं।"

"और मैं भी।" खोपड़ी ने कहा।

"हम दोनों की मुराद जरूर पूरी होगी लेकिन उसके लिए मुझे इसका दिल चाहिए।" कहने के साथ बालों से झांकती औरत की आंखें लड़की के धड़ पर जम गई थीं।

खोपड़ी ने पूछा—"दिल?"

"तुम्हें खून चाहिए, मुझे दिल। उन काली शक्तियों को बढ़ाने के लिए मेरा दिल खाना जरूरी है मेरे सरताज, जिनके बूते पर तुम्हें तुम्हारी हड्डियों में बुलाया है।" कहने के साथ औरत का फरसे वाला हाथ एक बार फिर चला।

इस बार लड़की की छाती फट गई थी और दूर-दूर तक खून के छींटे उछल गए। वे छींटे खुद औरत के नग्न जिस्म पर भी पड़े थे मगर वह मुंह फाड़कर चिल्लाने वाले अंदाज में इस कदर हंसी थी जैसे वह सब उसके लिए जश्न हो। उसने उछलकर बायां हाथ लड़की के सीने के अंदर घुसेड़ा और उसका दिल बाहर निकाल लिया।

वह अभी तक धड़क रहा था।

औरत खून से लिसड़े दिल को इस तरह चबा-चबाकर खाने लगी जैसे अमरूद खा रही हो और...मैं उस दृश्य को न देख सकी।

मुझे उबकाई आ गई। चीख को तो किसी तरह रोके हुए थी मगर उल्टी को न रोक सकी। जो खाया था, वह जोरदार आवाज के साथ हाथ की सीमा तोड़कर पेट से बाहर निकल गया।

औरत चौंकी।

बालों के झरोखे से थम्ब की तरफ देखा। गोश्त को चबा रहा उसका जबड़ा रुक गया था। और फिर, उसकी कर्कश आवाज मुकम्मल किले में गूंज गई थी—"कौन है?"

मेरे समूचे जिस्म में मौत की सिहरन दौड़ गई।

"कौन है वहां?" चांडालनी फिर दहाड़ी—"सामने आ नहीं तो थम्ब सहित भस्म कर दूंगी।"

मैं थम्ब की बैक से निकली।

मारे खौफ के मेरे हाथ जुड़े हुए थे।

जिस्म जूड़ी के मरीज की मानिंद कांप रहा था।

होंठ थरथरा रहे थे।

चेहरे के जिस जर्रे पर देखो—खौफ ही खौफ। आंखों में आंसू और मुंह से रोती हुई आवाज निकली—"म-मुझे माफ कर दो।"

"कौन है तू?"

"स-सुकन्या।"

"कहां रहती है?"

"म-मुंबई में।"

"यहां कैसे पहुंच गई?"

"अ-अपने गांव आई थी।"

"कौनसा गांव?"

"च-चमनगढ़।"

"क्या देखा?"

"क-कुछ नहीं।"

"झूठ बोलती है?"

"सच कहती हूं दीदी, मैंने कुछ नहीं देखा। किसी को कुछ नहीं बताऊंगी। मुझे यहां से जाने दो।"

इस बार वह कुछ बोली नहीं।

बस घूरती रही मुझे और मैंने बालों के उस पार उसकी आंखों के रूप में दो सुलगते हुए अंगारों को देखा।

मैं एक बार फिर खुद को बख्श देने के लिए गिड़गिड़ाना चाहती थी मगर जुबान को लकवा मार गया।

जो कहना चाहती थी वह मुंह से न निकाल सकी।

जबकि डरावनी 'शै' ने मेरी तरफ बढ़ना शुरु किया।

वह गुर्राई—"मैं देख चुकी हूं कि तू मुझे तब से देख रही है जब मैं कब्रिस्तान में कब्र खोद रही थी। मैं ये भी देख चुकी हूं कि तू और तेरा पति एक बाइक पर थे। अचानक एक पेड़ चकरोड पर गिरा।

तेरे पति ने ब्रेक मारकर बाइक रोकनी चाही। वह फिसल गई और कीचड़ पर फिसलती हुई पेड़ में जा धंसी। तेरे पति का सिर पेड़ के तने से टकराया। वहां से खून निकलने लगा। वह बेहोश हो गया।

होश में आया तो पानी मांगने लगा। फिर बेहोश हो गया तो तू पानी ढूंढने निकली और कब्रिस्तान में आ गई। वहां मुझे देखा।"

मुझे काटो तो खून नहीं।

"और अब मैं देख रही हूं कि तेरे पति को होश आ चुका है।"

वह महाभारत के संजय(वह पात्र जिसने अपनी दिव्यदृष्टि के बल पर अंधे धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र में चल रहे युद्ध का आंखों देखा हाल सुनाया था) की तरह कहती चली गई थी—"तुझे अपने आसपास न पाकर वह बौखलाया हुआ है और जोर-जोर तुझे आवाजें लगा रहा है। उसकी आवाजें सारे जंगल में गूंज रही हैं।"

इस एहसास ने मेरे रहे-सहे हौसले भी पस्त कर दिए थे कि ये करामाती औरत यहीं खड़ी-खड़ी ये देख सकती है कि सारे संसार में क्या हो रहा है।

वह ज्यों-ज्यों मेरे करीब आती जा रही थी त्यों-त्यों मेरी रही-सही हिम्मत भी जवाब देती जा रही थी।

मुझे यकीन हो चुका था कि नजदीक आते ही वह खौफनाक शै अपने नुकीले दांत मेरी गर्दन पर गड़ा देगी।

मगर तभी, मैंने एक और चमत्कार देखा—वो शै जो इस वक्त जन्मजात नंगी थी, अचानक सुर्ख साड़ी में नजर आने लगी। माथे पर सुर्ख बिंदिया। होठों पर लिपिस्टिक। मांग में सिंदूर। गले में सोने का मंगलसूत्र। सिर पर सोने का टीका। आधी-आधी कलाईयों तक भरी चूड़ियां। बीच में सोने के कंगन। सिर पर सुर्ख साड़ी का पल्लू।

दुल्हन बनी हुई थी वह।

दुल्हन।

खूबसूरत इतनी कि एक बार उसके चेहरे पर निगाह पड़ जाए तो फिर हटे ही नहीं। होठों पर किसी को भी दीवाना बना देने वाली चित्ताकर्षक मुस्कान के साथ वह मेरी तरफ बढ़ रही थी।

मैंने छलावों के बारे में सुना था। यह कि—वे जब जैसा चाहें रूप धारण कर सकते हैं। उस वक्त मुझे वह औरत छलावा ही लगी। और लगा—वह मुझे छलने की कोशिश कर रही है। करीब आते ही अपने गंदे और नुकीले दांत मेरी गर्दन में गड़ा देगी।

जंगल में महकार मुझे पुकारता फिर रहा है।

एक बार, यदि किसी तरह मैं एक बार अपने महकार के पास पहुंच जाऊं तो सबकुछ ठीक हो जाएगा। महकार, तुम्हारे स्मरण मात्र ने मुझमें अजीब-सी शक्ति का संचार कर दिया था। मेरे अंदर से कोई चीखा—"भाग सुकन्या...भाग। वरना वो खा जाएगी। बचने का बस यही एक तरीका है...भाग और भागकर किसी तरह अपने महकार के पास पहुंच जा।"

और...मैं दरवाजे की तरफ दौड़ी।

अपने पीछे मैंने चूड़ियों की खनक और पायलों की छन-छन सुनी थी। मैंने मुड़कर पीछे नहीं देखा लेकिन साफ पता लग रहा था कि वह मेरे पीछे दौड़ी चली आ रही है।

जान बचाने के लिए आदमी क्या नहीं करता!

वह मैं, भय की ज्यादती के कारण जिसके जिस्म में जरा भी जान नहीं बची थी, बेतहाशा भागती चली गई।

मुझे नहीं मालूम था कि मैं किधर भाग रही हूं।

जिधर भाग रही हूं, महकार उधर है भी या नहीं।

इस वक्त जेहन में बस एक ही बात थी। यह कि—किसी भी तरह खुद को दुनिया की सबसे खौफनाक शै से बचाना है।

कहावत है कि जब मौत पीछे लगी हो तो इंसान यूं भागता है जैसे भूत पीछे लगे हों और...मेरे पीछे तो सचमुच की भूतनी लगी हुई थी। मुझे नहीं पता कि भागते-भागते किले से कितनी दूर निकल आई। कब्रिस्तान कहां रह गया? मेरे रास्ते में पड़ा भी था या नहीं?

लेकिन अचानक एहसास हुआ कि पीछे से न भागते कदमों की आवाज आ रही है। न चूड़ियों की खनक। न पायलों की रुनझुन।

तो क्या उसने मेरा पीछा छोड़ दिया? भागते-भागते मैंने पलटकर पीछे देखा।

उसी क्षण बादलों की जबरदस्त घन-गरज के साथ बिजली चमकी और उस चमक में मुझे सामान्य से बहुत बड़ी और डरावनी छिपकली अपनी तरफ दौड़ती नजर आई।

उसे देखकर मेरे हलक से चीख निकल गई।

पैर पत्थर से टकराया।

हलक से एक और चीख निकली और हवा में उछलने के बाद दूर जा गिरी। बेहोश होने से पहले मैंने तुम्हारी आवाज सुनी थी महकार, तुम मुझे मेरा नाम लेकर पुकार रहे थे और साथ ही यह भी महसूस किया कि—छिपकली मेरे सिर पर आ गिरी थी।

"इसके बाद क्या हुआ डॉक्टर?" मैंने पगलाई हुई सी अवस्था में पूछा था—"सुकन्या ठीक तो है?"

"मेरे साथ आइए।" कजारिया टेप ऑफ करने के बाद अपनी कुर्सी से उठा और अंदरूनी कमरे की तरफ बढ़ गया।

मैं लपकने के-से अंदाज में उसके पीछे बढ़ा था।

जहां एक तरफ पूरी कहानी मेरा कलेजा हिलाए दे रही थी। यह सोचकर रूह कंपकंपाए दे रही थी कि मेरी मासूम सुकन्या को कितनी हौलनाक घटनाओं से गुजरना पड़ा था वहीं दूसरी तरफ इस गिल्टी की खातिर डूब मरने को दिल चाह रहा था कि मैं सुकन्या की पीड़ा को समझ न सका। लगातार इसी धुन में डूबा रहा कि वह भ्रम की शिकार है और तीसरी तरफ यह सोच-सोचकर मेरा मन दहाड़ें मार-मारकर रोने को कर रहा था कि जिस सुकन्या के बारे में मेरी यह धारणा बन गई थी कि उसने मेरी कसम तक की परवाह नहीं की, उसी कसम की खातिर वह किस तरह अपनी जान पर खेल गई थी।

खुद को रोने से रोकने की कोशिश करता मैं अब...ये जानने के लिए इस कदर व्याकुल था कि मेरी सुकन्या किस हाल में है कि कजारिया के क्लीनिक के बाहरी कमरे से अंदरूनी कमरे में जाने में जो एक मिनट लगा वह मुझे एक सदी जैसा लगा था।

अंदर पहुंचकर देखा—वह आंखें बंद किए कजारिया की उस टेबल पर लेटी थी जिस पर वह मरीज को अतीत या पूर्वजन्म में ले जाता था। उसे ठीकठाक और शांत भाव से सोती देखकर मुझे ऐसी राहत मिली थी जैसे मरने वाले को जिंदगी मिल जाए।

ये शब्द मेरे मुंह से स्वतः फूट पड़े—"भगवान का लाख-लाख धन्यवाद कि पूरा किस्सा टेप करा देने के बाद भी ये ठीक है।"

कजारिया ने मेरी तरफ ऐसी नजरों से देखा था जैसे मुझ पर तरस खा रहा हो जबकि कम से कम उस वक्त मैं उसकी नजरों का मतलब जरा भी न समझते हुए बोला—"इसका मतलब तो ये हुआ डॉक्टर कि सुकन्या का यह सोचना वाकई वहम था कि छिपकली इसके सिर को कुरेदकर अंदर घुस जाएगी और इसे मार डालेगी?"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।" कजारिया ने आहिस्ता से कहा।

मैंने चौंककर उसकी तरफ देखा—"क्या मतलब?"

"जैसा कि पहले भी कह चुका हूं, ऐसा केस मेरे जीवन में पहले कभी नहीं आया।" कजारिया के चेहरे पर चिंता की ही नहीं बल्कि खौफ की लकीरें भी नजर आ रही थीं—"मुझे नहीं पता कि कोई अदृश्य छिपकली इस तरह किसी के सिर पर सवार हो भी सकती है या नहीं और अगर हो सकती है तो कैसे? मेडिकल साइंस इस बात को किसी कीमत पर सच मानने की परमीशन नहीं देती मगर मैंने अपनी आंखों से जो देखा है, चाहूं भी तो उसे झुठला नहीं सकता।"

"क-क्या देखा है आपने अपनी आंखों से?" मेरे होश फाख्ता हो गए थे—"मुझे बताओ डॉक्टर।"

"मैं नहीं कह सकता कि वो छिपकली है या कोई और, उसे छिपकली तो हम केवल इसलिए कह रहे हैं क्योंकि आपकी पत्नी का कहना है कि वह छिपकली है लेकिन इतना तो मैंने अपनी आंखों से देख लिया है और कानों से सुन लिया है कि इसके सिर पर कोई न कोई बला सवार जरूर है।"

मैंने अपने 'धाड़-धाड़' कर रहे दिल को काबू में रखने का प्रयास करते हुए पूछा—"अ-आपने क्या देख और सुन लिया है?"

"आओ दिखाता हूं।" कजारिया टेबल की तरफ बढ़ा।

सुकन्या के सिर के करीब पहुंचा।

मैं उसके साथ ही था।

उसने अपनी उंगलियों से सुकन्या के सिर के ठीक बीचों-बीच से थोड़े से बाल हटाए और उनके हटते ही जो दृश्य मैंने देखा उसे देखकर सारे जिस्म में झुरझुरी दौड़ गई क्योंकि वहां हल्का-सा जख्म था। देखने मात्र से पता लग रहा था कि जख्म बिल्कुल ताजा है और कुछ ही देर पहले किसी ने अपने नुकीले पंजों से खुरचकर बनाया है।

जैसे चूहे ने किसी चीज को कुतर लिया हो।

जख्म के कारण सिर के उस हिस्से में जहां 'कपाल' होता है, बहुत ही छोटा-सा गड्ढा नजर आ रहा था।

मैं विस्फारित आंखों से उस गड्ढे को देखता रह गया था। मुंह से बोल न फूट पा रहा था जबकि कजारिया ने कहा—"इसे देखने के बाद मैं बेहद...बेहद हैरान और फिक्रमंद हूं।"

मैंने मूर्खों की मानिंद पूछा—"क्या ये छिपकली ने बनाया है?"

"आपकी पत्नी की बातों पर यकीन करें तो—हां।"

"वरना?"

"किसी न किसी ने तो बनाया ही है। जख्म बिल्कुल ताजा है, इसलिए मैं ये भी नहीं कह सकता कि ये जख्म इसके सिर पर मेरे क्लीनिक पर आने से पहले का होगा।"

"आपको सुकन्या का सिर चैक करने की जरूरत क्यों पड़ी?"

"क्योंकि जैसे ही मैं इसे हिप्नोटिज्म से बाहर लाया, मैंने ऐसा खेल देखा जैसा अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था।"

"क-कैसा खेल?" मेरी रूह तक कांप रही थी।

"इससे पहले के मेरे सारे मरीज जब हिप्नोटिज्म से बाहर आए तो खुश, प्रसन्नचित्त, तनावमुक्त और आनंद में डूबे होते थे क्योंकि उन्होंने अपनी बीमारी का कारण जान लिया होता था मगर उन सभी से उलट। जैसे ही मैं इसे हिप्नोटिज्म से बाहर लाया तो ये दर्द से छटपटाने लगी। अपने सिर की तरफ देखती हुई बार-बार कहने लगी कि—मेरे सिर को मत कुरेदो। बात अगर इतनी ही होती तब भी शायद मैं ये सोचकर रह जाता कि मरीज के दिमाग पर अभी-भी उस हौलनाक घटना का असर है जो इसने देखी थी मगर तभी मैंने

इसके मुंह से दूसरी आवाज सुनी।"

"दूसरी आवाज?" मैं उछल पड़ा।

"बड़ी ही भयानक और डरावनी आवाज थी वह।" कहते वक्त कजारिया के चेहरे पर खौफ के साए नजर आने लगे थे—"ऐसी, कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए।"

"और वो आवाज भी सुकन्या के मुंह से ही निकली थी?"

"यही तो हैरत की बात है।"

"क्या कहा उसने?"

"वह गुस्से में नजर आ रही थी। कहने लगी—'अपने आपको जरूरत से ज्यादा चालाक समझती है तू! मेरे कहर से बचने की अच्छी तरकीब निकाली तूने। खुद को लाश बनाकर सारी घटना टेप करा दी मगर किसी भी तरह की चालाकी दिखाकर तू मेरे कहर से नहीं बच सकती। अब तो बिल्कुल नहीं, मैं तुझे ऐसी पीड़ा देकर मारुंगी जैसी पहले कभी किसी ने नहीं झेली होगी। इसीलिए मैंने उस वक्त तेरे सिर को नहीं खुरचा जब तू लाश बनी हुई थी क्योंकि उस अवस्था में तू मेरे द्वारा दी जाने वाली सजा का एहसास नहीं कर सकती थी। ले...अब भुगत अपनी करनी की सजा।'

'नहीं-नहीं। ऐसा मत करो दीदी।' उसने अपनी ओरिजिनल आवाज में कहा था—'मेरे सिर को मत खुरचो। बहुत दर्द हो रहा है।

प्लीज...ऐसी भयानक सजा मत दो मुझे।'

"फिर उसने उसी भयानक आवाज में अट्टहास लगाया जो मेरे जिस्म में बहने वाले खून को ठंडा करती चली गई थी।" उस दृश्य को याद करके कजारिया की आंखें आतंक में डूबी नजर आने लगी थीं—"मैंने देखा, कभी तुम्हारी पत्नी के मुंह से उसकी ऑरिजिनल आवाज निकल रही थी, कभी डरावनी आवाज। जैसे दोनों में युद्ध चल रहा था। जैसे भयानक आवाज उसे सताकर खुश हो रही हो और ऑरिजिनल आवाज असहनीय पीड़ा से छटपटा रही हो।"

मैंने कांपते दिल से पूछा—"उ-उसके बाद?"

"न वह सब मुझ पर देखा गया, न सुना गया इसलिए इसे फिर हिप्नोटिज्म की हालत में ले गया।" कजारिया ने कहा—"वैसा होते ही

सबकुछ शांत हो गया। न ये छटपटा रही थी। न गिड़गिड़ा रही थी। न रहम की भीख मांग रही थी और न ही भयानक अंदाज में कहकहे लगा रही थी। अपने स्थान पर खड़ा थरथर कांप रहा मैं यह समझने की कोशिश कर रहा था कि ये क्या हुआ था मगर कुछ समझ में नहीं आया। कुछ देर बाद जब खुद को किसी हद तक काबू में कर लिया तो सोचा–इसके सिर को चैक करना चाहिए। किसी ने सचमुच इसके सिर को खुरचा है या वो सब इसका वहम था! पुष्टि करने के लिए मैंने सिर देखा तो जख्म को देखकर दिमाग की सभी चूलें हिल गईं। मेरी समझ में अभी तक नहीं आ रहा है कि ऐसा कैसे हो सकता है! इसके पर्स में तुम्हारा नंबर मौजूद था। तुम्हें फोन करने के अलावा और कुछ न सूझा।"

कजारिया के चुप होने के बाद बहुत देर तक मेरी समझ में नहीं आया कि मुझे क्या बोलना चाहिए।

खौफ से थर्राया हुआ दिल मेरी पसलियों पर सिर पटक रहा था।

दिमाग में कोई विचार ही बाकी न बचा था। जैसे उसमें शून्य ने आकर कब्जा जमा लिया हो।

वहां छाई चुप्पी कजारिया ने ही तोड़ी–"अब तो मुझे इसे हिप्नोटिज्म से बाहर लाने में भी डर लग रहा है।"

"पर इस अवस्था में कब तक रख सकते हैं?"

"मेरे दिमाग में भी यही सवाल है।"

मैं काफी देर तक सोचता रहा कि क्या करना चाहिए।

फिर, दिमाग में यह ख्याल उभरा कि डॉक्टर कजारिया ने यह नई बात बताई है कि उसने सुकन्या के मुंह से दो आवाजें सुनीं।

कम से कम मेरे सामने ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था शायद इसलिए मन में सुकन्या को वापस होश में लाने की जिज्ञासा जागी।

मैं अपनी आंखों से देखना चाहता था कि वह सब कैसे हुआ इसलिए बोला–"इसे हिप्नोटिज्म से बाहर लाओ डॉक्टर।"

"अगर फिर वही सब शुरु हो गया?" कजारिया डरा हुआ था।

"वही देखना चाहता हूं मैं कि शुरु होता है या नहीं।" मैं बड़ी मुश्किल से कह सका था–"अगर फिर वैसा ही हो तो आप जल्दी से जल्दी इसे इसी अवस्था में ले जाना।"

शायद कजारिया भी यह देखना चाहता था कि पुनः वही प्रक्रिया शुरु होती है या नहीं, मेरी स्वीकृति ने उसे बल दिया।

वह अपनी मशीन की तरफ बढ़ा।

उस मशीन की तरफ जिस पर पचासों रंग बिरंगे बल्ब लगे हुए थे। जिससे कई कंप्यूटर और ऐसी-ऐसी मशीनें अटेच्ड थीं जिनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता था।

उसने मशीन में लगे बल्ब ऑफ करने शुरु किए।

मैंने महसूस किया कि उसका हाथ कांप रहा था और वह बार बार सुकन्या के चेहरे की तरफ देख रहा था।

एक-एक करके उसने सभी बल्ब आफ कर दिए और अंत में जैसे ही मशीन से अटेच्ड वह पट्टा हटाया जो सुकन्या के मस्तक को उससे जोड़े हुए था–

सुकन्या की आंखें खुल गईं। वह खाली-खाली आंखों से मशीन से अटेज्ड उस बड़ी-सी फोकस लाइट को देख रही थी जो ठीक उसके सिर के ऊपर लगी हुई थी।

मुझे नहीं मालूम कि उस वक्त कजारिया की हालत क्या थी क्योंकि मैं उसकी तरफ नहीं, एकटक सुकन्या की तरफ देख रहा था और अपने दिल के धड़कने की आवाज मेरे कानों से इस तरह टकरा रही थी जैसे स्टेथस्कोप से सुन रहा होऊं।

सुकन्या के जिस्म में हरकत हुई और एकाएक वह इस तरह उठकर बैठ गई जैसे किसी और ने ऐसा किया हो।

वह मेरी तरफ देख रही थी और जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा जैसे इस वक्त मुझे सुकन्या नहीं बल्कि उसकी आंखों से कोई और देख रहा हो। वह मुस्कराई। बड़ी ही डरावनी मुस्कान थी वह। ऐसी, जिसने मेरे सारे जिस्म में मौत की सिहरन दौड़ा दी।

भले ही मैंने चाहे जितना संभलकर कहा हो मगर आवाज बुरी तरह कांप रही थी—"त-तुम ठीक हो न सुकन्या?"

"मान गई।" उसके मुंह से डरावनी आवाज निकली—"मान गई कि ये तुझसे उतनी ही मुहब्बत करती है जितनी मैं अभिजीत से।"

"क-कौन हो तुम?" मेरा जिस्म पसीने-पसीने हो गया था। वह बड़े ही डरावने अंदाज में हंसती हुई बोली—"छिपकली।" "प-प्लीज। मेरी सुकन्या का पीछा छोड़ दो।" डर की ज्यादती के कारण मैंने हाथ जोड़ लिए थे।

"पीछा कहां कर रही हूं मैं? मैं तो इसके साथ, इसके सिर पर रह रही हूं। पीछा तो तब किया था जब इसने किले से भागने की कोशिश की। गधी, सोचती थी कि इस तरह भागकर बच जाएगी।

आज तक मुझसे कोई बचा है जो ये बचेगी?"

"वो सुकन्या की गलती थी। इसकी तरफ से मैं माफी मांगता हूं। माफ कर दो सुकन्या को।"

"इसकी वो गलती तो मैंने माफ कर दी थी। तभी तो इसके सिर को खुरचा नहीं, जीभ से भी नहीं चाटा। बस चुपचाप चैन से सो गई थी लेकिन फिर इसने तुम्हें वो सब बताने की कोशिश की। तब मैंने सिर को खुरचना शुरु किया और कहा कि अगर किसी को कुछ बताएगी तो इसी तरह सिर खुरच खुरचकर तेरे कपाल के अंदर घुस जाऊंगी और तुझे मार डालूंगी। इसने वादा किया कि ऐसा नहीं करुंगी। मैं फिर खामोशी के साथ सो गई। बस तभी अपने पंजों का इस्तेमाल करती जब ये तुम्हें बताने की कोशिश करती।"

"उसका दोषी मैं हूं।" मैंने बहुत हिम्मत करके उससे बातें करनीशुरु कर दी थीं—"तुम तो जानती ही होगी, मैं ही इससे बार-बार उस रात के बारे में पूछता था।"

"ऐसा क्या है जो मैं नहीं जानती?"

"तो फिर उसकी सजा मुझे दो।"

"क्या कहना चाहते हो?" किसी ने सुकन्या की आंखों से मुझे बहुत ही तीखे अंदाज में देखा था—"इसके सिर से छोड़कर अपना आशियाना तुम्हारे सिर पर बना लूं?"

एक सेकिंड के लिए तो मैं बौखला ही गया था लेकिन अगले ही पल पूरी दृढ़ता से कहा—"हां, अगर रहने के लिए तुम्हें एक सिर चाहिए ही तो मेरा सिर हाजिर है मगर सुकन्या को छोड़ दो।"

वह छत की तरफ चेहरा उठाकर खिलखिलाकर हंसी। खून को जमा देने वाली खिलखिलाहट थी वह। बोली—"मान गई। मान गई कि सुकन्या तुम्हें ही नहीं, तुम भी सुकन्या से उतना ही प्यार करते हो। ठीक उतना ही जितना मेरा अभिजीत मुझसे करता है इसलिए जी चाहता है तुम्हें...तुम दोनों को माफ कर दूं।"

मेरे दिल में उम्मीद की किरन जागी। लगभग रोते हुए लेकिन उत्साहित लहजे में कहा था मैंने—"तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।" "मगर क्या करूं!" उसने किसी बच्चे की-सी मासूमियत के साथ अपने दोनों हाथों की मुट्ठियां ठुड्डी पर लगाने के साथ कहा था—"मजबूरी है। मेरी दुनिया के भी कुछ नियम हैं। चाहूं भी तो सुकन्या को माफ नहीं कर सकती।"

"ऐसा मत कहो।" मैंने हाथ जोड़कर कहा—"प्लीज, ऐसा मत कहो। मैं सुकन्या के बगैर नहीं रह सकता।"

"तो क्या हुआ? काला जादू सीख लेना। अघोरी बन जाना और फिर मेरी तरह सुकन्या को उसकी हड्डियों में बुलाया करना। अब तो

तुमने जान ही लिया है कि हड्डियों में किसी की आत्मा को बुलाया जा सकता है मगर देखने और करने में बहुत अंतर है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है बच्चू! उन काली विद्याओं को प्राप्त करने में सालों साल लग जाते हैं जिनके बूते पर आज मैं तुम्हारी पत्नी के मुंह से तुमसे बात कर रही हूं।"

"ठ-ठीक ही कहा तुमने।" मैंने उसे खुश करने की मंशा से कहा था—"उन शक्तियों को तो तुम जैसी विलक्षण लड़की ही प्राप्त कर सकती है। मुझ जैसे साधारण आदमी के बस्का वो सब कहां है!

इसीलिए तो कह रहा हूं—हमें माफ कर दो।"

"एक बार कही बात तुम्हारी समझ में नहीं आती क्या?" इस बार वह थोड़ी नाराज नजर आई थी—"बताया तो है कि मैं अपनी दुनिया के नियमों से बंधी हूं और फिर ये समझौता सुकन्या ने तोड़ा है और उससे भी ज्यादा गुस्सा मुझे इस बात पर है कि बड़ी चालाकी से तोड़ा है। बहुत ही ज्यादा दिमाग रखती है तेरी बीवी। समय रहते समझ गई कि अगर होशो-हवास में रहते किसी को कुछ बताने की कोशिश की तो मैं बात पूरी होने से पहले सिर खुरच खुरचकर इसे मार डालूंगी इसलिए पट्ठी डॉक्टर कजारिया के पास आई। खुद को ऐसी हालत में ले गई कि मैं इसका सिर खुरचूं भी तो पेन न हो और अपनी बात पूरी कर ले। इसलिए...अब मैंने भी सोच लिया है—मैं इसे इस पेन से नहीं बचने दूंगी। तड़पा-तड़पाकर मारुंगी। तभी तो जैसे ही डॉक्टर कजारिया ने इसे पुनः बेसुध किया, मैंने अपना काम रोक दिया और अब...जब ये पुनः होश में आ गई है तो मैं तड़पा तड़पाकर मारुंगी, ऐसे...ऐसे।"

"न-नहीं। नहीं दीदी।" सुकन्या के मुंह से ऑरिजनल आवाज निकली और साथ ही वह इस तरह छटपटाने लगी जैसे किसी को जलती हुई आग में झोंक दिया गया हो।

"प्लीज...प्लीज...तुम जो भी कोई हो मेरी बात सुनो।" मैं रोता हुआ दहाड़ उठा था—"मेरी खातिर, हमारे प्यार की खातिर सुकन्या को बख्श दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं—पैर पड़ता हूं।"

मेरी किसी गिड़गिड़ाहट का उस शैतानी बला पर कोई असर नहीं हुआ। सुकन्या मेरी आंखों के सामने यूं ही फड़फड़ाती रही।

वही खेल शुरु हो गया था जो कजारिया ने बताया था।

सुकन्या के मुंह से वैसे अट्टहास भी फूट रहे थे जैसे शैतान के मुंह से किसी को तकलीफ देते वक्त फूटते हैं और वैसी चीखें भी जैसी तकलीफ से गुजरते व्यक्ति के मुंह से निकलती हैं।

"इसे हिप्नोटाइज करो डॉक्टर, सुकन्या को फिर हिप्नोटाइज कर दो। जल्दी करो।" दहाड़ने के साथ मैं न केवल सुकन्या के करीब पहुंच गया था बल्कि उसके सिर को सहलाने लगा था।

कुछ भी तो नहीं था वहां—कुछ भी नहीं।

कजारिया ने पूरी फुर्ती से सबसे पहले सुकन्या के माथे पर पट्टा कसा। फिर बिजली की-सी गति से मशीन के सारे बल्ब ऑन करता चला गया। फिर भी, सुकन्या को मशीन से जोड़ने में उसे सात आठ मिनट लग गए थे और वह पूरी तरह मशीन से जुड़ चुकी है, इस बात का पता मुझे तभी लगा जब सुकन्या के मुंह से किसी भी किस्म की आवाज निकलनी बंद हो गई।

अब वह पहले की तरह सोई हुई नजर आ रही थी।

मैंने जल्दी से सिर चैक किया—वहां ताजा खून और गोश्त के कतरे मौजूद थे। गड्ढा कुछ गहरा हो चुका था।

उस सबको देखकर मेरी जो हालत हुई उसे शब्दों में बयान नहीं कर सकता। बस इतना कह सकता हूं कि बहुत देर तक उस गड्ढे को देखता रहा। सच कहूं तो वो ये है कि—मैं यह देख रहा था कि गड्ढा और गहरा हो रहा है या नहीं।

और मैंने पाया—नहीं।

मतलब अब छिपकली उसके सिर को नहीं खुरच रही थी।

मुझे राहत मिली।

मगर, कितना बड़ा बेवकूफ था मैं!

मुझे उस बात से राहत मिली जिससे दुख होना चाहिए था।

यह बात मेरी समझ में अगले कुछ दिनों में आई। तब, जबकि मैं उसे लिए शहर भर के डॉक्टरों के पास दौड़ा-दौड़ा फिर रहा था।

कजारिया की टेबल से उठाने से पहले मैंने उससे सुकन्या को बेहोश कर देने के लिए कहा था, उसने वैसा ही कर दिया।

मैं उसे घर ले आया।

होश में आते ही वह फिर चीखने-चिल्लाने लगती।

मतलब—छिपकली को बहस हो गई थी।

वह तभी अपना काम शुरु करती थी जब वह होश में होती थी।

जैसे ही सुकन्या को बेहोश कर दिया जाता वह उसके सिर को खुरचना बंद कर देती।

बड़ी अजीब मुसीबत में फंस गया था मैं।

ऐसी मुसीबत में जैसी में मुझसे पहले शायद ही कोई फंसा हो।

भला कोई अपने किसी प्यारे को कब तक नींद और बेहोशी के इंजेक्शंस पर रख सकता है! रखे भी तो उसका मतलब क्या हुआ?

इंसान तो मरा हुआ है...बल्कि उससे भी बदतर।

न जिंदा, न मरा हुआ!

मैं डॉक्टरों के पास भागा फिर रहा था।

शायद ही मुंबई का कोई डॉक्टर छोड़ा हो।

जिस भी नए डॉक्टर से मिलता, वह कहता—मरीज को देखे बगैर और उसे होश में लाए बगैर कुछ नहीं कहा जा सकता।

मैं सुकन्या को ले जाता।

डॉक्टर होश में लाता और फिर वही खूनी खेल शुरु हो जाता।

डॉक्टर उसे फिर बेहोश करता और यह कहकर पल्ला झाड़ लेता कि मरीज को भ्रम हुआ है।

वह जितनी बार होश में आती, गड्ढा कुछ और गहरा हो जाता।

अब तो मुझे यह लगने लगा था कि वह कपाल के अंदर पहुंचने वाला है। होश में आते ही सुकन्या जिस कदर तड़पती थी, वह तड़प मुझ पर देखी नहीं जाती थी और सच कहता हूं अंगद, उस वक्त मेरा दिल चाहता था कि इतनी पीड़ा झेलने से अच्छा तो ये है कि सुकन्या मर ही जाए। जरा सोचकर देखो , मैं उस देवी की मौत की दुआ करने लगा था जिससे सबसे ज्यादा प्यार करता था।

उस स्टेज पर पहुंचकर मुझे यह एहसास हुआ कि इंसान अपने सबसे प्रिय शख्स की मौत तो सह सकता है मगर उसके कष्ट को नहीं सह सकता। तभी तो एक बार जब एक डॉक्टर उसे होश में लाया और छिपकली ने अपना काम शुरु कर दिया तो मैंने हाथ जोड़ कर उससे कहा था—'अगर तू इसे मारना ही चाहती है तो मार डाल मगर इस तरह तड़पा-तड़पाकर मत मार। जब ये बेहोश हो तभी अपनी हवस पूरी कर ले।'

मगर, उसे तो जैसे इस खेल में मजा आ रहा था।

मैं लीलावती अस्पताल के सबसे बड़े डॉक्टर से मिला।

सारे एक्सरे दिखाए, सीटी-स्केन और एमआरआइ दिखाए।

शुरू से तब तक की सारी केस हिस्ट्री बताई। यह भी बताया कि ये बला सुकन्या के सिर पर कब, कहां से और क्यों सवार हुई थी लेकिन उसने भी अन्य डाक्टर्स की तरह सिरे से किसी छिपकली के अस्तित्व को मानने से इंकार कर दिया।

उसका कहना था—'ये सब अंधविश्वास की बातें हैं। तुम्हारी पत्नी के सिर पर कोई छिपकली-विपकली सवार नहीं है। उसे दिमाग की कोई बीमारी लग गई है। एडमिट करना पड़ेगा।'

सहमत न होते हुए भी मैंने सुकन्या को एडमिट कर दिया। चारा भी क्या था?

यह रिक्वेस्ट जरूर की कि उसे होश में न लाया जाए। जो भी इलाज करना है बेहोश रखकर ही किया जाए।

अस्पताल में उसके सिर के जख्म को भरने का इलाज शुरु कर दिया गया था। उस पर हमेशा पट्टी बंधी रहती थी। जख्म भरने भी लगा था। तीसरे दिन डॉक्टर ने कहा कि सुकन्या के दिमाग का आपरेशन करना पड़ेगा। मैंने बस इतना कहा—'उसे बेहोश रखकर जो भी किया जा सकता है कीजिए।'

डॉक्टर बोला—'ऑपरेशन के दरम्यान तो वैसे ही बेहोश रहेगी।'

मैंने परमीशन दे दी।

आपरेशन हो गया। डॉक्टर ने यह भी कहा कि आपरेशन सफल हुआ है। तीसरे दिन उसे होश में लाने की बात उठी।

मैंने कहा—'अगर फिर वही सब हुआ डॉक्टर?'

डॉक्टर हंसने लगा। बोला—'डरो मत, मेरे ख्याल से अब वैसा कुछ नहीं होना चाहिए और वैसे भी, किसी व्यक्ति को सदा के लिए बेहोश कैसे रखा जा सकता है? और फिर, होश में लाए बगैर हम कैसे जान सकते हैं कि आपरेशन का कुछ फायदा भी हुआ या नहीं?'

डॉक्टर की बात हंडरेड परसेंट तर्कसंगत थी।

परमीशन देने के अलावा मेरे पास कोई चारा न था।

बस इतनी रिक्वेस्ट की कि जब उसे होश में लाया जाए तो मैं सामने होना चाहियूं।

हालांकि मैं सुकन्या को तड़पते देख नहीं पाता था मगर यह भी मंजूर न था कि वह मेरी गैर मौजूदगी में, दर्द से तड़पती रहे।

उस वक्त मेरे अनकांशस माइंड में शायद यह बात थी कि अगर फिर खूनी खेल शुरु हुआ तो चीख-चीखकर कम से कम डॉक्टरों को उसे जल्दी से जल्दी बेहोश करने पर तो मजबूर कर दूंगा!

एक बार फिर उसे होश में लाया गया।

एक बार फिर छिपकली का तांडव शुरु हो गया और मैं पागलों की तरह चीखने लगा—'आपके ऑपरेशन से भी कुछ नहीं हुआ, डॉक्टर प्लीज...प्लीज, उसे जल्दी से बेहोश कर दीजिए।'

डॉक्टरों ने भी खूब फुर्ती दिखाई मगर, शायद समय पूरा हो चुका था। मैं उसे सुकन्या की मौत नहीं कहूंगा। मुक्ति कहूंगा। उसे असहनीय पीड़ा से मुक्ति मिली थी—उसे नर्क जैसी जिंदगी से मुक्ति मिली थी मगर जो कुछ हुआ था उसे देखकर जहां मेरे होश फाख्ता हो गए थे, वहां डॉक्टर हैरान रह गए थे।

"ऐसा क्या हुआ था?" तरूणा ने पूछा।

"जिस वक्त सुकन्या को नींद के इंजेक्शन देने की कोशिश की जा रही थी ठीक उसी समय 'फट्ट' की ऐसी जोरदार आवाज के साथ उसका कपाल फटा कि सभी डॉक्टर और नर्सें उछलकर उससे दूर हट गए। सुकन्या का कपाल किसी छोटे बम की तरह फटा था और...खून और गोश्त इस तरह उछला था जैसे फटने पर बम का बारूद उछलता है। मुझ सहित सभी उसके जख्म की तरफ देख रहे थे कि सबके हलकों से चीखें निकल गईं क्योंकि ठीक उसी वक्त वही छिपकली सुकन्या के सिर से रूम के फर्श पर कूदी थी जिसे कुछ देर पहले हमने रिम्पी के सिर से कूदकर तरूणा के पेट पर गुम होते देखा है। छिपकली दौड़ती हुई बाथरूम की तरफ गई तथा फर्श और किवाड़ के बीच के गैप से बाथरूम में चली गई। मैं चीख पड़ा था—'देखो, मैंने कहा था कि सुकन्या के सिर पर छिपकली है।'

डॉक्टर इस बात पर हैरान जरूर थे कि वहां छिपकली कहां से आ गई मगर अब भी यह मानने को तैयार नहीं थे कि वह सुकन्या के सिर में ही रहती थी लेकिन उनके मानने न मानने से अब मुझ पर क्या फर्क पड़ने वाला था?

सुकन्या की लाश मेरे सामने पड़ी थी मगर कम से कम उस वक्त मैं रोया नहीं क्योंकि मेरे ख्याल से उसे मुक्ति मिली थी।

नर्क जैसी जिंदगी से मुक्ति। असहनीय पीड़ा से मुक्ति।

"और अब...अब मैंने उसी छिपकली को रिम्पी के सिर पर देखा है।" महकार कहता चला जा रहा था—"मैंने ही क्यों, तुम दोनों ने भी देखा है। शायद तुम भी समझ गए होंगे कि मेरी रिम्पी को कोई नहीं बचा सकता। ठीक उसी तरह, जैसे सुकन्या को कोई नहीं बचा सका। वो रिम्पी की ऐसी हालत कर देगी कि शायद एक दिन मैं भगवान से सुकन्या की तरह उसकी भी मौत मांगने लगूंगा।"

"नहीं महकार...नहीं।" अंगद के जबड़े कस गए थे। चेहरा सुर्ख हो गया था। भूकंप के-से भाव नजर आ रहे थे उस पर। मुट्ठियां भींचे कहा था उसने—"मैं रिम्पी को कुछ नहीं होने दूंगा।"

"कोई कुछ नहीं कर सकता अंगद।" महकार के हर लफ्ज में निराशा का भाव था—"क्या सुकन्या के बारे में सुनने के बाद भी तुम्हें लगता है कि कोई कुछ कर सकता है?"

"उसने मेरी दीदी को तड़पा-तड़पाकर मारा है, तिल-तिल करके मारा है और अब वह हरामजादी मेरी भांजी को मारने आई है।" अंगद के मुंह से लफ्ज नहीं अंगारे निकल रहे थे—"मैं कसम खाता हूं कि मैं भी उससे गिन-गिनकर बदला लूंगा।"

महकार ने चौंककर अंगद की तरफ देखा था। बोला—"सुकन्या तुम्हारी दीदी! और रिम्पी भांजी! ये तुम क्या कह रहे हो अंगद! और तुम्हारे चेहरे पर ये आग! किसलिए अंगद? किसलिए?"

"क्योंकि मैं सुजान हूं महकार...सुजान हूं मैं।" हलक फाड़ने के साथ वह रो पड़ा था—"वो सुजान, जो बारह साल से अपनी दीदी के लिए तड़प रहा था। वो सुजान, जिसे किस्मत जब दीदी के घर लाई तो दीदी नहीं थी। वो सुजान, जिसे कलेजे पर पत्थर रखकर अपनी दीदी के दर्दनाक अंत की कहानी सुननी पड़ी और वो सुजान, जिसकी आंखों के सामने वो हरामजादी छिपकली अभी-अभी जिसकी भांजी के सिर से कूदकर गई है। उस भांजी के सिर से जो मेरी दीदी की आखिरी निशानी है। जो मेरी दीदी की परछाई है। मैं नहीं मरने दूंगा। मैं रिम्पी को कुछ भी नहीं होने दूंगा महकार, उससे पहले ही मैं छिपकली को चीर-फाड़कर सुखा दूंगा।"

महकार पर जैसे कुछ कहते न बन पड़ा।

वह अंगद की तरफ इस तरह देख रहा था जैसे सपना देख रहा हो। बहुत देर बाद बोला—"अगर तुम सुजान ही हो तो इस बात का दुख तो मुझे भी है अंगद कि बहुत देर से आए। पांच साल पहले आ गए होते तो...तो कुछ तो सुख मिल जाता सुकन्या को! मरने से पहले कम से कम एक बार वह अपने उस भाई का चेहरा तो देख लेती जिससे सबसे ज्यादा प्यार करती थी।"

"मैंने तुमसे कहा था न तरूणा कि पता नहीं किस्मत मुझसे क्या कराना चाहती है!" उसने तरूणा की तरफ पलटते हुए कहा—"अब मेरी समझ में कुछ आ रहा है। उस छिपकली की तबाही ऊपर वाले ने शायद मेरे हाथों से लिखी है। इसीलिए उसने मुझे यहां भेजा है।" "तुम क्या कह रहे हो अंगद?" महकार बोला—"मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा।"

"तुम तो रिम्पी की जिद पर 'एक थी डायन' के सेट से इमरान हाशमी को लेने गए थे मगर हालात ऐसे बने कि मुझे लेकर आ गए।

कुदरत ने किस तरह घुमा-फिराकर मुझे मेरी दीदी के घर भेज दिया। दीदी के दर्दनाक अंत की कहानी और अब...मेरी नॉलिज में ये आना कि उस खतरनाक औरत के निशाने पर मेरी भांजी है। इस सबका कोई तो मतलब होगा महकार—कोई तो मतलब होगा?"

"संभालो अंगद...संभालो खुद को।" काफी देर से खामोश खड़ी तरूणा बोली—"खुद को जजबातों के भंवर से बाहर निकालो।"

अंगद के कुछ भी कहने से पहले महकार बोल पड़ा—"ये बात तो समझ में आ गई थी कि वो सुकन्या के पीछे क्यों पड़ी, क्यों उसकी जान ली लेकिन ये बात समझ में नहीं आई कि वो रिम्पी के सिर पर क्यों सवार हो गई है? मासूम रिम्पी ने उसका क्या बिगाड़ा है?"

"क्योंकि वह पूर्णिमा को पैदा हुई है।" तरूणा ने कहा।

"पूर्णिमा को पैदा हुई है?" महकार चौंका—"इससे उसके रिम्पी के सिर पर सवार होने का क्या मतलब हुआ?"

"कोई मतलब नहीं हुआ। बेसिर-पैर के अनुमान मत लगाओ तरूणा।" अंगद समझ गया था कि तरूणा महकार को उसके सपने के बारे में बताने वाली है। यह बात उसके दिमाग में फौरन आ गई थी कि यदि महकार को उसके सपने के बारे में पता लग गया तो वह निराशा के ऐसे भंवर में डूब जाएगा जिससे कभी नहीं निकाला जा सकेगा इसलिए तरूणा के कुछ भी कहने से पहले कहता चला गया था—"यदि वो पूर्णिमा की रात को दीदी के सिर पर सवार हुई तो इससे रिम्पी के पूर्णिमा को पैदा होने का क्या संबंध हुआ? कुछ नहीं! बेकार की तिगड़में मत जोड़ो तरूणा।"

तरूणा बौखलाकर रह गई थी।

टॉपिक को पूरी तरह चेंज करने की मंशा से अंगद आगे भी कुछ कहने वाला था कि उसका मोबाइल बजा।

कॉल रिसीव करके 'हैलो' कहा। दूसरी तरफ से काले खां की उत्तेजना से भरी आवाज उभरी—"अंगद, जितनी जल्दी हो सके, अखिल के घर पहुंच जाओ।"

"अ-अखिल!" अंगद चौंका—"कौन अखिल?"

"ओह! सॉरी।" काले खां की आवाज बता रही थी कि इस वक्त वह बुरी तरह बौखलाया हुआ है—"मैं तो ये ही भूल गया कि तुम अखिल को नहीं जानते। अखिल असल में धनपत के ड्राइवर का नाम है, इस वक्त मैं उसी के घर हूं।"

"लेकिन मैं वहां क्यों पहुंच जाऊं?" अंगद ने कहा—"भला मेरा उससे क्या मतलब?"

"घटना ही कुछ ऐसी हो गई है अंगद कि जिसके बाद मुझ जैसे शख्स को यह मानना पड़ रहा है कि तुम्हारा सपना हंडरेड परसेंट सच्चा था। मुझे यकीन हो गया है कि तुम्हारी मदद के बगैर मैं इस केस में आगे नहीं बढ़ सकता। मैं तुमसे कुछ जानकारियां लेनी चाहता हूं। शायद इसी तरह यह केस सॉल्व हो सके।"

"क-क्या घटना हो गई है?"

"बहुत ही हैरतअंगेज घटना घटी है। कुछ ऐसी कि फोन पर नहीं बताई जा सकती। जितनी जल्दी हो सके यहां आ जाओ।"

"पर कुछ हिंट तो दीजिए इंस्पेक्टर साहब, आखिर हुआ...

काले खां ने उसकी बात काटकर निखिल का एड्रेस बताया और एक बार फिर तुरंत आने के लिए कहकर फोन काट दिया।

अंगद हकबकाई-सी अवस्था में खड़ा रह गया था।

तरुणा ने पूछा—"क्या हुआ?"

"मुझे नहीं पता लेकिन कुछ हैरतअंगेज हो गया है।"

"हां तो नंदिनी जी, अब आप मुझे अपनी सीधी-सपाट जुबान में यह बताएं कि धनपत का कल्याण क्यों किया?" थाने में अपनी कुर्सी पर बैठे काले खां ने उपरोक्त शब्द कहे और फिर खुद ही अपनी गुद्दी पर चपत मारता बोला—"मैं भी कितना घोंचू हूं! वह सवाल पूछ रहा हूं जिसका जवाब मुझे मालूम है और मालूम ये है कि आपने उसका कल्याण इसलिए कर दिया क्योंकि किसी तरह आपको यह पता लग गया कि हमने उसे आपकी शिनाख्त करने के लिए बुलाया है। वह ऐसा न कर पाए इसलिए आपने हमारे पास पहुंचने से पहले ही उसका रास्ता बदलकर सर्विसलेन में बुला लिया और अपने कमरे की खिड़की से धक्का देकर काम-तमाम कर दिया।"

"मैंने भला उसे सर्विसलेन में कब बुलाया?" नंदिनी के चेहरे पर थाने में बैठी होने के बावजूद घबराहट का कोई भाव न था—"और जब मैं किसी धनपत को जानती ही नहीं तो कैसे बुला सकती हूं?"

"जानती थीं या नहीं जानती थीं, इसका सबूत आपके फोन में मौजूद है।" काले खां ने अपने हाथ में मौजूद उसका मोबाइल उसी को दिखाते हुए कहा—"आपने एक नहीं बल्कि दो बार...

"मैं पहले भी कह चुकी हूं आफिसर, वे फोन मैंने नहीं किए।"

"ये मोबाइल गवाह है।"

"कितनी बार कहूं! पार्टी के दरम्यान मेरा फोन गुम हो गया था।

काफी देर गुम रहा। जब पता लगा कि फोन मेरे पास नहीं है तो ढूंढ मची। बाद में लिफ्ट में पड़ा मिला।"

"और आपने उठाकर वापस अंटी में रख लिया। यह भी देखने की कोशिश नहीं की कि इस बीच इससे कोई कॉल तो नहीं की गई?"

"ऐसा ही हुआ था।"

"मेरी आदत ऐसे झांसों में आने की नहीं है।"

"मैं कोई झांसा नहीं दे रही हूं। आप पार्टी में मौजूद सभी लोगों से पूछ सकते हैं कि मेरा मोबाइल एक बार गुम होकर लिफ्ट में मिला था या नहीं! इस बात का अच्छा खासा शोर मच गया था वहां।" "और उस वक्त भी आप पार्टी में ही मौजूद थीं जब वातावरण में धनपत की चीख गूंजी?"

"यह भी बता चुकी हूं। आप इमरान से पूछ सकते हैं। उस वक्त मैं उसी से बात कर रही थी।"

"वो बेचारा क्या बताएगा! उसे तो आपने किसी जादू से कुछ ही देर में अपना बजर बट्टू बना लिया है।"

"मतलब?"

"बजरबट्टू तो वही बोलेगा न जो बंदरिया चाहेगी!"

"पहली बात तो यह आरोप ही गलत है कि इमरान पर मैंने कोई जादू कर दिया है। फिर भी अगर आप ऐसा कुछ समझते हैं तो पार्टी में मौजूद दूसरे लोगों से पूछ सकते हैं। सब पर तो जादू नहीं कर दिया होगा मैंने?"

"सबसे पहले तो मुझे तुम्हारी खोपड़ी से यह गलतफहमी ही निकालनी जरूरी लग रही है कि तुमने इमरान हाशमी को अपने इस अनुपम रूपजाल में फंसा लिया है।"

"मतलब?"

"वो इमरान हाशमी नहीं है।"

चौंकती हुई नंदिनी ने कहा—"फिर कौन है?"

"इमरान हाशमी का डुप्लिकेट। उसका नाम अंगद है। फिल्मों में इमरान के बॉडी डबल का रोल करता है। महकार उसे रिम्पी को बहकाने के लिए उठा लाया था।"

नंदिनी के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे उसे हैरत ही न हुई हो बल्कि धक्का पहुंचा हो।

"रह गईं न सन्न?"

"सन्न-वन्न कुछ नहीं, मुझे केवल आश्चर्य हुआ है। वो सचमुच हंडरेड परसेंट इमरान हाशमी नजर आता है।"

"मेरा ख्याल है अब आप उस पर लाइन नहीं मारेंगी!"

"मैं पहले भी कोई लाइन नहीं मार रही थी।"

"मोहतरमा।" काले खां ने अपनी दोनों कोहनियां मेज के टॉप पर रखीं और दोनों हाथों में अपने दोनों गाल भरता बोला—"अभी तक आप शायद इसलिए सच्चाई को नहीं हांग रही हैं क्योंकि मैं आपको अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठाकर खुशगवार माहौल में बात कर रहा हूं मगर जब हवालात के अंदर वाले कमरे में ले जाऊंगा उस कमरे में जिसे टार्चररूम कहा जाता है तो आपकी जुबान लपर लपर करती हुई सच्चाई उगलेगी।"

"मैं फिर कहती हूं।" नंदिनी दास ने कर्कश लहजे में चेतावनी दी—"मुझे धमकाने की कोशिश न करें। मैं उन लड़कियों में से नहीं हूं जो खोखली धमकियों से डर जाएं और गिड़गिड़ाने लगें।"

"मेरा नाम काले खां है मोहतरमा, मैं जब अपनी पर आता हूं तो पत्थरों को भी 'च्यांऊं-च्यांऊं' बुलवा देता हूं।"

"और मेरा नाम भी नंदिनी दास है।" कड़क लहजे में कहने के साथ उसने काले खां की आंखों में आंखें डाल दी थीं—"बगैर किसी ठोस सबूत के अगर आपने मुझे हाथ भी लगाने की कोशिश की तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

भन्नाए हुए काले खां ने तुर्रे पर तुर्रा जवाब देने के लिए मुंह खोला ही था कि काफी देर से नंदिनी के तेवरों को देखकर थर्राया सा खड़ा राजपाल बोला—"सर, हो क्या गया है आपको! आप तो हमेशा इतने सबूत जुटाने के बाद अपराधी से बात करते हैं जिनके बाद उसे मुकरने के लिए कोई रास्ता ही नहीं मिलता।"

काले खां को झटका-सा लगा।

बात तो सही कही थी राजपाल ने—वह अपराधी से बात ही तब करता था जब उसके खिलाफ इतने सबूत जुटा लेता था कि वह मुकर नहीं पाता था और न ही, इतना उत्तेजित होता था जितना इस केस में हो रहा था। कारण शायद यह था कि उसे आगे बढ़ने का रास्ता नहीं मिल रहा था बल्कि अगर यह लिखा जाए तो ज्यादा उचित होगा कि उसकी समझ में यही आकर नहीं दे रहा था कि बढ़ा किस दिशा में जाए? ऊपर से ये लड़की! काले खां ने ऐसी लड़की पहले कभी नहीं देखी थी, जिसके चेहरे पर थाने में आने के बाद भी शिकन तक न हो बल्कि वह पट्ठी तो उसकी आंखों में आंखें डालकर हर सवाल का जवाब उससे ज्यादा अकड़कर दे रही थी और फिर, भले ही राजपाल की इस बात में पूरा दम न हो कि वह हिप्नोटिज्म जानती थी मगर उसकी आंखों में ऐसा कुछ जरूर था कि वह एक बार भी लंबे समय तक उसकी आंखों से आंखें नहीं मिला पाया था।

हर बार उसे ही आंखें चुरानी पड़ी थीं।

शायद यही सब उसकी झुंझलाहट का कारण था!

"मैं एक पढ़ी-लिखी लड़की हूं। बता चुकी हूं कि काले जादू और अघोरियों पर रिसर्च कर रही हूं।" उसने अपेक्षाकृत नर्म लेकिन दृढ़ लहजे में कहना शुरु किया—"आप मुझे किसी गंवारू लड़की की तरह ट्रीट नहीं कर सकते। हां, तर्कपूर्ण बातें कर सकते हैं। आपका एटीट्यूड शुरू से ही मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मेरी शक्ल देखते ही आप मुझ पर इस तरह टूट पड़े जैसे मैंने कोई गुनाह किया हुआ हो। फिर भी, मैंने आपको अपने फ्लैट में ले जाकर शांति से हर सवाल का जवाब दिया। उसके बाद एक आदमी सर्विसलेन में गिरकर मरता है और आप धड़ाक से इतने लोगों के बीच मेरे हाथ में हथकड़ी डाल देते हैं। यानी बगैर किसी ठोस सबूत के सरेआम मेरी बेइज्जती करते हैं। ये सब क्या है?"

"उसे आपके फ्लैट की खिड़की से धक्का दिया गया, आपके मोबाइल से मक्तूल को दो बार कॉल की गई। क्या ये आपके हाथ

में हथकड़ी डालने के लिए पर्याप्त नहीं था?"

"हो सकता है उस वक्त रहा हो लेकिन अब...जबकि मैं ये कह ही हूं कि उसकी चीख के वक्त टैरेस पर थी और मेरा मोबाइल कुछ देर के लिए गुम हुआ था। इस सबके बाद आपको मुझे धमकाना चाहिए या पार्टी में मौजूद लोगों से इस बात की पुष्टि करनी चाहिए कि मैं सच बोल रही हूं या झूठ?"

"कोई क्यों आप ही की खिड़की से उसे धक्का देगा और क्यों मक्तूल को फोन करने के लिए आप ही का फोन इस्तेमाल करेगा?"

"क्या इतनी-सी बात भी आपकी समझ में नहीं आ रही कि कोई मुझे फंसाने की कोशिश कर रहा है?"

"बात समझ में नहीं आ रही। आप केवल तीन दिन पहले उस बिल्डिंग में आई हैं।" काले खां ने एक बार फिर व्यंग किया—"उससे पहले का आपका इतिहास गुम है। भला तीन दिन में आपसे किसी को ऐसी क्या दुश्मनी हो सकती है जिसकी वजह से वह आपको मर्डर जैसे संगीन जुर्म में फंसाने की कोशिश करे?"

"यह सवाल मुझे भी परेशान कर रहा है मगर पुलिस आफिसर होने के नाते जवाब तलाशने की जिम्मेदारी आपकी है।"

राजपाल फिर बीच में बोला—"एक सलाह दूं सर?"

दोनों ने सवालिया नजरों से उसकी तरफ देखा मगर राजपाल ने सिर्फ काले खां की आंखों में झांकते हुए कहा था—"धनपत जी हमारे लिए आखिरी आदमी तो थे नहीं।"

"मतलब?"

"और भी हैं जो पुष्टि कर सकते हैं।" कहने के साथ उसने नंदिनी की तरफ पुतलियां घुमाई थीं।

"गुड। आओ। चलते हैं।" राजपाल का इशारा समझते ही काले खां एक झटके से उठकर खड़ा हो गया था।

नंदिनी ने पूछा—"कहां?"

"जहां दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।"

अखिल सायन की झोंपड़ पट्टी में रहता था।

उसके घर के पास पहुंचते ही काले खां का माथा ठनका क्योंकि लगभग सभी बस्ती वाले वहां इकट्ठा थे।

काले खां ने एक आदमी से पूछा—"क्या हुआ?"

"गजब हो गया साब।" वह आदमी बुरी तरह डरा हुआ नजर आ रहा था—"न ऐसा पहले कभी देखा, न सुना।"

"कुछ बताओगे भी?"

"अच्छा भला अखिल मर गया?"

"अखिल मर गया?" काले खां के हलक से चीख जैसी आवाज निकली थी—"कैसे?"

"क्या बताएं साब! बड़ी ही रहस्यमय मौत है। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा।" एक दूसरे शख्स ने काले खां की वर्दी को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा—"हवा में तैरती बहुत छोटे से पैराशूट जैसी एक छतरी आई और अखिल के घर में जा घुसी।"

काले खां का दिमाग हवा हो गया—"छतरी घर में जा घुसी?"

उस क्षण चेहरे पर हवाईयां लिए राजपाल ने नंदिनी की तरफ देखा था मगर वैसा कोई भाव उसके चेहरे पर नजर नहीं आया जैसे की उम्मीद में उसने देखा था।

बल्कि थोड़ी चौंकी थी वह।

जिसने छतरी वाली बात कही थी उससे बोली—"क्या उस छतरी के नीचे कोई दीपक भी जल रहा था?"

"हां।" एक साथ कई लोगों ने कहा।

नंदिनी ने पूछा—"कोई पुतला भी बंधा था?"

फिर—"हां।"

"ओ माई गॉड!" कहने के साथ वह एक पल की भी देर किए बगैर भीड़ को चीरती हुई अखिल की दो कमरों वाली झोंपड़ी की तरफ लपकी थी। काले खां और राजपाल भी उसके पीछे लपके।

झोंपड़ी के बाहरी कमरे में कदम रखते ही ठिठक जाना पड़ा।

अखिल की लाश एक चारपाई के नजदीक जमीन पर पड़ी थी।

दहाड़े मार-मारकर रो रही उसकी पत्नी को चार-पांच औरतें ढांढ़स बंधाने की कोशिश कर रही थीं।

और...लाश के करीब खड़ी नंदिनी उसके आसपास बिखरे सामान को बहुत ध्यान से देख रही थी।

पारदर्शी पॉलीथीन की छतरी के अलावा वहां एक बुझा हुआ आटे का बना दीपक था। बहुत सारी हरी मिर्चें थीं। सिंदूर था। कटे हुए नींबू थे। काली उड़द की दाल थी और एक मरा हुआ उल्लू था।

काले कपड़े में लिपटा मिट्टी का बना एक पुतला ठीक अखिल की लाश के सीने पर पड़ा हुआ था।

उसे देखकर काले खां जैसे शख्स की समझ में भले ही कुछ न आया हो मगर राजपाल का जिस्म इस तरह कांप रहा था जैसे उसे जूड़ी के बुखार ने घेर लिया हो।

"क्या है ये सब?" काले खां दहाड़ा था।

"किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा साब।" एक औरत ने बताया—"बस अचानक ही सबने बस्ती के ऊपर उड़ती ये छतरी देखी। बच्चे किसी किस्म का खेल समझे और उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे मगर वह किसी के हाथ न आई। सबसे बचती बचाती अखिल की

झोंपड़ी के अंदर आ घुसी और...

"और?"

"ये चारपाई पर लेटे थे।" रोती-रोती अखिल की पत्नी ने बोलना शुरु कर दिया था। कमरे के एक कौने की तरफ इशारा करती वह कहती चली गई—"मैं वहां चाय बना रही थी कि इनकी आवाज सुनी—'अरे, ये क्या?' मैंने पलटकर देखा तो छतरी पर नजर पड़ी।

ये उसे देखकर चारपाई से उछलकर खड़े हो गए थे। तभी, छतरी इनके सिर से टकराई। बहुत जोर से धमाका हुआ। जैसे कोई गुब्बारा फटा हो और फिर ये चीखकर जमीन पर गिर गए।"

"कितनी देर पहले की बात है ये?"

"पांच ही मिनट तो हुए हैं।" एक औरत ने कहा।

काले खां ने अखिल की पत्नी से पूछा—"ये बात पक्की है न कि तुमने धमाके की आवाज सुनी थी?"

"ह-हां।" उसने रोते हुए कहा।

"राजपाल, जरूर इस पर किसी तरफ से गोली चलाई गई है।"

"कोई गोली नहीं चली है आफिसर, ये केस तुम्हारी बुद्धि की रेंज का है ही नहीं।" एकाएक नंदिनी दास ने उसकी तरफ पलटते हुए कहा था—"दुनिया की कोई पुलिस इसके कातिल तक नहीं पहुंच सकती। पहुंच भी जाए तो उसे कातिल साबित नहीं कर सकती।"

बौखलाए हुए काले खां के मुंह से निकला—"क्या मतलब?"

"पुलिस का कोई शख्स अगर यह मान भी ले कि इसे काले जादू के इस्तेमाल से किसी तांत्रिक ने मारा है और किसी तरह वह उस तक पहुंचकर उसे गिरफ्तार भी कर ले तो कानून उसे कोई सजा नहीं दे सकता क्योंकि जो कानून यही नहीं मानता कि काले जादू से किसी को मारा भी जा सकता है वह इस इल्जाम में किसी को सजा कैसे दे सकता है!"

काले खां की खोपड़ी इस वक्त बुरी तरह भिन्नाट थी—"क्या तुम यह कहना चाहती हो कि इसे काले जादू से मारा गया है?"

नंदिनी ने काले खां को बहुत ही गौर से देखते हुए कहा—"ये बात आपको मुझे स्टाम्प पेपर पर लिखकर देनी पड़ेगी क्या?"

"म-मेरा मतलब—तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?"

"मजाक है क्या! काले जादू और अघोरियों पर रिसर्च कर रही हूं मैं।" इस वक्त नंदिनी का खूबसूरत चेहरा थोड़ा विकृत-सा नजर आया था—"अपनी अब तक की रिसर्च के बेस पर दावे के साथ कह सकती हूं कि इसे मारण अनुष्ठान के द्वारा मारा गया है।"

"मारण अनुष्ठान?"

"यह अनुष्ठान किसी शमशान में लाश के ऊपर विकटान की मुद्रा में बैठकर किया जाता है और वो पुतला जिसे आप मक्तूल की छाती पर देख रहे हैं—मुर्दों की राख से बना हुआ है।"

काले खां पर कुछ कहते न बन पड़ा जबकि राजपाल को तो जैसे यकीन हो चला था कि यह सब नंदिनी का ही किया धरा है।

वह इस कदर डरी-डरी नजरों से उसकी तरफ देख रहा था जैसे अपने सामने खड़े यमराज की तरफ देख रहा हो।

"मेरा दावा है कि इस पुतले की शक्ल मक्तूल से मिलती होगी।" कहने के साथ नंदिनी लाश की तरफ बढ़ी ही थी कि काले खां बहुत जोर से चीखा—"ठहरो, किसी चीज को छेड़ना नहीं।"

नंदिनी के पतले, गुलाबी और खूबसूरत होठों बहुत ही कुटिल और व्यंगात्मक मुस्कान उभरी थी—"मुझे हंसी आ रही है आफिसर कि बात आपके दिमाग में नहीं घुस पा रही और आप इस हत्या को भी आम हत्याओं की तरह ही ट्रीट करना चाहते हैं। दरअसल घटना स्थल से आपको किसी की उंगलियों आदि के निशान नहीं मिलेंगे क्योंकि इसका कातिल कभी यहां आया ही नहीं। वो तो हो सकता है, यहां से हजारों किलोमीटर दूर बैठा हो।"

"भला इस तरह कोई किसी की हत्या कैसे कर सकता है?"

"कर सकता है। आपके सामने हुई पड़ी है।" उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा था—"लीजिए, मैं एक तरफ हट जाती हूं। अपने ढंग से छानबीन कर लीजिए। अगर मक्तूल के जिस्म पर कहीं कोई गोली लगी मिल जाए या आसपास से हत्यारे का कोई निशान मिल जाए तो मुझसे बात कीजिएगा।"

काले खां उसे घूरता रह गया था मगर कुछ कहते न बन पड़ा।

फिर आगे बढ़ा और बगैर किसी चीज को छेड़े अपनी पैनी आंखों से लाश और उसके आसपास के स्थान को देखने लगा और जब उसने लाश के सीने पर पड़े काले कपड़े में लिपटे पुतले को गौर से देखा तो रीढ़ की हड्डी में सर्द लहर दौड़ती महसूस की क्योंकि नंदिनी की बात हंडरेड परसेंट सच थी।

पुतले का केवल चेहरा ही काले कपड़े से बाहर था और उसकी शक्ल बगैर किसी शक के अखिल से मिलती थी।

काले खां ने वहां मौजूद सभी लोगों से ऐसे अनेक सवाल किए जिनसे यह घटना किसी इंसान द्वारा की गई साबित हो सके मगर ऐसा एक भी सूत्र हाथ नहीं लग रहा था।

जब अति हो गई और...यह भी कहा जा सकता है कि काले खां के सवाल खत्म हो गए तो करीब ही खड़ी नंदिनी ने कहा—"आपने निकाल लिए अपने कस-बल?"

"कस-बल तो शायद मुझे तुम्हारे निकालने पड़ेंगे।" काले खां ने भन्नाए हुए लहजे में कहा था।

"मतलब?" नंदिनी की भृकुटियां तन गई थीं।

"और तुम्हारे ये कस-बल मैं तब निकालूंगा जब इस राज को जान लूंगा कि हर उस आदमी की रहस्यमय मौत क्यों होती जा रही है जिससे मैं तुम्हारी शिनाख्त करानी चाहता हूं।"

"तो आप मुझे यहां अखिल से मेरी शिनाख्त कराने लाए थे?"

"ये बात तुम अच्छी तरह जानती हो।"

"आपको वहम हुआ है आफिसर, मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानती क्योंकि मेरे बार-बार पूछने के बावजूद आप कुछ बता ही नहीं रहे हैं। थाने में आपने कहा कि आप धनपत से मेरी शिनाख्त करानी चाहते थे। मैंने उस वक्त भी पूछा—किस बात की शिनाख्त? आपने जवाब नहीं दिया और अब यहां...कह रहे हैं कि अखिल से शिनाख्त करानी चाहते थे। आखिर क्या शिनाख्त करानी चाहते थे आप?" काले खां ने भन्नाए हुए अंदाज में कह दिया—"यह कि तुम शालू हो या नहीं!"

"शालू? कौन शालू?"

"वो शालू जिसने धनपत के बेटे को किडनेप किया और मार डाला।" काले खां दांत भींचे कहता चला गया था—"वो शालू जिसके नयन-नक्श तुमसे मिलते हैं।"

"ओह! तो ये बात थी वो। इसलिए आपने कहा था कि मेरी शक्ल किसी से मिलती है। अब आई पूरी बात समझ में लेकिन मैं दावे के साथ कह सकती हूं आफिसर कि मैं वो नहीं हूं जो आप समझ रहे हैं क्योंकि मेरा नाम शालू कभी नहीं रहा।"

"और तुम्हारे पास यह साबित करने का भी कोई प्रूफ नहीं है कि तुम वही हो जो खुद को बता रही हो—यानी नंदिनी।"

"ओह! इसलिए आपका शक और गहरा गया...पर मैं इसमें क्या कर सकती हूं? जब दरभंगा में मेरे साथ घटना ही ऐसी हो गई कि मेरा सबकुछ वहीं दफ्न हो गया।"

"तुम्हारी शिनाख्त कराने के लिए धनपत को बुलाया था, वह वहां मारा गया। उसी काम से तुम्हें यहां लाए तो...

"इसलिए आप सोच रहे हैं कि इन दोनों को मैंने मार डाला?"

"और क्या नतीजा निकलता है?"

"वाकई...वाकई आफिसर।" नंदिनी एक-एक शब्द को जमाती कहती चली गई—"मानती हूं कि आप अपनी जगह गलत नहीं हैं।

प्वाइंट ही कुछ ऐसे हैं कि आपकी जगह अगर मैं होती तो मैं भी वही सोच रही होती जो आप सोच रहे हैं, और मैं भी उतनी ही भिन्या रही होती जितने आप भिन्या रहे हैं मगर मैं ये बताने के अलावा और क्या कर सकती हूं कि मैं शालू नहीं हूं और...

"और?"

"धनपत के बारे में तो मैं खैर ये कह रही थी कि आप पार्टी में मौजूद लोगों से टैरेस पर मेरी मौजूदगी की पुष्टि कर सकते हैं मगर इसके बारे में तो आप खुद ही गवाह हैं। ये मर्डर केवल पांच मिनट पहले हुआ है और उस वक्त मैं आपके साथ थी।"

"ये भी तो तुमने खुद ही कहा कि इसे तांत्रिक शक्तियों से मारा गया है और उसके लिए कातिल का घटनास्थल तक पहुंचना जरूरी नहीं होता। वह हजारों किलोमीटर दूर रहकर भी...

"तो क्या आपने मेरी बात स्वीकार कर ली है?"

"कौनसी बात?"

"कि इसे तांत्रिक शक्तियों से मारा गया है।"

काले खां थोड़ा गड़बड़ा-सा गया। बोला—"मैं ये कह रहा हूं कि अगर एक बार को यह बात मान ली जाए तो फिर ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि ये दोनों हत्याएं तुम्हीं ने की हों?"

नंदिनी के होठों पर ऐसी मुस्कान उभरी जैसे उसे अपने किसी मिशन में कामयाबी मिली हो। बोली—"मैंने इनमें से किसी को नहीं मारा, इसके पक्ष में मैं दो तर्क पेश कर सकती हूं।"

"वो क्या-क्या?"

"पहली बात—मैं काले जादू, तंत्र-मंत्र और अघोरियों पर रिसर्च जरूर कर रही हूं मगर इन विद्याओं का कोई ज्ञान नहीं रखती। दूसरी बात—मैंने आपको बताया, अखिल को मारण अनुष्ठान के माध्यम से मारा गया है और उसे करने में बहुत टाइम लगता है। मैं इतनी देर से आपके साथ हूं—क्या मैंने कोई अनुष्ठान किया?"

"फिर वे ही दोनों शख्स ऐन उस वक्त से पहले क्यों मारे गए जब वे तुम्हारी शिनाख्त करने वाले थे?"

"मैं इस बारे में क्या कह सकती हूं?"

काले खां बुरी तरह उलझ गया था और उलझा ही रहा क्योंकि उसे लग रहा था कि सबकुछ इसी 'बला' का किया धरा है मगर इस बात को किसी भी तरह साबित नहीं कर पा रहा था।

अचानक जेहन में एक विचार आया और उसने अंगद का नंबर मिला दिया। संबंध स्थापित होते ही उसने हड़बड़ाए हुए अंदाज में अंगद से वहां पहुंचने के लिए कहा था। राजपाल समझ नहीं पा रहा था कि उसने अंगद को यहां क्यों बुलाया है?

"इस लड़की को ध्यान से देखो।" काले खां ने हुक्म-सा दिया।

अंगद चकरा गया।

न चाहते हुए भी वह नंदिनी को ध्यान से देखने लगा और फिर बोला—"क्या देखूं? इसे तो मैं दोपहर से लगातार देख ही रहा हूं।"

"मैं ध्यान से देखने को कह रहा हूं।"

"मेरी समझ में आपकी बात का मतलब नहीं आया।"

"मैं ये कह रहा हूं गधे कि इस लड़की का मिलान उस औरत की शक्ल से करो जिसे तुमने सपने में अंकुर की बलि देते देखा है।"

काले खां की बात का मतलब समझ में आते ही अंगद के चेहरे पर पसीना उभर आया था। इसमें शक नहीं कि वह एक बार फिर नंदिनी की तरफ देखने लगा था जबकि काले खां अपने हर शब्द पर जोर देता कहता चला गया—"मेरी इन्वेस्टिगेशन के मुताबिक यह वही लड़की है। इसी ने अंकुर की बलि दी है।"

"क-क्या बात कर रहे हैं सर?" अंगद हकला गया था।

"फिर ध्यान से देखो।"

"पर मैं तो आपको बता चुका हूं कि उसकी शक्ल मैं कभी-भी ठीक से नहीं देख पाया। उसके चेहरे पर अंडरटेकर की तरह...

"वो सब मैं सुन चुका हूं।" अपनी असफलता के कारण काले खां बुरी तरह भन्नाया हुआ था—"लेकिन फिर भी इसकी शिनाख्त करने के लिए कह रहा हूं तो इसलिए कह रहा हूं क्योंकि भले ही सपने में नजर आने वाली औरत के चेहरे पर हमेशा बाल पड़े रहते हों मगर उन बालों के बीच से उसकी शक्ल का कुछ न कुछ हिस्सा तो तुमने देखा ही है। उससे इसके चेहरे का मिलान करो।"

बुरी तरह हकबकाए अंगद ने फिर नंदिनी की तरफ देखा और बोला—"नहीं सर, मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। पर आपको नंदिनी किस वजह से वो लग रही है?"

"क्योंकि इसी ने अंकुर को किडनेप किया था।"

"मैं ऑब्जेक्शन करती हूं आफिसर।" नंदिनी कड़े लफ्जों में बोली—"जो इल्जाम आप मुझ पर लगा रहे हैं उसका आपके पास कोई सबूत नहीं है। इल्जाम तो आप मुझ पर यह भी लगा रहे हैं कि धनपत की हत्या मैंने की है। अंगद, इन्हें बताओ कि ठीक उस वक्त मैं टैरेस पर तुमसे बात कर रही थी या नहीं जिस वक्त वातावरण में धनपत की चीख गूंजी थी।"

अंगद उसे देखता रह गया था।

नंदिनी बोली—"यह बात मुझे इन्होंने बताई है कि तुम इमरान नहीं बल्कि उसके बॉडी डबल अंगद हो।"

"क्या सर्विसलेन में मरने वाले धनपत थे?" हैरान अंगद ने पूछा।

"हां।" काले खां ने कहा।

"व-वे वहां क्या कर रहे थे?"

"लंबी कहानी है।" काले खां ने कहा—"फिलहाल केवल ये बताओ कि ये लड़की सच बोल रही है या झूठ?"

"चीख के वक्त यह मेरे ही साथ थी।"

"क्या इसका मोबाइल भी गुम हुआ था?"

"हां।" अंगद ने कहा—"बाद में वह लिफ्ट में पड़ा मिल गया था। सबने यही अनुमान लगाया—शायद इन्हीं से गिर गया होगा।"

"वो इसका ड्रामा भी तो हो सकता है?"

"आप बेवजह, बगैर किसी तर्क या सबूत के मुझ पर शक कर रहे हैं आफिसर।" नंदिनी ने पुनः सख्त लहजे में कहा था और फिर चैलेंज देने जैसे लहजे में बोली—"एक बार यह तो साबित करके दिखाइए कि मैं शालू हूं।"

"करुंगा...ये बात मैं साबित करके रहूंगा।" भन्नाए हुए काले खां ने दांत भींचकर कहा और फिर उसकी कलाई पकड़कर लगभग घसीटता हुआ बोला—"आओ मेरे साथ।"

अंगद सहित सभी हकबकाए से खड़े रह गए थे।

राजपाल भी।

अपने इंस्पेक्टर का व्यवहार उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसे लग रहा था कि नाकामयाबी ने उसके दिमाग के पुर्जे हिला दिए हैं। अगले पल वह भी काले खां के पीछे लपका।

जीप के पास पहुंचकर काले खां ने नंदिनी को लगभग धकेलते हुए कहा था—"बैठो इसमें।"

"आप मेरे साथ अच्छा बर्ताव नहीं कर रहे हैं।" जीप में बैठती हुई नंदिनी ने बहुत ही कड़े स्वर में रोष व्यक्त किया था।

तभी, वहां पहुंचे राजपाल ने हांफते हुए कहा—"अब आप इसे कहां ले जा रहे हैं सर?"

"धनपत के बंगले पर, सरिता इसकी शिनाख्त करेगी।"

राजपाल का चेहरा पलक झपकते ही पीला पड़ गया। लगभग गिड़गिड़ा उठा था वह—"ऐसा मत कीजिए सर?"

"क्यों?" काले खां दहाड़ा।

"वो दो हत्याएं कर चुकी है। इसकी शिनाख्त कराने की अपनी सनक में आप और कितनी हत्याएं कराएंगे? मेरा दावा है कि वहां पहुंचने पर हमें सरिता जी की भी लाश ही मिलेगी।"

"बकवास मत कर। मेरे साथ चलना है तो जीप में बैठ, नहीं चलना तो यहीं मर।" कहने के साथ वह जीप में बैठ गया था। कांपती टांगों से राजपाल भी उसी तरफ बढ़ा।

"सबसे पहले मैं तुम दोनों को सीन समझाता हूं।" कन्नन ने अपने करीब खड़ी हुमा कुरेशी और कल्कि कोचलिन से कहा—"यह सीन मुख्य रूप से तुम्हीं दोनों का है। इससे पिछले सीन में इमरान ने तुमसे।" वह हुमा कुरेशी की तरफ देखता है—"कल्कि के बारे में

यह कहा है कि वह चुड़ैल है और हमें खाने आई है। इस सीन में तुम दोनों उसी बारे में बातें कर रही हो। मेरा ख्याल है कि अपने-अपने डायलाग तुमने रट लिए होंगे।"

"चिंता मत करो।" दोनों ने एक साथ कहा।

"और अंगद।" वह नजदीक ही खड़े अंगद की तरफ घूमकर बोला—"तुम इन दोनों से थोड़ा दूर खड़े हो। वहां, जहां चॉक से निशान लगा हुआ है। इनकी बातों के एंड में तुम्हें बस थोड़ा-सा मुस्कराना है। मुझे ऐसी मुस्कान चाहिए जैसे थोड़े परेशान हो।"

अंगद ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"ओके।" कहने के बाद कन्नन तेजी से सौरभ की तरफ मुड़ा और उसे कुछ समझाने लगा। अंत में बोला—"तुम देख ही रहे हो, आज हमारे पास इमरान नहीं है, अंगद है। उसे लॉग शॉट में रखना है। पर्दे पर नजर नहीं आना चाहिए कि वह इमरान नहीं है।"

सौरभ ने कहा—"इतना पढ़ा लिखा तो मैं हूं सर।"

सेट पर मौजूद सभी लोग हंस पड़े।

एकता कपूर और विशाल भारद्वाज भी।

शूटिंग के वक्त वे सेट पर कम ही आते थे मगर उस दिन कुछ ऐसा संयोग बना कि दोनों ही पहुंच गए।

वे दोनों अगल-बगल पड़ी कुर्सियों पर बैठे थे। एकता मरजीना सूट पहने हुए थी तो विशाल जींस और हाफ बाजू की शर्ट में था।

हुमा, कल्कि और अंगद ने अपनी-अपनी पोजीशन ले ली। उस वक्त सौरभ लैंस के पीछे से आर्टिस्ट्स की पोजीशन देख रहा था जब कन्नन ने जोर से कहा—"फुल लाइट।"

वे सभी लाइटें ऑन हो गईं जो उस सीन को चाहिए थीं। कन्नन ने ध्यान से उस सीन को देखा जो कैमरे में कैद होने वाला था और संतुष्ट होकर बोला—"एक रिहर्सल कर लेते हैं।"

और फिर, रिहर्सल कुछ इस तरह शुरु हुई—हुमा कुरेशी ने कल्कि की तरफ थोड़ी रहस्यमयी मुस्कान के साथ देखते हुए कहा—"मेरे ख्याल से बोबो सही था।"

कल्कि—"किस बारे में?"

हुमा—"ये कि तुम चुड़ैल हो और हमें खाने के लिए आई हो।"

कल्कि मुस्कराई। अपनी आंखें घुमाईं। दांत बाहर निकाले और बिल्ली के पंजों की तरह अपनी कलाई मोड़ती हुई जोर से गुर्राई।

और फिर, हुमा और कल्कि जोर से हंसीं।

दूर खड़ा अंगद मुस्कराया।

"नो...नो...नो अंगद।" कन्नन बोला—"ये मुस्कान नहीं चाहिए, मैं थोड़ी परेशानी में डूबी मुस्कान मांग रहा हूं।"

"सॉरी।" अंगद ने कहा—"टेक पर ठीक होगा।"

"तो ठीक है। टेक करते हैं।"

"कन्नन।" एकाएक विशाल ने कहा—"मुझे लगता है अंगद ज्यादा रोशनी में खड़ा है। थोड़ी कम होनी चाहिए। इमरान होता तो ठीक थी। बाकी तुम देख लो।"

कन्नन ने गौर से सारे सेटअप को देखा। कैमरे के पीछे गया।

सौरभ को थोड़ा हटाकर लेंस के पीछे से सेटअप को देखा और फिर सीधा होता हुआ एक क्रेन पर बैठे लाइटमैन से बोला—"तुम अपनी लाइट ऑफ कर लो।"

उसने आदेश का पालन किया। अब अंगद पहले जितना नहीं चमक रहा था।

टेक लिया जाने लगा। वे ही सब डायलाग रिपीट हुए और इस बार भी कन्नन अंगद की मुस्कान से संतुष्ट नजर न आया।

इस तरह, तीसरे टेक पर भी जब अंगद वो मुस्कान न दे पाया जो कन्नन को चाहिए थी तो कन्नन झुंझला उठा—"क्या कर रहे हो यार अंगद? तुम ठीक से मुस्करा भी नहीं सकते!"

अंगद नर्वस नजर आया।

उस वक्त वह बार-बार सॉरी बोल रहा था जब एकता ने अपने नजदीक बुलाया। अंगद बेचारा डर गया। उसे लगा—अब जमकर डांट पड़ेगी मगर एकता ने कहा—"तुम्हें हो क्या गया है अंगद? मैंने कई बार तुम्हें कैमरे के सामने देखा है लेकिन ऐसा नहीं देखा कि तुम्हारी वजह से रिटेक हुआ हो। कोई परेशानी है?"

और...अंगद इस तरह फूट पड़ा जैसे पहले ही से परेशान शख्स से किसी अपने ने सहानुभूति के बोल, बोल दिए हों। अभी कोई कुछ समझ भी नहीं पाया था कि उसने वहीं, जमीन में बैठकर एकता के पैर पकड़ लिए और बुरी तरह रोने लगा।

सबके साथ-साथ एकता भी थोड़ी सकपका गई। 'अरे-अरे, क्या करते हो' कहते हुए उसने अंगद के दोनों कंधे पकड़े और ऊपर उठाती हुई बोली—"क्या हुआ अंगद, बात क्या है?"

"मैं बहुत परेशान हूं एकता जी।" वह इस तरह रो पड़ा था जैसे बांध फूट पड़ा हो—"एक डायन ने मेरी बहन को मार डाला। अब मेरी भांजी के पीछे पड़ गई है। वो उसे मारकर ही दम लेगी। मैं अपनी भांजी से बहुत प्यार करता हूं। उसे कुछ हो गया तो...

"सबसे पहले यहां बैठो।" विशाल ने एक खाली कुर्सी की तरफ इशारा करने के साथ कहा—"रोओ मत। आराम से बताओ क्या हुआ है? कौनसी डायन ने तुम्हारी बहन को मार डाला और अब वह कैसे तुम्हारी भांजी के पीछे पड़ी है?"

अंगद ने अपने सपने से लेकर वह सबकुछ बताया जो महकार से पता लगा था और फिर यह भी कि अब किस तरह छिपकली रिम्पी के सिर पर देखी गई है।

उसकी कहानी सुनकर एकता और विशाल ही नहीं, सभी सन्न रह गए थे। उसे ढांढ़स बंधाने के लिए विशाल ने कहा—"माता की शरण में जाओ अंगद और विश्वास रखो, पूरे ब्रह्मांड में उनसे बड़ी कोई शक्ति नहीं है। वो जरूर तुम्हारी रक्षा करेंगी।"

"विशाल ने ठीक कहा अंगद।" एकता बोली—"मैं तुम्हें एक एड्रेस देती हूं। महाराज चंडिकामृत से मिलो। वे माता के बहुत बड़े भक्त हैं। मुझे जानते हैं। मैं उन्हें फोन कर दूंगी। वे तुम्हारी मदद जरूर करेंगे। माता की कृपा रही तो तुम्हारी भांजी का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकेगा।"

"माता पर तो मेरा भी बहुत विश्वास है एकता जी।"

"तो फिर जोर से बोलो—जय माता दी।"

"जय माता दी।" नारा-सा लगाकर अंगद फिर रो पड़ा।

वह करीब पच्चीस बाइ पच्चीस का गोल हॉल था।

गुंबदाकार छत चालीस फुट ऊपर। गुंबद के सेंटर में लगे लोहे के कुंदे में एक बहुत बड़ा फानूश झूल रहा था।

दीवारों पर सुंदर नक्काशी हुई, हुई थी और आठों दिशाओं में बड़ी-बड़ी और गहरी अल्मारियां बनी हुई थीं।

उन अल्मारियों पर पारदर्शी कांच के दरवाजे थे और दरवाजों के पार थीं—सभी देवियों की बड़ी-बड़ी और सुंदर मूर्तियां।

वहां महालक्ष्मी विराजमान थीं। महासरस्वती विराजमान थीं।

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, महिषासुर मर्दिनी, कालरात्रि, सिद्धिदात्री, महागौरी, कात्यायनी और सिंह पर सवार मां दुर्गा अपनी छटा बिखेरे हुए थीं।

वे सभी उम्दा किस्म के संगमरमर की बनी हुई थीं और सभी ने बेहतरीन कढ़ाई वाले कीमती कपड़े के वस्त्र धारण किए हुए थे।

लेकिन सबसे बड़ी मूर्ति महाकाली की थी।

किसी दुर्लभ काले पत्थर की बनी हुई थी वह।

सिर पर मुकुट। गले में नरमुंडों की लंबी माला।

जीभ बाहर।

एक हाथ में खड़ग, दूसरे में त्रिशूल।

तीसरे में खप्पर और चौथे में रक्तबीज का कटा हुआ सिर।

सिर से बहता सारा खून खप्पर में गिर रहा था।

पता नहीं वह किस चीज की खुश्बू थी लेकिन हॉल में ऐसी खुश्बू फैली हुई थी कि किसी का भी हृदय आनंदित कर सकती थी।

महाराज चंडिकामृत हॉल के बीचोंबीच चंदन के आसन पर बैठे थे। उनका रंग गुलाबी था। ऐसा—जैसे मक्खन में चुटकी भर सिंदूर मिला दिया गया हो। सफेद दाढ़ी-मूंछें, वैसे ही लंबे-लंबे बाल। गोल

चेहरा। लंबी नाक। तेजस्व से भरी बड़ी-बड़ी आकर्षक आंखें। होंठ न ज्यादा पतले थे, न मोटे। चौड़ा मस्तक। मस्तक पर चंदन की रेखाएं और नाक के ठीक ऊपर सिंदूर की गोल बिंदी। चेहरे पर ऐसा तेज जो देखने वाले को अजीब-सा सुकून पहुंचाता था।

उनके ऊपरी जिस्म पर कोई वस्त्र न था। केवल जनेऊ और छाती के सफेद बाल नजर आ रहे थे। धड़ से नीचे वे भगवा रंग की धोती पहने हुए थे। कुल मिलाकर उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि जो भी एक बार देख लेता, उन्हीं का होकर रह जाता।

उनके सामने उनकी तरफ मुंह करके करीब सात शिष्य बैठे थे और उनके तथा चंडिकामृत के बीच एक खूबसूरत औरत की मृत देह रखी हुई थी। अपनी प्रभावशाली वाणी से उन्होंने अभी-अभी सामने बैठे शिष्यों से कहा था—"परकाया प्रवेश के संदर्भ में हम तुम्हें काफी कुछ बता चुके हैं। फिर भी संभव है कि तुम लोगों को विश्वास न आया हो और यह सोचते हो कि जो हमने बताया वह केवल किताबी ज्ञान है। वास्तव में वैसा संभव नहीं है।"

"नहीं महाराज।" एक शिष्य ने कहा—"आपके दिए ज्ञान पर संदेह का तो प्रश्न ही नहीं उठता।"

"फिर भी, प्रयोग जरूरी है। हर ज्ञान का अनिवार्य अंग है ये।"

चंडिकामृत ने औरत की मृत देह की तरफ इशारा करने के साथ पूछा था—"इसे कहां से लाए हो?"

"आपकी आज्ञानुसार, आश्रम के पीछे बहने वाली नदी से निकाली है। ऐसा लगता है किसी दुष्ट ने गला दबाकर इसे मार डाला और नदी में बहा दिया।"

"हमें ऐसी ही मृत देह चाहिए थी जो खंडित न हो।"

सभी शिष्य खामोश रहे।

एकाएक चंडिकामृत ने पद्मासन लगा लिया और अपनी रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीधी कर ली।

आंखें बंद।

चेहरा महाकाली की मूर्ति की तरफ।

एक लंबी सांस ली और फिर उनका पेट इतना अंदर धंसता चला गया जैसे पीठ से लग गया हो।

न चाहते हुए भी शिष्यों के दिल जोर-जोर से धड़कने लगे थे।

वे कभी महाराज को देखते थे तो कभी बीच में रखी मृत देह को।

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे चंडिकामृत अंदर ही अंदर अपने शरीर से खेल रहे हों।

एक मिनट गुजरा...दो मिनट!

तीन...चार...पांच!

और फिर दस मिनट गुजर गए।

करीब पंद्रह मिनट बाद, उस वक्त शिष्यों के दिल बहुत जोर जोर से धड़कने लगे थे जब मृत देह की खुली हुई निस्तेज आंखों में जीवन ज्योति लौटती देखी और उस वक्त वे अपने अंदर बहुत ही अजीब-सी खुशी महसूस कर रहे थे जब औरत की पलकें कांपीं।

"महाराज।" एक शिष्य ने पूछा—"आप कहां हैं?"

"जहां परकाया प्रवेश के बाद हमें होना चाहिए।" चंडिकामृत की यह आवाज औरत के मुंह से निकली थी।

"महाराज।" सबसे आगे बैठे शिष्य ने श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए थे—"आपने परकाया प्रवेश के बारे में हमें ज्ञान जरूर दिया है परंतु आज साक्षात् ऐसा होते देखकर हमें खुशी और आनंद की अनुभूति हो रही है। बल्कि अगर यह कहें तब भी गलत न होगा कि सबकुछ अपनी आंखों से देखने के बाद भी विश्वास नहीं हो रहा।"

औरत उठकर बैठ गई। उसके मुंह से फिर महाराज चंडिकामृत की आवाज विस्फुटित हुई—"पंचामृत, अब तुम हमारी वास्तविक देह को समाधि से बाहर निकालने का प्रयत्न करो।"

पंचामृत उठा और जैसे ही उसने चंडिकामृत के पद्मासन में बैठे शरीर को छेड़ा, वह किसी शव की तरह एक तरफ लुढ़क गया। औरत ने कहा—"उसकी नब्ज-नाड़ी चैक करो।"

पंचामृत चैक करने के बाद बोला—"कुछ नहीं है महाराज, यह वैसा ही शव है जैसा कुछ देर पहले वह था जिसमें इस वक्त आप विराजमान हैं।"

"पर ये कोई चमत्कार नहीं है मेरे बच्चों, हालांकि दुष्ट लोग इसे चमत्कार बताकर भोले-भाले लोगों को ठगते हैं। इस विद्या का दुरुपयोग करते हैं। वास्तव में यह विशुद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है और मानव जाति के कल्याण हेतु बनाई गई है।"

"आप हमें इस बारे में बता चुके हैं और हम अभ्यास भी कर रहे हैं।" एक अन्य शिष्य ने कहा था—"आपकी कृपा रही तो एक दिन हम भी परकाया प्रवेश की इस विद्या में पारंगत हो जाएंगे।"

"तो बताओ, किस तरह होता है ये?" कहते वक्त खूबसूरत औरत के होठों पर मोहक मुस्कान थी—"समझो कि आज हम तुम सबकी परीक्षा ले रहे हैं। पर ठहरो!"

किसी शिष्य की समझ में नहीं आया कि एक विशेष धारा में बहते-बहते महाराज चंडिकामृत क्यों रुक गए?

क्यों ठहरो कहा उन्होंने?

धीरे-धीरे उस महिला की आंखें बंद हो गई थीं जिसमें इस वक्त चंडिकामृत विराजमान थे। उनके शिष्य समझ सकते थे कि इस वक्त वे कुछ देख रहे हैं और फिर वे आंखें बंद किए बोले—"ओह!

अंगद आ पहुंचा है।"

"कौन अंगद महाराज?" पंचामृत ने प्रश्न किया।

"माध्यम एकता वनी है परंतु उसे यहां आना ही था।"

कोई शिष्य उनकी बातों का अर्थ न समझ सका। मगर किसी ने प्रश्न भी न किया। वे ही बोले—"दुखों की वैतरणी से गुजर रहे अंगद को सम्मान के साथ हमारे प्रतीक्षाकक्ष में बैठाओ। हम अपना वास्तविक शरीर धारण करके वहां पहुंचते हैं।

"जी महाराज।" पंचामृत उठकर खड़ा हो गया।

महिला पद्मासन में बैठ गई।

आंखें पुनः मुंद गई। पेट पीठ की तरफ जाने लगा अर्थात् फिर परकाया प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी।

चंडिकाश्रम महाबलेश्वर की पहाड़ियों में हजारों-हजार मीटर में फैला हुआ था। उसकी सरहदों पर दस फुट ऊंची दीवार बनाई गई थी। जिस विशाल गेट पर नक्काशी करके सभी देवी-देवताओं की मूर्तियां लगाई गई थीं उसमें प्रवेश करते ही अंगद को अपने मन में बड़े ही अनोखे सुख की अनुभूति हुई थी।

चमत्कारिक तरीके से उसकी बेचैनी दूर हो गई थी।

वह बेचैनी जिसे वह उस क्षण से लगातार महसूस कर रहा था जिस क्षण रिम्पी के सिर से छिपकली को कूदते देखा था। और सुकन्या की कहानी सुनने के बाद तो उसके मन पर एक अजीब-सी दहशत बैठ गई थी। भावुकतावश उसने यह कसम जरूर खाई थी कि रिम्पी का बाल भी बांका नहीं होने देगा और छिपकली से गिन गिनकर बदले लेगा लेकिन कहीं अंदर ही से आवाज आई थी कि ऐसा वह कैसे कर सकेगा? छिपकली की ताकत को देखते हुए उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था बल्कि अगर यह भी कहा जाए कि ये कार्य उसे असंभव लग रहा था तब भी अतिश्योक्ति न होगी।

शायद इसीलिए वह लगातार बेचैनी महसूस कर रहा था। वह बेचैनी जो उस विशाल गेट के अंदर कदम रखते ही जाने कहां गायब हो गई थी। उसने सुना तो था कि किसी भूमि विशेष का प्रभाव ऐसा होता है जहां कदम रखते ही शरीर में सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होने लगता है मगर इस बात पर कभी विश्वास न किया था।

पंचामृत ने उसके समक्ष उपस्थित होकर दोनों हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया।

अंगद के हाथ भी स्वतः जुड़ गए।

उसे जिस प्रतीक्षाकक्ष में पहुंचाया गया था वहां बहुत ही धीमी धीमी आवाज में गायत्री मंत्र गूंज रहा था। हर तरफ हृदय को सुकून पहुंचाने वाली शांति छाई हुई थी।

उसे एक गद्देदार कुर्सी पर बैठाने के बाद पंचामृत ने बहुत ही सौम्य स्वर में कहा था—"महाराज चंद मिनटों में उपस्थित होते हैं।"

अंगद सिर्फ गर्दन हिलाकर रह गया।

पंचामृत जा चुका था।

कुछ देर बाद श्वेत वस्त्र धारण किए एक सेवक उपस्थित हुआ, उसके हाथ में मिट्टी की बनी एक ट्रे थी और ट्रे में था—मिट्टी के गिलास में पानी। उसने कहा था—"जल ग्रहण कीजिए।"

अंगद की इच्छा पानी पीने की हुई मगर इंकार कर दिया। सेवक ने ट्रे ज्यों की त्यों सेंटर टेबल पर रखी और वापस चला गया।

कुछ देर बाद बरांडे से खड़ाऊं बजने की आवाज आई, जैसे कोई आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजे की तरफ बढ़ा चला आ रहा हो।

वह कुर्सी पर तनकर बैठ गया था। दिल तेजी से जरूर धड़कने लगा था परंतु उसमें कोई घबराहट न थी।

फिर, द्वार पर ऐसी मानवाकृति नजर आई जैसे कोई महापुरुष खड़ा हो। अंगद को उसके अंदर से ही किसी ने तुरंत उठकर उस महापुरुष के चरणस्पर्श करने का आदेश दिया।

उसने वैसा ही किया।

चंडिकामृत ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा—"अपने स्थान पर बैठो।"

मगर अंगद उनके बैठने से पहले नहीं बैठा। तब बैठा जब वे ठीक सामने रखे थोड़े ऊंचे सिंहासन पर बैठ गए। बैठते ही उन्होंने कहा था—"तुम्हारी इच्छा जल पीने की है परंतु नहीं पिया, इसे पिओ अंगद। सबसे पहले शरीर की क्षुधा शांत करनी चाहिए।"

अंगद ने इस तरह गिलास उठाकर पानी पिया जैसे चंडिकामृत के शब्द उसके लिए आदेश थे। तब, चंडिकामृत ने कहा—"एकता ने बताया कि तुम किसी समस्या में हो।"

अंगद एक बार शुरु हुआ तो फिर रुका नहीं।

सबसे पहले अपने सपनों के बारे में बताया। फिर अंकुर के बारे में। रिम्पी के घर पहुंचने की पूरी कहानी। सुकन्या की कहानी।

छिपकली की गिरफ्त में आई रिम्पी की हालत।

"ओह!" चंडिकामृत के चौड़े मस्तक पर चिंता की लकीरें नजर आने लगी थीं—"ये तो कपाली है।"

"कपाली? कौन कपाली महाराज?"

"उस औरत का नाम है जिसे तुम सपने में देखते हो। जिसे सुकन्या ने प्रथम बलि देते अपनी आंखों से देखा था।"

"क-क्या आप उसे जानते हैं?"

"बहुत अच्छी तरह। वह गेसूपुर गांव की रहने वाली थी। शादी होकर बेलापुर आई। उसकी शादी अभिजीत से हुई और फिर, अभिजीत की मृत्यु हो गई। परंपराओं के मुताबिक कपाली को उसकी चिता पर सती होने का आदेश मिला। वह इसके लिए तैयार न थी मगर जबरदस्ती दुल्हन बनाकर चिता पर बैठा दिया गया। चिता में आग लगा दी गई और...और, उसके बाद...

"उसके बाद क्या महाराज?" अंगद बेचैन हो उठा था—"उसके बाद क्या हुआ? मुझे बताइए।"

"हमें रोका जा रहा है।"

"क-कौन रोक रहा है?"

"परमात्मा के अलावा हमें और कौन रोक सकता है!"

अंगद निरुत्तर हो गया। मन में बहुत कुछ जानने की जिज्ञासा जाग उठी थी मगर यह भी जान चुका था कि अपनी मर्जी से वह कुछ नहीं जान सकता। केवल वही जान सकता है जो महाराज चंडिकामृत चाहेंगे। उन्होंने कहा—"सबसे पहले हम तुम्हें तुम्हारे उस सवाल का जवाब देना चाहेंगे जिसने शुरु से ही तुम्हें सबसे ज्यादा परेशान कर रखा है।"

"कौनसा सवाल महाराज?"

"खुद बताओ। तुम्हें सबसे पहले, सबसे ज्यादा किस सवाल ने परेशान किया था?"

"कि इस संसार में अरबों-खरबों लोग हैं, उस डरावने सपने की शृंखलाएं मुझे ही क्यों चमकती हैं?"

"क्योंकि कपाली के द्वारा दी गई सबसे पहली बलि को सुकन्या ने अपनी आंखों से देखा था। उन आंखों से, जिनमें यकीन करो अंगद तुम और केवल तुम बसे हुए थे। महकार भी नहीं। रिम्पी भी नहीं।

जब कपाली ने तड़पा-तड़पाकर उसकी जान ले ली तो स्वाभाविक रूप से उसके हृदय में भी प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठी। मगर क्योंकि उसकी मृत्यु हो गई थी। उसके पास शरीर नहीं था इसलिए वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती थी। अपना प्रतिशोध पूरा करने के लिए उसे किसी की जरूरत थी और दिल की गहराईयों से वह बस एक ही बात चाहती थी। यह कि—मुझ पर हुए जुल्म का बदला मेरा भैया सुजान ले। इसीलिए वह तुम्हें सपना दिखाती थी। पहली बलि के बाद कपाली ने जितनी भी बलियां दीं। उस पुराने किले में मौजूद रहकर सुकन्या की आत्मा ने वे सभी देखी हैं। उसके शरीर ने नहीं बल्कि उसकी आंखों ने। याद रहे, उन्हीं आंखों ने जिनमें केवल तुम बसे हो और उन आंखों से गुजरकर वे बलियां सपने बनकर तुम्हारी आंखों में आती रहीं। सुकन्या ऐसा इसलिए कर रही थी ताकि किसी तरह तुम कपाली के पास पहुंच जाओ और उसकी वीभत्स मौत का बदला लो।"

"और वही हुआ महाराज...वही हुआ।" उत्साहित अंगद कहता चला गया—"चौथे सपने में मैंने अंकुर को पहचान लिया। उसकी तलाश में निकल पड़ा। उसी सपने में रिम्पी का नाम आया था और फिर, मेरी बहन की आत्मा ने मुझे वहां भी पहुंचा दिया।"

"सुकन्या के पीछे छिपकली बनकर वह इसलिए लगी थी क्योंकि उसने उसे पुराने किले में वह सब करते देख लिया था मगर रिम्पी के सिर पर सवार होने के पीछे वैसा कोई कारण नहीं है। सपने में तुम सुन ही चुके हो कि रिम्पी दो बलियों के बराबर है। केवल इसी लिए वह उसके निशाने पर आई।"

"क्या वह कामयाब हो जाएगी?"

"अगर हो गई...तो कयामत आ जाएगी अंगद।" एक बार फिर चंडिकामृत के चौड़े मस्तक पर चिंता की गहरी लकीरें खिंच गई थीं—"अभिजीत जिंदा हो जाएगा और अगर वह जिंदा हो गया तो सोई हुई शैतानी शक्तियां जाग जाएंगी। इस धरती पर इंसानों का और

सद्पुरुषों का रहना मुश्किल हो जाएगा।"

"महाराज, मैंने पूछा—क्या वह कामयाब हो जाएगी?"

"इस प्रश्न का जवाब परमात्मा के अलावा किसी पर नहीं है।"

वे कहते चले गए—"कभी-कभी वह अपने भक्तों की परीक्षा भी लेता है और इसीलिए उन्हें संकट में डालता है। परंतु घबराओ मत, उसी परमात्मा से प्रेरित तुम्हारी बहन की आत्मा ने अगर तुम्हें यहां तक भेजा है तो इसके पीछे भी कोई कारण होगा।"

जोश में भरे अंगद ने पूछा था—"क्या कोई ऐसा तरीका है महाराज कि उसे नेस्तनाबूद किया जा सके?"

"ये काम हमारे बस्का तो है नहीं।"

"ऐसा न कहें महाराज।" अंगद ने असीम श्रद्धा के साथ अपने हाथ जोड़ लिए थे—"आपकी शक्ति तो अपरंपार है।"

"विश्वास रखो अंगद, हम तुमसे झूठ नहीं बोलेंगे बल्कि अगर यह कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा कि हम कभी झूठ बोलते ही नहीं हैं। निश्चित रूप से हमारे पास अनेक शक्तियां हैं परंतु इसमें कोई शक नहीं कि आज की कपाली के पास हमसे कई-कई गुना ज्यादा शक्तियां हैं। अगर हम आमने-सामने आए तो शायद हम उसके सामने ठहर नहीं सकेंगे।"

इस विचार ने अंगद के चेहरे पर निराशा के भाव फैला दिए थे कि वह जिसके पास मदद मांगने आया था, वह तो खुद ही कपाली की शक्तियों से डरा हुआ था।

चंडिकामृत धारा-प्रवाह कहते चले जा रहे थे—"इसका कारण ये है कि कपाली ने हमसे बहुत ज्यादा घोर तपस्याएं करके शैतानी ताकतें हासिल कर ली हैं। और ऐसा उसने अपने प्रेम के जुनून की वजह से किया। निश्चित रूप से वह अभिजीत से बहुत ज्यादा प्रेम करती थी। उसी प्रेम की खातिर उसने उसे जिंदा करने का संकल्प लिया और ये तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि प्रेम के जुनून से बड़ा कोई जुनून नहीं होता। उसी जुनून की खातिर वह कपालतंत्र के पीछे पड़ गई और वे शक्ति और सिद्धियां प्राप्त करने में सफल हो गई जो हमारे पास भी नहीं हैं। फॉर एग्जांपिल—वो अभिजीत की हड्डियों में उसकी आत्मा को बुला सकती है पर हम ऐसा नहीं कर सकते।"

"कपालतंत्र कौन महाराज?"

"उसका गुरु, वह—जिसने उसे काली शक्तियों की दीक्षा दी।"

"वह उसे कहां मिला?"

"अभी तुम्हारे लिए यह जानने का वक्त नहीं आया है।"

"लेकिन।" अंगद की आंखों में आंसू आ गए थे—"अगर आप ही हार मान रहे हैं तो मैं किसके पास जाऊं?"

"अपने पास।"

"क्या मतलब महाराज?"

"मैं ये तो नहीं कहूंगा कि तुम उसे परास्त कर सकते हो मगर इतना जरूर जानता हूं कि वो अद्‌भुत शक्ति केवल तुममें है जिसके कारण तुम उससे टकरा सकते हो।" हैरान अंगद के मुंह से निकला—"ये आप क्या कह रहे हैं?"

चंडिकामृत के होठों पर बहुत ही रहस्यमय मुस्कान उभरी थी। फिर, उन्होंने कहा था—"जैसा हनुमान के साथ था वैसा हर प्राणी के साथ होता है अंगद, उसे खुद मालूम नहीं होता कि उसमें कौनसी विशेष शक्तियां हैं। उसे उसकी शक्तियों के बारे में बताना होता है। उन्हें जगाना होता है। जैसे हनुमान को यह एहसास कराया गया था कि वे हवा में तैरकर समुद्र पार कर सकते हैं और जब तुम मेरे पास आ ही गए हो तो वह काम मैं करूंगा। मैं तुम्हें तुममें छुपी शक्तियों का एहसास कराऊंगा—उन्हें जगाऊंगा लेकिन...

"लेकिन?"

"तुम्हें दो काम करने होंगे।"

"बोलिए—मैं सबकुछ करने को तैयार हूं।"

"पहला, तुम्हें कठोर बल्कि कठोरतम परिश्रम करना होगा।

दूसरा, खुद को पूरी तरह माता के प्रति समर्पित कर दोगे।"

"वो तो मैं अब भी—माता को सबसे सबसे ज्यादा मानता हूं।"

"मानना, खुद को समर्पित करना नहीं होता।"

"जी?"

"तुम देख चुके हो—आज का विज्ञान पढ़ा आधुनिक समाज उन शक्तियों को नहीं मानता जो कपाली ने प्राप्त कर ली हैं। आंखों से देखने के बावजूद किसी डॉक्टर ने यह नहीं माना कि सुकन्या के सिर पर छिपकली सवार है और वह उसके सिर को खुरच रही है। ठीक ऐसे ही ये लोग यह भी नहीं मानेंगे कि काले जादू के ज्ञाता किसी के शरीर में घुस सकते हैं। उससे मनचाहे काम करा सकते हैं और हजारों किलोमीटर दूर बैठकर किसी की हत्या तक कर सकते हैं आदि आदि। मगर हम मानते हैं कि ये सब हो सकता है। कपाली जैसे लोग भी इन विद्याओं में पारंगत हो सकते हैं और हम जैसे माता के भक्त भी। हममें और उनमें केवल इतना अंतर है कि वे शैतान के उपासक हैं और हम मां के। महाकाली की पूजा करके हम जो ज्ञान, शक्तियां और सिद्धियां प्राप्त करते हैं उनका इस्तेमाल दुनिया में रोशनी फैलाने के लिए करते हैं जबकि उनका मकसद दुनिया में अंधेरा करके उसे अपने आधीन लेना है। इसलिए दिमाग से यह तर्क-वितर्क कभी न करना कि ये काम कैसे हो गया, वो कैसे हो गया। जो भी हो जाए, बस पूरा विश्वास रखना कि वो माता ने किया है। कपाली की शक्तियां तुम्हें डराएंगी, तुम्हारे अंदर खौफ पैदा करेंगी और तुम डरोगे भी मगर अपने मन से इस विश्वास के धागे को कभी न टूटने देना कि मां वैष्णो देवी जैसी ताकत तीनों ब्रह्मांडों में किसी के पास नहीं है। कपाली और कपालतंत्र की तो बिसात क्या है, उस शैतान में भी नहीं जिसकी वे पूजा करते हैं। तुम तो जानते होगे मां दुर्गा में सभी देवी-देवताओं की संयुक्त ताकत है। जो भी करो, बस ये सोचकर करना कि वह युद्ध तुम्हारे और कपाली के बीच नहीं, शैतान और सबकी मां के बीच हो रहा है।"

"मेरे मन में आज ही से यह विश्वास जागना शुरु हो गया है।"

"ये लो।" कहने के साथ चंडिकामृत ने अपने दाएं हाथ की मुट्ठी उसकी तरफ बढ़ाई।

अंगद समझ न सका कि वे उसे क्या दे रहे हैं परंतु अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ा दिया। चंडिकामृत ने अपनी मुट्ठी उसके हाथ के ऊपर लेजाकर खोल दी। एक छोटा-सा कागज अंगद के हाथ पर गिरा। उसे देखते हुए अंगद ने पूछा—"ये क्या है महाराज?"

"खोलकर देखो।"

सस्पेंस में डूबे अंगद ने कागज की तहें खोलीं। उसने देखा कि कागज पर सिर्फ दो पंक्तियां लिखी थीं।

चंडिकामृत ने कहा—"इसे पढ़ो।"

अंगद ने पढ़ा—

***— त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामतात्।।***

पढ़ने के बाद पूछा—"ये क्या है महाराज?"

"महामृत्युन्जय मंत्र।"

"महामृत्युन्जय मंत्र?"

"इस मंत्र को किसी भी तरह रिम्पी के शरीर से स्पर्श कराए रखना। जैसे—इस कागज को किसी ताबीज में बंद करके उसके गले में डाल सकते हो। मृत्यु अटल है अंगद लेकिन जिस व्यक्ति के पास ये महामृत्युन्जय मंत्र होता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती।

इसका भावार्थ है।" महाराज चंडिकामृत ने बताया—"हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन-पोषण अपनी शक्ति से करते हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बंधनों

से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावे, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल पर पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बंधनों से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बंधनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।" मंत्र का भावार्थ बताने के बाद महाराज आगे बोले—"अंगद, यह मंत्र जीवन प्रदान करता है अर्थात् अकाल मृत्यु, दुर्घटना और अप्राकृतिक मृत्यु से हमें बचाता है। यह मंत्र सर्प और बिच्छू के काटने पर भी पूरा प्रभाव रखता है और कपाली जैसे लोगों की तुलना सर्प और बिच्छू से ही की जाती है। इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ ये है कि यह कठिन और असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करता है। यह बात अच्छी तरह जान लो कि—यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।"

"मैं इसे रिम्पी के गले में बांध दूंगा।" कहने के साथ अंगद ने कागज को बड़ी श्रद्धा से अपनी आंखों से लगाया था।

"और ये लो।" चंडिकामृत ने पुनः मुट्ठी उसकी तरफ बढ़ाई।

इस बार उन्होंने एक और कागज अंगद को दिया।

अंगद इस बात पर हैरान था कि पिछली बार जब महाराज ने मुट्ठी खोली थी तो उनके हाथ में केवल एक ही कागज था।

ये दूसरा कागज कहां से आ गया?

मगर इस बात को उसने अपने दिमाग में प्रश्न न बनने दिया।

चंडिकामृत ने कहा—"इसे भी खोलकर देखो।"

अंगद ने आज्ञा का पालन किया।

इस कागज पर एक यंत्र बना हुआ था।

चंडिकामृत ने बताया—"ये महामृत्युन्जय यंत्र है। इसके भी वही लाभ हैं जो मंत्र के हैं। तावीज में इन दोनों को बंद करके रिम्पी के गले में डाल देना। छिपकली उसके आसपास भी नहीं फटकेगी।"

अंगद ने ध्यान से यंत्र को देखा। जो निम्न था—

"धन्यवाद महाराज...आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।" अंगद ने इतने भावुक स्वर में कहने के साथ मुट्ठी बंद की कि उसकी आंखें छलछला उठीं—"आपने मेरी बहुत बड़ी समस्या हल कर दी।"

"नहीं अंगद, इस भ्रम में न रहना कि तुम्हें सभी समस्याओं से मुक्ति मिल गई है।" चंडिकामृत का लहजा बहुत गंभीर था।

एक बार फिर अंगद का दिल कांपा—"क्या मतलब महाराज?"

"कपाली इतनी आसानी से रिम्पी का पीछा नहीं छोड़ेगी। वो अपनी चाल जरूर चलेगी। हमारे पास शंकर भगवान का दिया हुआ ये मंत्र और यंत्र है तो उसके पास शैतान के दिए हुए बहुत से यंत्र और मंत्र। इनका जबरदस्त टकराव होने वाला है।"

"पर किसी भी शैतान के यंत्र-मंत्र भगवान शंकर के यंत्र-मंत्रों से ज्यादा शक्तिशाली नहीं हो सकते महाराज।"

"बस यही विश्वास अपने मन में बनाए रखना।" महाराज के चेहरे पर खुशी छलकी—"किसी हालत में किसी शैतान का यंत्र-मंत्र रिम्पी का बाल भी बांका नहीं कर सकेगा...एक बात और बताएं?"

"जी बोलिए।"

चंडिकामृत की आंखें शून्य में स्थिर हो गईं। ऐसा लगता था जैसे वह कुछ देख रहा हो और फिर यूं बोला जैसे स्वप्न में बोल रहा हो—"तुम्हारे साथ एक ऐसी रहस्यमय शक्ति है जिसके कारण कपाली तुम्हारी जान नहीं ले सकती।"

अंगद ने उत्सुक होकर पूछा—"वो कौन है महाराज?"

"वक्त आने पर खुद पता लग जाएगा।" महाराज टाल गए मगर तभी उनके चेहरे पर बुरी तरह चौंकने के भाव उभरे थे। मुंह से शब्द फिसले—"अरे! पुलिस जीप का एक्सीडेंट हो गया।"

"कौनसी पुलिस जीप का?" अंगद उछल पड़ा था।

"उसमें जीप का ड्राइवर, काले खां, राजपाल और नंदिनी थे। बड़ा भीषण एक्सीडेंट है। जीप एक ट्रक से टकराने के बाद काफी ऊंचाई तक हवा में उछल गई है।"

"और बताओ...और बताओ महाराज कि वहां क्या हो रहा है?" बुरी तरह बेचैन अंगद ने पूछा था।

चंडिकामृत के चेहरे पर चिंता की लकीरें खिंच गईं।

क्या हुआ इसके बाद?

जीप के एक्सीडेंट का क्या राज था? उसमें कौन-कौन बचे और कौन-कौन मारे गए। धनपत और अखिल की हत्या किसने की? वो कौन-सी ताकत थी जिसकी तरफ चंडिकामृत ने इशारों में कहा था कि उसकी वजह से कपाली उसे मार नहीं सकेगी?

क्या नंदिनी ही शालू थी?

काले खां और राजपाल नंदिनी की शिनाख्त जिससे भी कराना चाहते थे, उसकी हत्या क्यों हो जाती थी? कौन और कैसे कर रहा था वह सब तथा उससे इससे क्या फायदा था? क्या सरिता का भी मर्डर हो गया?

क्या अंगद की दीक्षा पूरी हो सकी?

अगर हां, तो उसके और कपाली के युद्ध का अंजाम क्या हुआ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि कपाली रिम्पी की बलि देने में कामयाब हो गई और अभिजीत जिंदा हो गया। शैतान जाग उठा। क्या अंगद को उस शैतान से तो न टकराना पड़ा?

इन सब और ऐसे ही सैंकड़ों सवालों के जवाब पाने के लिए पढ़ें—'डायन-2' और याद रखें कि डायन-2 हर हाल में अप्रैल के महीने में 'एक थी डायन' रिलीज होने से पहले पब्लिश हो जाएगी और यह तो आप जानते ही हैं कि हिंदी के सबसे ज्यादा बिकने वाले इस उपन्यासकार के सभी उपन्यास सिर्फ और सिर्फ 'तुलसी पेपर बुक्स' से प्रकाशित होते हैं।

पत्रों का जमाना नहीं रहा। एसएमएस का जमाना आ गया है, ई-मेल का जमाना आ गया है मगर मेरे दूर दराज के पाठक अब भी पत्र भेजते हैं।

आपसे निवेदन है कि चाहे जिस माध्यम से भेजें मगर हमेशा की तरह इस उपन्यास के बारे में अपनी निष्पक्ष राय जरूर और जल्दी भेजें क्योंकि इस बार मैंने ऐसे विषय पर उपन्यास लिखा है जिस पर पहले कभी नहीं लिखा। इसलिए आपकी राय जानने के लिए बहुत बेचैन हूं।

आपका
वेद प्रकाश शर्मा
K- 1264 शास्त्रीनगर मेरठ